सामाजिक विज्ञान

गाइड

कक्षा
10

1

भारत और समकालीन विश्व-2 (इतिहास)

यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. उदारवादी राष्ट्रवाद का अर्थ बताइए तथा इसकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर 19वीं शताब्दी के शुरुआती दौर में राष्ट्रीय एकता के विचार उदारवाद की विचारधारा से अधिक जुड़े थे। नए मध्यम वर्गों के लिए उदारवाद का अर्थ व्यक्तियों के लिए स्वतंत्रता और कानून के समक्ष सभी को समान अधिकार था। इसकी प्रमुख विशेषता इस प्रकार है

फ्रांस में वोट देने और निर्वाचित करने का अधिकार विशेष रूप से अधिक संपत्ति वाले लोगों को दिया गया था।

- संपत्ति विहीन पुरुषों और महिलाओं को इस अधिकार से वंचित रखा गया था।
- आर्थिक क्षेत्र में उदारवाद बाजार की आजादी के पक्ष में था, साथ ही यह राज्य द्वारा लगाए गए वस्तुओं और पूँजी के आवागमन पर नियंत्रण को समाप्त करने के पक्ष में भी था।
- 1834 ई. में प्रशा की पहल पर एक शुल्क संघ जॉलवेराइन का गठन किया गया।

2. वियना की संधि के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर वियना की संधि के प्रमुख बिंदु निम्न थे—

- फ्रांसीसी क्रांति के दौरान हटाए गए बूर्बो राजवंश को सत्ता में बहाल किया गया था। फ्रांस ने नेपोलियन के अंतर्गत कब्जे वाले प्रदेशों को खो दिया।
- भविष्य में इसके विस्तार को रोकने के लिए फ्रांस की सीमाओं पर एक शृंखला की स्थापना की गई थी।
- प्रशा को पश्चिमी सीमाओं पर महत्त्वपूर्ण नए क्षेत्र दिए गए थे, जबकि ऑस्ट्रिया को उत्तरी इटली का नियंत्रण दिया गया था।
- सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य नेपोलियन द्वारा परास्त हुए राजशाहों को बहाल करना और यूरोप में एक नई रूढ़िवादी व्यवस्था स्थापित करना था।

3. राष्ट्रवादी भावना का उदय किस प्रकार हुआ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर राष्ट्रवाद का विकास केवल युद्ध और क्षेत्रीय विस्तार के माध्यम से नहीं हुआ था, बल्कि राष्ट्रवाद के विकास में संस्कृति ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

कला, कविता, कहानियाँ और संगीत ने राष्ट्रवादी भावनाओं को व्यक्त और आकार देने में सहायता की। प्रेमपूर्ण कलाकारों और कवियों ने तर्क-वितर्क और विज्ञान की महिमा की आलोचना की। भावनाओं, अंतर्ज्ञान और रहस्यमय भावनाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए उन्होंने एक राष्ट्र के आधार के रूप में एक साझा सामूहिक विरासत की भावना पैदा करने का प्रयास किया।

जर्मन दार्शनिक मोहन गोटफ्रीड हेडर (1744-1803) ने दावा किया कि आम लोगों के बीच जर्मन संस्कृति निहित थी। वॉक पोलैंड, जो अब एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में अस्तित्व में नहीं था, वह संगीत और भाषा के माध्यम से राष्ट्रवादी महसूस कर रहा था।

4. 19वीं सदी में यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास के लिए उत्तरदायी किन्हीं चार प्रमुख कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर 19वीं सदी में यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास के लिए प्रमुख उत्तरदायी कारण निम्नलिखित थे—

(i) फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव—फ्रांसीसी क्रांति 1789 ई. में हुई थी जिसने विश्वभर में जनतंत्र का प्रसार किया।

(ii) औद्योगीकरण एवं मध्यवर्ग का प्रभाव—इन प्रक्रियाओं ने यूरोप के देशों में नए सामाजिक समूहों को अस्तित्व में लाया। उदाहरण के लिए, औद्योगिक श्रमिक, व्यवसायी, सेवा क्षेत्र के लोग आदि।

(iii) रूमानीवाद का प्रभाव—18वीं सदी से यूरोप में रूमानी संस्कृति का प्रादुर्भाव था, जो समाज में एकलयात्मक, साहित्यिक व बुद्धिवादी तथा राष्ट्रवादी भावनाओं के एक मुख्य रूप का विकास करना चाहते थे।

(iv) उदारीकरण—तत्कालीन समाज में आर्थिक उदारवाद की भावना के साथ-साथ राष्ट्र राज्यों को भी बढ़ावा दिया। उदारवाद व्यक्ति की स्वतंत्रता और सभी के लिए समान कानून की वकालत करता रहा।

5. राष्ट्र-राज्य के उदय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर 19वीं शताब्दी के दौरान राष्ट्रवाद एक शक्ति के रूप में उभरा, जिसने यूरोप के बहुराष्ट्रीय वंश साम्राज्यों की जगह देश-राज्य के उदय का नेतृत्व किया। फ्रांसीसी क्रांति (1789 ई.) ने आधुनिक राष्ट्र-राज्य के लिए मार्ग प्रशस्त किया। फ्रांसीसी क्रांति ने पुराने राजशाही आदेश पर सवाल उठाया और एक लोकप्रिय राष्ट्रवाद के विकास को प्रोत्साहित किया।

एक संयुक्त समुदाय के रूप में राष्ट्र पर बल देने के लिए फ्रांसीसी क्रांति ने पितृभूमि, नागरिक और फ्रांसीसी लोगों के बीच एक नया फ्रांसीसी ध्वज जैसे नए विचार प्रस्तुत किए। इसने सभी नागरिकों के लिए एकसमान कानून के साथ एक केंद्रीकृत प्रशासनिक प्रणाली की शुरुआत की। क्षेत्रीय बोलियों को निराश किया गया और पेरिस में बोली एवं लिखी जाने वाली फ्रांसीसी भाषा को देश की एक सामान्य भाषा के रूप में स्वीकार किया गया।

6. उन महत्त्वपूर्ण कारकों का उल्लेख कीजिए, जिनके कारण यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय हुआ।

उत्तर जर्मनी, इटली और स्विट्जरलैंड 18वीं शताब्दी के मध्य में राजशाहियों, डचियों और कैंटनों में विभाजित थे, जिनके शासकों ने अपने स्वायत्त प्रदेशों का निर्माण किया था। उन्होंने एक सामूहिक पहचान या एक आम संस्कृति साझा नहीं की। कुछ महत्त्वपूर्ण कारकों ने यूरोप में राष्ट्रवाद के उदय को जन्म दिया, जो निम्न हैं—

- नए मध्यम वर्ग का उदय
- उदारवाद की विचारधारा का प्रसार
- रूढ़िवाद की नई भावना और वियना की संधि
- क्रांतिकारियों का उदय

7. कुलीन वर्ग और नए मध्य वर्ग की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कुलीन वर्ग और नए मध्य वर्ग की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- सामाजिक और राजनीतिक रूप से जमीन का मालिक कुलीन वर्ग यूरोपीय महाद्वीप का सबसे प्रभुत्वशाली वर्ग था।
- यूरोप के पश्चिमी और मध्य भागों में औद्योगिक इकाइयों और व्यापार में बढ़ोतरी से शहरों का विकास हुआ और वाणिज्यिक वर्गों का उद्‌भव हुआ, जिनका अस्तित्व बाजार के लिए उत्पादन पर आधारित था।
- औद्योगीकरण के कारण नए सामाजिक समूह-श्रमिक वर्ग के लोग और मध्य वर्ग; जैसे—उद्योगपति, व्यापारी और सेवा क्षेत्र के लोग अस्तित्व में आए।
- कुलीनों को प्राप्त विशेषाधिकारों की समाप्ति के पश्चात् शिक्षित और उदारवादियों के मध्य राष्ट्रीय एकता के विचार लोकप्रिय हुए।

8. एकीकरण के समय हुई प्रमुख घटनाओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर एकीकरण के समय हुई प्रमुख घटनाएँ इस प्रकार हैं—

- संयुक्त इटली की घोषणा 1860 ई. में हुई। सेना (नियमित सैनिकों और सशस्त्र स्वयंसेवकों) ने दक्षिणी इटली और दो सिसिलियों के राज्य में प्रवेश किया और स्पेनिश किसानों को बाहर निकालने के लिए स्थानीय किसानों का समर्थन जीतने में सफल रही।
- 1861 ई. में विक्टर इमेनुएल द्वितीय को संयुक्त इटली का राजा घोषित किया गया था।
- टस्कानी, मोडेना, पर्मा और पोप के राज्यों ने सार्डिनिया के साथ हाथ मिला लिया। मार्च, 1860 तक पूरे मध्य इतालवी राज्यों को सर्वसम्मति से पीडमॉण्ट के साथ एकजुट किया गया।
- रोम सार्डिनिया का एक हिस्सा बन गया। इस तरह इटली का अंतिम एकीकरण भी 1871 ई. में किया गया।

9. फ्रांसीसी क्रांति की उन घटनाओं का उल्लेख कीजिए, जिन्होंने यूरोप के अन्य भागों से संबंध रखने वालों लोगों को प्रभावित किया था।

उत्तर फ्रांसीसी क्रांति की कुछ प्रमुख घटनाएँ निम्नलिखित हैं, जिन्होंने यूरोप के अन्य भागों से संबंध रखने वालों को भी अत्यधिक प्रभावित किया था—

- **निरंकुश शासन से मुक्ति**—फ्रांसीसी क्रांतिकारियों ने क्रांति के समय यह घोषणा की कि फ्रांसीसी राष्ट्र का यह भाग्य और लक्ष्य था कि वह यूरोप के लोगों को निरंकुश शासकों से मुक्त कराए।
- **जैकोबिन क्लबों की स्थापना करना**—जब फ्रांस की घटनाओं की खबर यूरोप के विभिन्न शहरों में पहुँची तो छात्र तथा शिक्षित मध्य-वर्गों के अन्य सदस्य जैकोबिन क्लबों की स्थापना करने लगे।
- **नेपोलियन का उदय और उसका प्रभाव**—फ्रांसीसी क्रांति द्वारा निर्मित की गई परिस्थितियों ने नेपोलियन के लिए मार्ग खोल दिया जिसके कारण उसने यूरोप की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए अनेक कदम उठाए।

10. नेपोलियन संहिता के सुधार संबंधी उदाहरण किस प्रकार राष्ट्रवादी उदारवादी विचारधारा के अनुरूप थे? चर्चा कीजिए।

उत्तर नेपोलियन द्वारा फ्रांस के विशाल क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता को देखते हुए 1804 ई. में एक विधि संहिता का निर्माण किया, जो नेपोलियन संहिता के नाम से जानी जाती है। यह संहिता नागरिक संहिता थी जिसने जन्म पर आधारित विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया। इस संहिता की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं

- कानून के समक्ष समानता का अधिकार।
- सामंती व्यवस्था की समाप्ति तथा भू-दासत्व और जागीरदारी शुल्कों का अंत। एक समान कानून व्यवस्था, मानक भार और राष्ट्रीय मुद्रा का प्रावधान।
- कारीगरों के श्रेणी-संघों के नियंत्रण से मुक्ति।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 1848 ई. की उदारवादियों की क्रांति और मई क्रांति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

- 1848 ई. की उदारवादियों की क्रांति के कारण यूरोप के अन्य हिस्सों; जैसे—जर्मनी, इटली, पोलैंड, ऑस्ट्रो-हंगरी साम्राज्य में उदारवादी मध्य वर्ग के पुरुषों और महिलाओं ने संविधानवाद की माँग को राष्ट्र-राज्य के निर्माण की माँग के साथ जोड़ दिया। यह माँग संविधान, प्रेस की स्वतंत्रता और संघ बनाने की स्वतंत्रता पर आधारित थी।
- **मई क्रांति** 18 मई, 1848 को 831 निर्वाचित प्रतिनिधि फ्रैंकफर्ट संसद में अपना स्थान लेने के लिए एक जुलूस में शामिल हुए। यह संसद सेंट पॉल चर्च में आयोजित हुई। उन्होंने एक जर्मन राष्ट्र के लिए संविधान का प्रारूप तैयार किया। जब प्रतिनिधियों ने प्रशा के राजा फ्रेडरिक विल्हेम चतुर्थ को ताज पहनाना प्रारंभ किया तो उसने उसे अस्वीकार कर उन राजाओं का साथ दिया जो निर्वाचित सभा के विरोधी थे। संसद में मध्यम वर्गों का वर्चस्व था, जो श्रमिकों और कारीगरों की माँगों का विरोध करते थे, परिणामस्वरूप इन वर्गों ने उनके समर्थन को खो दिया था। अंत में सैनिकों को बुलाया गया और विधानसभा को विस्थापित करने के लिए विवश किया गया।

2. यूरोप में संस्कृति के माध्यम से राष्ट्रवाद का विकास किस प्रकार हुआ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर यूरोप में राष्ट्रवाद का विकास केवल युद्धों या क्षेत्रीय विस्तार से नहीं हुआ, बल्कि संस्कृति ने भी इस विकास को विस्तार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसका वर्णन इस प्रकार है—

- **रूमानीवाद**—रूमानीवाद एक ऐसा आंदोलन था, जो लोगों में एक खास तरह की भावना का विकास करना चाहता था। रूमानी कलाकार और कवियों ने तर्क एवं विज्ञान के महत्त्व की आलोचना की और उसकी जगह भावनाओं, अंतर्दृष्टि और रहस्यवाद पर अधिक बल दिया। इनका मत था कि एक साझा संस्कृति को ही राष्ट्र का आधार बनाया जाए।
- **राष्ट्रीय भावना**—भाषा एवं बोलियाँ तथा संगीत ने राष्ट्रीय भावना के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्थानीय बोलियों के माध्यम से स्थानीय लोक साहित्य को एकत्र किया गया, जिससे आधुनिक राष्ट्रीय संदेश अधिक लोगों तक पहुँचाया जा सके जहाँ अधिकांश लोग निरक्षर थे।
- **भाषा एवं लोक साहित्य**—भाषा ने भी राष्ट्रीय भावनाओं के विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। रूसी कब्जे के बाद पोलिश भाषा का महत्त्व समाप्त कर दिया गया तथा रूसी भाषा को एक हथियार बनाया। पोलिश भाषा रूसी प्रभुत्व के विरुद्ध संघर्ष में प्रतीक के रूप में देखी जाने लगीं।

3. 1815 ई. में नेपोलियन की हार के बाद यूरोप में स्थापित रूढ़िवादी शासन की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर 1815 ई. में नेपोलियन की पराजय के बाद यूरोप में रूढ़िवादी शासन स्थापित हुए जिसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- **पारंपरिक संस्थाओं में विश्वास**—रूढ़िवादी विचारधारा वाले लोगों का मानना था कि राज्य और समाज द्वारा स्थापित पारंपरिक संस्थाएँ, जैसे राजतंत्र, चर्च, सामाजिक ऊँच-नीच, संपत्ति आदि परिवार को बनाए रखते हैं।
- **आधुनिकीकरण में विश्वास**—रूढ़िवादी आधुनिकीकरण में विश्वास करते थे तथा उसका ही समर्थन करते रहे। उनका मत था कि इससे राजतंत्र जैसी पारंपरिक संस्थाओं की मजबूती में सहायता मिलेगी।
- **निरंकुश शासन व्यवस्था को मजबूती**—रूढ़िवादी शासन व्यवस्थाएँ निरंकुश थीं। इनके विचार में एक आधुनिक सेवा, कुशल नौकरशाही, गतिशील अर्थव्यवस्था, सामंतवाद और भू-दासत्व की समाप्ति-यूरोप के निरंकुश राजतंत्रों को शक्ति प्रदान कर सकते थे, क्योंकि यह अपने शासन पर किसी की आलोचना सहन नहीं करती थी।
- **वियना कांग्रेस**—1815 ई. की वियना कांग्रेस का मुख्य उद्देश्य नेपोलियन के साथ युद्ध के दौरान हुए सभी बदलावों को समाप्त करना था।
- इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर 1815 ई. में ब्रिटेन, रूस, प्रशा और ऑस्ट्रिया जैसी यूरोपीय शक्तियों के प्रतिनिधि यूरोप के लिए एक समझौता तैयार करने के लिए एकत्रित हुए।
- **नियंत्रण**—रूढ़िवादी शासन व्यवस्था अपनी आलोचना एवं असहमति सहन नहीं कर पाती थी। इन्होंने उन शासन गतिविधियों को दबाने का प्रयास किया जो निरंकुश सरकारों पर प्रश्न खड़े करें। अधिकांश सरकारों ने सेंसरशिप के नियम भी बनाए जिनका उद्देश्य अखबारों, किताबों, नाटकों और गीतों में व्यक्त उन बातों पर नियंत्रण लगाना था।

4. "1830 का दशक यूरोप में भारी कठिनाइयाँ लेकर आया।" तर्क देकर कथन को सिद्ध कीजिए।

उत्तर 1830 का दशक यूरोप में भारी कठिनाइयाँ लेकर आया जिसमें प्रमुख कठिनाइयाँ निम्नलिखित थीं—

- **जनसंख्या वृद्धि**—19वीं सदी के प्रथम भाग में यूरोप में जनसंख्या में भारी वृद्धि हुई।
- **प्रवास की समस्या**—जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ प्रवास की समस्या भी असफल हो गई। ग्रामीण लोग गाँवों से नगरों में प्रवास के लिए जाने लगे, जिसके परिणामस्वरूप आवास की कमी एवं रोजगार की समस्या ने उन्हें भीड़-भाड़ एवं गंदी बस्तियों में रहने पर मजबूर कर दिया।
- **औद्योगीकरण तथा स्थानीय उत्पादकों का प्रभाव**—यूरोप के अनेक देशों में मजदूरों की आपूर्ति से उनकी माँग बढ़ने लगी। इसके अतिरिक्त नगरों के छोटे उत्पादकों को हमेशा इंग्लैंड से आयातित मशीन से बने सस्ते कपड़ों से कड़ी प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ा। यूरोप को सर्वाधिक प्रतिस्पर्द्धा कपड़ा उद्योग में ही झेलनी पड़ी।
- **कीमतों के बढ़ने की समस्या**—यूरोप के उन इलाकों में जहाँ कुलीन वर्ग अभी भी सत्ता में था, कृषक सामंती शुल्कों और जिम्मेदारियों के बोझ तले दबे थे।

5. "अनेक यूरोपीय देशों में पढ़े-लिखे मध्यवर्ग के नेतृत्व में क्रांति 1848 ई. में आरंभ हो गई थी।" उपयुक्त उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1848 ई. में अनेक यूरोपीय देशों में पढ़े—लिखे मध्यवर्ग के नेतृत्व में क्रांति आरंभ हो गई थी। इस संदर्भ में निम्नलिखित उदाहरण देखे जा सकते हैं—

- **ब्रसेल्स में विद्रोह**—फ्रांस में हुए विद्रोह ने ब्रसेल्स में भी विद्रोह भड़काया, जिसके परिणामस्वरूप यूनाइटेड किंगडम ऑफ नीदरलैंड से बेल्जियम अलग हो गया।
- **फ्रांस में विद्रोह**—फ्रांस में पहला विद्रोह जुलाई, 1830 में हुआ था। नेपोलियन के बाद जब बूर्बों राजा जिन्हें रूढ़िवादी प्रतिक्रिया के समय सत्ता बहाली किया गया था, उन्हें उदारवादी क्रांतिकारियों ने भगा दिया तथा इसके स्थान पर एक संवैधानिक राजतंत्र स्थापित किया गया, जिसका अध्यक्ष लुई फिलिप था।
- **यूनानी स्वतंत्रता**—यूनान 15वीं शताब्दी से ही ऑटोमन साम्राज्य का एक भाग था। यूरोप में हो रहे क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की प्रगति ने यूनानियों को भी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष (1821) करने पर विवश कर दिया। इस संघर्ष में निर्वासन में रह रहे यूनानियों के साथ पश्चिमी यूरोप के अनेक लोगों का भी समर्थन मिला, जो प्राचीन यूनानी संस्कृति के प्रति सहानुभूति रखते थे। अंतत: 1832 ई. में कुस्तुनतुनिया की संधि में यूनान को स्वतंत्र राष्ट्र की मान्यता दे दी गई।

6. इटली के एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले तीन नेताओं के नाम लिखिए।

उत्तर **इटली का एकीकरण**—इटली का राष्ट्रीय एकीकरण आधुनिक यूरोप के इतिहास में महत्त्वपूर्ण घटना है। 19वीं सदी के मध्य में इटली सात राज्यों में बँटा था, जिनमें से केवल एक इतालवी राजघराने के अधीन था। इटली के एकीकरण में देशभक्तों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इन देशभक्तों में गैरीबाल्डी, मेजिनी और काबूर का महत्त्वपूर्ण योगदान है

इटली के एकीकरण में मेजिनी का योगदान

मेजिनी ने इटली को एकीकृत कर गणराज्य बनाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उसने 1860 के दशक में इटली के एकीकरण हेतु एक सुविचारित कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसके प्रचार-प्रसार के लिए उसने एक गुप्त संगठन 'यंग इटली' बनाया। 1841 ई. से 1848 ई. में इस संगठन की सहायता से मेजिनी ने सिसली तथा नेपल्स के विद्रोहों को सफल बनाने का प्रयास किया, किंतु पूर्ण सफलता नहीं मिली।

इटली के एकीकरण में कावूर का योगदान

कावूर एक उच्च शिक्षित फ्रेंच भाषी था, किंतु वह कट्टर देशभक्त था, उसके कार्यों के विषय में ग्रांट एवं टेम्परले के द्वारा यह विचार दिया गया है कि ''उसके प्रथम कार्यों में से एक कार्य मिशनरियों का विनाश भी था, परंतु इटली के एकीकरण ने उसका ध्यान सबसे अधिक आकर्षित किया था।''

कावूर ने क्रीमिया के युद्ध में भाग लेकर फ्रांस और इंग्लैंड की सहानुभूति प्राप्त की तथा 1858 ई. में नेपोलियन के साथ प्लोम्बियर्स का समझौता किया।

इटली के एकीकरण में गैरीबाल्डी का योगदान

गैरीबाल्डी को **इटली की सेना** का निर्माता कहा जाता है। इटली के एकीकरण के लिए गैरीबाल्डी ने महत्त्वपूर्ण कार्य किए। गैरीबाल्डी ने सिसली के विद्रोह का फायदा उठाकर उस पर अधिकार कर लिया तथा रोम और वेनेशिया पर आक्रमण करने की योजना तैयार की। इसी समय कावूर ने गैरीबाल्डी पर संदेह करके पोप के राज्य **अब्रिया** तथा **मार्चेज** पर अधिकार कर लिया और नेपोलियन को अपने साथ मिला लिया। गैरीबाल्डी ने इटली के एकीकरण के लिए नेपल्स और सिसली, सार्डिनिया के राजा को दे दिए। गैरीबाल्डी के नेतृत्व में भारी संख्या में सशस्त्र स्वयंसेवकों की सेना बनाई गई। गैरीबाल्डी के प्रयासों से 1861 ई. में रोम तथा वेनेशिया को छोड़कर संपूर्ण इटली के प्रतिनिधियों ने इटली राज्य की घोषणा की तथा एमैनुअल द्वितीय को इटली का राजा घोषित किया गया। इस तरह इन देशभक्तों ने अपने प्रयासों से इटली को एक एकीकृत राज्य के रूप में स्थापित किया।

7. जर्मन-एकीकरण की प्रक्रिया का संक्षिप्त मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर 1848 ई. के बाद यूरोप में राज्य शक्ति और राजनीतिक वर्चस्व पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए रूढ़िवादियों ने अक्सर राष्ट्रवादी भावनाओं का प्रयोग किया। जर्मनी में मध्यवर्गीय लोगों के बीच राष्ट्रवादी भावनाएँ व्यापक थीं। 1848 ई. में जर्मन संप्रदाय के विभिन्न क्षेत्रों को मिलाकर निर्वाचित संसद द्वारा नियंत्रित राष्ट्र-राज्य बनाने का प्रयास किया गया था। प्रशा ने राष्ट्रीय एकीकरण के आंदोलन का नेतृत्व किया। प्रशा के प्रमुख मंत्री ऑटोवॉन बिस्मार्क को इस प्रक्रिया का जनक माना जाता है, जिसने प्रशा की सेना और नौकरशाही की सहायता ली थी। जर्मनी के एकीकरण के समय हुई बड़ी घटनाएँ निम्न थीं—

ऑस्ट्रिया, डेनमार्क और फ्रांस के साथ 7 वर्षों तक लड़ा गया युद्ध प्रशा की जीत के साथ समाप्त हो गया और एकीकरण की प्रक्रिया पूरी हुई।

18 जनवरी, 1871 को जर्मन राज्यों के शासकों, सेना के प्रतिनिधियों, प्रमुख मंत्री ऑटोवॉन बिस्मार्क सहित प्रशा के महत्त्वपूर्ण मंत्रियों की एक बैठक वर्साय के महल में हुई, जिसमें काइजर विलियम प्रथम की अध्यक्षता में नए जर्मन साम्राज्य की घोषणा की गई थी।

जर्मनी में मुद्रा, बैंकिंग, कानूनी और न्यायिक प्रणाली के आधुनिकीकरण पर नए राज्य ने बल दिया।

❑❑❑

2

भारत में राष्ट्रवाद

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सत्याग्रह और इसके आवेदन के विचार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के लिए गाँधीजी की वीरता की लड़ाई से सभी परिचित थे। सत्य और अहिंसा के आधार पर आंदोलन और विरोध का उनका तरीका सत्याग्रह के रूप में जाना जाता था। आक्रामक हुए बिना एक सत्याग्रही अहिंसा के माध्यम से युद्ध जीत सकता है। वर्ष 1916 में गाँधीजी बिहार के चंपारण में गए और किसानों को दमनकारी बागान व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रोत्साहित किया।

वर्ष 1916 में गाँधीजी ने गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों का समर्थन किया था, जो फसल की असफलता के कारण भोजन की कमी से पीड़ित थे और सलाह दी कि जब तक उनकी छूट की माँग स्वीकार न की जाए, तब तक वे राजस्व का भुगतान न करें। वर्ष 1918 में गाँधीजी सूती कपड़ा कारखानों के श्रमिकों के बीच सत्याग्रही आंदोलन को व्यवस्थित करने के लिए अहमदाबाद गए।

2. वर्ष 1919 के प्रस्तावित रॉलेट एक्ट के विरुद्ध गाँधीजी ने एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन (सत्याग्रह) आरंभ करने का निर्णय क्यों लिया? कारण दीजिए।

उत्तर वर्ष 1919 रॉलेट एक्ट के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह आरंभ करने के निम्न कारण थे—

- इस एक्ट के द्वारा सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को नष्ट करने का अधिकार दिया गया था।
- कैदियों को दो साल तक बिना मुकदमा चलाए जेल में रखने का अधिकार था। भारतीयों के भारी विरोध के बावजूद भी एक्ट को पारित कर दिया गया था।

3. रॉलेट एक्ट क्या था? इसका विरोध कैसे किया गया? इसका क्या परिणाम हुआ?

उत्तर रॉलेट एक्ट वर्ष 1919 में अंग्रेज सरकार द्वारा आरंभ किया गया एक दमनकारी एक्ट था। इसके अंतर्गत सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को नष्ट करने का अधिकार दिया गया था। भारतीयों ने इस एक्ट के प्रति अपनी असहमति निम्न प्रकार से प्रकट की—

- महात्मा गाँधी ने इस कानून के विरुद्ध अहिंसात्मक सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने का निर्णय लिया।
- विभिन्न शहरों में रैली का आयोजन किया गया।
- रेलवे वर्कशॉप्स में कामगार हड़ताल पर चले गए।
- अमृतसर के जलियाँवाला बाग में शांतिपूर्ण विरोध सभाएँ हुईं।
- यह गाँधीजी का पहला देशव्यापी आंदोलन था। इसने असहयोग आंदोलन (Non-Cooperation Movement) की नींव को चिह्नित किया। 10 अप्रैल को अमृतसर में पुलिस ने एक शांतिपूर्ण जुलूस पर गोलीबारी की। इस घटना से उत्साहित लोगों ने बैंकों, डाकघरों और रेलवे स्टेशनों पर हमला किया, जिसके फलस्वरूप मार्शल लॉ लगाया गया और जनरल डायर ने कमान सँभाली।

4. गाँधीजी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन क्यों किया?

उत्तर रॉलेट सत्याग्रह के दौरान महात्मा गाँधी का विचार था कि हिंदुओं और मुस्लिमों को एक साथ मिलाए बिना किसी भी आंदोलन का आयोजन नहीं किया जा सकता। ऐसा करने का एक तरीका है कि वे खिलाफत का मुद्दा उठाएँ। प्रथम विश्व युद्ध ओटोमन तुर्की की हार के साथ समाप्त हो गया था। यह अफवाह फैल रही थी कि इस्लामिक विश्व के आध्यात्मिक नेता (खलीफा) ओटोमन सम्राट पर एक कठोर शांति संधि लगाई जाएगी। भारत के मुसलमानों ने ब्रिटेन को अपनी तुर्की नीति को बदलने के लिए मजबूर करने का फैसला किया। मुस्लिम नेता मोहम्मद अली और शौकत अली ने इस मुद्दे पर एकजुट होकर सामूहिक कार्रवाई की संभावना के बारे में महात्मा गाँधी के साथ चर्चा शुरू की।

5. सफलता प्राप्त करने के लिए महात्मा गाँधी ने आंदोलन के लिए कौन-सी रणनीति तैयार की?

उत्तर सफलता प्राप्त करने के लिए महात्मा गाँधी ने कुछ रणनीतियाँ तैयार की, जो इस प्रकार हैं—

- आंदोलन को लोगों द्वारा खिताब, सम्मान और मानद पदों के आत्मसमर्पण के साथ शुरू करना पड़ा।
- सिविल सेवा, सेना, पुलिस, ब्रिटिश न्यायालयों और विधान सभाओं, स्कूल और कॉलेजों और ब्रिटिश सामान का बहिष्कार करने की योजना बनायी गयी।
- देशी सामानों को बढ़ावा देने के लिए ब्रिटिश सामानों को घरेलू सामान या स्वदेशी द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना था।
- सरकार के दमन के मामले में, सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया जाएगा।
- अंत में दिसंबर, 1920 में नागपुर सम्मेलन के दौरान कांग्रेस द्वारा असहयोग आंदोलन अपनाया गया।
- महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग खिलाफत आंदोलन पूर्ण बल के साथ शुरू हुआ।

6. खिलाफत आंदोलन कब शुरू हुआ? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर जनवरी, 1921 में असहयोग खिलाफत आंदोलन शुरू हुआ। विभिन्न सामाजिक समूहों ने अपनी विशिष्ट आकांक्षाओं के साथ आंदोलन में भाग लिया। यह आंदोलन शहर में मध्यम वर्ग की भागीदारी के साथ शुरू हुआ था। छात्रों और शिक्षकों ने सरकारी नियंत्रित स्कूल छोड़ दिए और वकीलों ने मुकदमे लड़ना बंद कर दिया। आर्थिक मोर्चे पर

असहयोग आंदोलन का प्रभाव नाटकीय था। लोगों ने विदेशी कपड़े और माल को अस्वीकार कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय कपड़ा मिलों और हथकरघों का उत्पादन बढ़ गया।

यह आंदोलन धीरे-धीरे कम होता गया। खादी का कपड़ा महँगा होने के कारण गरीबों के लिए उपयुक्त नहीं था। वे मिलों के कपड़े का ज्यादा दिनों तक विरोध नहीं कर सकते थे। ब्रिटिश संस्थानों के बहिष्कार से भी समस्या पैदा हो गई, इसलिए छात्रों और शिक्षकों को सरकारी स्कूलों में अध्ययन और नौकरी के लिए फिर से आना शुरू करना पड़ा। वकीलों ने भी सरकारी अदालतों में कार्य पुन: प्रारम्भ कर दिया था।

7. गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन क्यों स्थगित कर दिया?

उत्तर 5 फरवरी, 1922 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा नामक एक छोटे से गाँव में असहयोग आंदोलन के दौरान एक जुलूस निकाला जा रहा था। इसका नेतृत्व कर रहे लोगों पर पुलिस के जवानों ने लाठीचार्ज कर दिया, जिससे भीड़ आक्रोशित हो गई तथा उसने पुलिस बल पर हमला कर दिया। पुलिस के जवान अपनी जान बचाने को थाने में छिप गए। प्रदर्शनकारियों ने थाने को घेरकर जला दिया, जिसमें 1 थानेदार और 22 पुलिस के जवान जलकर मर गए। इस घटना से गाँधीजी अत्यन्त दु:खी हुए और उन्होंने असहयोग आंदोलन को वापस लेने की घोषणा कर दी। गाँधीजी के इस निर्णय की अनेक नेताओं ने आलोचना की, किन्तु गाँधीजी अपने निर्णय पर अडिग रहे।

8. साइमन कमीशन के मुख्य उद्देश्यों को बताइए।

उत्तर साइमन कमीशन के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार हैं—

- साइमन कमीशन **जॉन साइमन** के नेतृत्व में गठित किया गया था। साइमन कमीशन का मुख्य उद्देश्य भारत में संवैधानिक व्यवस्था के कार्य की समीक्षा करना और उसके विषय में सुझाव देना था।
- भारतीय नेताओं ने इस आयोग का विरोध किया, क्योंकि इसमें कोई भारतीय नहीं था। जब वर्ष 1928 में साइमन कमीशन भारत आया, तो उसका स्वागत **साइमन कमीशन वापस जाओ** नारे के साथ किया गया।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग सहित सभी दलों ने प्रदर्शनों में भाग लिया।

9. सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत कैसे हुई? इसके मुख्य बिंदुओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर गाँधीजी ने 12 मार्च, 1930 को 78 अनुयायियों के साथ गुजरात के तटीय शहर दांडी के लिए साबरमती आश्रम से अपनी यात्रा शुरू की। 6 अप्रैल को वह दांडी पहुँचे और उन्होंने नमक कानून का औपचारिक रूप से उल्लंघन किया। उन्होंने समुद्री पानी को उबालकर नमक बनाना शुरू किया। इसने सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की। इस आंदोलन के अंतर्गत

- विदेशी कपड़े का बहिष्कार किया गया। शराब की दुकानों का विरोध किया गया।
- किसानों ने राजस्व और चौकीदारी कर देने से इनकार कर दिया। गाँव के अधिकारियों ने इस्तीफा दे दिया।
- कई जगहों पर वनीय लोगों ने वन कानूनों का उल्लंघन किया।
- इस आंदोलन से परेशान होकर औपनिवेशिक सरकार ने कांग्रेसी नेताओं को एक-एक करके गिरफ्तार करना शुरू किया।

10. सविनय अवज्ञा आंदोलन को बंद करने एवं उसकी पुनः स्थापना पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **सविनय अवज्ञा आंदोलन को बंद करना**—इस आंदोलन को बंद करने के लिए सत्याग्रहियों पर हमला किया गया, महिलाओं और बच्चों को पीटा गया और करीब 1,00,000 लोगों को गिरफ्तार किया गया। जब एक प्रमुख नेता अब्दुल गफ्फार खान को वर्ष 1930 में गिरफ्तार किया गया, तो शहर में कई हिंसक घटनाओं की सूचना मिली। इस स्थिति में महात्मा गाँधी ने एक बार फिर आंदोलन को बंद करने का फैसला किया और 5 मार्च, 1931 को इरविन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।

सविनय अवज्ञा आंदोलन की पुन: स्थापना—दिसंबर, 1931 में गाँधीजी गोलमेज सम्मेलन के लिए लंदन गए, लेकिन इस सम्मेलन का कोई लाभ नहीं हुआ और वे निराश होकर भारत वापस आ गए। उन्होंने पाया कि कांग्रेस को अवैध घोषित किया गया है, अब्दुल गफ्फर खान और जवाहरलाल नेहरू दोनों जेल में थे, इसलिए महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को पुन: शुरू किया। यह आंदोलन एक वर्ष के लिए जारी रखा गया, लेकिन वर्ष 1934 तक इस आंदोलन का प्रभाव कम हो गया था।

11. सविनय अवज्ञा आंदोलन की सीमाओं के मुख्य बिंदुओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर सविनय अवज्ञा आंदोलन की सीमाओं के मुख्य बिंदु निम्न हैं—

- स्वराज की अवधारणा ने सभी सामाजिक समूहों को प्रभावित नहीं किया था। ऐसा एक समूह 'अस्पृश्यों' का था, जो खुद को 1930 के दशक के दौरान दलित कहने लगा था।
- लंबे समय से कांग्रेस ने दलितों को सनातनपंथियों, रूढ़िवादी, उच्च जाति, हिंदुओं पर हमला करने के डर से नजरअंदाज किया था। गाँधीजी ने दलितों को हरिजन या भगवान के बच्चे बताया।
- गाँधीजी का मानना था कि अस्पृश्यता को खत्म किए बिना स्वराज की सौ साल तक स्थापना नहीं की जा सकती। उन्होंने दलितों को मंदिरों में प्रवेश और सार्वजनिक कुएँ, तालाब, सड़कों और स्कूलों तक पहुँच बनाने के लिए सत्याग्रह किया।
- गाँधीजी ने सफाई के काम को सम्मानित करने के लिए स्वयं शौचालयों को साफ किया। गाँधीजी ने अछूतों के बारे में अपनी मानसिकता बदलने के लिए ऊपरी वर्ग से आग्रह किया।

12. हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग के बीच हुए मतभेदों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने एकता के लिए फिर से बात करने के प्रयास किए। वर्ष 1927 में यह महसूस हुआ कि एकता हो सकती है। कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच मतभेद सिर्फ भावी विधानसभाओं में प्रतिनिधित्व करने का था। मुस्लिम लीग के नेता मुहम्मद अली जिन्ना दो शर्तों पर अलग निर्वाचिका की माँग को छोड़ने के लिए तैयार थे

(i) केंद्रीय सभा में मुस्लिमों को आरक्षित सीटें दी जाएँ।

(ii) प्रतिनिधित्व, मुस्लिम वर्चस्व वाले प्रांतों (बंगाल और पंजाब) में आबादी के अनुपात में हो।

लेकिन एम. आर. जयकर की अगुवाई में हिंदू महासभा के अत्यधिक विरोध के कारण यह मुद्दा हल नहीं हो पाया।

13. राष्ट्रवाद के विकास में लोकसाहित्य का क्या योगदान है?

उत्तर राष्ट्रवाद के विकास में लोकसाहित्य का योगदान इस प्रकार है

- 19वीं शताब्दी के आखिरी चरण में राष्ट्रवादियों ने लोक कथाओं को लिखना प्रारंभ किया।
- रवींद्रनाथ टैगोर ने लोक-गाथा, गीत, बालगीत, व मिथकों को एकत्र किया। लोक परंपराओं को पुनर्जीवित करने के लिए आंदोलन किया।
- मद्रास के शास्त्री ने 'द फोकलोर्स ऑफ सदर्न इंडिया' के नाम से तमिल लोक कथाओं का विशाल संकलन चार खंडों में प्रकाशित किया। उनका मानना था कि लोक कथाएँ राष्ट्रीय साहित्य होती हैं। यह लोगों के वास्तविक विचारों की सबसे विश्वसनीय अभिव्यक्ति हैं।

अत: लोक साहित्य ने लोगों को उनके राष्ट्र की वास्तविक पहचान से अवगत कराया, जिससे उनमें आत्मगौरव की भावना जागृत हुई।

14. प्रथम विश्वयुद्ध का भारतीय समाज व अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर प्रथम विश्वयुद्ध का भारतीय समाज व अर्थव्यवस्था पर निम्न प्रभाव पड़ा—

- इस विश्वयुद्ध ने एक नई आर्थिक और राजनीतिक स्थिति पैदा कर दी।
- वर्ष 1913 से 1918 के बीच कीमतें दोगुनी हो चुकी थीं, जिसके कारण लोगों की मुश्किलें बढ़ गई थीं।
- गाँवों में युवाओं को जबरन सेना, पुलिस में भर्ती किया गया जिसके कारण ग्रामीण इलाकों में व्यापक गुस्सा था।
- 1918-19 और 1920-21 में देश के बहुत सारे हिस्सों की फसलें खराब हो गईं।

15. उन परिस्थितियों की व्याख्या कीजिए जिनमें गाँधीजी ने वर्ष 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस लेने का निर्णय लिया।

उत्तर गाँधीजी ने गाँधी इरविन समझौता के अंतर्गत वर्ष 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस लेने का निर्णय लिया था, इसके निम्न कारण थे—

- सरकार राजनीतिक कैदियों को रिहा करने पर तैयार हो गई थी।
- सरकार ने दमनकारी नीति चलाई, जिसके अंतर्गत शांतिपूर्ण सत्याग्रहियों पर आक्रमण किए गए।
- औद्योगिक मजदूरों ने अंग्रेजी शासन का प्रतीक पुलिस चौकियों, नगरपालिका भवनों, अदालतों और रेलवे स्टेशनों पर हमले शुरू कर दिए थे।
-

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सत्याग्रह क्या था? गाँधीजी द्वारा आयोजित कुछ सत्याग्रहों का वर्णन कीजिए।

उत्तर सत्याग्रह से तात्पर्य सत्य की शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज है। यदि आपका उद्देश्य सच्चा है, आपका संघर्ष अन्याय के विरुद्ध है तो आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है। सत्याग्रह एक प्रकार से दमनकारियों के विरुद्ध जन आंदोलन का एक अहिंसावादी ढंग माना जाता है। गाँधीजी द्वारा आयोजित कुछ सत्याग्रह निम्न हैं—

- गाँधीजी ने दक्षिणी अफ्रीका में सत्याग्रह की तकनीक का सफल प्रयोग किया।
- वर्ष 1916 में उन्होंने चंपारन के किसानों को न्याय दिलाने के लिए संघर्ष किया और सरकार को 1918 में चंपारन के किसानों के कल्याण के लिए एक अधिनियम पारित करना पड़ा।
- वर्ष 1917 में उन्होंने गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह का आयोजन किया। फसल खराब हो जाने और प्लेग की महामारी के कारण खेड़ा जिले के किसान लगान चुकाने की हालत में नहीं थे। वे चाहते थे कि लगान वसूली में ढील दी जाए। अंतत: सरकार को झुकना पड़ा और लगान का भुगतान अगले वर्ष तक स्थगित कर दिया गया।
- पुन: वर्ष 1918 में गाँधीजी ने अहमदाबाद के मिल श्रमिकों की हड़ताल में हस्तक्षेप किया तथा उनके वेतन में वृद्धि करने में सहायता की जिसके लिए उन्होंने आमरण अनशन शुरू किया था।

2. वर्ष 1919 में इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल द्वारा पारित रॉलेट एक्ट के विरुद्ध भारतीय लोगों की प्रतिक्रिया का उल्लेख कीजिए।

उत्तर रॉलेट एक्ट के विरुद्ध लोगों की निम्नलिखित प्रतिक्रिया थी—

- **रैलियाँ और हड़तालें**—विभिन्न शहरों में रैली का आयोजन किया गया। रेलवे वर्कशॉप्स में कामगार हड़ताल पर चले गए जिसके परिणामस्वरूप दुकानें बंद हो गई।
- **जलियाँवाला बाग में सभा**—13 अप्रैल को जलियाँवाला बाग के बंद मैदान में सरकार की नई दमन नीति का विरोध करने के लिए बहुत भीड़ इकट्ठी हुई थी।
- **संयुक्त संघर्ष**—रॉलेट एक्ट का लोगों पर गहरा और अत्यधिक प्रभाव पड़ा। हिंदुओं और मुसलमानों दोनों ने एक संयुक्त संघर्ष की जरूरत समझी।
- **महात्मा गाँधी की प्रतिक्रिया**—महात्मा गाँधी अन्यायपूर्ण कानून के विरुद्ध अहिंसक ढंग से नागरिक अवज्ञा आंदोलन चलाना चाहते थे, जो 6 अप्रैल को एक हड़ताल से शुरू होना था।

3. ग्रामीण क्षेत्रों में असहयोग आंदोलन की स्थिति का वर्णन करें।

उत्तर असहयोग आंदोलन के फैलने के निम्नलिखित कारण थे—

- **प्रतिभागी**—ग्राम्य क्षेत्रों में आंदोलन का नेतृत्व किसानों, जनजातीय लोगों तथा स्थानीय नेताओं ने किया। उदाहरणत: अवध में संन्यासी बाबा रामचंद्र जो पहले फिजी में गिरमिटिया मजदूर के तौर पर काम कर चुके थे।
- **ग्रामीण लोगों की भागीदारी**—ग्रामीण क्षेत्रों में यह आंदोलन अंग्रेजों के विरुद्ध न होकर तालुकेदारों तथा जमींदारों के विरुद्ध

था। ग्रामीण लोगों की समस्याएँ नगरीय लोगों से भिन्न थीं। तालुकेदार तथा जमींदार ऊँची लगान तथा विभिन्न प्रकार के कर दूसरों से वसूलते थे। किसानों को बेगार करनी पड़ती थी तथा जमींदार के खेतों में बिना मजदूरी काम करना पड़ता था।

- **विरोध के तरीके**—ग्रामों में आंदोलन का एक दूसरा ही रुख था। कई स्थानों पर जमींदारों को नाई-धोबी और मोची की सुविधाओं से वंचित करने के लिए पंचायतों ने 'नाई-धोबी बंद' का आदेश दिया। जवाहरलाल नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेता अवध के गाँवों में उन लोगों की समस्याओं को समझने के लिए दौरे पर गए।
- अक्टूबर तक जवाहरलाल नेहरू, बाबा रामचंद्र तथा कुछ अन्य लोगों के नेतृत्व में 'अवध किसान सभा' का गठन कर लिया गया। जब वर्ष 1921 में आंदोलन फैला तो तालुकदारों और व्यापारियों के मकानों पर हमले होने लगे। आंदोलन हिंसक हो उठा, जिसे कुछ कांग्रेसी नेताओं ने पसंद नहीं किया।

4. उन प्रमुख घटनाओं का उल्लेख करें जिनके कारण वर्ष 1930 में नमक मार्च तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन हुआ।

उत्तर गाँधीजी ने जब सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ किया तब देश में ब्रिटिश सरकार के प्रति देशवासियों में अत्यधिक रोष था। इस आंदोलन को शुरू करने के पीछे कई घटनाएँ थीं, *जिनका विवरण* निम्नलिखित है—

- **आर्थिक कारण**—सबसे पहला कारण आर्थिक संकट था। वर्ष 1929 की महामंदी का भारतीय अर्थव्यवस्था, विशेषत: कृषि पर भारी दुष्प्रभाव पड़ा। वर्ष 1926 से कृषि उत्पादों की कीमतें गिरनी शुरू हुई, जो 1930 तक बहुत नीचे आ गई। कृषि उत्पादों की माँग घटने से निर्यात गिर गया और किसानों को अपनी उपज बेचकर लगान चुकाना भी कठिन हो गया। सरकार ने करों में छूट देने से मना कर दिया। अत: 1930 में किसानों की दशा शोचनीय बन गई।
- **व्यवसायी वर्ग में समर्थन**—व्यवसायी वर्ग ने अपने कारोबार को फैलाने के लिए ऐसी औपनिवेशिक नीतियों का विरोध किया जिनके कारण उनकी व्यावसायिक गतिविधियों में रुकावट आती थी। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन को आर्थिक समर्थन प्रदान करने का निर्णय लिया।
- **साइमन कमीशन की असफलता**—राष्ट्रवादी आंदोलन को देखकर साइमन कमीशन का गठन किया गया था, परंतु यह कमीशन भारतीय लोगों तथा नेताओं को संतुष्ट करने में असफल रहा। कांग्रेस और मुस्लिम लीग सहित सभी पार्टियों ने प्रदर्शनों में हिस्सा लिया। इस विरोध को शांत करने के लिए वायसराय लॉर्ड इर्विन ने अक्टूबर, 1929 में भारत के लिए 'डोमीनियन स्टेट्स' का ऐलान कर दिया, परंतु इससे भी नेता संतुष्ट नहीं हुए।
- **पूर्ण स्वराज**—दिसंबर, 1929 को जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर सम्मेलन में 'पूर्ण स्वराज' या भारत की पूर्ण स्वतंत्रता की माँग को अंतिम रूप दिया गया। यह घोषित किया गया कि 26 जनवरी, 1930 को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा।
- **गाँधीजी की 11 माँगें अस्वीकार**—31 जनवरी, 1930 को गाँधीजी ने भारतीयों के साथ हुए अन्याय को समाप्त करने के लिए एक वक्तव्य में 11 माँगें रखीं जिनमें से कुछ इस तरह थीं-उन्होंने वायसराय को आश्वासन दिया कि यदि उनकी माँगें मान ली गईं तो वे सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस ले लेंगे, परंतु वायसराय ने उनकी इन माँगों को अवास्तविक घोषित कर दिया।
- **नमक आंदोलन** इर्विन द्वारा गाँधी जी की शर्तें न मानने के पश्चात् उन्होंने दांडी यात्रा आरंभ कर दी और 240 किमी की दूरी तय करके दांडी नामक स्थान पर समुद्र के पानी को उबालकर नमक बनाया और नमक कानून का उल्लंघन किया था।

5. सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत किस घटना से हुई? सविनय अवज्ञा आंदोलन असहयोग आंदोलन से किस प्रकार भिन्न था?

उत्तर 6 अप्रैल, 1930 को गाँधीजी दाँडी पहुँचे, समुद्री जल को उबालकर नमक बनाया और नमक कानून तोड़ा। इस घटना से सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत हुई।

सविनय अवज्ञा आंदोलन	असहयोग आंदोलन
यह आंदोलन 1930 में आरंभ हुआ।	यह आंदोलन 1921 में आरंभ हुआ।
इस आंदोलन के लिए उत्तरदायी प्रमुख कारक थे-1929 की महामंदी द्वारा निर्मित परिस्थितियाँ, साइमन कमीशन की असफलता और गाँधी जी की 11 माँगों को अस्वीकार करना।	इस आंदोलन के पीछे मूल कारण थे-प्रथम विश्व युद्ध से निर्मित परिस्थितियाँ, रॉलेट एक्ट, जलियाँवाला बाग दुर्घटना, खलीफा के साथ अनुचित व्यवहार।
शहरों में, व्यवसायियों ने आंदोलन को समर्थन दिया, क्योंकि वे 1929 की महामंदी से बुरी तरह प्रभावित हुए थे। गाँवों में, सम्पन्न किसानों ने सक्रिय सहयोग दिया।	शहरों में मध्यवर्ग ने बड़े पैमाने पर भाग लिया, गाँवों में किसानों ने तालुकदारों, जमींदारों के विरुद्ध आंदोलन आरंभ किया, जबकि बागानों (असम) में लोगों ने एस्टेट मालिकों के विरुद्ध आंदोलन आरंभ किया और इनलैंड एमीग्रेशन एक्ट के विरुद्ध संघर्ष किया।
1920 के दशक के मध्य से कांग्रेस हिंदू धार्मिक राष्ट्रवादी संगठनों के काफी करीब दिखने लगी थी इसलिए मुसलमानों ने बड़े पैमाने पर आंदोलन में भाग नहीं लिया।	खलीफा मुद्दे के कारण, मुस्लिम समुदाय ने बड़े पैमाने पर भाग लिया।
जब गाँधीजी ने गाँधी-इर्विन समझौते पर हस्ताक्षर किए, तब 1931 में आंदोलन वापस ले लिया गया।	चौरी-चौरा हिंसक घटना जिसमें २२ पुलिसकर्मी मारे गए थे, के कारण गाँधी जी ने 1922 में आंदोलन वापस ले लिया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन	असहयोग आंदोलन
गाँधीजी ने समुद्री जल को उबालकर नमक बनाया और 6 अप्रैल, को नमक कानून का उल्लंघन किया। देश के विभिन्न भागों में हजारों लोगों ने नमक कानून तोड़ा और सरकारी नमक कारखानों के सामने प्रदर्शन किए।	शहरों में मध्यवर्ग की भागीदारी से आंदोलन शुरू हुआ। हजारों छात्रों ने सरकार द्वारा नियंत्रित स्कूलों और कॉलेजों को छोड़ दिया, प्रधानाध्यापकों तथा अध्यापकों ने त्याग-पत्र दे दिए और वकीलों ने मुकद्में लड़ने बंद कर दिए।

6. असहयोग आन्दोलन क्यों प्रारम्भ किया गया? आन्दोलनकारियों के चार कार्य बताइए।

उत्तर असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि—महात्मा गाँधी ने भारतीय राजनीति में प्रवेश ब्रिटिश सरकार के सहयोगी के रूप में किया था, क्योंकि उन्हें ब्रिटिश सरकार की ईमानदारी व न्यायप्रियता में विश्वास था, परन्तु वर्ष 1919 में भारत में अनेक ऐसी घटनाएँ घटीं, जिसने गाँधीजी को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आंदोलन प्रारम्भ करने के लिए विवश किया। इन घटनाओं में वर्ष 1919 का दमनकारी रॉलेट एक्ट, जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड आदि घटनाएँ प्रमुख थीं।

असहयोग आंदोलन के कारण—असहयोग आंदोलन के निम्नलिखित कारण थे

- प्रथम विश्वयुद्ध के बाद आर्थिक कठिनाइयों के कारण महँगाई बहुत बढ़ गई। मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग इस महँगाई से अत्यधिक परेशान हो गए थे। इन परिस्थितियों ने भारतीयों में ब्रिटिश विरोधी भावनाओं का प्रसार कर इन्हें आंदोलन हेतु प्रोत्साहित किया।
- रॉलेट एक्ट तथा जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड जैसी घटनाओं ने विदेशी शासकों के क्रूर एवं असभ्य व्यवहार को उजागर कर दिया।
- पंजाब में अत्याचारों के सम्बन्ध में **हण्टर कमेटी** की सिफारिशों ने सबकी आँखें खोल दीं।
- वर्ष 1919 का मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार भी द्वैध शासन लागू करने की नीयत से लाया गया, न कि आम जनता को राहत पहुँचाने के उद्देश्य से। स्वशासन की माँग कर रहे राष्ट्रवादियों को भी इससे घोर निराशा हुई।
- सरकार के द्वारा किसी भी क्षेत्र में सहयोग नहीं करना।

असहयोग आंदोलन के निषेधात्मक कार्यक्रम

असहयोग आंदोलन के निम्नलिखित निषेधात्मक कार्यक्रम थे—

- उपाधियों और मानद अधिकारों की वापसी।
- मनोनीत कार्यालयों और स्थानीय निकायों से इस्तीफा।
- सरकारी दरबार में जाने से इनकार और वकीलों द्वारा न्यायालय का बहिष्कार किया जाना।
- आम लोगों द्वारा फौज या अन्य सरकारी सेवाओं में जाने से इनकार।
- सरकारी विद्यालयों, कॉलेजों, न्यायालयों और 1919 के अधिनियम के अनुसार निर्धारित चुनाव प्रक्रियाएँ सहित विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार।

असहयोग आंदोलन के रचनात्मक कार्यक्रम

असहयोग आंदोलन चलाने के लिए तिलक स्वराज्य कोष स्थापित किया गया। छ: महीने के अन्दर इसमें एक करोड़ रुपए जमा हो गए। स्त्रियों ने भी बहुत उत्साह दिखाया और अपने गहने एवं जेवरों का खुलकर दान किया। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार एक जन-आंदोलन बन गया और पूरे देश में जगह-जगह विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई।

खादी स्वतन्त्रता का प्रतीक बन गई। इसके साथ-ही-साथ बीस लाख चरखों का वितरण किया गया, राष्ट्रीय शिक्षा की दिशा में प्रयास करना, स्वदेशी माल खरीदने पर देश और लोक अदालतों की स्थापना करना प्रमुख रचनात्मक कार्यक्रम थे।

असहयोग आंदोलन का प्रारम्भ

असहयोग आंदोलन औपचारिक रूप से 1 अगस्त, 1920 को शुरू हुआ था, क्योंकि इसी दिन 1 अगस्त, 1920 को बालगंगाधर तिलक का निधन हो गया था। कांग्रेस ने गाँधीजी की इस योजना को स्वीकार कर लिया। जब ब्रिटिश ने कांग्रेस की माँगों को मानने से इनकार कर दिया तथा जून, 1920 में इलाहाबाद में सर्वदलीय सभा ने विदेशी वस्तुओं, स्कूलों, कॉलेजों, न्यायालयों आदि के बहिष्कार का कार्यक्रम बनाया, तब सितम्बर, 1920 में कांग्रेस ने एक विशेष सत्र **कलकत्ता** में बुलाया और इसमें अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन जिसका अन्तिम लक्ष्य स्वराज्य था, शुरू करने का प्रस्ताव पारित किया।

आंदोलन की वापसी

5 फरवरी, 1922 को संयुक्त प्रान्त के गोरखपुर जिले (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के **चौरी-चौरा** नामक स्थान पर आंदोलनकारियों के जुलूस पर पुलिस ने गोलियाँ चलाईं, जिस कारण भीड़ आक्रोशित हो गई और पुलिस थाने में आग लगा दी गई, जिसमें एक थानेदार समेत 22 सिपाहियों को जिन्दा जला दिया गया।

इस हिंसक घटना से गाँधीजी ने दु:खी होकर आंदोलन वापस लेने का निर्णय लिया। गाँधीजी ने 12 फरवरी को बारदोली में कांग्रेस कार्य समिति की एक बैठक बुलाई, जिसमें चौरी-चौरा काण्ड के कारण सामूहिक सत्याग्रह व असहयोग आंदोलन स्थगित करने का प्रस्ताव पारित किया गया।

आंदोलन के परिणाम

वस्तुत: यह देश का पहला राष्ट्रीय आंदोलन था, जिसने समाज के सभी वर्गों; जैसे—किसानों, शिक्षकों, छात्रों, महिलाओं और व्यापारियों को साथ लाने का काम किया। इसे वास्तविक जनाधार प्राप्त हुआ, क्योंकि यह तेजी से देश के सभी हिस्सों में फैल गया। इस आंदोलन ने लोगों में राष्ट्रीय एकता का भाव जगाया एवं देश की आजादी के लिए त्याग करने की भावना को जागृत किया।

7. सविनय अवज्ञा आंदोलन किन परिस्थितियों में प्रारम्भ किया गया? इसका क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर सविनय अवज्ञा आंदोलन—सविनय अवज्ञा का अर्थ है-विनम्रतापूर्वक आज्ञा या कानून की अवहेलना करना। सविनय अवज्ञा गाँधीजी के आंदोलनों की विशेषता रही है। इसके अन्तर्गत विनम्रता तथा अहिंसक होकर सरकारी कानूनों का उल्लंघन किया

जाता है। वर्ष 1930 में महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ किया था। इसके लिए उन्होंने नमक सत्याग्रह की शुरुआत की। महात्मा गाँधी के द्वारा 12 मार्च, 1930 को ऐतिहासिक नमक सत्याग्रह शुरू करने का निश्चय किया गया। उन्होंने 12 मार्च को साबरमती आश्रम से अपने 78 समर्थकों के साथ दाण्डी के लिए पदयात्रा प्रारम्भ की। 6 अप्रैल को गाँधीजी ने नमक बनाकर कानून तोड़ा।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के कारण

सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ करने के पीछे निम्नलिखित कारण थे, जो इस प्रकार हैं—

- ब्रिटिश सरकार ने नेहरू रिपोर्ट को अस्वीकृत कर भारतीयों के लिए संघर्ष के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं छोड़ा।
- देश की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई थी। विश्वव्यापी आर्थिक महामन्दी से भारत भी अछूता नहीं रहा। इस कारण किसानों व मजदूरों की दशा अत्यधिक शोचनीय हो गई थी।
- ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध वर्ष 1928 में गुजरात के बारदोली में सरदार पटेल के नेतृत्व में एक सफल सत्याग्रह किया गया, जिसमें किसानों ने सरकार को भूमि कर देने से मना कर दिया था। यह आंदोलन सफल रहा, जिसने कांग्रेस का मनोबल बढ़ाया।
- मेरठ षड्यन्त्र केस के अन्तर्गत वर्ष 1929 में सरकार ने कम्युनिस्ट नेताओं को गिरफ्तार कर उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया, जिस कारण लोगों में क्रोध की भावना फैल रही थी। ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में वर्ष 1929 में पारित पूर्ण स्वराज्य की माँग को ठुकरा दिया था। अत: इस परिस्थिति में आंदोलन का मार्ग अपरिहार्य हो गया था।
- ब्रिटिश सरकार डोमिनियन स्टेट्स देने तथा इसके लिए संविधान बनाने हेतु गोलमेज सम्मेलन के आयोजन से पीछे हट गई थी। परिणामस्वरूप देश का वातावरण तेजी से ब्रिटिश सरकार विरोधी होता गया। गाँधीजी ने इस अवसर का लाभ उठाकर इस विरोध को सविनय अवज्ञा आंदोलन की ओर मोड़ दिया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रारम्भ

सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरम्भ 12 मार्च, 1930 को प्रसिद्ध दाण्डी मार्च के साथ आरम्भ हुआ। इस कार्यक्रम के अनुसार गाँधीजी को साबरमती आश्रम से 240 किमी दूर स्थित दाण्डी समुद्र तट पर नमक कानून का उल्लंघन करना था। 6 अप्रैल, 1930 को गाँधीजी ने दाण्डी पहुँचकर समुद्र तट से थोड़ा-सा नमक उठाकर शान्तिपूर्ण और अहिंसात्मक ढंग से नमक कानून का उल्लंघन किया।

इस आंदोलन में हजारों लोगों ने भाग लिया। इस आंदोलन को समाप्त करने के लिए अंग्रेजों के द्वारा दमन चक्र चलाया गया। कांग्रेस को गैर-कानूनी संस्था घोषित कर दिया गया तथा 15 मई को गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया।

इसी बीच तत्कालीन वायसराय एवं गाँधीजी के मध्य समझौता हुआ। समझौते के अनुसार गाँधीजी ने दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेना एवं आंदोलन बन्द करना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार वर्ष 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन को कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया।

आंदोलन की प्रगति (वर्ष 1930-33) **तथा समाप्ति**

लन्दन में 7 सितम्बर, 1931 से दिसम्बर, 1931 तक आयोजित द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में गाँधीजी ने भाग लिया। सरकार द्वारा सम्मेलन में भारतीयों की स्वतन्त्रता की माँग पर किसी भी प्रकार का निर्णय नहीं लिया जा सका। 28 दिसम्बर, 1931 को गाँधीजी भारत लौट आए तथा 29 दिसम्बर, 1931 को कांग्रेस कार्यकारिणी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन फिर से प्रारम्भ करने का निर्णय लिया, लेकिन सरकार के दमन चक्र के कारण अन्तत: 14 जुलाई, 1934 को आंदोलन वापस ले लिया गया।

आंदोलन के परिणाम

सविनय अवज्ञा आंदोलन के निम्नलिखित परिणाम हुए—

- इस आंदोलन में बड़ी संख्या में महिलाओं ने भी भाग लिया। अत: महिलाओं को सक्रिय रूप से राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने में यह आंदोलन उल्लेखनीय रहा। किसानों एवं मजदूर वर्ग ने भी इसमें व्यापक भागीदारी निभाई।
- सरकार के कठोर दमन के बाद भी लोगों ने हिंसा का सहारा नहीं लिया, जिससे गाँधीजी के अहिंसा सिद्धान्त की वैश्विक स्तर पर सराहना हुई।
- विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से विदेशी कपड़ों के आयात में कमी आई, जिस कारण उद्योगपति वर्ग का सरकार पर सुधारों हेतु दबाव पड़ा।
- लोगों में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ, जिस कारण वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में लोगों का अभूतपूर्व उत्साह देखने को मिला।

8. महात्मा गाँधी द्वारा चलाए गए किन्हीं दो आंदोलनों के बारे में विस्तारपूर्वक लिखिए।

उत्तर महात्मा गाँधी द्वारा चलाए गए दो प्रमुख आंदोलन असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन व भारत छोड़ो आंदोलन थे।

असयोग आंदोलन—सविनय अवज्ञा आंदोलन के दीर्घ उत्तरीय प्रश्न संख्या 7 का अध्ययन कीजिए।

भारत छोड़ो आंदोलन

8 अगस्त, 1942 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने **बम्बई** (मुम्बई) के ग्वालिया टैंक मैदान में हुए अधिवेशन में ऐतिहासिक भारत छोड़ो प्रस्ताव पास किया गया। इस आंदोलन की सफलता के लिए महात्मा गाँधी ने लोगों को 'करो या मरो' का मन्त्र दिया तथा ब्रिटिश सरकार को तत्काल भारत छोड़कर चले जाने की चेतावनी दी। 8 अगस्त को रात्रि में भारत छोड़ो प्रस्ताव पास होते ही आंदोलन की शुरुआत हो गई। ब्रिटिश सरकार ने भी तत्काल प्रतिक्रिया करते हुए महात्मा गाँधी समेत कांग्रेस के लगभग सभी शीर्ष नेताओं को गिरफ्तार कर नजरबन्द कर दिया या जेल में डाल दिया। अत: यह आंदोलन एक प्रकार से नेतृत्वविहीन, अराजक एवं हिंसक हो गया। आंदोलन के समय अनेक स्थानों; जैसे—बलिया, सतारा एवं तामलुक आदि स्थानों पर ब्रिटिश अधिकारियों को हटाकर समानान्तर सरकारें भी स्थापित की गईं। सरकार ने बल प्रयोग कर आंदोलन का दमन करना प्रारम्भ कर दिया। हालाँकि आंदोलन का दमन कर दिया गया, किन्तु इस आंदोलन ने ब्रिटिश राज की जड़ें हिलाकर रख दीं।

❑❑❑

3

भूमण्डलीय विश्व का बनना

↘ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कॉर्न लॉ से क्या आशय है? कॉर्न लॉ के उन्मूलन के किन्हीं तीन प्रभावों को बताइए।

उत्तर जमींदारों के दबाव के कारण सरकार ने कॉर्न (मक्का) के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया। इस कानून को सामान्यत: कॉर्न लॉ के नाम से जाना जाता था। कॉर्न लॉ के उन्मूलन के तीन प्रभाव निम्नलिखित हैं

(i) भोजन के मूल्य में गिरावट आने से ब्रिटेन में खपत में वृद्धि हो गई।

(ii) 19वीं शताब्दी के मध्य से ब्रिटेन में तेजी से औद्योगिक वृद्धि हुई और आय भी बढ़ गई तथा भोजन के लिए अधिक माँग में भी बढ़ोतरी हुई।

(iii) कृषि संबंधी उत्पादों का निर्यात करने के लिए नए रेलवे स्टेशनों व बंदरगाहों की जरूरत पड़ी।

2. मांस परिवहन में तकनीक की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर रेफ्रिजरेटिड जहाजों के विकास ने खराब होने वाले खाद्य पदार्थों को लंबी दूरी तक पहुँचाने में काफी सहायता की। जमा हुआ मांस अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड से विभिन्न यूरोपीय देशों तक निर्यात किया गया।

इससे यूरोपीय बाजार में मांस का मूल्य कम हो गया
और मांस (कभी-कभी मक्खन और अंडा) निर्धनों के लिए प्रतिदिन का आहार बन गया। इस बेहतर आजीविका की स्थिति ने देश के अंदर सामाजिक शांति उत्पन्न
कर दी और उपनिवेशों में साम्राज्यवाद को समर्थन मिला।

3. कॉर्न लॉ के समाप्त होने के बाद ब्रिटेन में खाद्य समस्या का समाधान कैसे हुआ? व्याख्या कीजिए।

उत्तर कॉर्न लॉ के समाप्त होने के बाद ब्रिटेन में खाद्य समस्या का समाधान निम्नलिखित रूपों में हुआ।

- **खाद्य पदार्थों का पुन: आयात**—कॉर्न लॉ के प्रतिबंध के खत्म होते ही ब्रिटेन अपने देश में उत्पादन करने की अपेक्षा सस्ते दामों पर खाद्यान्नों का आयात करने लगा। यह आयात व्यापारियों द्वारा पूर्वी यूरोप, रूस, अमेरिका तथा ऑस्ट्रेलिया आदि देशों से सस्ते दामों पर होता था।
- **वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था**—1890 ई. तक एक वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था सामने आ चुकी थी। इस घटनाक्रम के साथ ही श्रम विस्थापन रुझानों, पूँजी प्रवाह, पारिस्थितिकी और तकनीक में गहरे बदलाव आ चुके थे।
- **केनाल कॉलोनियों से खाद्य पदार्थों का आयात**—ब्रिटिश भारतीय सरकार ने अर्द्ध-रेगिस्तानी परती जमीनों को उपजाऊ बनाने के लिए नहरों का जाल बिछा दिया जिससे निर्यात के लिए गेहूँ और कपास की खेती की जा सके।

4. भारत और ब्रिटेन के मध्य व्यापारिक संबंधों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 19वीं शताब्दी में भारतीय बाजार में ब्रिटिश निर्माणकर्ताओं की अधिकता हो गई। खाद्यान्न और कच्चा माल, जो भारत से निर्यात किया जाता था, उसमें ब्रिटेन में वृद्धि हो गई। भारत द्वारा ब्रिटेन को भेजे जाने वाले माल की अपेक्षा ब्रिटेन से भारत भेजे जाने वाले माल की दरें ऊँची होती थीं। इस प्रकार ब्रिटेन भारत के साथ व्यापार अधिशेष में रहता था और इस अधिशेष का प्रयोग दूसरे देशों के साथ व्यापार में होने वाले घाटे की भरपाई करने में करता था। ब्रिटेन के इस व्यापार अधिशेष ने घरेलू खर्चों में सहायता की; जैसे—ब्रिटिश अधिकारियों व व्यापारियों को भेजे जाने वाले व्यक्तिगत धन के लिए तथा बाहरी ऋण के ब्याज का भुगतान करने और भारत में ब्रिटिश अधिकारियों की पेंशन के लिए।

5. भारत से अनुबंधित मजदूरों के प्रवास को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर अनुबंधित मजदूर से तात्पर्य किसी नियोक्ता के लिए एक निश्चित समय के लिए विशिष्ट राशि पर अनुबंध के अंतर्गत कार्य करने वाले बँधुआ मजदूर से है, जिन्हें घर या नए देशों में ही भुगतान किया जाता था। 19वीं शताब्दी में लाखों भारतीय व चीनी मजदूर बागानों, खदानों और विश्व की विभिन्न निर्माणकारी परियोजनाओं में कार्य करने के लिए गए। अधिकांश भारतीय अनुबंधित कर्मचारी पूर्वी उत्तर प्रदेश के वर्तमान राज्यों से, बिहार, मध्य भारत और तमिलनाडु से आए।

19वीं शताब्दी के मध्य में भारत के इन राज्यों में कई सामाजिक परिवर्तन हुए; जैसे—कुटीर उद्योगों का पतन हो गया, जमीन का किराया बढ़ गया और खदानों तथा बागानों के लिए जमीन को साफ कर दिया गया। इन सब कारणों ने गरीबों को कार्य की तलाश में प्रवास करने के लिए बाध्य कर दिया।

6. 19वीं शताब्दी में सांस्कृतिक दृश्य में हुए परिवर्तनों की विशेषताओं को बताइए।

उत्तर 19वीं शताब्दी में अनुबंध को 'दासता की एक नई प्रथा' के रूप में वर्णित किया गया। यद्यपि जीवन जीने और कार्य करने की दशाएँ कठोर थीं, फिर भी कर्मचारियों ने जीने के अपने स्वयं के तरीके तलाश लिए। उन्होंने अपने विभिन्न सांस्कृतिक रूपों का मिश्रण करके मनोरंजन के अन्य रूपों तथा त्योहारों के नए रूपों का विकास किया।

त्रिनिदाद में रियटस कार्निवाल (होसे), रस्ताफरियानवाद (जमैका की एक आध्यात्मिक विचारधारा) का विरोधी धर्म, जिसे जमैका के गायक बॉब मार्ले, त्रिनिदाद और गुयाना के चटनी संगीत ने प्रसिद्ध बना दिया आदि सभी सांस्कृतिक सम्मिश्रण के ही उदाहरण हैं।

7. युद्धोत्तर निर्माण को आकृति प्रदान करने वाले दो प्रभाव कौन-से थे?

उत्तर यूरोप और एशिया के विशाल भाग और कई शहर नष्ट हो गए थे। पुनर्निर्माण का कार्य लंबा और कठिन था।

दो महत्त्वपूर्ण प्रभाव, जिन्होंने युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण को आकृति प्रदान की, निम्न थे—

(i) युद्ध के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व की प्रमुख राजनीतिक व आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा।

(ii) सोवियत संघ महाशक्ति बन गया। इसने नाजी जर्मनी को हरा दिया। इसने स्वयं को कृषि देश से विश्व शक्ति में रूपांतरित कर लिया और यह कम्युनिस्ट गुट के नेता के रूप में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा खतरा बन गया।

8. युद्ध के पश्चात् अर्थशास्त्रियों और राजनीतिज्ञों ने कौन-से दो सबक तैयार किए?

उत्तर युद्ध के आर्थिक अनुभवों से अर्थशास्त्रियों और राजनीतिज्ञों ने दो मुख्य सबक तैयार किए

(i) पहला सबक—वृहत उत्पादन पर आधारित किसी औद्योगिक समाज को व्यापक उपभोग की आवश्यकता थी। वृहत उपभोग के लिए उच्च और स्थायी आय की आवश्यकता थी तथा स्थायी आय के लिए पूर्ण और स्थिर रोजगार की आवश्यकता थी। इसके लिए सरकार को आवश्यक कदम उठाने चाहिए थे।

(ii) दूसरा सबक—एक देश के दूसरे देश से आर्थिक संपर्कों से संबंधित था। पूर्ण रोजगार का लक्ष्य पाया जा सकता था, यदि वस्तुओं, पूँजी और श्रम के प्रवाहों को नियंत्रण करने की शक्ति केवल सरकार के पास होती।

9. यूरोपियों के आगमन से पूर्व अफ्रीकी लोगों के जीवन की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर यूरोपियों के आगमन से पूर्व अफ्रीकी लोगों के जीवन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- इस समय अफ्रीका की जनसंख्या यूरोप की तुलना में कम तथा भूमि विस्तार अपेक्षाकृत बहुत अधिक था।
- यहाँ कई शताब्दियों तक लोगों का जीवन जमीन एवं पालतू पशुओं के सहारे ही चलता रहा। यहाँ काम के बदले वेतन का चलन नहीं था।
- यहाँ अधिकांश किसान थे, जिन्हें आधुनिक वेतन का ज्ञान नहीं था। इनका मुख्य व्यवसाय कृषि तथा पशुपालन था। ग्रामीण परिवार आत्म निर्भर थे।

10. 19वीं शताब्दी में हजारों लोग यूरोप से भागकर अमेरिका क्यों आ गए थे?

उत्तर 19वीं शताब्दी में हजारों लोग यूरोप से भागकर अमेरिका आ गए, इसके पीछे निम्नलिखित कारण थे—

- 19वीं शताब्दी तक यूरोप में गरीबी और भूख का साम्राज्य था। शहरी क्षेत्रों में भीड़ अधिक थी तथा संक्रामक रोगों का प्रकोप था।
- इस समय यूरोप में धार्मिक विवादों का बोलबाला था, धार्मिक असंतुष्टों को दंडित किया जा रहा था। यही कारण था कि बहुत-से लोग यूरोप छोड़कर अमेरिका में प्रवास करने लगे।

11. 19वीं शताब्दी के दौरान ब्रिटेन में जमीन को साफ कराने की आवश्यकता क्यों पड़ी? उल्लेख कीजिए।

उत्तर 19वीं शताब्दी के दौरान ब्रिटेन में जमीन को साफ कराने की आवश्यकता के निम्नलिखित कारण थे—

- **खाद्यान्नों की बढ़ती माँग**—ब्रिटेन की बढ़ती जनसंख्या के कारण खाद्यान्नों की माँग बढ़ने लगी जिसकी पूर्ति के लिए वहाँ की जमीनों को साफ करवाना पड़ा जिससे कृषि को बढ़ाया जा सके।
- **रेलवे/परिवहन की आवश्यकता**—कृषि के लिए जमीनों को साफ कर देना ही काफी नहीं था। इन खेतिहर क्षेत्रों को बंदरगाहों से जोड़ने के लिए रेलवे की आवश्यकता थी। यही कारण था कि नई रेलवे लाइने बिछाने के लिए जमीनों को साफ करवाना पड़ा।
- **नए बंदरगाह का निर्माण**—अधिक की तादाद में माल ढुलाई के लिए नई गोदियाँ बनाना तथा पुरानी गोदियों का फैलाव किया गया। इससे कृषि व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया गया।

12. 'व्यापार अधिशेष' को परिभाषित कीजिए। भारत के साथ ब्रिटेन को व्यापार अधिशेष क्यों प्राप्त था?

उत्तर 'व्यापार अधिशेष' एक ऐसी स्थिति है जिसके अंतर्गत निर्यात की कीमत आयात से अधिक होती है। भारत के साथ ब्रिटेन को व्यापार अधिशेष प्राप्त होता था, जिसके निम्नलिखित कारण थे—

- भारत के ब्रिटेन के निर्यात की कीमत भारत से ब्रिटिश आयात की कीमत से कहीं अधिक होती थी।
- भारत में ब्रिटेन के व्यापार से जो अधिशेष प्राप्त होता था, उससे तथा कथित 'होम चार्जेज' का निपटारा होता था। भारतीय बाहरी कर्जों पर ब्याज भी इससे ही दिया जाता था।
- भारत में कार्य कर चुके ब्रिटिश अफसरों को पेंशन भी दी जाती थी। अत: इन्हीं कारणों से भारत के साथ ब्रिटेन को व्यापार अधिशेष प्राप्त था।

13. ''भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के चिह्न वर्तमान युग से पूर्व भी दिखाई देते रहे।'', इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर इतिहास के पन्नों को उलटने पर यह पता चलता है कि प्रत्येक मानव समाज एक-दूसरे समाज के निकट आता रहा है। प्राचीन काल से लोग लंबी दूरी की यात्रा करते थे। इनमें यात्री, व्यापारियों, संत, पुजारी और तीर्थ यात्री आदि सम्मिलित थे।

ये लोग ज्ञान तथा अवसरों की प्राप्ति तथा आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति के लिए यात्राएँ करते थे। अपनी यात्राओं में ये लोग तरह-तरह की चीजें, पैसा, मूल्य-मान्यताएँ, हुनर, विचार, आविष्कार और यहाँ तक कि कीटाणु और बीमारियाँ भी साथ लेकर चलते रहे थे।

3,000 ईसा पूर्व में समुद्री तटों पर होने वाले व्यापार के माध्यम से सिंधु घाटी की सभ्यता उन इलाकों से भी जुड़ी हुई थी जिसे आज हम पश्चिमी एशिया के नाम से जानते हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि आधुनिक युग से सैकड़ों वर्ष पूर्व से ही विश्व के विभिन्न हिस्सों के लोग एक-दूसरे से जुड़े रहे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कॉर्न लॉ को भंग करने के क्या परिणाम थे?

उत्तर कॉर्न लॉ कानून को भंग करने के निम्नलिखित परिणाम हुए—

- भोजन के मूल्य में गिरावट आने से ब्रिटेन में खपत में वृद्धि हो गई। 19वीं शताब्दी के मध्य से ब्रिटेन में तेजी से औद्योगिक वृद्धि हुई और आय भी बढ़ गई तथा भोजन के लिए अधिक माँग में भी बढ़ोतरी हुई।
- कृषि संबंधी उत्पादों का निर्यात करने के लिए नए रेलवे स्टेशनों व बंदरगाहों की जरूरत पड़ी।
- कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि होने से अत्यधिक आवासों व प्रबंधनों की जरूरत हुई। इन सभी गतिविधियों के लिए पूँजी और श्रम की आवश्यकता थी।
- लंदन जैसे वित्तीय केंद्रों से पूँजी का प्रवाह होने लगा।
- श्रम की माँग के कारण 19वीं शताब्दी में लाखों लोग बेहतर जीवन की तलाश में यूरोप से अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया की ओर प्रवास करने लगे।
- 1890 ई. से वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था का विकास हुआ।
- कभी-कभी रेलों या जहाजों द्वारा हजारों मील से भोजन आता था।
- यह नाटकीय परिवर्तन यद्यपि छोटे पैमाने पर पश्चिमी पंजाब में भी हुआ। भारत में ब्रिटिश शासकों ने निर्यात हेतु गेहूँ और कपास में बढ़ोतरी करने के लिए उपजाऊ कृषि भूमि में सिंचाई का विकास कर पंजाब को रूपांतरित कर दिया। क्षेत्रीय वस्तुओं का विकास इतनी तेजी से हुआ कि 1820 से 1914 ई. के बीच विश्व व्यापार 25 से 40 गुना बढ़ गया।

2. ''अनुबंधित श्रमिकों ने अपने जीवन की अभिव्यक्ति के अपने ढंग खोज लिए थे।'' कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर अनुबंधित मजदूर से तात्पर्य किसी नियोक्ता के लिए एक निश्चित समय के लिए विशिष्ट राशि पर अनुबंध के अंतर्गत कार्य करने वाले बँधुआ मजदूर से है, जिन्हें घर या नए देशों में ही भुगतान किया जाता था। 19वीं शताब्दी में लाखों भारतीय व चीनी मजदूर बागानों, खदानों और विश्व की विभिन्न निर्माणकारी परियोजनाओं में कार्य करने के लिए गए। अधिकांश भारतीय अनुबंधित कर्मचारी पूर्वी प्रदेश के वर्तमान राज्यों से, बिहार, मध्य भारत और तमिलनाडु से आए। 19वीं शताब्दी के मध्य में भारत के इन राज्यों में कई सामाजिक परिवर्तन हुए; जैसे—कुटीर उद्योगों का पतन हो गया, जमीन का किराया बढ़ गया और खदानों तथा बागानों के लिए जमीन को साफ कर दिया गया। इन सब कारणों ने गरीबों को कार्य की तलाश में प्रवास करने के लिए बाध्य कर दिया।

भारतीय अनुबंधित प्रवासियों का गंतव्य अर्थात् स्थान—भारतीय अनुबंधित प्रवासियों के मुख्य गंतव्य कैरीबियाई द्वीप मुख्यत: त्रिनिदाद, गुयाना तथा सूरीनाम, मॉरिशस और फिजी थे। इसके अतिरिक्त उनके स्थानीय आवास के आस-पास के अन्य स्थान थे। तमिल प्रवासी सीलोन और मलाया गए। कुछ अनुबंधित कर्मचारी आसाम के चाय बागानों में नियुक्त किए गए थे।

अनुबंधित मजदूरों की स्थिति—इन मजदूरों की नियुक्ति नियोक्ता से जुड़े और छोटे-छोटे कमीशन पाने वाले एजेंटों के द्वारा की गई थी। एजेंट अनुबंधित मजदूरों से उनकी बेहतर आजीविका दशाओं का, अत्यधिक धन और अन्य सुविधाओं का वादा करके उनकी नियुक्ति करते थे, तथापि जब वे बागानों में पहुँचते थे, तो वहाँ वे विभिन्न परिस्थितियाँ पाते थे, जिनकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

3. 19वीं सदी की विश्व अर्थव्यवस्था को आकार देने में प्रौद्योगिकी की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 19वीं सदी की विश्व अर्थव्यवस्था को आकार देने में तकनीक की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है, जिसे निम्नलिखित कारणों द्वारा समझा जा सकता है—

- **विश्व अर्थव्यवस्था में तकनीकी आविष्कार**—रेलवे, भाप के जहाज, टेलीग्राफ आदि महत्त्वपूर्ण आविष्कार थे, जिनके बिना 19वीं सदी की विश्व अर्थव्यवस्था को आकार नहीं दिया जा सकता था।
- **बाजारों की परस्पर संबद्धता**—इस समय के परिवहन में नए निवेश व सुधारों से तीव्रगामी रेलगाड़ियाँ, हल्की बोगियाँ और विशालकाय जलपोतों को कम खर्च में कृषि उत्पाद एवं अन्य उत्पादों को खेतों से दूर-दूर के बाजारों में सुगमता से पहुँचाने में सहायता की।
- **मांस के व्यापार पर प्रभाव**—1870 के दशक तक अमेरिका से यूरोप को मांस का निर्यात नहीं किया जाता था, अपितु जीवित जानवर भेजे जाते, जिन्हें यूरोप ले जाकर काटा जाता था। जीवित जानवर जलपोतों में अधिक जगह घेरते थे। समुद्री यात्रा में कई पशु मर जाते, बीमार हो जाते, भार कम हो जाता या फिर अखाद्य बन जाते। अत: मांस के दाम बहुत ऊँचे और निर्धन यूरोपियों की पहुँच से परे थे। उच्च कीमतों के कारण माँग तथा उत्पादन बहुत कम था, परंतु रेफ्रिजरेशन युक्त जलपोतों ने मांस को एक क्षेत्र से दूसरे तक परिवहन करना सुगम बना दिया।
- **सामाजिक शांति और साम्राज्यवाद**—रेफ्रिजरेशन की तकनीक के कारण न केवल समुद्री यात्रा में आने वाला खर्च कम हो गया, बल्कि यूरोप में मांस के दाम भी गिर गए।
- **उपनिवेशवाद**—विश्व बाजारों को आपस में जोड़ने में तकनीक ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसके फलस्वरूप उपनिवेशवाद को बढ़ावा मिला।

4. अथवा प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान विश्व के आर्थिक हालातों के विषय में संक्षेप में लिखिए।

उत्तर इस महायुद्ध से पूर्व ब्रिटेन दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी, किंतु युद्ध के पश्चात् सबसे लंबा संकट भी इसे ही झेलना पड़ा।

- **भारत और जापान से प्रतिस्पर्द्धा** (विदेशी कर्ज)—इस युद्ध के समय भारत और जापान में उद्योग विकसित हो रहे थे। ऐसे में ब्रिटेन को भारतीय बाजार में पहले वाली स्थिति को पाना मुश्किल हो गया था। इसके अतिरिक्त जापान से भी मुकाबला करना था। युद्ध में हुए खर्चों को पूरा करने के लिए ब्रिटेन ने जो अमेरिका से कर्ज लिया था, उसकी भरपाई भी करना आवश्यक

था। ऐसे में प्रथम महायुद्ध के पश्चात् ब्रिटेन पर भारी कर्जों का दबाव था।

- **आर्थिक उछाल का अंत**—इस महायुद्ध के कारण विश्व में आर्थिक उछाल का माहौल उत्पन्न हो गया था, क्योंकि माँग और उत्पादन तथा रोजगार में बढ़ोतरी हुई, किंतु युद्ध के पश्चात् जब यह उछाल शांत हुआ तो उत्पादन गिरने लगा तथा बेरोजगारी बढ़ने लगी। वर्ष 1921 में ब्रिटेन में हर पाँच में से एक ब्रिटिश मजदूर बेरोजगार था।
- **व्यय में कटौती**—ब्रिटिश सरकार ने अब भारी भरकम युद्ध संबंधी व्यय में भी कटौती शुरू कर दी, जिससे शांतिकालीन करों के सहारे ही उनकी भरपाई की जा सके।
- **ब्रिटिश अर्थव्यवस्था का कमजोर होना**—युद्ध के समय तक पूर्वी यूरोप गेहूँ की आपूर्ति का एक बड़ा केंद्र था, किंतु युद्ध के दौरान तो सारी कृषि आधारित अर्थव्यवस्थाएँ भी संकट में रही। केवल कनाडा, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में गेहूँ की पैदावार अचानक बढ़ने लगी। युद्ध की समाप्ति के पश्चात् पूर्वी यूरोप में गेहूँ की पैदावार सुधरने लगी और बाजारों में इसकी अधिकता हो गई। अनाज की कीमतें गिरने लगी, जिससे किसान कर्ज में डूबने लगे।

5. आर्थिक संकट की अवधि के बाद 1920 के दशक के प्रारंभ में संयुक्त राज्य अमेरिका की अर्थव्यवस्था फिर से मजबूत हो गई। इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर आर्थिक संकट की संक्षिप्त अवधि के बाद 1920 के दशक के प्रारंभ में संयुक्त राज्य अमेरिका की अर्थव्यवस्था फिर से मजबूत होनी शुरू हो गई।

कारों का प्रथम वृहत उत्पादन

- कार निर्माता हेनरी फोर्ड ने डेट्रॉइट में अपने नए कारखाने को 'असेंबली लाइन' में शुरू किया। उन्होंने महसूस किया कि यह विधि वाहनों को उत्पन्न करने का तीव्र व सस्ता माध्यम प्रदान करेगी।
- इस असेंबली लाइन ने किसी भी एक कार्य को अनवरत तथा मशीन की तरह करने के लिए कर्मचारी को बाध्य किया। काम की रफ्तार कन्वेयर बेल्ट की रफ्तार से तय होती थी, परिणामस्वरूप हेनरी फोर्ड की कारें
  तीन मिनट के अंतराल में असेंबली लाइन से निकलने लगीं।
- T-मॉडल नामक कार वृहत उत्पादन पद्धति से बनी देश की पहली कार थी। फोर्ड ने इस कार्य को करने के लिए कर्मचारियों को उच्च वेतन दिया। तीव्र उत्पादन के माध्यम से फोर्ड ने इस लागत को वापिस प्राप्त कर लिया था। अमेरिका में वर्ष 1919 में कार का उत्पादन 20 लाख था, परंतु वर्ष 1929 में यह 50 लाख हो गया।
- वृहत उत्पादन से इंजीनियरिंग आधारित सामानों की लागत व मूल्य कम हो गए; जैसे—रेफ्रिजरेटर (फ्रीज), वाशिंग मशीन, रेडियो, ग्रामोफोन, संगीत आदि। आवास और उपभोक्ता उछाल ने अमेरिका में रोजगार और आय के क्षेत्र बड़ी संख्या में पैदा कर दिए, परिणामस्वरूप यह सबसे बड़ा विदेशी कर्जदाता बन गया।

❑❑❑

4

औद्योगीकरण का युग

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 1760 में ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में कपड़ा निर्यात के विस्तार की इच्छुक क्यों थी? कोई तीन कारण बताएँ।

उत्तर 1760 के दशक के पश्चात् ईस्ट इंडिया कंपनी की सत्ता सुदृढ़ होने लगी थी। इस समय तक भारतीय कपड़ों के निर्यात में किसी प्रकार की गिरावट नहीं आई थी। ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा भारत में निर्यात विस्तार के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

- भारत में अब तक कपड़ा निर्यात में किसी प्रकार की गिरावट नहीं दर्ज हुई थीं।
- ब्रिटिश सूती कपड़ों का उद्योग अभी तक सीमित अवस्था में था, उनका विस्तार नहीं हुआ था।
- यूरोप में भारत में बने महीन कपड़ों की माँग अधिक थी। यही कारण था कि ईस्ट इंडिया कंपनी भारत से होने वाले कपड़ा निर्यात को ही फैलाना चाहती थी।

2. उन यूरोपीय प्रबंधन एजेंसियों के नाम बताएँ, जो भारतीय उद्योगों के विशाल क्षेत्रक को नियंत्रित करती थीं। उनके द्वारा किए गए तीन प्रकार्य बताएँ।

उत्तर भारतीय उद्योग के विशाल क्षेत्रक को नियंत्रित करने वाली यूरोपीय प्रबंधन की प्रमुख तीन एजेंसियाँ थीं—

(i) बर्ड हीगलर्स एंड कंपनी (ii) एंड्रयू यूल

(iii) जार्डिन स्किनर एंड कंपनी

ये एजेंसियाँ निम्नलिखित रूपों में कार्य करती थी

- ये एजेंसियाँ व्यापार हेतु पूँजी का प्रसार करती थी।
- इन एजेंसियों ने कई संयुक्त भंडारण कंपनियाँ भी स्थापित की तथा उसका प्रबंधन भी स्वयं किया।
- इन कंपनियों के लिए भारतीय निवेशक भी पूँजी उपलब्ध कराते थे, किंतु निवेश एवं व्यापारिक निर्णय का अधिकार केवल यूरोपीय एजेंसियों का ही होता था।

3. 19वीं सदी में ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय व्यापारियों पर लगाए गए प्रतिबंधों की चर्चा कीजिए।

उत्तर 19वीं सदी में ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय व्यापारियों पर लगाए गए प्रतिबंध का विवरण निम्नलिखित है

- भारतीय व्यापारियों के लिए व्यापार का क्षेत्र सीमित कर दिया गया।
- भारतीय व्यापारी स्वविर्निर्माण की वस्तुओं का यूरोपीय क्षेत्रों में व्यापार नहीं कर सकते थे।
- ये लोग अंग्रेजों द्वारा ही खाद्यान्न, गेहूँ, नील, अफीम तथा कच्चे कपास का निर्यात कर सकते थे।
- भारतीय व्यापारियों को शिपिंग के व्यवसाय से भी हटा दिया गया।

4. आदि-औद्योगीकरण के युग में निर्धन किसानों तथा कारीगरों ने किस प्रकार लाभ कमाया था?

उत्तर आदि-औद्योगीकरण ने ग्रामीण किसानों तथा कारीगरों को निम्नलिखित रूपों में प्रभावित किया

- **पारिवारिक श्रम का उपयोग**—व्यापारियों के लिए काम करने वाले किसान तथा कामगार (कारीगर) ग्रामीण क्षेत्रों से होते थे। इनका निवास क्षेत्र भी ग्राम ही होते थे। घर के सभी सदस्य छोटे-छोटे खेतों पर खेती भी करते थे। सभी उत्पादन क्षेत्रों में पूरा परिवार लगा होता था।

  पारिवारिक श्रम का उपयोग व्यापारियों के लिए काम करने वाले किसान तथा कामगार ग्रामीण क्षेत्रों से होते थे। इनका निवास क्षेत्र भी ग्राम ही होते थे। घर के सभी सदस्य छोटे-छोटे खेतों पर खेती भी करते थे। सभी उत्पादन क्षेत्रों में पूरा परिवार लगा होता है।
- **आय की प्राप्ति**—आदि-औद्योगिक उत्पादन की आय से कामगारों, छोटे ग्रामीण किसानों को उनकी कृषि आय (जोकि नाममात्र रही) को सुदृढ़ करने का साधन मिल गया। अब ये लोग कृषि के साथ श्रम करके भी अपनी पारिवारिक आय को बढ़ाने लगे थे। परिवार का प्रत्येक सदस्य समय-समय पर कृषि तथा उत्पादन कार्यों में बराबर का सहयोग करने लगा था।

5. व्यावसायिक विनिमय प्रणाली के रूप में आदि-औद्योगीकरण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर आदि-औद्योगिक उत्पादन से प्राप्त आय ने कृषि के कारण किसानों की कम होती आय में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। अब वे अपने पूरे परिवार के श्रम संसाधनों का उपयोग कर सकते थे। एक व्यापारी पहले स्टेप्लर (वह व्यक्ति जो रेशों के आधार पर ऊन छाँटता था) से ऊन खरीदता था और बाद में उसकी स्पिनरों को आपूर्ति करता था।

सूत कातने पर जो धागा मिलता था, उसे बुनकरों, फुलर्ज (वह व्यक्ति जो कपड़े को समेटता था) और रंगसाजों तक पहुँचाया जाता था। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बेचने से पूर्व कपड़ों की फिनिशिंग लंदन में होती थी, जिसके परिणामस्वरूप लंदन को फिनिशिंग सेंटर के रूप में पहचाना जाने लगा था।

यह आदि-औद्योगिक व्यवस्था व्यावसायिक आदान-प्रदान के नेटवर्क का हिस्सा थी। आदि-औद्योगिक व्यवस्था की असामान्य विशेषता यह थी कि सामानों का उत्पादन कारखानों के विपरीत घरों में होता था।

6. 1900 और 1940 के बीच हथकरघे के कपड़े के उत्पादन में विस्तार के कारण क्या थे?

उत्तर 1900 और 1940 के बीच हथकरघे से कपड़ों के उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई जिसके निम्नलिखित कारण थे

- अमेरिकी गृहयुद्ध के पश्चात् फैक्ट्री उद्योगों में बढ़ोतरी हुई, लेकिन अर्थव्यवस्था में यह उद्योग बहुत छोटे थे।
- पंजीकृत फैक्ट्रियों में कुल औद्योगिक श्रम शक्ति का बहुत छोटा हिस्सा ही काम करता था। यह संख्या वर्ष 1911 में 5% और 1931 में 10% थी।
- 20वीं सदी में हथकरघों पर बने कपड़े के उत्पादन में लगातार सुधार हुआ । 1900 से 1940 के बीच यह तीन गुना हो चुका था। इस समय तक बुनकर फ्लाई शटल युक्त करघों का उपयोग करने लगे।

7. भारतीय बुनकरों को कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारतीय बुनकरों को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ा

- उनका निर्यात बाजार कम हो गया।
- स्थानीय बाजारों में मैनचेस्टर में बने वस्त्रों की अधिकता होने लगी थी, क्योंकि ये वस्त्र मशीनों के द्वारा बने होने के कारण कम लागत के थे। कम लागत के होने के कारण ही भारतीय बुनकर इनसे प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सकते थे।
- अमेरिकी गृह युद्ध के कारण अमेरिका से कपास का निर्यात बंद हो गया, तो ब्रिटेन, भारत से कच्चे माल का आयात करने लगा था। भारत से कच्चे कपास के निर्यात में आई इस वृद्धि से उसकी कीमत में भी वृद्धि हुई।
- भारतीय बुनकरों को उच्च कीमत पर कच्चा माल क्रय करना पड़ता था, जो एक बड़ी समस्या थी।

8. प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीय बाजार में ब्रिटेन को पहले वाला सम्मान कभी प्राप्त नहीं हो पाया। व्याख्या कीजिए।

उत्तर प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीय बाजार में ब्रिटेन को पहले वाला सम्मान पुन: प्राप्त न हो पाया, जिसके निम्नलिखित कारण थे—

- पहले विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश कारखाने सेना की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए युद्ध संबंधी सामान बनाने में व्यस्त थे। इसलिए भारत में मैनचेस्टर के माल का आयात कम हो गया।
- युद्ध के बाद भारतीय बाजार में मैनचेस्टर को पहले वाला सम्मान कभी प्राप्त नहीं हो पाया। आधुनिकीकरण न कर पाने और अमेरिका, जर्मनी व जापान के मुकाबले कमजोर पड़ जाने के कारण ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था खराब हो गई थी। कपास का उत्पादन बहुत कम रह गया था और ब्रिटेन से होने वाले सूती कपड़े के निर्यात में भारी गिरावट आई।
- उपनिवेशों में विदेशी उत्पादों को हटाकर स्थानीय उद्योगपतियों ने घरेलू बाजारों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया और धीरे-धीरे अपनी स्थिति मजबूत बना ली।

9. 'औद्योगीकरण की प्रक्रिया अपने साथ नवोदित औद्योगिक श्रमिकों के लिए कष्ट भी लेकर आई।' मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर बेरोजगारी के भय के कारण श्रमिक नई प्रौद्योगिकी के विरुद्ध थे। जब ऊन उद्योग में **स्पिनिंग जेनी** मशीन का उपयोग शुरू हुआ, तो हाथ से ऊन कातने वाली महिलाओं ने नई मशीनों को समाप्त कर दिया। उस समय सड़कें, रेलवे, सुरंग, जल निकासी व्यवस्था आदि विकसित हो रहे थे, जिसमें बड़े पैमाने पर रोजगार की आवश्यकता थी। परिवहन उद्योग में कार्यरत मजदूरों की संख्या 1840 के दशक में दोगुना हो गई, जो अगले 30 वर्षों में पुन: दोगुना हो गई थी।

10. ''विज्ञापनों द्वारा ही उपभोक्ता बनते हैं।'' उपयुक्त उदाहरणों से कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर भारत में विज्ञापन की शुरुआत मैनचेस्टर के बने उत्पादों से हुई। जब मैनचेस्टर के उद्योगपतियों ने भारत में कपड़ा बेचना शुरू किया तब वह कपड़ों के बंडलों पर लेबल लगाते थे, जिससे लोगों को कंपनी और जगह का पता चल जाता था। लेबल को वस्तु की गुणवत्ता का मानक भी माना गया। यदि किसी लेबल पर मेड इन मैनचेस्टर लिखा दिखाई देता, तो उपभोक्ता को उसे खरीदने में किसी प्रकार का भय नहीं होता था।

लेबल पर अक्षर या शब्दों की अतिरिक्त आकर्षक तस्वीरें भी बनी होती थीं। पुराने लेबल को देखकर तत्कालीन निर्माताओं की सोच तथा लोगों को आकर्षित करने के उनके तरीकों का अंदाजा लगाया जा सकता था। देवी-देवताओं से युक्त लेबलों से यह दर्शाने की कोशिश की जाती थी कि देवी-देवता भी यही चाहते हैं कि आप उन उत्पादों को खरीदें। इन तस्वीरों का यह लाभ होता था कि भारतीयों को यह जाना-पहचाना लगता था। वस्तुओं को बाजार में बेचने के लिए उनका व्यापक प्रचार प्रसार करना आवश्यक होता है। जिसके प्रमुख माध्यम विज्ञापन होते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. आदि-औद्योगीकरण व्यवस्था की विशेषता लिखिए।

उत्तर इंग्लैंड और यूरोप में फैक्ट्रियों की स्थापना से पूर्व ही यहाँ अंतर्राष्ट्रीय बाजार के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन होने लगा था, किंतु यह उत्पादन फैक्ट्रियों में नहीं होता था। अनेक इतिहासकार इस युग को आदि-औद्योगीकरण व्यवस्था का नाम देते हैं। इस व्यवस्था की निम्नलिखित विशेषताएँ थी।

- आदि-औद्योगिक व्यवस्था आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं के विकास का प्रथम चरण थी, जिसने पूर्ण औद्योगिक समाज की स्थापना के लिए विश्व के समक्ष नई परिस्थितियाँ बना दी थीं।
- आदि-औद्योगीकरण के कारण औद्योगिक उत्पादन और व्यावसायिक कृषि उत्पादन दोनों में विशेष रूप से वृद्धि हुई।
- आदि-औद्योगीकरण के कारण पारंपरिक कृषि समाज में सामाजिक परिवर्तन हुए। उत्पादन से होने वाले लाभ ने किसानों की कम होती आय में बढ़ोतरी की।
- इस प्रकार यह उत्पादन के विकेंद्रीकरण का एक तरीका था, जिस पर व्यापारियों का नियंत्रण था, परंतु वस्तुओं का उत्पादन फैक्ट्रियों की अपेक्षा परिवार में काम करने वाले लोगों और खेतों में उत्पादकों द्वारा किया जाता था।

2. 19वीं सदी के प्रारंभ में भारतीय बुनकरों की क्या समस्याएँ थी?

उत्तर भारतीय कपड़ों की यूरोप में बहुत अधिक माँग थी यही कारण था कि भारत से होने वाले कपड़े के निर्यात को ही यूरोपीयन कंपनियाँ विस्तार देना चाहती थी। बुने हुए कपड़ों के लिए फ्रांसीसी, डच और पुर्तगाली के साथ-साथ स्थानीय व्यापारियों में प्रतिस्पर्द्धा होने लगी थी।

बंगाल और कर्नाटक के कई स्थानों के बुनकर अपने गाँव छोड़ अन्य गाँवों में चले गए। कभी-कभी उन्होंने कंपनी के खिलाफ भी विद्रोह किया और ऋण लेने से भी इनकार कर दिया।

भारतीय बुनकरों को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ा—

- स्थानीय बाजारों में मैनचेस्टर में बने वस्त्रों की अधिकता होने लगी थी, क्योंकि ये वस्त्र मशीनों के द्वारा बने होने के कारण कम लागत के थे। कम लागत के होने के कारण ही भारतीय बुनकर इनसे प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सकते थे।
- स्थानीय बाजारों में मैनचेस्टर में बने वस्त्रों की अधिकता होने लगी थी, क्योंकि ये वस्त्र मशीनों के द्वारा बने होने के कारण कम लागत के थे।
- अमेरिकी गृह युद्ध के कारण अमेरिका से कपास का निर्यात बंद हो गया, तो ब्रिटेन, भारत से कच्चे माल का आयात करने लगा था। भारत से कच्चे कपास के निर्यात में आई इस वृद्धि से उसकी कीकत में भी वृद्धि हुई। भारतीय बुनकरों को उच्च कीमत पर कच्चा माल क्रय करना पड़ता था, जो एक बड़ी समस्या थी।

3. '20वीं सदी के प्रथम दशक तक भारत में औद्योगीकरण के प्रतिमान को कई परिवर्तनों ने प्रभावित किया' व्याख्या कीजिए।

उत्तर 20वीं सदी के प्रथम दशक तक भारत में औद्योगीकरण के प्रतिमानों को कई परिवर्तनों ने प्रभावित किया, जिनका विवरण निम्नलिखित हैं

- **स्वदेशी तथा बहिष्कार आंदोलन**—भारत में बंगाल विभाजन के बाद स्वदेशी आंदोलन और बहिष्कार के आंदोलन से भारतीय उद्योगों को राहत मिली। भारतीय वस्तुओं, विशेषत: कपड़े की माँग में वृद्धि हुई।
- **औद्योगिक वर्ग**—इस समय तक औद्योगिक समूह अपने सामूहिक हितों की रक्षा के लिए संगठित हो गए और उन्होनें आयात शुल्क बढ़ाने तथा अन्य रियायतें देने के लिए सरकार पर दबाब डाला।
- **भारतीय बाजार में मैनचेस्टर का पतन**—युद्ध के बाद भारतीय बाजार में मैनचेस्टर को पहले वाला सम्मान कभी प्राप्त नहीं हो पाया।
- **चीन को निर्यात कम होना**—वर्ष 1906 के बाद चीन भेजे जाने वाले भारतीय धागे के निर्यात में भी कमी होने लगी, क्योंकि चीनी बाजारों में चीन और जापान के उत्पादों की बाढ़ आ गई थी।

4. 19वीं सदी के प्रारंभ में भारतीय कपड़े के निर्यात में लंबी गिरावट आई थी। कारण बताकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 19वीं सदी के अंतिम चरण में भारतीय कपड़ों के निर्यात में बड़ी गिरावट दर्ज की गई, जिसके कई कारण थे—

- **कच्चे माल की कमी**—1860 के दशक में बुनकरों के सामने नई समस्या खड़ी हो गई। इन्हें अच्छी कपास नहीं मिल पा रही थी।
- **इंग्लैंड के कपास उद्योगों का विकास**—जैसे ही इंग्लैंड में कपास उद्योग विकसित हुआ, वहाँ के उद्योगपति दूसरे देशों से आने वाले आयात को लेकर चिंतित होने लगे। उन्होंने सरकार पर दबाव डाला कि वह आयातित कपड़े पर आयात शुल्क वसूल करे जिससे मैनचेस्टर में बने कपड़े बाहरी प्रतिस्पर्द्धा के बिना इंग्लैंड में आराम से बिक सकें।
- **मिलों का विकास और माँग में कमी**—मिलों के विकास और घरेलू माँग में कमी के कारण ब्रिटिश उद्योगपतियों ने ईस्ट इंडिया कंपनी पर दबाव डाला कि वह ब्रिटिश कपड़ों को भारतीय बाजारों में भी बेचे।
- **भारत में मैनचेस्टर की वस्तुएँ**—भारत में कपड़ा बुनकरों और छोटे उत्पादकों के सामने एकसाथ दो समस्याएँ आई, उनका निर्यात बाजार ढह रहा था और स्थानीय बाजार सिकुड़ने लगा था। बाजार में मैनचेस्टर के आयातित मालों की भरमार थी।

5. 18वीं सदी में हुए अनेक आविष्कारों ने सूती वस्त्र उद्योग में उत्पादन प्रक्रिया के प्रत्येक चरण की कुशलता किस प्रकार बढ़ा दी? व्याख्या कीजिए।

उत्तर 18वीं सदी में यूरोप में कई ऐसे आविष्कार हुए, जिससे सूती वस्त्र-उद्योग में उत्पादन की प्रक्रिया के प्रत्यके चरण की कुशलता बढ़ा दी थी।

- **नवीन आविष्कार**—18वीं सदी में कार्डिंग, ऐंठना व कताई तथा लपेटने वाली मशीनों का आविष्कार जिसने उत्पादन प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में कुशलता बढ़ा दी थी।
- **उत्पादन एवं गुणवत्ता में सुधार**—नए उत्पादन से प्रति मजदूर उत्पादन भी बढ़ गया और साथ ही साथ इनकी गुणवत्ता भी बढ़ गई और पहले से अधिक मजबूत धागों व रेशम का उत्पादन होने लगा था। नई मशीनों से मजबूत धागों का उत्पादन संभव हुआ। उत्पादन एवं गुणवत्ता में सुधार नए उत्पादन से प्रति मजदूर उत्पादन भी बढ़ गया और साथ ही साथ इनकी गुणवत्ता भी।
- **कपड़ा मिल की शुरुआत**—सबसे पहले रिचर्ड आर्कराइट ने सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा तैयार की थी। सूती कपड़ा मिल की स्थापना के पश्चात् इसमें महँगी नई मशीनें खरीदकर उन्हें कारखानों में लगाया जाने लगा।
- **संपूर्ण प्रक्रिया का क्रियान्वयन एकसाथ होना**—कपड़ा मिलों में सारी प्रक्रियाएँ एकसाथ एक ही छत के नीचे और एक ही मालिक के हाथों नियंत्रित होती थी। इससे उत्पादन प्रक्रिया पर निगरानी, गुणवत्ता का ध्यान रखना और मजदूरों का निरीक्षण सुगम हो गया था। जब तक उत्पादन गाँवों में हो रहा था, तब तक ये सभी कार्य सहज नहीं थें।

❑❑❑

5

मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जातिभेद के विरुद्ध निम्न जातीय आंदोलनों के प्रणेता ज्योतिबा फुले के योगदान की व्याख्या कीजिए।

उत्तर जातिभेद के विरुद्ध आंदोलनों के प्रणेता ज्योतिबा फुले के योगदान की व्याख्या इस प्रकार है—

- 19वीं सदी के अंत में निम्न जातीय आंदोलनों के मराठी प्रणेता ज्योतिबा फुले ने 'गुलामगिरी' नामक पुस्तक लिखी, जिसमें इन्होंने जाति प्रथा में हो रहे अत्याचारों को लिखा। इन्होंने समाज में महिलाओं की दुर्दशा तथा उनकी शिक्षा को लेकर भी आवाज बुलंद की। नारी शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु महिलाओं व समाज के अन्य लोगों को जागरूक किया।
- इन्होंने निम्न जातीय आंदोलन को एक मार्ग दिया। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने भी निम्न जातीय आंदोलनों को और उजागर किया। उन्होंने पत्र-पत्रिका तथा पुस्तकों के माध्यम से लोगों को जागरूक किया। ज्योतिबा फुले ने महिलाओं के अधिकारों के लिए भी कार्य किए। न्यायपूर्ण समाज को स्थापित करने के लिए प्रेरित किया।

2. उन नवाचारों (आविष्कारों) की चर्चा करें जिनसे 17वीं सदी के बाद मुद्रण प्रौद्योगिकी में सुधार हुआ था।

उत्तर 17वीं सदी के पश्चात् मुद्रण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए प्रमुख सुधार तथा इसमें हुए नवीन नवाचारों का उल्लेख इस प्रकार है—

- **धातु की प्रेस**—19वीं सदी में मुद्रण प्रौद्योगिकी में धातु का प्रयोग किया जाने लगा, जिससे प्रिंटिंग की प्रतियाँ भी अधिक छापी जाने लगीं।
- **बेलनाकार प्रेस अमेरिकी अन्वेषक**—रिचर्ड एम हो ने एक परिष्कृत प्रेस का प्रारूप तैयार किया। यह बेलनाकार प्रेस 'फ्लैट बैड प्रेस' से कई गुना तेज काम करती थी। यह अखबार की छपाई के लिए अधिक अनुकूल थी।
- **ऑफसेट प्रेस**—इस प्रेस के विकास से एक साथ छ: रंगों की छपाई संभव हो सकी। इसके साथ ही इसका व्यापक प्रसार हुआ, क्योंकि इसने दृश्य संस्कृति के क्षेत्र में काफी सहायता की।

3. ''मुद्रण ने ज्ञानोदय के चिंतकों के विचारों को लोकप्रिय बनाया''। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर मुद्रण ने ज्ञानोदय के चिंतकों के विचारों को निम्न रूपों में लोकप्रिय बनाया—

- मुद्रण से सामूहिक रूप में लेखन, तार्किक विचार तथा तानाशाही पर विवेचनात्मक टिप्पणियाँ होने लगी थीं, जिससे विचारों का प्रसार हुआ।
- विद्वानों तथा चिंतकों ने बौद्धिकता पर बल दिया। उनका कहना था कि प्रत्येक बात का निर्णय विवेक के आलोक में होना चाहिए।
- विद्वानों ने तानाशाही व सामाजिक प्रथाओं की वैधता पर प्रश्नचिह्न लगाया।

4. यूरोप में मुद्रण क्रांति के आरंभ के बाद वैज्ञानिक तथा दार्शनिकों के विचार लोगों तक किस प्रकार आए?

उत्तर यूरोप में मुद्रण क्रांति के आरंभ के बाद वैज्ञानिक तथा दार्शनिक विचार निम्न प्रकार से लोगों तक आए—

- मुद्रण क्रांति से लोगों में बौद्धिकता का विकास हुआ। लोगों में तार्किक विचारों के प्रति रुचि बढ़ने लगी।
- मुद्रण क्रांति के पश्चात् साक्षरता दर में वृद्धि हुई। इसके साथ ही नवीन पाठक वर्ग का उदय हुआ।
- मुद्रित पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ आदि सस्ती दरों पर उपलब्ध होती थीं, जिससे सभी लोगों तक इनकी पहुँच सुलभ हुई।
- मुद्रित पुस्तकें पुराने रीति-रिवाजों, तानाशाही आदि के ऊपर तार्किक विचार प्रकट करती थीं, जिससे लोगों में इनकी माँग बढ़ी थी।

5. उन घटनाओं की चर्चा करें, जिनसे यूरोप में पढ़ने का एक जुनून पैदा हो गया था।

उत्तर 18वीं सदी में यूरोप में पढ़ने के जुनून में वृद्धि लाने वाले तीन उत्तरदायी कारण निम्नलिखित हैं

(i) जोहान गुटेनबर्ग की प्रिंटिंग प्रेस—इस प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार से मुद्रण के क्षेत्र में क्रांति आ गई। पुस्तक की छपाई की लागत कम हो गई। कम समय में अधिक प्रतियाँ छापी जाने लगीं।

(ii) पुस्तकों की उपलब्धता—पुस्तक विक्रेताओं ने गाँव-गाँव में फेरीवाले के माध्यम से पुस्तके उपलब्ध कराई। इससे लोगों तक पुस्तकों की उपलब्धता सुलभ हुई, जिससे लोगों में पढ़ने का जुनून पैदा हुआ।

(iii) साहित्य के नए रूप का विकास तथा पत्र-पत्रिकाएँ—साहित्य के नए रूप का विकास होने से पंचांग के अतिरिक्त लोकगीतों तथा लोकभाषाओं को भी छापा जाने लगा।

6. प्रिण्टिंग प्रेस के आविष्कार से समाज पर क्या प्रभाव पड़ा? किन्हीं तीन बिन्दुओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर प्रिंट संस्कृति के सामाजिक मूल्यों पर पड़ने वाले चार प्रभाव निम्नलिखित हैं—

(i) प्रिंट संस्कृति के विकास से समाज के प्रत्येक व्यक्ति में तार्किक एवं बौद्धिक क्षमता का विकास हुआ।

(ii) इस संस्कृति ने लोगों को परंपरागत रीति-रीवाजों तथा औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा दिया। इससे लोग तार्किक रूप से आवाज बुलंद करने लगे।

(iii) इससे लोगों में वाद-विवाद की संस्कृति का प्रसार हुआ तथा लोग दूसरे क्षेत्र की समस्याओं से अवगत होने लगे, जिससे अखिल तथा सौहार्द की भावना का उदय हुआ।

(iv) इससे नए पाठक वर्ग का उदय हुआ तथा राष्ट्रवाद को बढ़ावा मिला। लोग प्रत्येक वस्तु को बौद्धिकता के सहारे देखने लगे।

7. ''19वीं सदी के अंत से प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य कर देने के कारण बच्चे पाठक के रूप में महत्त्वपूर्ण वर्ग बन गए।'' उपयुक्त उदाहरण देकर कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर 19वीं सदी के अंत तक यूरोप में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बनाया गया, जिससे पाठकों की श्रेणी में बच्चे भी शामिल हुए।

- 19वीं सदी में महिला पाठक और लेखिकाओं की संख्या में भी वृद्धि हुई। *पेनी मैग्जींस* या एकपैसिया पत्रिका का प्रकाशन विशेष रूप से महिलाओं के लिए ही किया जाता था, क्योंकि ये उचित व्यवहार और घर की देखभाल करने में परिपूर्ण थीं। गृहस्थी सिखाने वाली निर्देशिकाओं का प्रकाशन किया जाता था।
- **जेन ऑस्टिन, ब्रांट बहनें** (ऐनी, एमिली और चार्लोट), **जॉर्ज इलियट** आदि इस काल की महत्त्वपूर्ण लेखिकाएँ थीं। 19वीं शताब्दी में इंग्लैंड में इन पुस्तकालयों का उपयोग सफेद कॉलर मजदूरों, दस्तकारों और निम्नवर्गीय लोगों को शिक्षित करने में किया जाता था।

8. धर्म पर पड़े मुद्रण क्रांति के प्रभाव का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर मुद्रण क्रांति का धर्म पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा—

- **नए विचारों का विकास**—मुद्रण संस्कृति के विकास से लोगों में नवीन विचारों का उदय हुआ, लोगों में तार्किकता आई तथा सामाजिक मुद्दों पर वाद-विवाद शुरू हुआ।
- **वैज्ञानिक व दार्शनिक रचनाएँ**—सामाजिक मुद्दे व धर्म की परंपरागत मान्यताओं के संदर्भ में वैज्ञानिक व दार्शनिक लेख प्रस्तुत किए जाने लगे।
- **धर्म विरोधी भावना का उदय**—मुद्रित साहित्य के द्वारा कम पढ़े-लिखे लोग भी धार्मिक विचारों के संपर्क में आए, जिससे धर्म सुधार आंदोलन का मार्ग प्रशस्त हुआ; जैसे-रोमन कैथोलिक चर्च में व्यापक कुरीतियों की आलोचना शुरू हो गई और प्रोटेस्टेंट धर्म का विकास हुआ।
- **धार्मिक सुधारों का विकास**—मुद्रण क्रांति के आगमन से विश्व के सभी धर्मों में सुधार प्रारंभ हुआ। उदाहरणस्वरूप; यूरोप में धर्म सुधार, भारत में हिंदू व मुस्लिम संप्रदायों में सुधार की दिशा में लेखों, कार्टूनों, उपन्यासकारों, चित्रों आदि का विकास हुआ। जिनके द्वारा लोगों तक सामाजिक एवं धार्मिक बुराइयों को पहुँचाया जाने लगा।
- **सस्ती पुस्तकों की उपलब्धता**—सुधारकों के विचारों से प्रेरित लोगों में जागरूकता का संचार होने से धार्मिक पुस्तकों की माँग में वृद्धि होने के कारण सस्ती दरों पर पुस्तकों को उपलब्ध कराया जाने लगा।

9. 19वीं सदी की भारतीय नारियों में पढ़ने तथा लिखने की प्रवृत्ति कैसे बढ़ी? सोदाहरण स्पष्ट करें।

उत्तर भारतीय नारियों में पढ़ने-लिखने की प्रवृत्ति निम्न रूपों में बढ़ी—

- महिलाओं के जीवन तथा भावनाओं के ऊपर साहित्य की रचना की जाने लगी। उनकी समस्याओं को उठाया जाने लगा।
- 19वीं सदी के मध्य तक महिलाओं के लिए शहरों तथा कस्बों में स्कूल तथा कॉलेज स्थापित किए जाने लगे।
- कैलाशबासिनी देवी, ताराबाई शिंदे, पंडिता रमाबाई जैसी अनेक भारतीय लेखिकाएँ नारियों की दयनीय स्थिति के विषय में रोष तथा शेष अपने लेखकों के माध्यम से भरने लगी।
- पत्र-पत्रिकाओं व उपन्यासों में महिलाओं की, जीवन पद्धति, विधवा विवाह, घरेलू समस्याओं आदि की चर्चा की जाने लगी।
- मुद्रित पुस्तकों में महिलाओं की दशा को तार्किक रूप में कार्टून व चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाने लगा।
- विभिन्न सामाजिक सुधारकों के तर्कों के कारण महिलाएँ अधिक प्रभावित हुईं तथा इनमें पढ़ने-लिखने की प्रवृत्तियों का विकास हुआ, जिससे इनमें सामाजिक जीवन में बदलाव के अवसर खुले।

10. चीन में मुद्रण की प्रमुख विशेषताओं को बताइए।

उत्तर चीन में मुद्रण की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं—

- 17वीं शताब्दी तक चीन में शहरी संस्कृति के विकास की मुद्रण कला में विविधता आई। नए पाठक वर्ग को काल्पनिक किस्से, कविताएँ, आत्मकथाएँ, शास्त्रीय साहित्यिक कृतियों के संकलन और रूमानी नाटक पसंद थे।
- 19वीं शताब्दी के अंत में पश्चिमी शक्तियों द्वारा अपनी चौकियाँ स्थापित करने के साथ ही पश्चिमी मुद्रण तकनीक और मशीनी प्रेस का आयात भी हुआ।
- पश्चिमी शैली के स्कूलों की आवश्यकता को पूरा करने वाला शंघाई प्रिंट-संस्कृति का नया केंद्र बन गया। हाथ की छपाई की जगह अब धीरे-धीरे मशीनी या यांत्रिक छपाई ने ले ली।

11. मुद्रण संस्कृति और फ्रांसीसी संस्कृति के संदर्भ में इतिहासकारों ने कितने तर्क दिए। सभी तर्कों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कुछ इतिहासकारों का मत है कि फ्रांसीसी क्रांति 'मुद्रण संस्कृति' की देन है। इस संदर्भ में इतिहासकारों ने निम्नलिखित तीन तर्क दिए हैं—

(i) मुद्रण कला के विकास के कारण बौद्धिक चिंतकों के विचारों का प्रसार होने लगा। उनके लेखन ने परंपरा, अंधविश्वास और निरंकुशवाद पर महत्त्वपूर्ण टिप्पणी की।

(ii) मुद्रण तकनीक ने वाद-विवाद संवाद की एक नई परिपाटी (प्रथा) को जन्म दिया। प्राचीन धार्मिक मूल्यों, संस्थाओं एवं रीति-रिवाजों पर लोगों के बीच बहस और पुनर्मूल्यांकन का दौर शुरू हुआ।

(iii) 1780 के दशक तक राजशाही और उसकी नैतिकता का मजाक उड़ाने वाली साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन हुआ।

12. भारत में प्रिंटिंग प्रेस के आगमन की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत में प्रिंटिंग प्रेस के आगमन की महत्त्वपूर्ण विशेषता निम्न हैं—

- भारत में प्रिंटिंग प्रेस का प्रयोग सबसे पहले 16वीं शताब्दी में पुर्तगाली धर्म प्रचारकों के द्वारा गोवा में किया गया।
- जेसुइट पुजारियों ने कोंकणी भाषा में अनेक पुस्तकें छापीं। 1674 ई. तक इनके द्वारा कोंकणी और कन्नड़ भाषा में लगभग 50 किताबें छापी गईं।
- कैथोलिक धर्म प्रचारकों ने 1579 ई. में कोचीन में पहली तमिल किताब और 1713 ई. में पहली मलयालम किताब छापी।
- डच प्रोटेस्टेंट धर्म प्रचारकों ने 32 तमिल किताबें छापीं, जिनमें कई प्राचीन किताबों का अनुवाद था।

13. प्रकाशन के नए स्वरूप के विकास पर महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर प्रकाशन के नए स्वरूप के विकास पर महत्त्वपूर्ण बिंदु निम्न हैं—

- प्रिंटिंग प्रेस के पूर्ण विकास से प्रकाशन के क्षेत्र में नए-नए लेखन की आवश्यकता होने लगी।
- उपन्यास के अतिरिक्त अन्य साहित्यिक विधाएँ; जैसे—गीत, कहानियाँ और सामाजिक-राजनीतिक विषयों पर लेख विश्व के समस्त पाठकों की माँग बन गए थे।
- 19वीं शताब्दी के अंत तक, एक नई तरह की दृश्य संस्कृति भी आकार ले रही थी। राजा रवि वर्मा जैसे चित्रकारों ने तस्वीरें बनाईं। बाजार से सस्ती तस्वीरें और कैलेंडर खरीदकर गरीब भी अपने घरों एवं दफ्तरों में सजाया करते थे।

14. हस्तलिखित पांडुलिपियों की क्या कमियाँ थीं? उनका उल्लेख कीजिए।

उत्तर हस्तलिखित पांडुलिपियों में निम्न कमियाँ थीं, जिसके कारण यूरोप में वुडब्लॉक विधि प्रचलित हुई—

- हस्तलिखित पांडुलिपियों से बढ़ती हुई पुस्तकों की माँग को पूरा करना संभव नहीं था, जबकि वुडब्लॉक प्रिंटिंग से तीव्र गति से छपाई संभव थी।
- यह काफी खर्चीली पद्धति थी।
- पांडुलिपियाँ नाजुक होती थीं, जिनके रखरखाव में कठिनाई होती थी। इसकी अपेक्षा वुडब्लॉक प्रिंटिंग आसान थी।
- पांडुलिपियों से नकल उतारना आसान नहीं था। इसके विपरीत वुडब्लॉक प्रिंटिंग में छोटी-छोटी टिप्पणी के साथ धार्मिक चित्र छपने में आसान थे।

15. पहली छपी बाइबिल की तीन प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर प्रथम छपी बाइबिल की तीन प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) इसमें तीव्र गति से छपाई हुई। इसकी 150 प्रतियाँ छापीं गईं, जिसमें लगभग 3 वर्ष का समय लगा।

(ii) इसमें अमीरों के लिए छपी पुस्तकों में सजावट के लिए खाली स्थान छोड़े गए थे, जिससे वे अपने अनुरूप रंगों से सजावट कर सके।

(iii) इसका प्रत्येक पन्ना अलग होता था। इसमें अक्षरों के अंदर रंग भरे जाते थे।

16. 18वीं सदी के यूरोप में उन छपी पुस्तकों का वर्णन करें, जिन्हें फेरीवाले गाँवों में जाकर बेचते थे।

उत्तर उन पुस्तकों का वर्णन इस प्रकार है, जिन्हें फेरीवाले गाँवों में जाकर बेचते थे—

- ये पॉकेट के आकार की छोटी व सस्ती पुस्तक थी, जिन्हें फेरीवाले गाँवों में बेचते थे।
- ये 16वीं सदी में मुद्रण क्रांति के समय काफी लोकप्रिय हुई थीं, जिससे लोगों में इनकी माँग भी अधिक थी।
- इसमें पैम्पलेट, राजनीतिक तथा धार्मिक पर्चे, काव्य, लोककथाएँ, वार्षिक कैलेंडर आदि मुद्रित होते थे।

17. भारत में मुद्रण युग से पहले की पांडुलिपियों की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर भारत में मुद्रण युग से पहले की पांडुलिपियों की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं

- ये ताड़ के पत्तों या हाथ से बने कागज पर नकल कर बनाई जाती थीं।
- इनमें पन्नों पर उचित रूप से तस्वीरें बनाई जाती थीं, जिससे लोग इन्हें देखकर आसानी से समझ सकते थे।
- लंबे समय तक रखने हेतु इन्हें तख्तियों की जिल्द में या सिलकर बाँध दिया जाता था, जिससे लंबे समय तक इनकी उपलब्धता बनी रह सके।
- पांडुलिपियाँ विशेषकर क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध होती थीं, जिससे क्षेत्र विशेष के लोगों को समझना आसान होता था।

18. प्रारंभिक छपी पुस्तकें पांडुलिपियों जैसी किस प्रकार लगती थीं? वर्णन कीजिए।

उत्तर प्रारंभिक छपी पुस्तकें निम्न रूपों में पांडुलिपियों जैसी दिखाई देती थीं—

- प्रारंभिक छपी पुस्तकें तकनीकी स्तर पर छपी थीं, किंतु वे पांडुलिपियों के समान ही थीं। इनमें बहुत कम भिन्नता थी।
- मुद्रित पुस्तकें तथा पांडुलिपियाँ दोनों एक जैसी लगती थीं, क्योंकि दोनों में धातु के अक्षर की हस्तलिखित शैली के अलंकरणों की नकल होती थी।
- अमीरों के लिए छपी पुस्तकों में मुद्रित पन्नों पर सजावट के लिए खाली स्थान छोड़ा जाता था, जिसमें वे मनमोहक रंगों का प्रयोग कर सकते थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. यूरोप में मुद्रण के आगमन की प्रमुख विशेषताओं का संक्षेप रूप से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर यूरोप में मुद्रण के आगमन की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं—

- सदियों तक चीन से रेशम और मसाले रेशम मार्ग से यूरोप आते रहे थे। 1295 ई. में जब मार्को पोलो इटली आया, तो वह चीन से काठ की तख्ती अर्थात् वुडब्लॉक वाली छपाई की तकनीकी की प्रक्रिया अपने साथ लाया।
- इटलीवासियों ने लकड़ी के ब्लॉकों वाली छपाई के साथ पुस्तकों का निर्माण शुरू किया। विलासी संस्करणों को महँगे वेलम या चर्म पत्र पर लिखा गया, जिसका अर्थ कुलीन वर्गों के लिए था।

- पुस्तक की माँग में वृद्धि के साथ, पुस्तक विक्रेताओं ने पांडुलिपियों के उत्पादन के लिए लेखकों को नियुक्त किया तथा विभिन्न स्थानों पर पुस्तक मेले की व्यवस्था की। पुस्तकों की बढ़ती माँगों के साथ, लकड़ी ब्लॉक प्रिंटिंग और अधिक लोकप्रिय हो गई।
- 15वीं शताब्दी की शुरुआत में वुडब्लॉक प्रिंटिंग का प्रयोग कपड़ों को प्रिंट करने, ताश के पत्ते बनाने और धार्मिक चित्रों के लिए किया गया। एक जर्मन व्यापारी जोहान गुटेनबर्ग के पुत्र ने पहली बार 1430 के दशक में छपाई प्रेस का विकास किया।
- जैतून प्रेस ही प्रिंटिंग प्रेस का मॉडल या आदर्श बना और साँचे का उपयोग अक्षरों की धातुई आकृतियों को गढ़ने के लिए किया गया। इसके द्वारा जो पहली किताब छापी गई, वह बाइबिल थी। इसके पश्चात् 1450 से 1550 ई. के मध्य यूरोप के अधिकांश देशों में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की गई।

2. जापान की मुद्रण संस्कृति की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ बताइए।

उत्तर जापान की मुद्रण संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- **बौद्ध प्रचारक द्वारा आरंभ**—जापान में मुद्रण तकनीक का प्रारंभ चीनी बौद्ध प्रचारकों द्वारा 768-770 ई. में हुआ। इन्होंने हस्त मुद्रण प्रौद्योगिकी को स्थापित किया था।
- **प्राचीनतम पुस्तक**—जापान की प्राचीन पुस्तक का नाम 'डायमंड सूत्र' है। यह 868 ई. में छपी थी। इसमें पाठ के साथ-साथ अष्ठ पर चित्र भी छपे होते थे।
- **सामग्री**—यहाँ की मुद्रण संस्कृति में चित्रों की छपाई के लिए ताश के पत्ते, कपड़े तथा कागज के नोटों का प्रयोग किया जाता था।
- **सस्ती पुस्तक**—जापान में मध्यकालीन कवियों और गद्यकारों की रचनाएँ नियमित रूप से की जाती थीं। ये पुस्तकें सस्ती दरों पर उपलब्ध होती थीं। सभी लोगों तक इनकी पहुँच सुलभ थी।
- **नवीन चित्रकला शैली**—1753 ई. में जापान के टोक्यो में जन्मे कितागावा उतामारो ने एक नवीन चित्रकला शैली का विकास किया, जिसमें आम शहरी जीवन का चित्रण किया गया था।
- **एदो (टोक्यो) में प्रिंट**—18वीं सदी के अंत में एदो (टोक्यो) में एक शालीन संस्कृति देखने को मिलती है। इस समय हाथ से मुद्रित कई पुस्तकों; जैसे—संगीत, शिष्टाचार, रसोई, फूलसाजी आदि की रचना की गई। इसके साथ ही इस समय वेश्याओं तथा चायघरों में सभाओं को देख सकते हैं।

3. गुटेनबर्ग प्रेस के आविष्कार के बाद यूरोप में उत्पादित नई पुस्तकों की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर गुटेनबर्ग प्रेस के आविष्कार के पश्चात् यूरोप में उत्पादित नवीन पुस्तकों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- **सस्ती**—नवीन पुस्तकें प्रारंभिक पुस्तकों की तुलना में बहुत सस्ती होती थीं, जिससे ये सभी के लिए सुलभ थीं।
- **पांडुलिपियों**—मुद्रित पुस्तकें हस्तलिखित पांडुलिपियों के समरूप थीं। इनमें धातुई अक्षर हाथ की सजावटी शैली के प्रतिरूप होते थे। इनमें किनारों पर फूल-पत्तियों का डिजाइन बनाया जाता था और चित्रों के लिए प्राय: पेंट किया जाता था।
- **प्रिंटिंग**—इस समय प्रिंटिंग में चित्रों के लिए पेंट होता था। इसके साथ ही इसकी प्रमुख विशेषता यह थी, कि खरीददार अपनी रुचि के अनुसार डिजाइन कर सकते थे।
- **रंगीन चित्र**—इसमें चित्र प्राय: रंगीन होते थे। अमीरों के लिए निर्मित पुस्तकों में छपे पृष्ठों पर हाशिए की जगह बेल-बूटों के लिए खाली स्थान छोड़ दिया जाता था।
- **मुद्रण क्रांति**—प्रिंटिंग प्रेसों की संख्या में बढ़ोतरी हुई, जिससे पुस्तकों के उत्पादन में वृद्धि हुई। हाथ की जगह छपाई यांत्रिक मुद्रण से की गई। इसी के परिणामस्वरूप मुद्रण क्रांति संभव हो सकी।

4. प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार की शुरूआत कैसे हुई। इस विषय पर संक्षेप टिप्पणी लिखिए।

उत्तर धर्म सुधारक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी 'पिच्चानवे स्थापनाएँ' लिखीं। लूथर के लेखों को बड़ी संख्या में पुन: प्रकाशित किया गया और व्यापक रूप से पढ़ा गया। इसके परिणामस्वरूप प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार की शुरुआत हुई। छपे हुए लोकप्रिय साहित्य के बल पर कम शिक्षित लोग धर्म की अलग-अलग व्याख्याओं से परिचित हुए। 16वीं शताब्दी में मेनोकिया (इटली का एक किसान) ने किताबों को पढ़ना शुरू कर दिया था। उन किताबों के आधार पर उसने बाइबिल के नए अर्थ लगाने शुरू कर दिए और उसने ईश्वर एवं सृष्टि के विषय में ऐसे विचार बनाए कि कैथोलिक चर्च उससे क्रुद्ध हो गया। ऐसे धर्म विरोधी विचारों को दबाने के लिए रोमन चर्च ने जब इन्क्वीजीशन (धर्म द्रोहियों को दुरुस्त करने वाली संस्था) शुरू किया, तो मेनोकिया को मार दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप रोमन चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं पर अनेक तरह के नियंत्रण लगाए। इरैस्मस, जो एक लातिन विद्वान् और कैथोलिक सुधारक था, ने मुद्रण के विषय में गहरी चिंता व्यक्त की।

5. मुद्रकों ने लोगों, अधिकतर निरक्षरों को मुद्रित पुस्तकों की ओर किस प्रकार आकर्षित किया?

उत्तर मुद्रण क्रांति के पश्चात् श्रोता और पाठक में घनिष्ठ संबंध स्थापित होने लगे, विशेषकर निरक्षर, अशिक्षित तथा कम शिक्षित लोग भी इससे अधिक संख्या में आकर्षित हुए। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

- 20वीं सदी तक यूरोप की अधिकांश जनसंख्या निरक्षर थी। मुद्रकों ने उन तक संदेशों को पहुँचाने हेतु लोकगीतों व लोककथाओं को छापना शुरू किया। मुद्रित किताबों को ग्राम-सभाओं और शराब घरों में गाकर सुनाया जाता था, जिससे इन लोगों में इसके प्रति जिज्ञासा बढ़ी।
- लोगों में तार्किक व समझ के साथ नवीन विचारों का उदय होने लगा। लोग परंपरागत रीति-रिवाजों पर तर्क करने लगे। इससे एक नवीन पाठक वर्ग का उदय हो गया और श्रोता तथा पाठक वर्ग में घनिष्ठ संबंध स्थापित होने लगे।
- मौखिक और मुद्रित संस्कृति से लोगों के बीच सौहार्द की भावना का उदय हुआ और लोगों में दूरी कम होने के साथ-साथ अखिल स्तर की समझ विकसित होने लगी। विचारों

के आदान-प्रदान से सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक जैसे मुद्दे पर एक संतुलित विचार फैलने लगा।

अत: यह स्पष्ट होता है कि मुद्रण संस्कृति ने न केवल विचारों को बढ़ाया, बल्कि यह श्रोता और पाठक को एक-दूसरे के काफी करीब भी लाई।

6. यूरोप में चीन से मुद्रण किस प्रकार आया? व्याख्या कीजिए।

उत्तर यूरोप में मुद्रण संस्कृति के विकास को निम्न रूपों में देखा जा सकता है—

- 11वीं सदी में चीन के रेशम मार्ग के सहारे कागज यूरोप पहुँचा था, जिसके पश्चात् लिपिकों द्वारा पांडुलिपियों के उत्पादन का कार्य एक सामान्य कारोबार के रूप में प्रारंभ हुआ। खोजी यात्रियों में मार्कोपोलो का महत्त्वपूर्ण योगदान है। वह 1295 ई. में चीन में कई साल रहने के पश्चात् इटली लौटा। वह अपने साथ वुडब्लॉक मुद्रण तकनीक को लेकर इटली आया। 15वीं सदी के प्रारंभ में वुडब्लॉक प्रिंटिंग के प्रयोग से कपड़ा छानने तथा सादा व धार्मिक चित्र छापने का कार्य व्यापक रूप में होने लगा। इससे मुद्रण का मार्ग और प्रशस्त हुआ।
- जोहान गुटेनबर्ग द्वारा मुद्रण तकनीक में एक व्यापक क्रांति लाई गई। 1430 के दशक में पहली प्रिंटिंग प्रेस विकसित की गई। इस प्रिंटिंग प्रेस में छपने वाली पहली पुस्तक बाइबिल थी। इस प्रेस में छपी किताबें पांडुलिपियों के समरूप होती थीं।
- 1450 से 1550 ई. के बीच प्रेसों की संख्या में काफी वृद्धि हुई। इससे पुस्तक के उत्पादन में भी वृद्धि हुई। इसी वृद्धि के परिणामस्वरूप यूरोप में मुद्रण क्रांति संभव हुई।

7. भारत के विभिन्न भागों में मुद्रण ने समुदायों और लोगों को जोड़ने का काम किस प्रकार किया? स्पष्ट रूप से समझाइए।

उत्तर मुद्रण ने समुदायों और लोगों को एकसाथ जोड़ने में मदद की है, जिसे निम्न प्रकार से देखा जा सकता है—

- **नए विचारों का उदय**—मुद्रण संस्कृति के विकास ने लोगों में व्यापक स्तर पर तर्क ज्ञान को बढ़ाया। लोग जन-समुदाय के बीच अपने विचार को रख सकते थे। इससे विभिन्न प्रकार के मतों का आना शुरू हो गया और लोग एक-दूसरे के विचारों का समर्थन करने लगे।
- **धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक मुद्दों पर बहस**—मुद्रण के विकास से लोग समस्याओं को व्यापक स्तर पर फैलाने लगे। उदाहरणस्वरूप; औपनिवेशिक काल में समाज के लोग सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे थे। इनमें जागरूक महिला व पुरुष पत्र-पत्रिकाओं व पुस्तकों के माध्यम से महिलाओं, मजदूरों आदि की समस्याओं को फैला रहे थे। इसी के परिणामस्वरूप अखिल भारतीय भावना की प्रेरणा जगी। भारत में देशप्रेम का उदय तथा इसके प्रसार में मुद्रण को देखा जा सकता है।
- **भारतीय पहचान**—अखबार व पत्र-पत्रिका एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचते थे। लोग औपनिवेशिक शासन की आलोचना इन मुद्रित अखबारों के माध्यम से करते थे। इस प्रकार मुद्रण भारतीय पहचान तथा राष्ट्रवादी गतिविधियों को बढ़ाने में मदद करता था।
- **मुद्रण तथा निम्न वर्ग** मुद्रण के माध्यम से ही 19वीं सदी से जाति भेदभाव जैसे मुद्दे पर लिखना शुरू हो गया था। उदाहरणस्वरूप; ज्योतिबा फुले, डॉ. बी. आर अंबेडकर व ई. वी. रामास्वामी नायकर ने निम्न वर्ग की समस्याओं पर अधिक लिखा और समस्याओं को लोगों के सामने रखा।
- **वाद-विवाद** मुद्रण ने विभिन्न प्रकार के वाद-विवादों को जन्म दिया। व्यक्ति की अभिव्यक्ति प्रकाशित होने लगी। एक विषय पर कई विचार उत्पन्न होने लगे। इससे समाज के साथ देश के गंभीर मुद्दों पर भी चर्चा प्रारंभ होने लगी।

8. भारत में प्रिंट तकनीक के विकास का उल्लेख कीजिए।

उत्तर भारत में प्रिंट तकनीक का विकास एक क्रमबद्ध रूप में औपनिवेशिक काल में हुआ, जिसमें कालांतर समय में काफी परिवर्तन भी हुआ, जिसे निम्न रूपों में देखा जा सकता है—

- **प्रिंट तकनीक से पूर्व हस्तलिखित पांडुलिपियाँ**—भारत में पूर्व औपनिवेशिक काल से संस्कृत, अरबी, फारसी तथा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में पांडुलिपियों का प्रचलन था, जिसमें ताड़ के पत्तों या हाथ से बने कागज पर नकल कर लिखा जाता था। कुछ पाठशालाओं में अध्यापन कार्य प्रचलन में था, जिसमें अध्यापन कार्य मौखिक होता था।
- **प्रिंट तकनीक का आगमन**—भारत में प्रिंटिंग प्रेस सर्वप्रथम 16वीं सदी में आई। यह तकनीक पुर्तगाली धर्म प्रचारकों के द्वारा गोवा में लाई गई। इन धर्म प्रचारकों ने कोंकणी भाषा में अनेक पुस्तकें छापीं। कैथोलिक धर्म प्रचारकों ने 1579 ई. में चीन में पहली तमिल किताब और 1713 ई. में पहली मलयालम किताब छापी।
- **18वीं सदी में मुद्रण**—ब्रिटिश संपादक जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने 1780 ई. में 'बंगाल गजट' नामक एक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन किया, जिसमें दासों की बिक्री तथा अंग्रेज अधिकारियों की आपसी बातचीत को छापा गया था। इससे इसको काफी प्रसार मिला तथा जन-जागरूकता भी बढ़ी। 18वीं सदी के अंत तक अनेक ब्रिटिश व हिंदुस्तानी अखबार छपने लगे थे। ऐसे प्रयासों में प्रथम भारतीय पत्रिका गंगाधर भट्टाचार्य द्वारा प्रकाशित ''बंगाल गजट' थी।
- **19वीं सदी में मुद्रण**—1870 के दशक तक पत्र-पत्रिकाओं में सामाजिक-राजनीतिक विषयों पर टिप्पणी करते हुए कैरिकेचर (व्यंग्य चित्र) और कार्टून छपने लगे थे। 19वीं सदी के अंत तक एक नई तरह की दृश्य संस्कृति भी आकार ले रही थी। संस्कृति के लोकप्रिय विचार को कथाओं के माध्यम से भी प्रकट किया जाने लगा।
- **20वीं सदी में मुद्रण**—20वीं सदी के आरंभ से ही लोक साहित्य बड़े पैमाने पर छापे जाने लगे। चित्रों के माध्यम से विभिन्न प्रकार के सामाजिक व राजनीतिक अत्याचारों को दिखाया जाने लगा। खालसा एक्ट सोसायटी ने इसी तरह के संदेश देते हुए सस्ती पुस्तिकाएँ छापीं।

9. भारत में धार्मिक सुधारकों के लिए मुद्रण की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत में धार्मिक सुधारों के क्षेत्र में मुद्रण की निम्नलिखित भूमिका रही है—

- **सामाजिक मुद्दों पर वाद-विवाद**—मुद्रण ने लोगों के बीच तर्क-वितर्क करने की क्षमता को जन्म दिया। सामाजिक व धार्मिक सुधारकों के बीच गहन विवाद प्रारंभ हो गया।
- **सस्ती धार्मिक पुस्तकें**—19वीं सदी के मध्य तक धार्मिक पुस्तकें भी कम कीमत पर उपलब्ध होने लगी थीं। इससे विभिन्न धर्मों के बीच वाद-विवाद और संवाद की एक नई स्थिति उत्पन्न हो गई। इससे लोग एक-दूसरे धर्म के विचारों से भी अवगत होने लगे।
- **हिंदुओं में सुधार**—मुद्रण से धार्मिक पुस्तकों की छपाई देशी भाषाओं में भी होने लगी। कलकत्ता में 1810 ई. में तुलसीदास की 'रामचरितमानस' का प्रथम संस्करण मुद्रित हुआ। लखनऊ की नवल किशोर प्रेस और बंबई की श्री वेंकटेश्वर प्रेस में अनेक भारतीय भाषाओं में कई धार्मिक पुस्तकें छपीं। इससे हिंदू धर्म के परंपरागत विचारों पर तर्क होने लगे, जिससे हिंदू धर्म में सुधार के अवसर दिखने लगे तथा लोगों में एकता की भावना का संचार होने लगा।
- **मुस्लिमों में सुधार**—1867 ई. में स्थापित देवबंद सेमनरी ने मुसलमान पाठकों को दैनिक जीवन जीने का तरीका और इस्लामी सिद्धांतों के तरीके समझाते हुए कई फतवे जारी किए। इससे भी मुस्लिम समुदायों में तर्क-वितर्क की जिज्ञासा जगी और अपनी-अपनी व्याख्याएँ करने लगे। इससे कुछ हद तक मुस्लिम समुदायों में सुधार के अवसर दिखने लगे।

❑❑❑

1

समकालीन विश्व-2 (भूगोल)

संसाधन एवं विकास

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. काली मृदा की किन्हीं तीन मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर काली मृदा को काली कपास एवं रेगुर के नाम से भी जाना जाता है। इसका विस्तार दक्कन पठार के आस-पास है।

यह मृदा दक्कन पठार के उत्तर-पश्चिमी भागों में पाई जाती है, जो लावाजनक शैलों से बनी है। इस मृदा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- महाराष्ट्र (सौराष्ट्र व मालवा), मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पठार के अतिरिक्त यह दक्षिण-पूर्वी दिशा में गोदावरी एवं कृष्णा नदी की घाटियों तक पाई जाती है।
- इस मृदा में कैल्सियम कार्बोनेट, मैग्नीशियम, पोटाश और चूने जैसे पौष्टिक तत्त्व पाए जाते हैं।
- यह मृदा बहुत महीन कणों अर्थात् मृत्तिका से बनी है।
- इस मृदा में गर्म और शुष्क मौसम में दरारें पड़ जाती हैं, जिससे इसमें अच्छी तरह से वायु का मिश्रण हो जाता है। गीली होने पर यह मृदा चिपचिपी हो जाती है, जिसके परिणामस्वरूप इसे जोतना कठिन हो जाता है।

2. नवीकरणीय संसाधन क्या हैं? इन्हें कितने भागों में विभजित किया जाता हैं?

उत्तर
- **नवीकरणीय संसाधन**—वे संसाधन, जिन्हें भौतिक, रासायनिक या यांत्रिक प्रक्रियाओं द्वारा नवीकृत या पुन: उत्पन्न किया जा सकता है, उन्हें नवीकरण योग्य या पुन: पूर्ति योग्य संसाधन कहा जाता है; जैसे—सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल, वन व वन्यजीव। इनको दो भागों में विभाजित किया जाता है

  (i) सतत संसाधन—इन संसाधनों को एक ही समय पर प्रयोग और पुन: प्राप्त किया जा सकता है। ये एक स्थान पर नहीं रहते हैं, बल्कि भौतिक परिवेश में प्राकृतिक रूप से भ्रमण करते रहते हैं; जैसे—बहता हुआ जल, सौर विकिरण, हवा आदि।

  (ii) जैविकीय संसाधन—ये संसाधन जैविक प्रक्रिया द्वारा बनते हैं। इनको दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है।

  प्राकृतिक वनस्पति (वन्य आवरण एवं वनस्पति), वन्यजीव (जीव)

3. अनवीकरणीय संसाधन एवं राष्ट्रीय संसाधन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए

उत्तर **अनवीकरणीय संसाधन**—ये संसाधन लंबी भू-वैज्ञानिक समयावधि के माध्यम से बनते हैं। ये संसाधन एक बार प्रयोग करने पर समाप्त हो जाते हैं, अत: इन्हें पुन: प्रयोग में नहीं लाया जा सकता। इस प्रकार के संसाधनों में खनिज एवं जीवाश्म ईंधन आदि शामिल होते हैं। इन संसाधनों को दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है

(i) **चक्रीय** धातु को तकनीकी अनुप्रयोग के द्वारा पुन: नवीनीकृत किया जा सकता है, इसलिए ये चक्रीय संसाधन कहलाते हैं।

(ii) **अचक्रीय** जीवाश्म आसानी से प्रयोग के बाद जल (Burn) जाते हैं। इनको पुन: प्राप्त नहीं किया जा सकता है, इसलिए ये अचक्रीय संसाधन कहलाते हैं।

4. सामुदायिक स्वामित्व एवं राष्ट्रीय संसाधन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर
- **सामुदायिक संसाधन**—वे संसाधन, जिनका स्वामित्व समुदाय के सभी सदस्यों के पास समान रूप से उपलब्ध होता है, सामुदायिक संसाधन कहलाते हैं; जैसे—गाँव की चारण भूमि, तालाब, श्मशान भूमि तथा शहरों में सार्वजनिक पार्क, पिकनिक स्पॉट, खेल का मैदान आदि।
- **राष्ट्रीय संसाधन**—तकनीकी स्तर पर देश में पाए जाने वाले संपूर्ण संसाधन राष्ट्रीय संसाधन हैं। इन संसाधनों पर देश की सरकार का कानूनी अधिकार होता है। खनिज संसाधन, वन एवं वन्यजीव, जल तथा राजनीतिक सीमा के अंदर संपूर्ण भूमि राष्ट्रीय संपदा के अंतर्गत आती है।

5. संसाधन नियोजन क्या है? संसाधन नियोजन क्यों आवश्यक है? तीन कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर संसाधन नियोजन से आशय उपलब्ध संसाधनों की पहचान और मात्रा के साथ-साथ उनके उचित विकास से है। संसाधन विकास योजना, राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों के अनुरूप होने चाहिए। भारत में संसाधन विशाल मात्रा में उपलब्ध हैं, लेकिन उनका विकास अपर्याप्त है या उन्हें असमान रूप से वितरित किया जाता है। संसाधनों के नियोजन की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से आवश्यक है—

- संसाधनों की बर्बादी पर रोक लगती है।
- पर्यावरण प्रदूषण मुक्त हो जाता है।
- वर्तमान/समकालीन समय में सभी को संसाधन प्राप्त होते हैं।
- इसको भावी पीढ़ी की आवश्यकता पूर्ति के लिए बनाए रखा जाता है।

6. पर्यावरण संरक्षण पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का विवरण दीजिए।

उत्तर पर्यावरण संरक्षण पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का विवरण निम्नलिखित हैं—

- इस सम्मेलन में भूमंडलीय जलवायु परिवर्तन और जैविक विविधता के एक घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किए गए।
- इस सम्मेलन में भूमंडलीय वन सिद्धांतों पर सहमति प्रदान की गई और 21वीं शताब्दी में सतत पोषणीय विकास के लक्ष्य के लिए एजेंडा-21 को स्वीकृति दी गई।
- एजेंडा-21 में भूमंडलीय सतत पोषणीय विकास हासिल करने को प्रमुख लक्ष्य बनाया गया।

7. संसाधन नियोजन की प्रक्रिया का उल्लेख कीजिए।

उत्तर संसाधन नियोजन की प्रक्रिया में निम्नलिखित चरण होते हैं—

- देश के विभिन्न प्रदेशों में संसाधनों की पहचान कर उनकी तालिका बनाना प्रमुख कार्य है। इस कार्य में क्षेत्रीय सर्वेक्षण, मानचित्र बनाना और संसाधनों का गुणात्मक एवं मात्रात्मक अनुमान लगाना व मापन करना सम्मिलित है।
- उपयुक्त कौशल और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके संसाधन विकास के लिए योजना तैयार करना।
- संसाधन संबंधी विकास योजनाओं और राष्ट्रीय विकास योजना में समन्वय स्थापित करना।

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् संसाधन नियोजन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई गई हैं। संसाधनों की उपलब्धता अकेले शुरू नहीं हो सकती, इसलिए विकास की उचित प्रक्रिया, आवश्यक तकनीक व संस्थागत ढाँचे की आवश्यकता है।

8. संसाधन और उपनिवेश पर संक्षिप्त टिपणी लिखिए।

उत्तर संसाधन संपन्न प्रदेश, विदेशी आक्रमणकारियों के लिए मुख्य आकर्षण रहे हैं। उपनिवेशकारी देशों ने बेहतर प्रौद्योगिकी के माध्यम से उपनिवेशों के संसाधनों का शोषण किया तथा उन पर अपना आधिपत्य स्थापित किया।

भारत ने अपने पिछले अनुभव से यह सीखा है कि सामान्य रूप से विकास और संसाधन विकास लोगों के मुख्यत: संसाधनों की उपलब्धता पर ही नहीं, बल्कि प्रौद्योगिकी, मानव संसाधन की गुणवत्ता एवं लोगों के ऐतिहासिक प्रयोगों के आधार पर हुआ है।

9. संसाधनों का संरक्षण करना हमारे लिए क्यों आवश्यक है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर विकास के क्रम में सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याओं से बचने के लिए संसाधनों का संरक्षण एवं उनका विवेकपूर्ण उपयोग अत्यधिक आवश्यक है। वर्ष 1987 में ब्रंटलैंड कमीशन रिपोर्ट में संसाधन संरक्षण की आवश्यकता का व्यापक रूप से उल्लेख किया गया है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सतत विकास की अवधारणा को उचित बताया गया है। गाँधीजी के अनुसार, ''हमारे पास एक व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ति के लिए बहुत कुछ है, लेकिन किसी के लालच की संतुष्टि के लिए नहीं अर्थात् हमारे पास पेट भरने के लिए बहुत है, लेकिन पेटी भरने के लिए नहीं।'' गाँधीजी अत्यधिक उत्पादन के विरुद्ध थे और इसके स्थान पर अधिक जन-समुदाय द्वारा उत्पादन के पक्षधर थे।

10. वनीय एवं पहाड़ी मृदा के लक्षणें को बताइए।

उत्तर यह भारत के 8% भौगोलिक क्षेत्र पर विस्तृत है। इसके कुछ लक्षण निम्नलिखित हैं—

- यह मृदा, नदी घाटियों में दोमट और सिल्टदार होती है, लेकिन ऊपरी ढलानों पर इसका गठन मोटे कणों से होता है।
- हिमालय के हिमाच्छादित क्षेत्रों में इस मृदा का भारी अपरदन होता है और यह मृदा अम्लीय ह्यूमस रहित होती है।
- यह मृदा मसाले, चाय, कॉफी एवं उष्णकटिबंधीय फसलों के उत्पादन (कृषि/उपज) के लिए उपयोगी होती है।
- यह नदी घाटियों के निचले क्षेत्रों और पहाड़ी क्षेत्रों में मिलती है; जैसे—जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम एवं अरुणाचल प्रदेश।

11. भारत में भूमि सुधार के अंतर्गत लागू किए गए किन्हीं दो कार्यक्रमों का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत में भूमि सुधार के अंतर्गत लागू किए गए दो कार्यक्रमों का वर्णन निम्नलिखित हैं—

(i) बंजर भूमि विकास कार्यक्रम—राष्ट्रीय बंजर भूमि विकास बोर्ड ने वर्ष 1989-90 में बंजर भूमि विकास कार्यक्रम शुरू किया। इस कार्यक्रम के तहत गैर-वनीय बंजर भूमि को शामिल किया गया है।

(ii) रेगिस्तानी भूमि विकास कार्यक्रम—रेगिस्तानी भूमि विकास कार्यक्रम वर्ष 1977-78 में भारत के 7 राज्यों के 40 जिलों के 235 विकास खंडों में लागू किया गया है। इसका उद्देश्य रेगिस्तान प्रसार को रोकना तथा स्थानीय संसाधनों की उत्पादकता में बढ़ोतरी कर स्थानीय लोगों की आय और रोजगार स्तर में वृद्धि करना है।

12. भूमि किस प्रकार एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है? इसके महत्त्वपूर्ण तथ्यों से वर्णन कीजिए।

उत्तर भूमि एक अति महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है। इसके पक्ष में निम्नलिखित तर्क/तथ्य दिए जा सकते हैं—

- सभी आर्थिक क्रियाएँ भूमि पर ही की जाती हैं।
- प्राकृतिक वनस्पति, वन्यजीव एवं जंतुओं का अस्तित्व भी भूमि पर ही निर्भर करता है।
- अधिकांश खनिजों को भूमि से ही प्राप्त किया जाता है अर्थात् खनिजों की उत्पत्ति भूमि से ही संभव होती है।
- विभिन्न प्रकार के उद्योग एवं औद्योगिक क्रियाकलाप भूमि पर ही संपादित होते हैं।
- भूमि का उपयोग परिवहन एवं संचार के लिए भी पर्याप्त मात्रा में किया जाता है।
- भूमि ही मनुष्य समेत समस्त प्राणियों को आवास के लिए उचित स्थान उपलब्ध कराती है।

13. भारत जैसे विकासशील देश के लिए संसाधनों का आयोजन महत्त्वपूर्ण होता है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत में संसाधन विशाल मात्रा में उपलब्ध हैं, लेकिन उनका विकास अपर्याप्त है या उन्हें असमान रूप से वितरित किया जाता है। भारत में संसाधन नियोजन की आवश्यकता को निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा देख सकते हैं—

- झारखंड, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ आदि प्रांतों में खनिजों और कोयले के प्रचुर भंडार हैं, लेकिन तकनीकी और संस्थागत समर्थन की कमी है।
- अरुणाचल प्रदेश में जल संसाधन की प्रचुरता है, परंतु यहाँ आधारभूत विकास अर्थात् मूल विकास की कमी है। राजस्थान में पवन और सौर ऊर्जा संसाधनों की बहुतायत है, लेकिन जल संसाधनों की कमी है। कुछ राज्य : जैसे पंजाब व हरियाणा में संसाधनों की कमी है, परंतु ये राज्य आर्थिक रूप से मजबूत हैं।
- लद्दाख का शीत मरुस्थल अन्य भागों से अलग है। यह प्रदेश सांस्कृतिक विरासत का धनी है, परंतु यहाँ प्राकृतिक संसाधनों की कमी है।

14. भूमि को पारिभाषित कीजिए एवं उसकी किन्हीं दो विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर भूमि एक महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है, जिस पर मानव जीवन, वन्य जीवन, प्राकृतिक वनस्पति, आर्थिक क्रियाएँ, परिवहन एवं संचार आदि आधारित हैं।

भूमि की तीन प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) भूमि का क्षेत्र निश्चित तथा सीमित है। इसके क्षेत्र को बढ़ाया या घटाया नहीं जा सकता है। मनुष्य केवल भूमि के स्वरूप में परिवर्तन कर सकता है।

(ii) मनुष्य को प्रकृति द्वारा भूमि नि:शुल्क प्राप्त है। इस संसाधन की प्राप्ति के लिए मानव समाज को कुछ भी खर्च या त्याग नहीं करना पड़ा है।

(iii) भूमि अनाशवान है। भूमि को न तो उत्पन्न किया जा सकता है और न ही इसका विनाश किया जा सकता है। मनुष्य केवल भूमि की उर्वरता में वृद्धि या कमी कर सकता है।

15. भारत में भूमि सुधार के तीन उद्देश्यों को बताइए।

उत्तर भूमि सुधार से तात्पर्य बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने की प्रक्रिया है। इसकी आवश्यकता इसलिए पड़ती है, क्योंकि अनेक कारणों से भूमि की उर्वरा शक्ति का ह्रास हो जाता है तथा मृदा धीरे-धीरे बंजर हो जाती है।

भारत में भूमि सुधार के तीन उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- बंजर भूमि की उपजाऊ बनाना।
- वृक्ष एवं वनस्पति रहित भूमि में वनीकरण करना।
- भूमि में जैव रासायनिक तत्त्वों के संतुलन को सही करना।

16. भारत की मृदाओं का वर्गीकरण प्रस्तुत कीजिए तथा किसी एक मृदा की किन्हीं दो विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर रासायनिक और भौतिक गुणों; जैसे—रंग, बनावट, मोटाई आदि के आधार पर भारत की मृदाओं को आठ वर्गों में विभाजित किया जाता है, जो निम्नलिखित हैं—

(i) जलोढ़ मृदा (ii) काली मृदा
(iii) लाल और पीली मृदा (iv) लैटेराइट मृदा
(v) मरुस्थलीय मृदा (vi) वनीय एवं पहाड़ी मृदा
(vii) लवणीय मृदा तथा (viii) पीट या जैविक मृदा।

काली मृदा की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) यह मृदा दक्कन पठार के उत्तर-पश्चिमी भागों में पाई जाती है, जो लावाजनक शैलों से बनी है।

(ii) इस मृदा में कैल्शियम कार्बोनेट, मैग्नीशियम, पोटाश और चूने जैसे पौष्टिक तत्त्व पाए जाते हैं।

17. "भारत कुछ प्रकार के संसाधनों में संपन्न है, परंतु कुछ अन्य संसाधनों की यहाँ कमी है।" उदाहरण देकर कथन का समर्थन कीजिए।

उत्तर झारखंड, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ आदि प्रांतों में खनिजों और कोयले के प्रचुर भंडार हैं, लेकिन तकनीकी और संस्थागत समर्थन की कमी है। अरुणाचल प्रदेश में जल संसाधन की प्रचुरता है, परंतु यहाँ आधारभूत विकास अर्थात् मूल विकास की कमी है। राजस्थान में पवन और सौर ऊर्जा संसाधनों की बहुतायत है, लेकिन जल संसाधनों की कमी है। कुछ राज्य: जैसे पंजाब व हरियाणा में संसाधनों की कमी है, परंतु ये राज्य आर्थिक रूप से मजबूत हैं। लद्दाख का शीत मरुस्थल अन्य भागों से अलग है। यह प्रदेश सांस्कृतिक विरासत का धनी है, परंतु यहाँ प्राकृतिक संसाधनों की कमी है।

18. भारत में जलोढ़ मृदा के क्षेत्र बताइए तथा कृषि में इसके महत्त्व का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत में जलोढ़ मृदा उत्तरी मैदान के अतिरिक्त सिंधु, गंगा एवं ब्रह्मपुत्र नदियों की घाटियों में राजस्थान एवं गुजरात तक फैली हुई है। यह पूर्वी तटीय मैदान में महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों के डेल्टाओं में भी मिलती है।

इस मृदा में रेत, सिल्ट और मृतिका के विभिन्न अनुपात पाए जाते हैं। यह मृदा पोटाश, फॉस्फोरस और चूना युक्त होती है, जो गन्ना, चावल, गेहूँ और अन्य अनाजों एवं दलहन फसलों की खेती के लिए उपयुक्त है।

19. जलोढ़ मृदा की तीन विशेषताओं को लिखिए।

उत्तर भारत में जलोढ़ मृदा विस्तृत भू-भाग पर फैली हुई है। यह देश की महत्त्वपूर्ण मृदा है। इस मृदा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

- यह मृदा **उत्तरी मैदान** के अतिरिक्त सिंधु, गंगा व ब्रह्मपुत्र नदियों के द्वारा राजस्थान और गुजरात तक फैली हुई है। यह पूर्वी तटीय मैदान में महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों के डेल्टाओं में भी मिलती है।
- इस मृदा में रेत, सिल्ट और चिकनी मृदा अर्थात् मृत्तिका के विभिन्न अनुपात पाए जाते हैं। यह मृदा पोटाश, फॉस्फोरस और चूनायुक्त होती है, जो गन्ना, चावल, गेहूँ और अन्य अनाजों व दलहन फसलों की खेती के लिए उपयुक्त है। जलोढ़ मृदा पर्वतों की तलहटी पर बने मैदानों; जैसे—द्वार, चो और तराई क्षेत्रों में सामान्यत: पर पाई जाती है।
- आयु के आधार पर जलोढ़ मृदा बाँगर (पुरानी जलोढ़ मृदा) और खादर (नवीन जलोढ़ मृदा) दो प्रकार की होती है।

20. बांगर और खादर में अंतर बताइए।

उत्तर जलोढ़ मृदा का निर्माण हिमालय के तीन महत्त्वपूर्ण नदी तंत्रों सिन्धु, गंगा एवं ब्रह्मपुत्र द्वारा लाए गए निक्षेपों से होता है।

बांगर और खादर में निम्नलिखित अंतर है—

खादर	बांगर
यह नई तलछट द्वारा निर्मित होता है।	मैदान के पुरारी जलोढ़ मृदा बांगर कहलाती हैं।
यह मैदान का निचला भाग होता है, जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ का जल पहुँचता है।	यह मैदान का ऊँचा भाग होता है, जहाँ नदियों के बाढ़ का जल नहीं पहुँचता है।
यह अपेक्षाकृत अधिक उपजाऊ मृदा होती है।	यह अपेक्षाकृत कम उपजाऊ मृदा होती है।
इस मृदा में तलछट के जमाव में भिन्नता देखने को मिलती है।	इस मृदा में कैल्सियम की मात्रा अधिक पाई जाती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भू-संसाधन से क्या आशय है? भारत में भूमि उपयोग के प्रतिरूप का वर्णन कीजिए।

उत्तर भू-संसाधन—भूमि एक महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है, जिस पर मानव जीवन, वन्य जीवन, प्राकृतिक वनस्पति, आर्थिक क्रियाएँ, परिवहन एवं संचार आदि आधारित हैं। भूमि एक सीमित संसाधन है, इसलिए भूमि का विभिन्न उद्देश्यों के लिए सावधानी और योजनाबद्ध तरीके से उपयोग किया जाना चाहिए। भारत के **भौगोलिक क्षेत्र** (Geographical Area) में—

- 43% भू-क्षेत्र मैदान हैं, जो कृषि एवं उद्योग के विकास में सहायक होता है।
- 27% भू-क्षेत्र पर पठार हैं, जिसमें खनिजों, जीवाश्म, ईंधन और वनों का अपार भंडार है।
- 30% भू-क्षेत्र पर पर्वत हैं, जो बारहमासी नदियों के प्रवाह एवं पर्यटन विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं।

भारत में भूमि उपयोग के प्रतिरूप

भारत में भूमि उपयोग प्रतिरूप (Land use Pattern in India) के निम्नलिखित कारक हैं—

(i) भौतिक कारक (Physical Factors)—इसके अंतर्गत जलवायु, मृदा के प्रकार और भू-आकृति इत्यादि सम्मिलित हैं।

(ii) मानवीय कारक (Human Factors)—इसके अंतर्गत जनसंख्या घनत्व, सांस्कृतिक कारक, प्रौद्योगिकी क्षमता आदि सम्मिलित हैं।

भू-उपयोग—भारत में भू-संसाधनों का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए होता है—

(i) वन

(ii) कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि

(a) बंजर तथा कृषि अयोग्य भूमि

(b) गैर-कृषि प्रयोजनों (Non-Agricultural Purpose) में लगाई गई भूमि; जैसे—इमारतें, सड़क, उद्योग इत्यादि।

(iii) परती भूमि (Fallow Land) के अतिरिक्त अन्य कृषि अयोग्य भूमि

(a) स्थायी चरागाहें तथा अन्य चरागाह भूमि

(b) विविध वृक्षों, वृक्ष फसलों तथा उपवनों के अधीन भूमि (जो शुद्ध बोये गए क्षेत्र में शामिल नहीं है), कृषि योग्य बंजर भूमि, जहाँ पाँच से अधिक वर्षों से खेती न की गई हो।

(iv) परती भूमि

(a) वर्तमान परती भूमि (जहाँ एक कृषि वर्ष या उससे कम समय से खेती न की गई हो)।

(b) वर्तमान परती भूमि (Fallow Land) के अतिरिक्त अन्य परती भूमि या पुरातन परती भूमि (जहाँ 1 से 5 कृषि वर्ष से खेती न की गई हो)।

(v) शुद्ध (निवल) बोया गया क्षेत्र एक कृषि वर्ष में एक बार से अधिक बोये गए क्षेत्र को शुद्ध (निवल) बोये गए क्षेत्र में जोड़ दिया जाए, तो वह **सकल कृषि क्षेत्र** कहलाता है।

2. भारत में भूमि सुधार कार्यक्रमों की विवेचना निम्नलिखित शीर्षकों में कीजिए।

(a) उद्देश्य (b) कार्यक्रम

उत्तर भूमि सुधार से तात्पर्य बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने की प्रक्रिया है। इसकी आवश्यकता इसलिए पड़ती है, क्योंकि अनेक कारणों से भूमि की उर्वरा शक्ति का ह्रास हो जाता है,

जिस कारण यह धीरे-धीरे बंजर हो जाती है। इसके आवश्यक उर्वर तत्त्व नष्ट हो जाते हैं।

भारत में भूमि सुधार के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(i) बंजर भूमि को उपजाऊ बनाना।

(ii) वृक्ष एवं वनस्पति रहित भूमि में वनीकरण करना।

(iii) मृदा की pH क्षमता को सही करना अर्थात् अम्लीयता तथा खारेपन (क्षारीयता) को कम करना।

(iv) भूमि में जैव रासायनिक तत्त्वों के संतुलन को सही करना।

भारत के प्रमुख भूमि सुधार कार्यक्रम निम्नलिखित हैं—

(i) बंजर भूमि विकास कार्यक्रम—राष्ट्रीय बंजर भूमि विकास बोर्ड ने वर्ष 1989-90 में बंजर भूमि विकास कार्यक्रम शुरू किया। इस कार्यक्रम के तहत गैर-वनीय बंजर भूमि को शामिल किया गया है।

(ii) रेगिस्तानी भूमि विकास कार्यक्रम—रेगिस्तानी भूमि विकास कार्यक्रम वर्ष 1977-78 में भारत के 7 राज्यों के 40 जिलों के 235 विकास खंडों में लागू किया गया है। इसका उद्देश्य रेगिस्तान प्रसार को रोकना तथा स्थानीय संसाधनों की उत्पादकता में बढ़ोतरी कर स्थानीय लोगों की आय और रोजगार स्तर में वृद्धि करना है।

(iii) वृक्षारोपण कार्यक्रम—इसके अंतर्गत खाली पड़ी भूमि पर तथा कृषि भूमि की मेड़ों पर वृक्षारोपण करना चाहिए, क्योंकि वृक्षों की जड़ें मृदा को संगठित कर जकड़े रहती हैं।

3. भूमि संसाधन से क्या तात्पर्य है? भूमि संसाधन के कोई तीन महत्त्व लिखिए।

उत्तर भूमि एक महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है, जिस पर मानव जीवन, वन्य जीवन, प्राकृतिक वनस्पति, आर्थिक क्रियाएँ, परिवहन एवं संचार आदि आधारित हैं। भूमि एक सीमित संसाधन है, इसलिए विभिन्न उद्देश्यों के लिए भूमि का सावधानी और योजनाबद्ध तरीके से उपयोग किया जाना चाहिए।

भूमि संसाधन के प्रमुख महत्त्व निम्नलिखित हैं—

(i) भूमि मनुष्य के जीवन का आधार है। भूमि के अभाव में मनुष्य का जीवन संभव नहीं है। मनुष्य के जीवन के सभी क्रियाकलाप; जैसे—चलना-फिरना, व्यवसाय, मकान, दुकान, कृषि, उत्खनन एवं कारखाने सभी भूमि से जुड़े हैं।

(ii) विभिन्न प्राथमिक उद्योगों; जैसे—कृषि, मत्स्यपालन, वनस्पति, खनिज व्यवसाय आदि का विकास भूमि पर निर्भर करता है। जिन क्षेत्रों में जिस प्रकार के प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हैं, वहाँ उन्हीं से संबंधित प्राथमिक उद्योगों का विकास हो सकता है।

(iii) अधिकांश ऊर्जा के उत्पादन का साधन कोयला तथा पेट्रोलियम का स्रोत भूमि ही है।

(iv) अधिकांश परिवहन एवं संचार के साधनों का विकास भूमि पर ही हुआ है। सड़क, रेलमार्ग, डाक-तार आदि का विकास भूमि पर निर्भर करता है।

4. मरुस्थलीय मृदा की कोई पाँच प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर यह मृदा भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र के 4% भाग में विस्तृत है। कुछ क्षेत्रों में इस मृदा में नमक की मात्रा इतनी अधिक होती है कि झीलों से जल वाष्पीकृत करके इससे नमक बनाया जाता है। इस मृदा की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(i) इस मृदा का रंग लाल एवं भूरा होता है। यह मृदा सामान्यत: रेतीली और लवणीय होती है। यह मृदा राजस्थान के अधिकांश भागों में पाई जाती है।

(ii) इस मृदा में ह्यूमस और नमी की मात्रा कम होती है तथा शुष्क जलवायु और उच्च तापमान के कारण जलवाष्पन दर अधिक होती है।

(iii) इस मृदा को उचित तरीके से सिंचित करके कृषि योग्य बनाया जा सकता है, जैसा कि पश्चिमी राजस्थान के गंगानगर जिले में हो रहा है। यह मृदा जौ, गेहूँ, कपास, मक्का, बाजरा और दालों की खेती के लिए उपयोगी है।

(iv) यह मृदा पश्चिमी राजस्थान, उत्तरी गुजरात और दक्षिणी हरियाणा में पाई जाती है।

(v) इस मृदा की सतह के नीचे कैल्सियम की मात्रा बढ़ती चली जाती है और निम्न परतों में चूने के कंकर की सतह पाई
जाती है, जिसके कारण मृदा में जल का अंत:स्यंदन नहीं हो पाता।

5. मृदा अपरदन क्या है? भारत में प्रचलित मृदा अपरदन के प्रमुख प्रकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर जल तथा पवन जैसी प्राकृतिक शक्तियों द्वारा भूमि की ऊपरी परत के शीघ्रता से बहाव को मृदा अपरदन कहते हैं।

भारत में अपरदन के प्रचलित प्रकार निम्नलिखित हैं—

- वायु द्वारा मैदान या किसी ढलवा क्षेत्र से मृदा को उड़ा ले जाने की प्रक्रिया को **वायु या पवन अपरदन** कहा जाता है। आवश्यक वायु अपरदन तब होता है, जब तेज हवाएँ सूखे की अवधि के समय हल्की बनावट वाले मृदा के क्षेत्रों के ऊपर बहती है। यह शुद्ध एवं अर्द्ध-शुष्क चराई भूमि के निम्नीकरण का सामान्य कारक है। यह मरुस्थलीकरण को बढ़ावा देने वाली एक प्रमुख प्रक्रिया है। सूखा व अति चराई के कारण जब भूमि की ऊपरी परत शक्तिशाली हवा के प्रभाव में उड़ जाती है, तो वह पवन अपरदन कहलाता है। निलंबन, सतह संचलन और विसर्पण तीन प्रकार के मृदा संचलन पवन अपरदन के दौरान होते हैं।
- पवन अपरदन से बचाव के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाते हैं
- बड़े खेतों को कई पट्टियों में बाँट दिया जाता है और हर पट्टी के बीच घास उगने के लिए कुछ स्थान छोड़ दिया जाता। यह हवा की शक्ति को कमजोर करता है।
- खेतों के चारों तरफ पौधों की रक्षक मेखला या पट्टियाँ लगा दी जाती हैं, जो हवा की गति को कम करने में प्रभावी होती हैं।
- बहते हुए जल के कारण जब मृदा की ऊपरी परत बह जाती है, तो वह **जल अपरदन** कहलाता है। जब वृहत क्षेत्र की ऊपरी मृदा घुलकर जल के साथ बह जाती है, तो वह **चादर अपरदन** कहलाता है। जब बहता हुआ जल मृत्तिका युक्त मृदाओं को काटते हुए गहरी वाहिकाएँ बनाता है, तो वह अवनालिका अपरदन कहा जाता है। ऐसी भूमि जोतने योग्य नहीं रहती है और इसे उत्खात भूमि कहते हैं।
- चंबल बेसिन में ऐसी भूमि को खड्ड भूमि कहा जाता है। इसके संरक्षण के लिए निम्नलिखित कार्य किया जा सकता है
- सामुदायिक भागीदारी द्वारा वृहत पैमाने पर वृक्षारोपण करके इसे रोका जा सकता है, जिस प्रकार हरियाणा के पंचकुला जिले में किया गया। संवर्द्धित जल संभर विकास के द्वारा जैसा कि मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले में किया गया है

6. प्राकृतिक संसाधन से आप क्या समझते हैं? भारत के किसी एक प्राकृतिक संसाधन का वितरण तथा महत्त्व लिखिए।

उत्तर प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए सभी पदार्थ, जो मनुष्य के लिए उपयोगी होते हैं, प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं। मिट्टी, जलवायु, वनस्पति, खनिज, वर्षा, ऊर्जा आदि सभी प्राकृतिक संसाधन हैं, जो मनुष्य के लिए उपयोगी हैं।

भारत में भूमि एक महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है। भारत में भिन्न-भिन्न प्रकार के उच्चावच, भू-आकृति, जलवायु तथा वनस्पतियाँ पाई जाती हैं, इसके कारण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक प्रकार की मिट्टियों के विकास में योगदान मिला है। उत्तरी मैदान में जलोढ़ मिट्टी, दक्षिणी प्रायद्वीपीय भाग में काली एवं लाल मिट्टी तथा हिमालय क्षेत्र में वनीय एवं पर्वतीय मिट्टी मिलती है। राजस्थान एवं गुजरात में मरुस्थलीय मिट्टी तथा पश्चिमी घाट, पूर्वी घाट एवं राजमहल की पहाड़ियों में लैटेराइट मिट्टी पाई जाती है।

मिट्टी प्रकृति द्वारा प्राप्त संसाधनों में से एक है। समस्त जीवधारी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपने जीवन के लिए मिट्टी पर ही निर्भर होते हैं। मिट्टी मानव एवं वनस्पति जगत एवं जीव-जन्तुओं के अस्तित्व के लिए अनिवार्य घटक है। मिट्टी समस्त जीव जगत की खाद्य एवं आवास की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।

7. भारत ने मृदा संरक्षण के दो उपायों का वर्णन कीजिए।

उत्तर मृदा के कटाव और उसके बहाव की प्रक्रिया को मृदा अपरदन कहा जाता है। **प्राकृतिक कारण**-पवन, जल एवं हिमानियाँ तथा **मानवीय कारण**-वनोन्मूलन, अति चराई आदि से मृदा अपरदन होता है।

मृदा क्षरण (मृदा अपरदन) नियंत्रण के प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं—

(i) पट्टी कृषि के अंतर्गत बड़े खेतों को अनेक पट्टियों में बाँट दिया जाता है और हर पट्टी के बीच घास उगने के लिए कुछ स्थान छोड़ दिया जाता है। यह हवा की शक्ति को कमजोर करता है और मृदा क्षरण को रोकता है।

(ii) सामुदायिक भागीदारी द्वारा वृहत् पैमाने पर वृक्षारोपण करके मृदा क्षरण को रोका जा सकता है।

(iii) समोच्च कृषि एवं सीढ़ीदार कृषि को बढ़ावा देकर मृदा क्षरण को रोका जा सकता है।

(iv) खेतों के चारों ओर पौधों की रक्षा के लिए रक्षक मेखला या पट्टियाँ लगा दी जाती हैं, जो हवा की गति को कम करने में प्रभावी होती हैं। इससे मृदा क्षरण में कमी आती है।

(v) अति चराई पर रोक लगाकर मृदा क्षरण कम किया जा सकता है।

❑❑❑

2

वन एवं वन्य जीव संसाधन

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वनों के किन्हीं चार लाभों का वर्णन कीजिए।

उत्तर **वनों या प्राकृतिक वनस्पति की लाभ या महत्त्व**—वन मानव जीवन के अनिवार्य अंग हैं। इनके बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। वनों के महत्त्व/लाभ निम्नलिखित हैं

(i) **ऑक्सीजन की पूर्ति**—वनों से ऑक्सीजन की आपूर्ति होती है, जोकि समस्त जीवधारियों के लिए प्राणवायु है।

(ii) **घरेलू उपयोग की वस्तुओं की प्राप्ति**—वनों से घरेलू उपयोग के लिए चारा, ईंधन हेतु लकड़ी तथा वन्य जीवों को आवास प्राप्त होता है।

(iii) **उद्योगों हेतु कच्चा माल**—वनों से कागज, रबर, कत्था, माचिस, खेल उपकरण, तारपीन का तेल आदि उद्योगों हेतु कच्चा माल उपलब्ध होता है।

(iv) **औषधियों की आपूर्ति**—वनों से मानव स्वास्थ्य के लिए हितकारी अनेक औषधियाँ प्राप्त होती हैं, जिनसे अनेक रोगों का उपचार किया जाता है।

(v) **वर्षा में सहायक**—वन वर्षा को आकर्षित करते हैं, जिससे जल की पर्याप्तता सुनिश्चित होती है।

(vi) **भूमि कटाव पर रोक**—वनों के वृक्षों की जड़ें मिट्टी के कणों को बाँधे रखती हैं, जिससे वर्षा के दौरान भू-क्षरण नहीं होता।

(vii) **बाढ़ नियंत्रण**—वन बाढ़ नियंत्रण में भी सहायक होते हैं। ये बाढ़ के जल की तीव्रता को कम कर देते हैं।

(viii) **पर्यावरणीय संतुलन**—वन पर्यावरणीय सन्तुलन को स्थापित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये पर्यावरण प्रदूषण को कम करते हैं तथा जैव-विविधता बनाए रखते हैं।

2. भारत में पाए जाने वाले मानसूनी वनों का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत कीजिए

1. वितरण 2. प्रमुख वृक्ष 3. आर्थिक महत्त्व

उत्तर 1. **मानसूनी वनों का वितरण**—भारत में मानसूनी वन उन क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जहाँ 75 से 200 सेमी औसत वार्षिक वर्षा होती है। ये शिवालिक के पर्वतीय भागों तथा प्रायद्वीपीय पठारी भागों में पाए जाते हैं। जल की उपलब्धता के आधार पर इन्हें आर्द्र तथा शुष्क पर्णपाती वनों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

2. **मानसूनी वनों के प्रमुख वृक्ष**—मानसूनी वनों में सागौन, साल, शीशम, महुआ, आँवला, बाँस, चंदन तथा सेमल आदि के वृक्ष प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

3. **मानसूनी वनों का आर्थिक महत्त्व**—आर्थिक रूप से मानसूनी वन काफी समृद्ध होते हैं। इन वनों में अनेक प्रकार के कीमती वृक्ष पाए जाते हैं, जिनका व्यावसायिक महत्त्व अधिक है। उदाहरण के रूप में हम चंदन के वृक्ष को देख सकते हैं। इससे अनेक सौंदर्य प्रसाधन एवं औषधियों का निर्माण होता है। इनमें साल, शीशम आदि इमारती लकड़ियाँ पाई जाती हैं।

3. भारत में वन प्रबंधन को कितने भागों में विभाजित किया गया है? इनकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत में वन प्रबंधन को तीन भागों में विभाजित किया गया है—

(i) **आरक्षित वन**—देश में आधे से अधिक वन क्षेत्र आरक्षित वन घोषित किए गए हैं। जहाँ तक वन और वन्य प्राणियों के संरक्षण की बात है, वहाँ आरक्षित वनों को सर्वाधिक मूल्यवान माना जाता है।

(ii) **रक्षित वन**—वन विभाग के अनुसार,देश के कुल वन क्षेत्र का एक-तिहाई भाग रक्षित है। इन वनों को और अधिक नष्ट होने से बचाने के लिए इनकी सुरक्षा की जाती है।

(iii) **अवर्गीकृत वन**—अन्य सभी प्रकार के वन और बंजर भूमि, जो सरकार, व्यक्तियों और समुदायों के स्वामित्व में होते हैं, अवर्गीकृत वन कहे जाते हैं।

आरक्षित एवं रक्षित वनों का संरक्षण इमारती लकड़ी आदि के लिए किया जाता है। स्थायी वनों के अंतर्गत सर्वाधिक क्षेत्र मध्य प्रदेश में है। भारत में वन एवं वन्यजीव संसाधनों का प्रबंधन सरकार के वन विभाग अथवा संबद्ध विभागों द्वारा किया जाता है।

4. वनों के तीन आर्थिक महत्त्व बताइए।

उत्तर वनों के तीन आर्थिक महत्त्व निम्नलिखित हैं—

(i) वनों से अनेक उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राप्त होता है, जिससे औद्योगिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलता है, जिसके फलस्वरूप लोगों को रोजगार मिलता है। इसके अतिरिक्त वनोत्पादों का निर्यात कर विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है।

(ii) वनों से सरकार को राजस्व की प्राप्ति होती है, जिससे राज्य की आय में वृद्धि होती है।

(iii) इसके अतिरिक्त वनों में वन्यजीव अभयारण्य, राष्ट्रीय पार्क आदि स्थापित किए जाते हैं, जो पर्यटन के प्रमुख केंद्र बन जाते हैं, जिससे पर्यटन को बढ़ावा मिलता है।

5. वर्तमान में वन्यजीव संरक्षण की आवश्यकता क्यो हैं?

उत्तर वनों के संरक्षण से पारिस्थितिकी विविधता बनी रहती है, जिससे जल, मृदा एवं वायु जैसे आवश्यक घटकों का पुन: सृजन होता रहता है। पर्यावरणीय संतुलन के लिए भी वन्यजीवों के संरक्षण की आवश्यकता है। वनों में वन्यजीवों का प्राकृतिक आवास पाया जाता है। वर्तमान में मानवीय हस्तक्षेप के कारण वन्यजीवों के आवास तथा उनकी योजना

सामग्री कम हो रही है। इसके कारण अनेक प्रजातियाँ लुप्त हो गई हैं। अत: इन्हीं संकटग्रस्त जीवों को बचाने के लिए वन्यजीव संरक्षण की आवश्यकता है। वन्यजीव पर्यावरण को स्वच्छ और संतुलित रखने में भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, वर्तमान में गिद्ध पक्षी हमारे परिवेश से कम हो गए हैं। ये मरे हुए जानवरों का मांस खाकर पर्यावरण को स्वच्छ रखने में सहायता करते हैं।

6. वन संरक्षण क्या है? इसके दो उपायों को सुझाइए।

उत्तर वन संरक्षण से अभिप्राय वनों की वर्तमान पीढ़ी तथा भावी पीढ़ी के अस्तित्व एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बचाव करना तथा विभिन्न कारणों से हो रहे इसके ह्रास को कम करना है। वनों के मानवीय जीवन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभों तथा मानवीय अस्तित्व, पर्यावरणीय सुरक्षा आदि आवश्यकताओं को देखते हुए भारत सरकार ने वर्ष 1952 में वन नीति, 1972 में वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, उनके वन्यजीव विहार, नेशनल पार्क, बायोस्फीयर रिजर्व आदि के द्वारा वन संरक्षण के विभिन्न प्रयास किए हैं।

वन संरक्षण के उपाय—वन संरक्षण के लिए किए गए प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं

- वनों के अंधाधुंध तथा अवैध दोहन पर रोक लगाकर इन्हें संरक्षित किया जा सकता है।
- अधिकाधिक वृक्षारोपण द्वारा ह्रास को रोका जा सकता है।

7. पर्यावरण संरक्षण की राष्ट्रीय नीति की समीक्षा कीजिए।

उत्तर स्वतंत्रता के पश्चात् देश में आर्थिक विकास के लिए औद्योगीकरण को बढ़ावा दिया गया। इसके परिणामस्वरूप ओद्योगिक विकास तो हुआ, किंतु इसका दुष्प्रभाव पर्यावरण के ह्रास के रूप में सामने आने लगा।

- अत: पिछले कुछ दशकों से सरकार का ध्यान पर्यावरण संरक्षाण की ओर गया, जिस कारण सरकार ने पर्यावरण में ह्रास को रोकने के लिए अनेक कदम उठाए। वर्ष 1952 में वन नीति घोषित की गई, जिसे वर्ष 1988 में संशोधित किया गया।
- पर्यावरण तथा विकास पर नीतिगत वक्तव्य वर्ष 1992 में तथा राष्ट्रीय पर्यावरण नीति वर्ष 2006 में घोषित की गई। यह नीति पर्यावरण संरक्षण हेतु नियामक के रूप में मार्गदर्शण की भूमिका का निर्वाह करती है। इस नीति में पर्यावरण संसाधनों के दक्ष उपयोग की संकलपना की गई है। इसी के अनुसार वर्तमान में औद्योगिक व खनन गतिविधयों को स्वीकृति प्रदान की जाती है। राष्ट्रीय पर्यावरण नीति विधियों सहभागियों, जैसे कि सरकारी अभिकरणों स्थापीत समुदायों तथा शोध संस्थानों के माध्यम से पर्यावरण संग्रह हेतु प्रतिबद्ध है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत के वनों का वर्गीकरण कीजिए तथा उनमें से किन्हीं दो के आर्थिक महत्त्व की विवेचना कीजिए।

उत्तर प्राकृतिक रूप से उत्पन्न घास, झाड़ियाँ, पेड़-पौधों को प्राकृतिक वनस्पति कहा जाता है। इसकी विभिन्न प्रजातियाँ वहाँ पाई जाने वाली मिट्टी और जलवायु परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल लेती हैं। ये लंबे समय तक बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के उगती हैं।

भारतीय प्राकृतिक वनस्पति अथवा वन—भारत में विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति पाई जाती हैं। हिमालय पर्वत श्रृंखला पर शीतोष्ण कटिबंधीय वनस्पति उगती है। पश्चिमी घाट तथा अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में उष्णकटिबंधीय तथा वर्षा वन पाए जाते हैं। डेल्टाई क्षेत्रों में उष्णकटिबंधीय तथा मैंग्रोव वन पाए जाते हैं। राजस्थान के मरुस्थलीय और अर्द्ध-मरुस्थलीय क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की झाड़ियाँ, कैक्टस और काँटेदार वनस्पति पाई जाती है।

वनों के प्रकार—प्रमुख वनस्पति प्रकार तथा जलवायु परिस्थिति के आधार पर भारतीय वनों को निम्नलिखित प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

(i) उष्णकटिबंधीय वर्षा (सदाबहार) **वन**—ये वन पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढाल पर, मेघालय, अंडमान-निकोबार तथा उत्तर-पूर्वी भारत में मिलते हैं। ये वन उन उष्ण तथा आर्द्र प्रदेशों में पाए जाते हैं, जहाँ औसत वार्षिक वर्षा 250 सेमी से अधिक होती है और औसत तापमान 22° सेल्सियस से अधिक रहता है। ये वन सघन तथा परतदार होते हैं। इन वनों में भूमि के नजदीक झाड़ियाँ तथा बेलें, इनके ऊपर छोटे कद के पेड़-पौधे और सबसे ऊपर ऊँचे वृक्ष होते हैं। इन सदाबहार पेड़ों की लंबाई 60 मी या इससे भी अधिक हो सकती है। इन वनों में रोजवुड, महोगनी तथा एबोनी प्रजातियों के वृक्ष प्रचुरता से पाए जाते हैं। उष्णकटिबंधीय वनों का वैश्विक विस्तार विषुवत् रेखा के 30° उत्तर एवं 30° दक्षिण के मध्य उष्णकटिबंध में विस्तृत है।

(ii) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन/मानसूनी वन—इन्हें उष्णकटिबंधीय मानसूनी वन भी कहा जाता है। ये वन भारत में सर्वाधिक विस्तृत वन हैं। ये वन उन क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जहाँ 75 से 200 सेमी औसत वार्षिक वर्षा होती है। ये वन शिवालिक के पर्वतीय भागों तथा प्रायद्वीपीय पठारी भागों में पाए जाते हैं।

ये वन हिमालय के गिरिपाद, उत्तर-पूर्वी भारत तथा पश्चिमी घाट के पूर्वी ढालों पर उगते हैं। इनमें सागौन, साल, शीशम, महुआ, आँवला, बाँस, चंदन, सेमल आदि प्रजातियों के वृक्ष पाए जाते हैं। शुष्क पर्णपाती वन देश प्रायद्वीपीय एवं उत्तर भारत के मैदानों में पाए जाते हैं। सागौन, अमलतास, बेल, खैर आदि इन वनों के प्रमुख वृक्ष हैं।

आर्थिक रूप से ये समृद्ध वन हैं। इन वनों में प्राप्त होने वाले चंदन वृक्ष अत्यन्त कीमती होते हैं, जिनसे सौंदर्य प्रसाधन एवं औषधियाँ निर्मित होती हैं, इनमें साल, शीशम आदि इमारती लकड़ी के रूप में उपयोग में लाए जाते हैं।

(iii) उष्णकटिबंधीय काँटेदार वन—ये वन उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं, जहाँ वर्षा 50 सेमी से कम होती है। इन वनों में कई प्रकार की घास और झाड़ियाँ शामिल हैं। इसमें दक्षिणी-पश्चिमी पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र शामिल हैं।

इनमें पाई जाने वाली मुख्य प्रजातियाँ बबूल, बेर, खजूर, खैर, नीम, खेजड़ी, पलास इत्यादि हैं।

(iv) पर्वतीय वन—हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में ऊँचाई बढ़ने के साथ वनों के कटिबंध मिलते हैं। हिमालय के गिरिपाद में 1,000 मी तक पर्णपाती वन पाए जाते हैं। 1,000 से 2,000 मी तक उपोष्ण कटिबंधीय

सदाबहार वन मिलते हैं। 1,600 से 3,300 मी तक शीतोष्ण कटिबंधीय शंकुधारी वन मिलते हैं, इनमें चीड़, देवदार, चिनार, स्प्रूस तथा ब्लूपाइन पाए जाते हैं। 3,600 मी के ऊपर अल्पाइन वन पाए जाते हैं। इनमें सिल्वर फर, जूनिफर, पाइन, बर्च आदि मिलते हैं। दक्षिण भारत के पर्वतीय वन विन्ध्याचल, पश्चिमी घाट तथा नीलगिरि में पाए जाते हैं। यहाँ नीलगिरि, अन्नामलाई तथा पालनी हिल पर **शोलास वन** पाए जाते हैं।

(v) **ज्वारीय वन**—ये वन नदियों के डेल्टाई भागों में पाए जाते हैं। पश्चिमी बंगाल, अंडमान-निकोबार में ये वन पाए जाते हैं। यहाँ सुंदरी वृक्षों की प्रचुरता रहती है। गंगा नदी के सुंदरवन डेल्टा का नाम इन्हीं वनों के नाम पर सुंदरवन पड़ा है।

वनों या प्राकृतिक वनस्पति के लाभ या आर्थिक महत्त्व

वन, मानव जीवन के अनिवार्य अंग हैं। इनके बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। वनों के महत्त्व लाभ निम्नलिखित हैं

(i) **ऑक्सीजन की पूर्ति**—वनों से ऑक्सीजन की आपूर्ति होती है, जोकि समस्त जीवधारियों के लिए प्राणवायु है।

(ii) **घरेलू उपयोग की वस्तुओं की प्राप्ति**—वनों से घरेलू उपयोग के लिए चारा, ईंधन हेतु लकड़ी तथा वन्यजीवों को आवास प्राप्त होता है।

(iii) **उद्योगों हेतु कच्चा माल**—वनों से कागज, रबर, कत्था, माचिस, खेल उपकरण, तारपीन का तेल आदि उद्योगों हेतु कच्चा माल उपलब्ध होता है।

(iv) **औषधियों की आपूर्ति**—वनों से मानव स्वास्थ्य के लिए हितकारी अनेक औषधियाँ प्राप्त होती हैं, जिनसे अनेक रोगों का उपचार किया जाता है।

(v) **वर्षा में सहायक**—वन वर्षा को आकर्षित करते हैं, जिससे जल की पर्याप्तता सुनिश्चित होती है।

(vi) **भूमि कटाव पर रोक**—वनों के वृक्षों की जड़ें मिट्टी के कणों को बाँधे रखती हैं, जिससे वर्षा के दौरान भू-क्षरण नहीं होता।

(vii) **बाढ़ नियंत्रण**—वन बाढ़ नियंत्रण में भी सहायक होते हैं। ये बाढ़ के जल की तीव्रता को कम कर देते हैं।

(viii) **पर्यावरणीय संतुलन**—वन पर्यावरणीय संतुलन को स्थापित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वन पर्यावरण प्रदूषण को कम करते हैं तथा जैव-विविधता बनाए रखते हैं।

2. भारतीय वनों का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत कीजिए।

1. वनों के प्रकार 2. वनों का महत्त्व

3. वनों का संरक्षण

उत्तर वनों के प्रकार एवं महत्त्व के लिए दीर्घ उत्तरीय प्रश्न संख्या (1) का अध्ययन करें।

वन संरक्षण एवं वन नीति

वन संरक्षण से अभिप्राय वनों का वर्तमान पीढ़ी तथा भावी पीढ़ी के अस्तित्व एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बचाव करना तथा विभिन्न कारणों से हो रहे इसके ह्रास को कम करना है।

वनों के मानवीय जीवन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभों तथा मानवीय अस्तित्व, पर्यावरणीय सुरक्षा आदि आवश्यकताओं को देखते हुए भारत सरकार ने वर्ष 1952 में वन नीति, वर्ष 1972 में वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, उनके वन्यजीव विहार, नेशनल पार्क, बायोस्फीयर रिजर्व आदि के द्वारा वन संरक्षण के विभिन्न प्रयास किए हैं।

वन संरक्षण/वन विनाश रोकने के उपाय

(i) **वनों का विस्तार**—वनों का अंधाधुंध दोहन रोकना तथा वनों का विस्तार करना वन संरक्षण की श्रेणी में आता है अर्थात् वनों की रक्षा कर उन्हें आगामी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित करना वन संरक्षण कहलाता है। इसके दो प्रमुख उपाय हैं

- वनों का अवैध दोहन न करना।
- खाली पड़ी भूमि पर वृक्षारोपण करना तथा वनों को आग से बचाना।

(ii) **वन संरक्षण के कार्य**—वन संरक्षण के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यों को क्रियान्वित किया जाता है

- अनेक प्रकार के पादप-रोगों से वनों की रक्षा करना।
- वनों में पशुचारण को नियंत्रित करना।
- नए पौधों की पशुओं से रक्षा करना, ताकि वह बड़ा होकर वृक्ष बन सके।

(iii) **कृषि तथा आवास हेतु वनों के विनाश पर रोक**—वनों अथवा जंगलों को काटकर कृषि-योग्य क्षेत्र का विकास नहीं किया जाना चाहिए। झूमिंग कृषि को नियंत्रित किया जाना चाहिए। नगरों के विकास के लिए वनों के विनाश को रोका जाना चाहिए।

(iv) **वृक्षारोपण**—वनों की रक्षा के साथ-साथ वृक्षारोपण भी आवश्यक है। वृक्षारोपण एक सतत् प्रक्रिया के रूप में होना चाहिए। इसके लिए जिस अनुपात में वृक्ष काटे जाएँ, उसी अनुपात में वृक्ष लगाए भी जाने चाहिए।

(v) **वनों का पर्यटन स्थलों के रूप में विकास**—वन प्राकृतिक सुंदरता के परिचायक होते हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इससे वन संरक्षण के साथ-साथ सरकार को आय भी प्राप्त होती है। इसी को ध्यान में रखकर अनेक देशों में **नेशनल पार्क** तथा **वन अभयारण्यों** का विकास किया गया है।

(vi) **वनों का आग से बचाव**—मानवीय भूलों के कारण अथवा असावधानियों के कारण कभी-कभी वनों में लगने वाली आग प्रचंड रूप धारण कर लेती है, जिससे वृक्षों से भरे वन का बड़ा क्षेत्र वृक्षरहित हो जाता है। अत: इस प्रकार की क्षति को रोकने के लिए कुछ सावधानियाँ रखना आवश्यक है जैसे कि

- वन क्षेत्र में जलती हुई वस्तुओं को वन के आस-पास नहीं छोड़ना चाहिए।
- आग को नियत्रिंत करने वाले ऐसे दस्तों की व्यवस्था होनी चाहिए, जो हेलीकॉप्टर की सहायता से आग बुझा सकें।

3. वनों के महत्त्व पर प्रकाश डालिए तथा वन विनाश रोकने के लिए कोई चार उपाय बताइए।

उत्तर वन मानव जीवन के अनिवार्य अंग हैं। इनके बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। वनों या प्राकृतिक वनस्पति से होने वाले प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ निम्नलिखित हैं—

(i) **ऑक्सीजन की पूर्ति**—वनों से ऑक्सीजन की आपूर्ति होती है, जोकि समस्त जीवधारियों के लिए प्राण-वायु है।

(ii) **घरेलू उपयोग की वस्तुओं की प्राप्ति**—वनों से घरेलू उपयोग के लिए वस्तुएँ तथा पशुओं के लिए चारा, ईंधन हेतु लकड़ी तथा वन्यजीवों को आवास प्राप्त होता है।

(iii) **उद्योगों हेतु कच्चा माल**—वनों से कागज, रबड़, कत्था, माचिस, खेल उपकरण, तारपीन का तेल आदि उद्योगों हेतु कच्चा माल उपलब्ध होता है।

(iv) **विभिन्न प्रकार के तेल एवं औषधियों की आपूर्ति**—चंदन, नीम, महुआ आदि तेलों के उत्पादन में भी वनों का काफी महत्त्व है। वनों से मानव स्वास्थ्य के लिए हितकारी अनेक औषधियाँ प्राप्त होती हैं, जिनसे रोगों का उपचार किया जाता है।

(v) **कुटीर व लघु उद्योगों के विकास में सहायक**—वनों से कुटीर एवं लघु उद्योग के लिए भी विभिन्न प्रकार की सामग्री प्राप्त होती है; जैसे—शहद, रेशम, मोम आदि। इसके अतिरिक्त वन बीड़ी, रस्सी, टोकरियों आदि के निर्माण के लिए भी उपयोगी हैं।

(vi) **आय के स्रोत**—वन संसाधन केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार दोनों के लिए पर्याप्त आय के स्रोत हैं।

(vii) **पर्यटन स्थल**—वन प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए प्राकृतिक सौंदर्य का अनुपम उपहार हैं। इनका प्राकृतिक सौंदर्य भ्रमण के इच्छुक व्यक्तियों को वनस्थल घूमने के लिए आकर्षित करता है।

(viii) **पर्यावरणीय संतुलन**—वन पर्यावरणीय संतुलन को स्थापित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये पर्यावरण प्रदूषण को कम करते हैं तथा जैव-विविधता बनाए रखते हैं।

(ix) **बाढ़ नियंत्रण**—वन बाढ़ नियंत्रण में भी सहायक होते हैं। ये बाढ़ के जल की तीव्रता को कम कर देते हैं।

(x) **भूमि कटाव पर रोक**—वृक्षों की जड़ें मिट्टी के कणों को बाँधे रखती हैं, जिससे वर्षा के दौरान भू-क्षरण नहीं होता।

(xi) **वर्षा में सहायक**—वन वर्षा को आकर्षित करते हैं, जिससे जल की पर्याप्तता सुनिश्चित होती है।

(xii) **खाद की प्राप्ति**—वनों के निकट की भूमि उपजाऊ होती है। ऐसा इसलिए होता है कि पेड़-पौधों की पत्तियाँ व घास-फूस सड़-गलकर प्राकृतिक खाद का निर्माण करती हैं। मिट्टी में जीवाश्म मिलने से उसकी उपजाऊ शक्ति बढ़ जाती है।

(xiii) **जलवायु नियंत्रण**—घने वन तीव्र पवनों की गति को धीमा करते हैं, जिससे वनों के निकटवर्ती स्थानों में अधिक ठंडी व अधिक गर्म हवाएँ नहीं आ पाती हैं। वन जलवायु को समशीतोष्ण बनाए रखते हैं।

वन विनाश रोकने या संरक्षण के उपाय

(i) **वनों का विस्तार**—वनों का अंधाधुंध दोहन रोकना तथा वनों का विस्तार करना वन संरक्षण की श्रेणी में आता है अर्थात् वनों की रक्षा कर उन्हें आगामी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित करना वन संरक्षण कहलाता है। इसके दो प्रमुख उपाय हैं—

- ➲ वनों का अवैध दोहन न करना।
- ➲ खाली पड़ी भूमि पर वृक्षारोपण करना तथा वनों को आग से बचाना।

(ii) **वन संरक्षण के कार्य**—वन संरक्षण के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यों को क्रियान्वित किया जाता है—

- ➲ अनेक प्रकार के पादप रोगों से वनों की रक्षा करना।
- ➲ वनों में पशुचारण को नियंत्रित करना।
- ➲ नए पौधों की पशुओं से रक्षा करना,ताकि वे बड़े होकर वृक्ष बन सकें।

(iii) **कृषि तथा आवास हेतु वनों के विनाश पर रोक**—वनों अथवा जंगलों को काटकर कृषि योग्य क्षेत्र का विकास नहीं किया जाना चाहिए। झूमिंग कृषि को नियंत्रित किया जाना चाहिए। नगरों के विकास के लिए वनों के विनाश को रोका जाना चाहिए।

(iv) **वृक्षारोपण**—वनों की रक्षा के साथ-साथ वृक्षारोपण भी आवश्यक है। वृक्षारोपण एक सतत प्रक्रिया के रूप में होना चाहिए। इसके लिए जिस अनुपात में वृक्ष काटे जाएँ, उसी अनुपात में वृक्ष लगाए भी जाने चाहिए।

(v) **वनों का पर्यटन स्थलों के रूप में विकास**—वन प्राकृतिक सुंदरता के परिचायक होते हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इससे वन संरक्षण के साथ-साथ सरकार को आय भी प्राप्त होती है। इसी को ध्यान में रखकर अनेक देशों में **नेशनल पार्क** तथा **वन अभयारण्यों** का विकास किया गया है।

(vi) **वनों का आग से बचाव**—मानवीय भूलों के कारण अथवा असावधानियों के कारण कभी-कभी वनों में लगने वाली आग प्रचंड रूप धारण कर लेती है, जिससे वृक्षों से भरे वन का बड़ा क्षेत्र वृक्ष रहित हो जाता है। अत: इस प्रकार की क्षति को रोकने के लिए कुछ सावधानियाँ रखना आवश्यक है—

- ➲ वन क्षेत्र में जलती हुई वस्तुओं को वन के आस-पास नहीं छोड़ना चाहिए।
- ➲ आग नियंत्रण करने वाले ऐसे दस्तों की व्यवस्था होनी चाहिए, जो हेलिकॉप्टर की सहायता से आग बुझा सकें।

(vii) **वनों का बाँधों से बचाव**—सघन वन वाले क्षेत्र में नदियों पर बाँध का निर्माण होने से वनों के विशाल क्षेत्र जलमग्न हो जाते हैं, जिससे वनों का विनाश हो जाता है। इसी वजह से भारत में टिहरी बाँध के निर्माण के समय इसका तीव्र विरोध किया गया था। अत: ऐसी नदियों पर बाँध बनाने का कार्य किया जाना चाहिए, जहाँ वनों तथा पर्यावरण की क्षति कम हो।

(viii) **वन प्रबंधन**—वन संरक्षण के लिए वनों का समुचित प्रबंधन आवश्यक है। वन प्रबंधन के अंतर्गत निम्नलिखित कार्य संपादित किए जाते हैं—

- ➲ वन सर्वेक्षण
- ➲ वनों का वर्गीकरण
- ➲ वनों की प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार
- ➲ वन संरक्षण की नई तकनीक का विकास
- ➲ सामाजिक वानिकी का विकास
- ➲ पर्यटन के लिए वन क्षेत्र का विकास
- ➲ वन अनुसंधान को बढ़ावा देना
- ➲ वनों के महत्त्व के बारे में सामाजिक चेतना जागृत करना

❑❑❑

3

जल संसाधन

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जल संबंधित आँकड़ों एवं तथ्यों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर सयुंक्त राष्ट्र विश्व जल विकास रिपोर्ट-2003 के अनुसार, विश्व में जल के कुल आयतन का 96.5% महासागरों में पाया जाता है, जिसमें केवल 2.5% जल अलवणीय जल है।

विश्व में अलवणीय जल का 70% भाग अंटार्कटिका, ग्रीनलैंड और पर्वतीय क्षेत्रों में बर्फ की चादरों और हिमनदों के रूप में मिलता है। 30% से कम भौमजल जलभृत के रूप में पाया जाता है।

भारत वैश्विक वर्षण (वर्षा एवं हिमपात) का 4% भाग ही प्राप्त करता है, परंतु प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष जल उपलब्धता के दृष्टिकोण के संदर्भ में विश्व में भारत का 133वाँ स्थान है। भारत में कुल नवीकरण योग्य जल संसाधन 1,897 वर्ग किमी प्रतिवर्ष अनुमानित है। यह आशंका है कि वर्ष 2025 तक भारत का एक बड़ा भाग जल के अभाव से ग्रसित होगा।

2. जल दुर्लभता क्या है? इसके तीन मुख्य कारण बताइए।

उत्तर स्वीडन के एक विशेषज्ञ फाल्कनमार्क के अनुसार, जल की कमी तब होती है, जब प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिवर्ष 1,000 से 1,600 घन मी के बीच जल उपलब्ध होता है। जल की कमी से ही जल दुर्लभता की स्थिति उत्पन्न होती है। वर्तमान परिदृश्य में इसके तीन कारण निम्नलिखित हैं—

(i) अधिकांश जल की कमी अत्यधिक प्रयोग और समाज के विभिन्न वर्गों में जल के असमान वितरण के कारण होती है।

(ii) अत्यधिक जनसंख्या के कारण जल की कमी होती है, क्योंकि घरेलू कार्यों में जल का उपयोग अत्यधिक होता है।

3. बहुउद्देशीय नदी परियोजनाओं पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर बहुउद्देशीय परियोजनाओं को स्वतंत्रता के पश्चात् शुरू किया गया था। इस परियोजना का उद्देश्य नदी के जल को संगृहीत करके जल संसाधनों का समुचित प्रबंधन विकसित करना है।

प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने बहुउद्देशीय नदी परियोजनाओं को गर्व से 'आधुनिक भारत के मंदिर' कहा था। उनका मानना था कि बहुउद्देशीय परियोजनाओं के चलते कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था, औद्योगीकरण और नगरीय अर्थव्यवस्था समन्वित रूप से विकास करेंगी।

4. बहुउद्देशीय नदी परियोजानाओं के तीन उद्देश्य बताइए

उत्तर इस तरह की परियोजनाओं के प्राथमिक उद्देश्य में निम्नलिखित शामिल हैं—

(i) विद्युत ऊर्जा का उत्पादन—वर्ष 2005-06 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, इन परियोजनाओं से 30,000 मेगावाट विद्युत का उत्पादन हुआ (मार्च, 2000 में 37,000) था। भारत इस माध्यम से अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का 22% भाग प्राप्त करता है।

(ii) मृदा संरक्षण—ये परियोजनाएँ नदी के पानी की गति को धीमा करके मिट्टी का संरक्षण करती हैं।

(iii) बाढ़ नियंत्रण—ये परियोजनाएँ अपने जलाशयों में अतिरिक्त पानी जमा करके बाढ़ को नियंत्रित करती है।

5. नदी परियोजनाओं के तीन प्रतिकूल प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर इस तरह की परियोजना के प्रतिकूल प्रभाव निम्नलिखित हैं—

(i) पर्यावरणीय प्रभाव—वनस्पति और जीवों के साथ ही मानव बस्तियाँ भी बाँध द्वारा बनाए जलाशय में जलमग्न हो जाती हैं और वहाँ रहने वालों को विस्थापित कर दिया जाता है, जिसके कारण अनेक गैर-सरकारी संगठनों के द्वारा इसका विरोध भी किया जाता है।

(ii) मृदा की उर्वरता पर प्रभाव—प्राकृतिक रूप से आने वाली बाढ़ के कारण प्रत्येक वर्ष मृदा पर एक उर्वर परत का विकास होता है, लेकिन बाढ़ में कमी होने के कारण मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है और लवणता भी बढ़ जाती है।

(iii) समाज पर प्रभाव—बड़ी नदी परियोजनाएँ स्थानीय समुदायों की जीविका और सांस्कृतिक परंपरा के समाप्त होने का कारण बनती हैं, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय जनसंख्या बड़े पैमाने पर विस्थापन करती है।

6. दामोदर घाटी परियोजना की स्थिति एवं महत्त्वों का वर्णन कीजिए।

उत्तर दामोदर घाटी परियोजना हुगली की सहायक नदी दामोदर नदी पर निर्मित की गई है। दामोदर घाटी परियोजना के तीन महत्त्व निम्नलिखित हैं—

(i) इस परियोजना के कारण पश्चिम बंगाल बाढ़मुक्त हुआ है। इसके अतिरिक्त बाढ़ से होने वाली मृदा क्षरण व भूमि क्षरण की समस्या से भी मुक्ति मिली है।

(ii) इस परियोजना से लगभग 6,600 मेगावाट विद्युत उत्पन्न की जा रही है, जिसका उपयोग झारखंड एवं पश्चिम बंगाल के औद्योगिक क्षेत्रों को विद्युत आपूर्ति के लिए किया जा रहा है।

(iii) पश्चिम बंगाल एवं झारखंड में 74 लाख हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई की जा रही है, जिससे खाद्यान्नों एवं जूट का अतिरिक्त उत्पादन हो रहा है।

7. रिहन्द बाँध की स्थिति एवं कोई दो महत्त्व लिखिए।

उत्तर रिहन्द बाँध उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के पिपरी नामक स्थान पर रिहन्द नदी पर स्थित है।

इस बाँध के दो महत्त्व निम्नलिखित हैं—

(i) इस बाँध से 300 मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जाता है।

(ii) इस बाँध से 600 किमी लम्बी नहरें निकाली गई हैं, जिससे 34 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई की जा रही है।

8. वर्षा जल संग्रहण क्या है? इसके लाभों को बताइए।

उत्तर वर्षा के जल का पुन: उपयोग करने के लिए उसका संरक्षण एवं भंडारण करना वर्षा जल संग्रहण कहलाता है। जल का उपयोग बागवानी, पशुधन, सिंचाई आदि के लिए किया जाता है। अत: वर्षा जल संग्रहण पानी की कमी से निपटने की एक वैकल्पिक प्रणाली है। वर्षा जल संग्रहण के लाभ निम्नलिखित हैं—

- यह प्राकृतिक जल का सबसे शुद्ध रूप और पीने के पानी का प्रमुख स्रोत बन जाता है।
- यह जल कृषि कार्यों के लिए भी प्रयोग किया जाता है।
- घरों में टैंकों के साथ भूमिगत कमरे भी बनाए जाते हैं, क्योंकि जल का स्रोत इन कमरों को भी ठंडा रखता था, जिससे ग्रीष्म ऋतु में गर्मी से राहत मिलती थी।

9. भारत में कृषि ने किस प्रकार जल संकट को गहराया है? वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत में जल संकट के लिए कई कारक उत्तरदायी हैं—

- जल का कृषि सिंचाई में अत्यधिक उपयोग
- उच्च उत्पादकता के लिए बीजों के उत्तम किस्म के लिए अति सिंचाई।
- कृषि के व्यवसायीकरण के कारण भारी मात्रा में भौम जल का उपयोग।
- कृषि के विस्तार के कारण अनुपजाऊ व बंजर भूमि पर सिंचाई के माध्यम से कृषि प्रारंभ।
- अत्यधिक कृषित उपभोग से भारत के कई क्षेत्रों में भौम जल का स्तर नीचे गिरता जा रहा है।

10. केवल उत्तरी एवं तटीय मैदानों में ही भूमिगत जल के विपुल भंडार पाए जाते हैं। इसके लिए उत्तरदायी दो कारण समझाकर लिखिए।

उत्तर उत्तरी एवं तटीय मैदानों में भूमिगत जल के अपार भंडार मिलते हैं। इसके लिए निम्नलिखित दो कारक उत्तरदायी हैं—

- उत्तरी एवं तटीय मैदानों में उपस्थित मृदा मुलायम होती है, जिससे इसमें जल आसानी से रिसकर भूमिगत हो जाता है।
- उत्तरी मैदानी क्षेत्रों में नदियों की भरपूर उपस्थिति है, जबकि तटीय मैदानों में वर्षा के समय तथा सागर से निकटता के कारण विपुल मात्रा में जल उपलब्ध होता है, जो भौम जल के स्तर को बढ़ाने के लिए उत्तरदायी होता है।

11. वर्षा जल संग्रहण का अर्थ बताइए। जल के कुशल प्रबंधन के लिए ध्यान में रखे जाने वाले किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर वर्षा जल संग्रहण वह तकनीक है, जिससे जल की मात्रा बढ़ाई जाती है। जल के कुशल प्रबंधन के लिए निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान रखा जाना चाहिए।

- लोगों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक बनाकर।
- लोगों को जल संरक्षण के उपाय से अवगत कराकर।
- बागबानी, वाहन आदि में पीने योग्य पानी को न उपयोग करने की सलाह देकर।
- अन्य घरेलू कार्यों के लिए उपभोगी जल उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करके।

12. विभिन्न वर्षा जल संग्रहण तंत्रों का भारत जैसे देश में सामाजिक-आर्थिक और पारिस्थितिक रूप से पर व्यवहार्थ विकल्प क्यों समझा जाता है?

उत्तर भारत में वर्षा जल संग्रहण तंत्रों को सामाजिक-आर्थिक और पारिस्थितिक रूप से निम्नलिखित कारणों से व्यवहार्थ विकल्प समझा जाता है

- जल संग्रहण जल संरक्षण का सबसे सस्ता विकल्प माना जाता है।
- वर्षा जल संग्रहण तकनीक बहुउद्देशीय नदी परियोजनाओं की तुलना में अधिक पर्यावरण अनुकूल है।
- भारतीय लोग वर्षा पद्धति और मृदा के गुणों से परिचित हैं इसलिए वे स्थानीय दशा और पारिस्थितिकी के अनुसार वर्षा जल और बाढ़ जल संग्रहण के अनेक तरीके विकसित कर लेते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. ''पृथ्वी का तीन-चौथाई भाग जल से ढँका है तथापि पृथ्वी पर जल की कमी पाई जाती है।'' तीन कारण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर जल दुर्लभता के उत्तरदायी कारण निम्नलिखित हैं—

- **बढ़ती जनसंख्या**—जनसंख्या की बढ़ती प्रवृत्ति जल दुर्लभता के लिए उत्तरदायी कारकों में से एक प्रमुख कारण है। बढ़ती जनसंख्या के घरेलू उपभोग के साथ-साथ उसके लिए अधिक अनाज उगाने के लिए भी जल की आवश्यकता अधिक होती है।
- **शहरीकरण**—बढ़ती जनसंख्या के कारण नगरों पर भारी दबाव बढ़ता है, जिससे तीव्र और अनियंत्रित नगरीकरण देखने को मिलता है। जिससे शहरों में घरेलू उपभोग के लिए जल की आवश्यकता में अपार वृद्धि होती है, जिससे जल का अतिशोषण होता है और जल दुर्लभता की प्रवृत्ति और प्रबल होती जाती है।
- **कृषि का वाणिज्यिकरण**—हरित क्रांति की सफलता के बाद से ही किसान वाणिज्यिक फसलों के अधिक उत्पादन पर बल देते हैं। वाणिज्यिक फसलों के लिए अधिक जल तथा निवेश की आवश्यकता होती है। इसमें उत्पादित फसलें अधिक जलगहन होती हैं। इससे नलकूप और कूओं जैसे भौम जल निष्कासन के स्रोत का जलस्तर नीचा होता है।
- **औद्योगीकरण**—स्वतंत्रता के बाद भारत में तीव्र गति से उद्योगों का विकास हुआ। उद्योगों की बढ़ती संख्या के कारण अलवणीय जल संसाधनों पर दबाव लगातार बढ़ता चला गया और इससे जल का अति दोहन हुआ और जल प्रदूषण भी बढ़ा। जल-विद्युत उत्पादन के द्वारा भी जल दुर्लभता में वृद्धि देखने को मिलती है।

2. बहुउद्देशीय नदी परियोजनाओं से पैदा होने वाली पारिस्थितिक समस्याओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर इस तरह की परियोजना के प्रतिकूल प्रभाव एवं अंतर्निहित सीमाएँ निम्नलिखित हैं—

- **पर्यावरणीय प्रभाव**—वनस्पति और जीवों के साथ ही मानव बस्तियाँ भी बाँध द्वारा बनाए जलाशय में जलमग्न हो जाती हैं और वहाँ रहने वालों को विस्थापित कर दिया जाता है, जिसके कारण अनेक गैर-सरकारी संगठनों के द्वारा इसका विरोध भी किया जाता है।
- **मृदा की उर्वरता पर प्रभाव**—प्राकृतिक रूप से आने वाली बाढ़ के कारण प्रत्येक वर्ष मृदा पर एक उर्वर परत का विकास होता है, लेकिन बाढ़ में कमी होने के कारण मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है और लवणता भी बढ़ जाती है।
- **समाज पर प्रभाव**—बड़ी नदी परियोजनाएँ स्थानीय समुदायों की जीविका और सांस्कृतिक परंपरा के समाप्त होने का कारण बनती हैं, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय जनसंख्या बड़े पैमाने पर विस्थापन करती है। गरीब व भूमिहीन कृषक वर्ग कृषि भूमि के दूर हो जाने से स्वयं को असहाय अनुभव करते हैं। इससे धनी किसान वर्ग और भूमिहीनों के बीच सामाजिक दूरियाँ उत्पन्न होती हैं।
- **जलीय जीव पर प्रभाव**—बाँध के जलाशय में मछलियों को पर्याप्त पोषक तत्त्व नहीं मिल पाते हैं और न ही वे अंडे देने के लिए बाँध से बाहर पलायन कर पाती हैं।

3. बहुउद्देशीय परियोजनाओं के विरुद्ध आंदोलनों को बताइए।

उत्तर विगत वर्षों में बहुउद्देशीय परियोजनाओं और बड़े बाँधों को उनके कई प्रतिकूल प्रभावों के कारण आम जनता और सिविल सोसायटी के विरोध का सामना करना पड़ा है, जिनमें से कुछ घटनाओं का वर्णन निम्नलिखित है

- गुजरात में नर्मदा नदी पर बनाई गई सरदार सरोवर बाँध परियोजना स्थानीय समुदाय के बड़े पैमाने पर विस्थापन का कारण है। **नर्मदा बचाओ आंदोलन** नामक एक गैर-सरकारी संगठन ने कई पर्यावरणविदों, आदिवासी लोगों, किसानों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ उचित पुनर्वास और पारिस्थितिक सुरक्षा की माँग की। इसी प्रकार भागीरथी पर टिहरी बाँध परियोजना में बड़े पैमाने पर विस्थापन ने कई सामाजिक आंदोलनों की शुरुआत की।
- उत्तर प्रदेश में सोन नदी पर रिहंद घाटी परियोजना ने बड़े पैमाने पर विस्थापन किया, जिसके कारण इसे सार्वजनिक आंदोलन का सामना करना पड़ा।
- गुजरात में साबरमती घाटी के अधिक पानी से सूखे क्षेत्रों और शहरी क्षेत्रों में आपूर्ति किए जाने पर किसान दंगों के लिए तैयार हो गए थे। कावेरी नदी के पानी को साझा करने के लिए कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच बहुउद्देशीय परियोजनाओं की लागतों और लाभों को साझा करने के संबंध में अंतर्राज्यीय जल विवाद भी सामान्य हैं।

4. बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना से आप क्या समझते हैं? उनके चार उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर **बहु-उद्देशीय नदी घाटी परियोजना**

- जिन नदी घाटी परियोजनाओं के द्वारा एक साथ अनेक उद्देश्यों की पूर्ति होती है, उन्हें बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएँ कहा जाता है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इन्हें **आधुनिक भारत के मंदिर** की संज्ञा दी थी, क्योंकि इनके द्वारा देश के सर्वांगीण विकास की रूपरेखा तैयार की जा सकती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में खाद्यान्न उत्पादन, औद्योगिक विकास एवं भूमि संरक्षण में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए इन परियोजनाओं को प्रारंभ किया गया था।

बहु-उद्देशीय परियोजनाओं का महत्त्व/लाभ/उद्देश्य

देश के बहुआयामी विकास को गति प्रदान करने के लिए देश की अनेक नदियों पर बहु-उद्देशीय परियोजनाओं की स्थापना की गई है। इनके अंतर्गत नदियों के जल का उपयोग एक से अधिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं

(i) **सिंचाई**—नदियों में बाँध बनाकर उनमें विशाल जलाशय में जल एकत्र कर नहरें निकाली जाती हैं, जिनसे शुष्क क्षेत्रों में पेय तथा सिंचाई जल की आपूर्ति की जाती है। इंदिरा गाँधी नहर इसका प्रमुख उदाहरण है, जिसने राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों को काफी हद तक हरा-भरा बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह की है।

(ii) **जल-विद्युत उत्पादन**—वर्तमान औद्योगिक युग में विद्युत एक अपरिहार्य ऊर्जा संसाधन बन गया है, जिसका निर्माण जल-विद्युत द्वारा भी किया जाता है। नदियों में बाँध बनाकर उनमें जल-विद्युत संयंत्र स्थापित कर विद्युत निर्माण किया जाता है। भारत में उद्योगों के विकास में इन जल-विद्युत संयंत्रों की उल्लेखनीय भूमिका है। इसके अभाव में औद्योगिक विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

(iii) **बाढ़ नियंत्रण**—विनाशकारी बाढ़ों पर नियंत्रण स्थापित करने में बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं की उल्लेखनीय भूमिका रही है। दामोदर नदी घाटी परियोजना इसका उल्लेखनीय उदाहरण है। पूर्व में दामोदर नदी की विनाशक बाढ़ो के कारण इसे **बंगाल का शोक** कहा जाता था, किंतु अब स्थिति बदल चुकी है।

(iv) **मत्स्यपालन**—बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं में निर्मित बाँधों द्वारा विशाल जलाशयों का निर्माण होता है, जिनमें मत्स्यपालन से हजारों लोगों को आजीविका उपलब्ध कराई जा रही है।

(v) **उद्योग-धंधों का विकास**—ऊर्जा उद्योगों की अनिवार्य आवश्यकता ऊर्जा है। जल-विद्युत द्वारा उद्योगों को प्रचुर मात्रा में सस्ती विद्युत उपलब्ध कराई जा रही है, जिससे देश का औद्योगिक विकास हो रहा है।

(vi) **नौवहन**—बहुउद्देशीय परियोजनाओं के अंतर्गत निर्मित नहरों में जल परिवहन की संभावनाएँ उपलब्ध होती हैं।

(vii) **वनीकरण**—नदी घाटी क्षेत्रों में वनीकरण किया जाता है, जिससे न केवल वन उपज की प्राप्ति होती है, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन भी बना रहता है।

(viii) **पर्यटन का विकास**—बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं में निर्मित जलाशयों से पर्यटन का विकास होता है। इनमें नौका विहार तथा विभिन्न प्रकार की स्थानीय, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय जलीय खेलकूदों की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, जिससे पर्यटन

उद्योग को बढ़ावा मिलता है, साथ ही स्थानीय निवासियों को आजीविका प्राप्त होती है।

5. प्राचीन काल के जल संग्रहण के साक्ष्यों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर प्राचीन भारत में लोगों को वर्षा जल संग्रहण पद्धति और मृदा के गुणों के विषय में गहरा ज्ञान था। तात्कालिक लोगों के समुदाय ने स्थानीय पारिस्थितिकीय परिस्थितियों और उनकी जल आवश्यकतानुसार वर्षा जल, भौम जल, नदी जल और बाढ़ जल संग्रहण के अनेक तरीके विकसित कर लिए थे।

- ईसा से एक शताब्दी पूर्व इलाहाबाद के निकट श्रिंगवेरा में गंगा नदी की बाढ़ के जल को संरक्षित करने के लिए एक उत्कृष्ट जल संग्रहण तंत्र बनाया गया था।
- चंद्रगुप्त मौर्य के समय वृहत स्तर पर बाँध, झील और सिंचाई तंत्रों का निर्माण कराया गया।
- कलिंग (ओडिशा), नागार्जुनकोंडा (आंध्र प्रदेश), बेन्नूर (कर्नाटक) और कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में उत्कृष्ट सिंचाई तंत्र होने के साक्ष्य प्राप्त हुए। भोपाल ताल सबसे बड़ी कृत्रिम झील है, यह भोपाल में स्थित है, जो 11वीं शताब्दी में बनाई गई थी।
- 14वीं शताब्दी में इल्तुतमिश ने दिल्ली में सीरी फोर्ट क्षेत्र की जल सप्लाई के लिए 'हौज खास' बनवाया।

6. बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना के चार उद्देश्य बताइए। दामोदर नदी घाटी परियोजना के दो लाभों का वर्णन कीजिए।

उत्तर **बहु-उद्देशीय नदी घाटी परियोजना और उसके उद्देश्य**

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न संख्या 4 देखें।

दामोदर घाटी परियोजना की स्थिति

दामोदर घाटी परियोजना हुगली की सहायक नदी दामोदर पर निर्मित की गई है। दामोदर नदी का उद्गम झारखंड में छोटानागपुर की पहाड़ियों से होता है। यह नदी 530 किमी लंबी है, जिसमें से झारखंड में 290 तथा पश्चिम बंगाल में 240 किमी बहकर हुगली में मिलती है। इस नदी की ऊपरी घाटियों में वर्षा ऋतु में भारी वर्षा होती है, जिस कारण इसमें प्राय: विनाशकारी बाढ़े आती रहती थी। इसी कारण इसे **बंगाल का शोक** कहा जाता था। वर्ष 1948 में भारत सरकार ने दामोदर घाटी के सर्वांगीण विकास के लिए दामोदर घाटी निगम की स्थापना की।

इस निगम की स्थापना संयुक्त राज्य अमेरिका की **टेनेसी नदी कॉर्पोरेशन** की तर्ज पर की गई, जिसका उद्देश्य टेनेसी नदी घाटी परियोजना की तर्ज पर दामोदर घाटी परियोजना का निर्माण करना था। इस निगम का मुख्य उद्देश्य दामोदर घाटी में आने वाली बाढ़ो को नियंत्रित करना, जल-विद्युत उत्पादन तथा वितरण करना था, जिससे कि इससे लाभान्वित होने वाले राज्यों का बहुआयामी विकास हो सके। इनके साथ-साथ दामोदर घाटी को संचालित करने वाली कंपनी दामोदर घाटी निगम लिमिटेड इस क्षेत्र के निवासियों के सामाजिक-आर्थिक कल्याण की योजनाएँ भी संचालित करती है। दामोदर घाटी परियोजना भारत की प्रथम नदी घाटी परियोजना है, इसके अंतर्गत दामोदर नदी की घाटी में निम्नलिखित बाँधों का निर्माण किया गया है—बाराकर नदी पर मैथन बाँध, बाल पहाड़ी पर तिलैया बाँध, दामोदर नदी पर पंचेत हिल, एयर बरमो बाँध, बोकारो नदी पर बोकारो बाँध, कोनार नदी पर कोनार बाँध, दुर्गापुर के निकट बैराज।

दामोदर घाटी परियोजना की उपलब्धियाँ

दामोदर घाटी परियोजना की प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं

परियोजना से लगभग 6,600 मेगावाट विद्युत उत्पन्न की जा रही है। दामोदर घाटी परियोजना से उत्पन्न विद्युत का उपयोग झारखंड एवं पश्चिम बंगाल के औद्योगिक क्षेत्रों को विद्युत आपूर्ति के लिए किया जा रहा है, जिस कारण लौह-इस्पात, एल्युमीनियम आदि धात्विक उद्योगों का संकेंद्रण हुआ है, साथ ही कोलकाता (पश्चिम बंगाल), पटना (बिहार), हजारीबाग-जमशेदपुर (झारखंड), डालमिया नगर (बिहार) आदि में तीव्र औद्योगीकरण हुआ है।

इस परियोजना के कारण बंगाल बाढ़ मुक्त हुआ है, जिस कारण लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित होने से बचाया गया है तथा संपत्ति की सुरक्षा हुई है। इसके अलावा बाढ़ से होने वाले मृदा क्षरण, भूमि क्षरण की समस्या से भी मुक्ति मिली है।

दामोदर नदी परियोजना के अंतर्गत कोलकाता एवं पश्चिम बंगाल के कोयला क्षेत्रों के बीच एक नौवहन योग्य जलमार्ग का निर्माण किया गया है, जो 145 किमी लंबा है।

पश्चिम बंगाल एवं झारखंड में 74 लाख हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई की जा रही है, जिससे खाद्यान्नों एवं जूट का अतिरिक्त उत्पादन हो रहा है। 1,120 वर्ग किमी क्षेत्र में शुद्ध पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है। बाँधों में मत्स्यपालन किया जा रहा है, साथ ही पर्यटन का विकास हुआ है।

छोटानागपुर के बंजर पठारी क्षेत्रों में अपरदन रोकने के लिए वृक्षारोपण किया गया है, जिससे पशुओं के लिए चारा, उद्योगों के लिए लाख, बाँस एवं रेशम की उपलब्धता सुनिश्चित हुई है, जिससे इन वस्तुओं से संबंधित उद्योगों का विकास हुआ है।

कुल मिलाकर दामोदर घाटी परियोजना ने न केवल पश्चिम बंगाल एवं झारखंड में बाढ़ की समस्या का निदान किया है, बल्कि दोनों राज्यों के औद्योगिक, सामाजिक तथा आर्थिक विकास की गति को तीव्रता प्रदान की है।

7. बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं के कोई चार लाभों को लिखिए।

उत्तर इस तरह की परियोजनाओं के प्राथमिक लाभों में निम्नलिखित शामिल हैं—

- **विद्युत ऊर्जा का उत्पादन**—वर्ष 2005-06 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, इन परियोजनाओं से 30,000 मेगावाट विद्युत का उत्पादन हुआ (मार्च, 2000 में 37,000) था। भारत इस माध्यम से अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का 22% भाग प्राप्त करता है।
- **मृदा संरक्षण**—ये परियोजनाएँ नदी के पानी की गति को धीमा करके मिट्टी का संरक्षण करती हैं।
- **बाढ़ नियंत्रण**—ये परियोजनाएँ अपने जलाशयों में अतिरिक्त पानी जमा करके बाढ़ को नियंत्रित करती हैं।
- **सिंचाई**—शुष्क मौसम में इन परियोजनाओं के जलाशयों में संरक्षित जल का उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता है।

- **वृक्षारोपण**—जलाशयों के आस-पास प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्रों के साथ-साथ वन्यजीवों को संरक्षित करने के लिए वृक्ष लगाए जाते हैं।
- **मत्स्यन**—ये परियोजनाएँ मछली के प्रजनन के लिए नियंत्रित परिस्थितियाँ प्रदान करती हैं।
- **जल परिवहन**—इन परियोजनाओं में मुख्य नदी के साथ-साथ संबंधित नहरों के माध्यम से अंतर्देशीय जल परिवहन की सुविधा प्राप्त होती है।
- **पर्यटन**—जलाशयों ने पर्यटकों को आकर्षित भी किया है, जो यहाँ आकर नौकायन आदि करते हैं।

8. वर्षा जल संग्रहण से क्या तात्पर्य है? वर्षा जल संग्रहण के विभिन्न तरीके बताइए।

उत्तर वर्षा के जल का पुन: उपयोग करने के लिए उसका संरक्षण एवं भंडारण करना वर्षा जल संग्रहण (Rainwater Harvesting) कहलाता है। जल का उपयोग बागवानी, पशुधन, सिंचाई आदि के लिए किया जाता है।

अत: वर्षा जल संग्रहण पानी की कमी से निपटने की एक वैकल्पिक प्रणाली है।

वर्षा जल संग्रहण के लाभ निम्नलिखित हैं—

- यह प्राकृतिक जल का सबसे शुद्ध रूप और पीने के पानी का प्रमुख स्रोत बन जाता है। यह जल कृषि कार्यों के लिए भी प्रयोग किया जाता है।
- घरों में टैंकों के साथ भूमिगत कमरे भी बनाए जाते हैं, क्योंकि जल इन कमरों को भी ठंडा रखता था, जिससे ग्रीष्म ऋतु में गर्मी से राहत मिलती थी।
- भारत में वर्षा जल संचयन के लिए कुछ प्राचीन परंपराओं का प्रयोग किया जाता है, जो निम्न प्रकार हैं

(i) खादीन और जोहड़—शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में खेतों में वर्षा जल एकत्रित करने के लिए गड्ढे बनाए जाते हैं, जिससे मृदा को सिंचित किया जा सके और संरक्षित जल को खेती के लिए उपयोग में लाया जा सके; जैसे—राजस्थान के जैसलमेर में खादीन और अन्य क्षेत्रों में जोहड़ इसके उदाहरण हैं।

(ii) छत वर्षा जल संग्रहण—राजस्थान और गुजरात के शुष्क क्षेत्रों में रहने वाले लोगों ने जल एकत्र करने के लिए छत वर्षा जल संग्रहण विधि अपनाई है।

(iii) टाँका—ये बड़े भूमिगत टैंक हैं, जिनका राजस्थान के शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में वर्षा के पानी को एकत्रित करने में प्रयोग करते हैं।

❑❑❑

4

कृषि

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारतीय कृषि के कोई तीन प्रमुख लक्षण लिखिए।

उत्तर भारतीय कृषि की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- भारत के अधिकतर भाग सिंचाई के लिए मानसून पर निर्भर करते हैं। भारत के जोते गए क्षेत्र के केवल एक तिहाई क्षेत्र में सिंचाई सुनिश्चित है।
- भारतीय कृषि की प्रवृत्ति अधिकांशतया जीविका निर्वाह कृषि है।
- लगातार बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण भूमि की प्रति हेक्टेयर उपलब्धता कम होती है तथा जोते बिखरी हुई होती हैं।
- भारत में अधिकांशत: किसान गरीब हैं, इसलिए वे उर्वरक तथा अधिक फसल देने वाले बीजों का प्रयोग नहीं करते हैं।

2. उन कारणों का उल्लेख कीजिए जो भारत में कृषि विकास के लिए बाधक हैं।

उत्तर भारत के कृषि विकास में बाधक कारकों का विवरण निम्नलिखित है—

- **कृषि पर जनसंख्या का भारी दबाव**—भारत में कृषि पर निर्भर रहने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक है। वर्तमान में 63% जनसंख्या प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है।
- **निवेश का अभाव**—बीजों, उर्वरकों, बाजार, वित्त, परिवहन आदि की कमी के कारण भारतीय कृषि का विकास प्रभावित होता है।
- **छोटी जोतें**—भारत में जोतों का औसत आकार बहुत ही कम है, जोकि 2 से 5 एकड के बीच है। देश के कई भागों में कृषि भूमि का आकार इतना छोटा है कि आधुनिक मशीनरी का प्रयोग नहीं हो पाता है।
- **मानसून पर निर्भरता**—भारत में सिंचाई की सुविधाओं का व्यापक विकास हुआ है, फिर भी देश के अधिकांश भागों के किसान अभी भी मानसून तथा प्राकृतिक उर्वरता पर निर्भर करते हैं।

3. भारतीय कृषि की किन्हीं तीन समस्याओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारतीय कृषि की समस्या/पिछड़ेपन/निम्न उत्पादकता के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(i) कृषि की वर्षा पर निर्भरता
(ii) कृषि जोतों का छोटा आकार
(iii) कृषि की पारंपरिक तकनीकें
(iv) श्रम-प्रधान तकनीक
(v) उन्नत बीजों का अभाव तथा महँगा होना
(vi) भूमि पर जनसंख्या भार में वृद्धि

4. भारत में कृषि उत्पादकता में वृद्धि के तीन सुझाव दीजिए।

उत्तर कृषि उत्पादन बढ़ाने के प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं—

(i) सिंचाई की सुविधाओं में वृद्धि एवं विस्तार
(ii) उन्नत बीजों एवं उर्वरकों की व्यवस्था
(iii) साख-सुविधाओं का विस्तार
(iv) भूमि संरक्षण
(v) कृषि शिक्षा का प्रसार

5. कर्तन दहन प्रणाली किसे कहा जाता है?

उत्तर भारत में प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि छोटे किसानों (विशेषकर आदिवासी) द्वारा अपने परिवार एवं मजदूरों की सहायता से भूमि के छोटे टुकड़े पर की जाती है। इसमें मुख्यत: आदिम उपकरणों; जैसे—लकड़ी के हल, डाओ, खुदाई करने वाली छड़ी आदि की सहायता से कृषि की जाती है।

इस प्रकार की कृषि प्राय: मानसून, मृदा की प्राकृतिक उर्वरता और फसल उगाने के लिए पर्यावरणीय परिस्थितियों की उपयुक्तता पर निर्भर करती है, इसलिए इस प्रकार की कृषि को **कर्तन दहन प्रणाली** कृषि कहा जाता है। इस कृषि के अतंर्गत आदिवासी या किसान जंगल की भूमि का एक टुकड़ा जलाकर कृषि के लिए साफ कर देते हैं और इसके पश्चात् इस भाग को कुछ वर्षों के लिए खाली छोड़ देते हैं, जिससे प्रकृति मिट्टी को उपजाऊ बना देती है।

6. देश के विभिन्न भागों में झूमिंग कृषि किन नामों से जानी जाती है।

उत्तर देश के विभिन्न भागों में झूमिंग कृषि को निम्न नामों से जाना जाता है, जिनका वर्णन निम्न प्रकार है

देश	झूमिंग कृषि
मैक्सिको	मिल्पा
मध्य अमेरिका	मिल्पा
वेनेजुएला	कोनुको
ब्राजील	रोका
मध्य अफ्रीका	मसोले
इंडोनेशिया	लदांग
वियतनाम	रे
भारत	झूमिंग

7. वाणिज्यिक कृषि क्या है? इसकी प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर कृषि से अच्छी आय प्राप्त करने के लिए आधुनिक तकनीकों का बड़े पैमाने पर उपयोग करना वाणिज्यिक कृषि कहलाता है।

इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- इस प्रकार की कृषि के मुख्य लक्षण आधुनिक निवेशों; जैसे—अधिक पैदावार देने वाले बीजों, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग से विस्तृत भूमि पर उच्च पैदावार प्राप्त करना है।
- कृषि का वाणिज्यीकरण एक स्थान से दूसरे स्थान पर सिंचाई सुविधा और जलवायु आदि के आधार पर भिन्न होता है। उदाहरण के लिए हरियाणा और पंजाब में चावल वाणिज्य की फसल है, परंतु ओडिशा में यह एक जीविका फसल है।

8. रोपण विधि की प्रमुख विशेषताओं को बताइए।

उत्तर रोपण विधि की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- यह वाणिज्यिक कृषि का ही एक प्रकार है। रोपण कृषि विभिन्न कृषि आधारित उद्योगों के लिए कच्चे माल का उत्पादन करती है।
- इस प्रकार की खेती में केवल एक ही फसल को बड़े पैमाने पर उगाया जाता है। इस प्रकार की खेती में अत्यधिक पूँजी और प्रवासी श्रमिकों की आवश्यकता होती है।
- रोपण कृषि के लिए परिवहन, संचार साधन और उचित बाजार इन सब की आवश्यकता होती है। असम और उत्तरी बंगाल में चाय तथा कर्नाटक में कॉफी वहाँ की मुख्य रोपण फसलें हैं।

9. वाणिज्यिक कृषि तथा रोपण कृषि में अंतर बताइए।

उत्तर वाणिज्यिक कृषि तथा रोपण कृषि में निम्नलिखित अंतर हैं—

वाणिज्यिक कृषि	रोपण कृषि
ये व्यापारिक दृष्टिकोण से बोई जाती है।	ये वैज्ञानिक और व्यापारिक स्तर पर या कारखाने में किए जाने वाले विनिर्माण की दृष्टि से उगाई जाती हैं।
अधिक उपज की प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक विधि एवं तकनीकी का प्रयोग किया जाता है।	इसमें बड़े क्षेत्रों पर अधिक पूँजी निवेश के द्वारा कृषि कार्य किया जाता है।
चावल, गेहूँ, कपास, मसाले आदि इसकी प्रमुख फसले हैं।	रबड़, चाय, कहवा आदि इसकी प्रमुख फसले हैं।

10. भारत में कितने प्रकार की फसल ऋतुएँ हैं? किसी एक फसल को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत में तीन शस्य ऋतुएँ हैं—रबी, खरीफ और जायद।

रबी फसल रबी फसलों को शीत ऋतु में अक्टूबर से दिसंबर के मध्य बोया जाता है और ग्रीष्म ऋतु में अप्रैल से जून के मध्य काटा जाता है। गेहूँ, जौ, मटर, चना और सरसों कुछ प्रमुख रबी फसलें हैं। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और उत्तराखंड में रबी फसलों को उगाया जाता है।

शीत ऋतु में शीतोष्ण पश्चिमी विक्षोभों से होने वाली वर्षा इन फसलों के अधिक उत्पादन में सहायक होती है। हरित क्रांति के कारण पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कुछ भागों में गेहूँ के उत्पादन में वृद्धि हुई है।

11. खरीफ फसल एवं जायद फसल पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **खरीफ फसल** खरीफ फसलें मानसून के आगमन (मई-जुलाई) के साथ बोई जाती हैं और सितंबर-अक्टूबर में काट ली जाती हैं। इस ऋतु में बोई जाने वाली मुख्य फसलें चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, तुर, मूँग, उड़द, कपास, जूट, मूँगफली और सोयाबीन हैं।

धान की खेती मुख्यतया पश्चिम बंगाल, ओडिशा, असम, बिहार, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र (कोंकण तटीय), पंजाब और हरियाणा के भागों में की जाती है। पश्चिम बंगाल, ओडिशा और असम की अच्छे सिंचित क्षेत्रों में धान की तीन फसलें *ऑस, अमन* और *बोरो* उगाई जाती हैं।

रबी फसल रबी और खरीफ के बीच ग्रीष्म ऋतु (मार्च-जून) में बोई जाने वाली फसल को जायद कहा जाता है। इस ऋतु की मुख्य फसलें खीरा, खरबूजा, तरबूज, सब्जियाँ और चारा हैं। गन्ना एक वर्ष में तैयार होने वाली फसल है।

12. रबी और खरीफ फसलों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर रबी और खरीफ फसलों में निम्नलिखित अंतर हैं—

रबी फसलें	खरीफ फसलें
इसकी शुरुआत मानसून की समाप्ति पर अक्टूबर-नवंबर में होती है।	यह मानसून में जून-जुलाई में प्रारंभ होती है।
ये फसलें अप्रैल-मई में काट ली जाती हैं।	ये फसलें अक्टूबर-नवंबर में काट ली जाती हैं।
ये फसलें मृदा की नमी पर निर्भर करती हैं।	ये फसलें मानसून पर निर्भर करती हैं।
गेहूँ, चना तथा तिलहन; जैसे-सरसों आदि इसी ऋतु की प्रमुख फसलें हैं।	मोटा अनाज, चावल, मूँगफली, कपास आदि इस ऋतु की प्रमुख फसलें हैं।

13. मुद्रादायिनी फसलों से क्या तात्पर्य है? भारत में ऐसी किन्हीं दो फसलों के उत्पादक राज्य बताइए।

उत्तर मुद्रादायिनी या नकदी फसलों के अंतर्गत उन व्यापारिक फसलों को सम्मिलित किया जाता है, जिन्हें आय के लिए कृषकों द्वारा प्रत्यक्ष रूप में बेंचा जाता है। इसमें गन्ना, तंबाकू, कपास, जूट, मेस्टा, सरसों, मूँगफली, अलसी आदि को शामिल किया जाता है।

गन्ने का उत्पादन उत्तर प्रदेश एवं महाराष्ट्र तथा मूँगफली का उत्पादन गुजरात एवं आंध्र प्रदेश में किया जाता है।

14. चावल एवं गेहूँ की फसल पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **चावल**—भारत के अधिकांश लोगों का खाद्यान्न चावल है। चावल खरीफ की फसल है, जिसे उगाने के लिए उच्च तापमान तथा अधिक आर्द्रता की आवश्यकता होती है। इसे अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में उगाया जाता है। यह कम वर्षा वाले क्षेत्रों पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान के कुछ भागों में इसे नहरों और कुओं द्वारा सिंचाई करके उगाया जाता है।

गेहूँ—गेहूँ भारत की दूसरी सबसे महत्त्वपूर्ण खाद्य फसल है। गेहूँ को उगाने के समय शीत ऋतु तथा पकने के समय धूप एवं समान रूप से वितरित 50-75 सेमी वर्षा की आवश्यकता होती है। उत्तर-पश्चिम में गंगा-सतलुज का मैदान और दक्कन का काली मिट्टी वाला प्रदेश गेहूँ उगाने वाले दो मुख्य क्षेत्र हैं।

15. शुष्क कृषि और आर्द्र कृषि में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर शुष्क कृषि और आर्द्र कृषि में निम्नलिखित अंतर हैं—

शुष्क कृषि	आर्द्र कृषि
शुष्क कृषि उस प्रकार की भूमि में की जाती है, जिसमें मृदा में आर्द्रता बनी रहती है।	आर्द्र कृषि में कृषि कार्य वर्षा पर निर्भर होता है या बाहरी सिंचाई साधन पर निर्भर रहती है।
यह देश के शुष्क भागों में की जाती है।	इस प्रकार की खेती उत्तरी-पूर्वी भारत में की जाती है।
इसमें अतिरिक्त सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है।	इसमें सिंचाई की आवश्यकता होती है।
चना, ज्वार, बाजारा इसमें पैदा की जाती है।	इसमें चावल, जूट, सरसों आदि पैदा की जाती हैं।

16. धान की खेती के लिए उपयुक्त तापमान, वर्षा तथा मिटटी के नाम लिखिए।

उत्तर चावल एक उष्णार्द्र कटिबंधीय फसल है। इसके उत्पादन के लिए निम्नलिखित औद्योगिक दशाएँ उपयुक्त होती हैं—

(i) तापमान—चावल की कृषि के लिए ऊँचे तापमान की आवश्यकता होती है। इसकी उपज के लिए 25°C से अधिक तापमान आवश्यक है। इसे प्रकाश की अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है। बादलों वाले मौसम व तेज हवाएँ इसके लिए हानिकारक हैं।

(ii) वर्षा—चावल के लिए 100 से 200 सेमी वर्षा आवश्यक होती है। चावल को अधिक नमी की आवश्यकता होती है, इसलिए इसके पौधों को जल से भरे खेतों में लगाया जाता है। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सिंचाई द्वारा वर्षा की कमी पूरी की जा सकती है।

(iii) मिट्टी—चावल की कृषि के लिए चिकनी, जलोढ़ या दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है, क्योंकि इन मिट्टियों में अधिक नमी धारण करने की क्षमता होती है। नदियों के डेल्टा, बाढ़ के मैदान व सागरतटीय क्षेत्रफल चावल की कृषि के लिए सबसे अधिक उपयुक्त होते हैं।

17. गन्ने की खेती के लिए उपयुक्त तापक्रम, वर्षा एवं मृदा का उल्लेख कीजिए।

उत्तर गन्ना उष्णार्द्र जलवायु की फसल है। इसके लिए निम्नलिखित भौगोलिक दशाओं की आवश्यकता होती है—

(i) तापमान—उष्णकटिबंधीय क्षेत्र की फसल होने के कारण गन्ने की कृषि के लिए अंकुरण के समय उच्च तापमान 30° से 38°C के बीच तथा पकने के समय 12° से 14°C तापमान की आवश्यकता होती है।

(ii) वर्षा—गन्ने की फसल के लिए अधिक नमी की आवश्यकता होती है। अत: भारत में गन्ना 100 से 150 सेमी वर्षा वाले क्षेत्रों में ही उगाया जाता है। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सिंचाई द्वारा गन्ने की कृषि की जाती है।

(iii) मिट्टी—गन्ने की खेती के लिए उपजाऊ दोमट, नमीयुक्त एवं चिकनी मिट्टी उपयुक्त रहती है। दक्षिण के पठारी भागों में लावा निर्मित काली मिट्टी में भी गन्ने की पैदावार अच्छी होती है। चूना व फॉस्फोरसयुक्त मिट्टी गन्ने की कृषि के लिए विशेष उपयोगी होती है। इसकी कृषि में रासायनिक उर्वरकों की भी जरूरत होती है।

18. कौन-कौन सी फसलें तिलहन फसलें हैं? इनकी मुख्य विशेषताओं को बताइए।

उत्तर भारत के कुल बोये गए क्षेत्र के 12% भू-भाग पर तिलहन फसलें उगाई जाती हैं। मूँगफली, सरसों, नारियल, तिल, सोयाबीन, अलसी, अरंडी, बिनौला और सूरजमुखी प्रमुख तिलहन फसलें हैं। अधिकतर तिलहन फसलें खाद्य हैं। इसकी प्रमुख विशेषता निम्नलिखित हैं

- इस फसल का प्रयोग खाना बनाने में किया जाता है।
- कुछ तेल के बीजों का उपयोग साबुन, शृंगार के सामान और उबटन उद्योग में कच्चे माल के रूप में भी किया जाता है।
- तिलहन की मुख्य फसल मूँगफली है और यह एक खरीफ की फसल है।

19. चाय और कहवा में अंतर बताइए।

उत्तर चाय और कहवा में निम्नलिखित अंतर हैं—

चाय	कहवा
इसके लिए उपजाऊ मृदा की आवश्यकता होती है।	इसके लिए लाल व लैटेराइट मृदा उपयोगी होती है।
चाय के उत्पादन के लिए 20° से 30° सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है।	कहवा के पौधों के लिए 15° से 28° सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है।
इसके लिए 150 से 300 सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।	इसके लिए 150 से 200 सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
इसके प्रमुख उत्पादक राज्य हैं—असम, पश्चिम बंगाल, केरल, तमिलनाडु	तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक इसके प्रमुख उत्पादक राज्य हैं।

20. गहन कृषि तथा विस्तृत कृषि में दो अंतर लिखिए।

उत्तर गहन कृषि तथा विस्तृत कृषि में दो अंतर निम्नलिखित हैं

गहन कृषि	विस्तृत कृषि
अधिक निवेश तथा नई तकनीक का प्रयोग करके भारी मात्रा में उत्पादन को बढ़ाया जाता है।	अधिक-से-अधिक भू-भाग पर निवेश व मशीनीकरण से बड़े पैमाने पर कृषि उपज को प्राप्त किया जाता है।

ऐसी कृषि सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में की जाती है, जहाँ पर अधिक भूमि उपलब्ध नहीं होती और जहाँ भूमि पर जनसंख्या का दबाव अधिक होता है।	ऐसी कृषि कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों में की जाती है, जहाँ भूमि पर जनसंख्या का दबाव कम होता है।

21. भारत में चाय तथा कहवा के उत्पादन क्षेत्र बताइए।

उत्तर चाय (Tea)—भारत का प्रमुख पेय पदार्थ है। चाय उत्पादन में विश्व में भारत का प्रथम स्थान है। भारत में विश्व की 28.3% चाय का उत्पादन होता है। भारत में चाय उत्पादित करने वाले दो प्रमुख राज्य असम तथा पश्चिम बंगाल हैं। इसके अन्य उत्पादक राज्यों में केरल, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, मेघालय, आंध्र प्रदेश और त्रिपुरा हैं।

कहवा (कॉफी)—कहवा या कॉफी (Coffee) एक उष्णकटिबंधीय रोपण कृषि की फसल है। इसे भी भारत में प्रमुख पेय पदार्थ के रूप (चाय के बाद) में जाना जाता है। कॉफी की तीन किस्में पाई जाती हैं—अरेबिका, रोबस्टा एवं लाइबेरिका। भारत अधिकतर उत्तम किस्म की **अरेबिका कॉफी** का उत्पादन करता है।

भारत के कहवा उत्पादक क्षेत्र—भारत में कहवे का उत्पादन कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, हरियाणा व आंध्र प्रदेश राज्यों में अधिक होता है।

22. आपको क्या लगता है कि भारतीय किसानों द्वारा दालों का उत्पादन अधिक किया जाना आवश्यक है? टिप्पणी कीजिए?

उत्तर हाँ, भारतीय किसानों को दाल का अत्यधिक उत्पादन करना चाहिए। इसके लिए निम्न कारक उत्तरदायी हैं—

- भारत दालों का सबसे बड़ा उपभोक्ता है और दालें शाकाहारी भोजन में प्रोटीन का प्रमुख स्रोत होती हैं।
- दालों की कृषि आसान है, क्योंकि इसको कम नमी की आवश्यकता होती और इन्हें शुष्क दशाओं में भी उगाया जा सकता है।
- दालें फलीदार फसलें होती हैं जो वायुमंडल से नाइट्रोजन लेकर भूमि में स्थिरीकरण करती हैं, जिससे भूमि में उर्वरता बनी रहती है। दालें शस्यावर्तन की सबसे प्रमुख फसलें हैं, इसलिए किसानों को चक्रीय रूप में दालों की खेती अनिवार्य रूप से करनी चाहिए।

23. फलों और सब्जियों की खेती के लिए किस कृषि शब्दावली का प्रयोग होता है। भारत के संदर्भ में इसकी तीन प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर भारत में फलों और सब्जियों की खेती को बागवानी कहा जाता है। इसकी तीन प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं—

(i) भारत विश्व में सबसे अधिक फलों और सब्जियों का उत्पादन करता है।

(ii) यह उष्ण और शीतोष्ण दोनों ही प्रकार के फलों को उत्पादित करता है।

(iii) भारत विश्व की कुल सब्जी उत्पादन का लगभग 13% भाग उत्पादित करता है।

24. भारत की कौन-सी दो प्रमुख रेशेदार फसलें हैं? प्रत्येक फसल के उत्पादक क्षेत्र बताइए।

उत्तर कपास और जूट भारत की दो प्रमुख रेशेदार फसले हैं। इसके उत्पादक राज्यों का विवरण निम्नलिखित है—

कपास—भारत को कपास के पौधे का मूल स्थान माना जाता है। सूती कपड़ा उद्योगों में कपास एक मुख्य कच्चा माल है। दक्कन पठार के शुष्कतर भागों में काली मिट्टी को कपास के उत्पादन के लिए उपयोगी माना जाता है।

इस फसल को उगाने में उच्च तापमान, हल्की वर्षा, 210 पाला रहित दिन और खिली धूप की आवश्यकता होती है। यह खरीफ की फसल है, जिसे पककर तैयार होने में 6 से 8 महीने लगते हैं।

जूट—जूट (Jute) को सुनहरा रेशा (Golden Fibre) कहा जाता है। इसका प्रयोग बोरियाँ, चटाई, रस्सी, तंतु व धागे, गलीचे और दूसरी दस्तकारी वस्तुएँ बनाने में किया जाता है। जूट के उत्पादन की उच्च लागत के कारण और कृत्रिम रेशों एवं पैकिंग सामग्री विशेष रूप से नायलॉन की कम कीमत होने के कारण जूट की माँग में कमी आई है।

25. कपास की खेती के लिए उपयुक्त तापक्रम, वर्षा एवं मृदा का उल्लेख कीजिए।

उत्तर कपास का मूल स्थान भारत को माना जाता है। भारत से कपास का पौधा चीन तथा विश्व के अन्य देशों में पहुँचता है। इसकी खेती के लिए उपयुक्त तापक्रम, वर्षा एवं मृदा का वर्णन निम्नलिखित है

(i) तापक्रम—कपास के पौधे के लिए साधारणत: 20° से 35°C तापमान की आवश्यकता होती है। पाला और ओले इसके लिए हानिकारक होते हैं। अत: इसकी खेती के लिए 200 दिन का पाला रहित मौसम होना आवश्यक है।

(ii) वर्षा—कपास की खेती के लिए 50 से 100 सेमी वर्षा की आवश्यकता होती है, किंतु यह वर्षा धीरे-धीरे व नियमित रूप से होनी चाहिए। वर्षा की अधिकता इस फसल के लिए हानिकारक होती है।

(iii) मिट्टी—आर्द्रतायुक्त चिकनी व गहरी काली मिट्टी कपास के उत्पादन के लिए उपयुक्त है। इसमें खनिज व जीवाश्म पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं।

26. भारत में जूट का संक्षिप्त विवरण निम्न शीर्षकों के अंतर्गत दीजिए।
(क) भौगोलिक दशाएँ (ख) उत्पादन क्षेत्र

उत्तर भौगोलिक दशाएँ—जूट उत्पादन के लिए निम्नलिखित भौगोलिक दशाएँ होनी चाहिए—

(i) जलवायु—जूट के पौधों की कृषि के लिए उच्च एवं नम जलवायु की आवश्यकता पड़ती है। सामान्यत: 25° से 35°C तापमान होना चाहिए।

(ii) वर्षा—जूट के पौधों को अंकुरण के पश्चात् अधिक जल की आवश्यकता पड़ती है। अत: इसकी खेती के लिए 100 से 200° mesceer या इससे भी अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है।

(iii) मिट्टी—जूट की कृषि का एक नकारात्मक पक्ष यह है कि यह भूमि के उत्पादक तत्त्वों को नष्ट कर देती है। अत: इसकी कृषि उन्हीं क्षेत्रों में होती है, जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ द्वारा मृदा का नवीनीकरण

होता रहे, इसी कारण डेल्टाई भाग इसकी कृषि के लिए सबसे उपयुक्त है। दोमट, काँप एवं बलुई मिट्टी इसके लिए उपयुक्त रहती हैं।

भारत में जूट उत्पादक क्षेत्र

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् जूट उद्योग का काफी विकास हुआ है। वर्तमान में इसके निम्नलिखित प्रमुख उत्पादक क्षेत्र हैं—

(i) पश्चिम बंगाल—यह राज्य भारत में सर्वाधिक जूट उत्पादित करता है। यहाँ जूट की खेती हुगली, चौबीस परगना, मालदा, नदिया, हावड़ा, मुर्शिदाबाद आदि जिलों में की जाती है। यहाँ भारत के कुल जूट उत्पादन का 60% जूट उत्पादित होता है।

(ii) बिहार-झारखंड—यह क्षेत्र भारत का दूसरा प्रमुख जूट उत्पादक क्षेत्र है। यहाँ बिहार के दरभंगा, चंपारण, सारन, मोतिहारी एवं झारखंड के संथाल परगना जिलों में जूट की कृषि की जाती है। इस क्षेत्र में कुल जूट उत्पादन का 12% उत्पादन किया जाता है।

(iii) असम—इस राज्य में ब्रह्मपुत्र नदी की निचली घाटी में जूट की कृषि की जाती है। यहाँ के प्रमुख जूट उत्पादक जिले नवगाँव, गोलपाड़ा, कामरूप, कछार आदि हैं। यहाँ की कुल कृषि योग्य भूमि के 95% भू-भाग पर जूट की कृषि की जाती है। यहाँ कुल जूट उत्पादन का 7% जूट उगाया जाता है।

27. भारत में हरित क्रांति की किन्हीं तीन विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर हरित क्रांति से तात्पर्य 1960 के दशक में खाद्य फसलों के ऐसे बीजों के विकास एवं उपयोग से है, जिसके कारण इनके उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है। इसके अंतर्गत कृषि में उन्नत बीजों, उर्वरकों तथा प्रौद्योगिकी का समावेश किया गया है।

हरित क्रांति की प्रमुख विशेषताएँ या लाभ निम्नलिखित हैं—

(i) अधिक उत्पादकता वाले बीजों का प्रयोग।
(ii) कृषि में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग।
(iii) सिंचाई हेतु आधुनिक तकनीकों का प्रयोग।
(iv) बहुफसली कार्यक्रम को प्रोत्साहन।

28. हरित क्रांति के बाद भारतीय कृषि में आए तीन परिवर्तन क्या हैं? उल्लेख करें।

उत्तर हरित क्रांति के बाद भारतीय कृषि में आए तीन परिवर्तन निम्नलिखित हैं—

(i) अधिक उत्पादन के लिए उच्च उत्पादकता वाले बीज उपयोग किए जाते हैं, जैसे चावल और गेहूँ के लिए।
(ii) रासायनिक खाद, कीटनाशक आदि के प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि हुई है।
(iii) सिंचाई के लिए नहरों का जाल बिछाया गया है जिससे शुष्क राज्यों को पानी की आपूर्ति की जा सके।

29. ऑपरेशन फ्लड से आप क्या समझते हैं? भारतीय गाँवों के विकास में इसके किन्हीं दो योगदानों का वर्णन कीजिए।

उत्तर पशुपालन पर आधारित प्रमुख उद्योग दुग्ध उत्पादन या डेयरी उद्योग है। दुग्ध उत्पादन में आशातीत वृद्धि की संकल्पना को 'श्वेत क्रांति' कहते हैं। इसके अंतर्गत परंपरागत दुग्ध व्यवसाय को वाणिज्यिक दुग्ध व्यवसाय में परिवर्तित कर दिया गया।

भारत सरकार ने वर्ष 1965 में डॉ. वर्गीज कुरियन की अध्यक्षता में राष्ट्रीय विकास बोर्ड (NDDB) का गठन किया गया। बोर्ड के द्वारा सहकारी समितियों के माध्यम से दुग्ध उत्पादन में तेजी लाने का प्रयास शुरू हुआ। इसे ऑपरेशन फ्लड' नाम दिया गया।

गाँवों के विकास में ऑपरेशन फ्लड के प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं

(i) छोटे किसानों की आय में वृद्धि करना।
(ii) ग्रामीण विकास को सर्वाधिक महत्ता देना।
(iii) देश में दुग्ध उत्पादन तथा दुग्ध उत्पादों एवं व्यवसाय का विस्तार करना।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. श्रम-गहन खेती क्या है? श्रम-गहन खेती की कुछ विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर बेहतर कृषि साधनों तथा वैज्ञानिक तकनीक को अपनाकर कृषि उत्पादन में वृद्धि को बढ़ाने की प्रवृत्ति गहन कृषि के अंतर्गत आती है इस प्रकार की कृषि की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) भारत में यह कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है, जहाँ पर जनसंख्या का भूमि पर अत्यधिक दबाव होता है।
(ii) यह श्रम-प्रधान कृषि है, इसमें उत्पादकता बढ़ाने के लिए भारी मात्रा में सिंचाई की जाती है और उर्वरकों का उपयोग किया जाता है।
(iii) इस कृषि में एक वर्ष में एक से अधिक फसलें उगाई जाती हैं।
(iv) ऐसी कृषि सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में की जाती है।
(v) प्रति हेक्टेयर उत्पादन बहुत अधिक होता है।
(vi) किसान वैकल्पिक रोजगार न होने के कारण सीमित भूमि से अधिकतम पैदावार लेने की कोशिश करते हैं।

2. "कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है।" क्यों? भारतीय कृषि के पिछड़ेपन के किन्हीं चार कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर भारत की अधिकांश जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय आज भी कृषि है, परंतु भारतीय कृषि अधिकांश जनसंख्या की आजीविका का प्रमुख साधन होने के बाद भी उत्पादकता की दृष्टि से अत्यधिक पिछड़ी हुई है। यहाँ अभी भी प्रति हेक्टेयर उत्पादन अन्य देशों से कम है।

कृषि के पिछड़ेपन तथा उत्पादन कम होने के कारण

कृषि के पिछड़ेपन तथा कृषि उत्पादन कम होने के कारणों को निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा समझा जा सकता है—

(i) कृषि की वर्षा पर निर्भरता—भारत में सिंचाई के साधनों के अभाव के कारण आज भी भारतीय कृषि वर्षा पर निर्भर है। वर्षा की अनियमितता एवं अनिश्चित मात्रा का नकारात्मक प्रभाव कृषि पर पड़ता है, जिस कारण उत्पादन कम होता है। इसी कारण भारतीय कृषि को **मानसून का जुआ** भी कहा जाता है।

(ii) **कृषि जोतों का छोटा आकार**—भारत में 51% कृषि जोतें 1 हेक्टेयर से भी कम आकार की हैं। इसका कारण अधिक जनसंख्या तथा परिवार में भूमि का बँटवारा होना है। छोटी जोतें, छोटी होने के साथ-साथ बिखरी भी होती हैं। अत: इन पर वैज्ञानिक ढंग से कृषि नहीं हो सकती, जिस कारण पैदावार कम होती है।

(iii) **कृषि की पारंपरिक तकनीकें**—आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में भी भारत के अधिकांश भागों में कृषि परंपरागत देशी तकनीकों के आधार पर हो रही है। इस कारण उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(iv) **उन्नत बीजों का अभाव तथा महँगा होना**—भारत में उच्च पैदावार वाले उन्नत बीज सर्वसुलभ नहीं हैं। यदि हैं भी, तो वे ऊँचे मूल्य पर बिकते हैं, इस कारण किसान निम्न उत्पादकता वाले बीजों का ही प्रयोग करते हैं, जिस कारण पैदावार भी निम्न होती है।

(v) **भूमि पर जनसंख्या भार में वृद्धि**—ज्यों-ज्यों देश की जनसंख्या बढ़ रही है, त्यों-त्यों लोगों की आवास जरूरतों को पूरा करने के लिए कृषि क्षेत्रों को रिहायशी क्षेत्रों में परिवर्तित किया जा रहा है, जिस कारण लगातार कृषि क्षेत्र सिकुड़ रहा है तथा जिसकी परिणति न्यून उत्पादकता के रूप में हो रही है।

(vi) **सिंचाई सुविधाओं का अभाव**—भारत में अधिकांश भागों पर कृषि योग्य भूमि तो है, किंतु सिंचाई के साधनों का अभाव है, जिस कारण उत्पादकता न्यून होती है, क्योंकि सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता है।

(vii) **किसानों की निर्धनता**—निर्धनता के कारण अधिकांश किसान कृषि उपकरणों एवं उन्नत किस्म के बीजों को नहीं खरीद पाते, जिस कारण उत्पादकता भी न्यून रहती है।

(viii) **दोषपूर्ण भूमि प्रणाली**—स्वतंत्रता से पूर्व देश की अधिकांश भूमि जमींदारों के नियंत्रण में थी। स्वतंत्रता के उपरांत हालाँकि जमींदारी उन्मूलन विधान बनाए गए, लेकिन इन्हें क्रियान्वित करने की जिम्मेदारी राज्यों पर डाल दी गई। राज्यों की उदासीनता के कारण जमींदारों ने अपनी भूमि अपने संबंधियों को हस्तांतरित कर दी, जिससे वे कृषि क्षेत्रों पर नियंत्रण बनाए रखने में सफल रहें। अत: अभी भी बड़ी संख्या में किसान भूमिहीन हैं और किराये की भूमि पर खेती करते हैं तथा भूमि सुधारों के प्रति उदासीन रहते हैं।

(ix) **आपदाएँ एवं रोग**—भारत में प्राकृतिक आपदाएँ; जैसे—अतिवृष्टि, सूखा, ओलावृष्टि के कारण फसलों को व्यापक नुकसान होता है। इसके अतिरिक्त सही समय पर कीटनाशकों का उपयोग न करने के कारण फसलों पर अनेक प्रकार के रोग भी लग जाते हैं। इस कारण भी फसलों की उपज की क्षति होती है। इन सबका परिणाम न्यून उत्पादकता के रूप में होता है।

कृषि उत्पादन बढ़ाने के उपाय

कृषि उत्पादन बढ़ाने के उपाय निम्नलिखित हैं—

(i) **सिंचाई की सुविधाओं में वृद्धि एवं विस्तार**—सरकार को कृषि क्षेत्रों में सिंचाई के साधनों; जैसे—कुएँ, नलकूप, नहर आदि का विस्तार करना चाहिए, जिससे कृषि केवल वर्षा पर निर्भर न रहे।

(ii) **उन्नत बीजों एवं उर्वरकों की व्यवस्था**—सरकार द्वारा ग्रामीण स्तर पर बीज एवं उर्वरक गोदाम स्थापित किए जाने चाहिए, ताकि किसानों को उन्नत बीज एवं उर्वरक आसानी से तथा सस्ते मूल्य पर उपलब्ध हों।

(iii) **भूमि संरक्षण**—वृक्षारोपण, चकबंदी तथा किसानों के द्वारा भूमि संरक्षण के प्रयास किए जाने चाहिए, जिससे भूमि संरक्षित रहे तथा उस पर वैज्ञानिक ढंग से कृषि की जा सके, जिसके द्वारा कृषि उत्पादन में वृद्धि हो सके।

(iv) **साख-सुविधाओं का विस्तार**—सरकार को चाहिए कि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि साख एवं सूक्ष्म साख-सुविधाओं का सृजन करके किसानों को वित्तीय सुविधा उपलब्ध कराए, जिससे वे आसानी से उन्नत बीज, उर्वरक तथा कृषि उपकरण खरीद सकें।

(v) **कृषि शिक्षा का प्रसार**—समय-समय पर गाँवों में किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए कृषि विशेषज्ञों के द्वारा कृषि शिक्षा का प्रसार किया जाना चाहिए। आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी के युग में यह कठिन कार्य नहीं है।

(vi) **जनसंख्या पर नियंत्रण**—जनसंख्या वृद्धि अपने आप में अनेक समस्याओं की जड़ होती है। अत: जनसंख्या पर नियंत्रण किया जाना चाहिए, जिससे कृषि भूमि का संकुचन रुक सके।

(vii) **फसलों की रक्षा के उपाय**—उत्पादकता बढ़ाने के लिए फसलों का जंगली पशुओं, कीटाणुओं तथा रोगों से बचाव किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए सरकार को विज्ञापन व अन्य माध्यमों से कृषकों में जागरूकता लानी चाहिए तथा कीटनाशक एवं दवाइयों का प्रबंध गाँव में ही उचित मूल्य पर उपलब्ध करवाना चाहिए।

(viii) **आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रयोग**—कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए प्राचीनकाल से चली आ रही कृषि पद्धति को बदलने की आवश्यकता है, जिसके लिए आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(ix) **चकबंदी**—छोटे-छोटे एवं बिखरे खेतों का एकीकरण करना आवश्यक है, ताकि अनार्थिक जोतों को आर्थिक जोतों में परिवर्तित किया जा सके, जो चकबंदी के माध्यम से किया जा सकता है। वृहत आकार के खेतों से कृषि उत्पादकता में वृद्धि होती है।

3. भारत उष्ण-शीतोष्ण कटिबंधीय दोनों ही प्रकार के फलों का उत्पादन करता है। इस कथन को सिद्ध कीजिए।

उत्तर बागवानी फसल के अंतर्गत फलों एवं सब्जियों दोनों की खेती की जाती है। भारत विश्व में फलों एवं सब्जियों का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। भारत का मटर, फूलगोभी, प्याज, बंदगोभी, टमाटर, बैंगन और आलू के उत्पादन में प्रमुख स्थान है। सब्जियों को बढ़ने के लिए कम समय की आवश्यकता होती है, इसलिए इन्हें जायद, रबी या खरीफ के मौसम में उगाए जाने वाले अनाजों के साथ भी उगाया जा सकता है। बहुत-से फल रोपण कृषि से संबंधित हैं। भारत उष्ण और शीतोष्ण कटिबंधीय दोनों ही प्रकार के फलों का उत्पादन करता है, जिनका विवरण निम्न है—

आम—उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल।

संतरा—नागपुर और चेरापूँजी (मेघालय)।

केला—कर्नाटक, केरल, मिजोरम, महाराष्ट्र और तमिलनाडु।

अनन्नास—मेघालय।

अंगूर—महाराष्ट्र, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश

सब्जियाँ—भारत विश्व की कुल 13% सब्जियों का उत्पादन करता है।

4. भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण पेय फसलों के नाम बताएँ। इनके वर्धन के लिए आवश्यक उपयुक्त जलवायविक दशाओं का वर्णन कीजिए। इस फसल को उत्पादित करने वाले प्रमुख राज्यों के नाम बताइए।

उत्तर भारत की प्रमुख पेय फसल चाय है। इसकी उपयुक्त भौगोलिक दशाओं का वर्णन निम्न प्रकार है—

- **तापमान**—चाय की फसल को उगाने के लिए वर्ष भर कोष्ण, नम और पालारहित जलवायु की आवश्यकता होती है। चाय की झाड़ियों के लिए 25° सेल्सियस से अधिक तापमान की आवश्यकता होती है।
- **वर्षा**—इसके लिए 150-250 सेमी औसत वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
- **मृदा**—इसकी उपज के लिए लौह युक्त और ह्यूमस मृदा की आवश्यकता होती है। चाय की झाड़ियाँ मृदा की उर्वरता को कम कर देती हैं, इसलिए रासायनिक उर्वरकों का इसमें भारी उपयोग होता है।
- **उत्पादक राज्य**—असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल इसके प्रमुख राज्य हैं। इसके अतिरिक्त हिमालच प्रदेश, उत्तराखंड, मेघालय आदि में भी इसकी खेती होती है।

5. हरित क्रांति से आप क्या समझते हैं? भारत में हरित क्रांति को सफल बनाने के लिए चार सुझाव दीजिए।

उत्तर 1960 के दशक में पारंपरिक कृषि को आधुनिक तकनीक द्वारा प्रतिस्थापित किया गया। इसके अंतर्गत कृषि में उन्नत बीजों, उर्वरकों तथा प्रौद्योगिकी का समावेश किया गया। इन प्रयासों एवं बदलावों के परिणामस्वरूप देश में पहली बार गेहूँ का पर्याप्त उत्पादन हुआ। इस अप्रत्याशित वृद्धि को अमेरिकी कृषि वैज्ञानिक नॉर्मन बोरलॉग ने हरित क्रांति की संज्ञा दी। भारत में हरित क्रांति का जनक एम. एस. स्वामीनाथन को माना जाता है। हरित क्रांति के दौरान ही वर्ष 1964-65 में सरकार ने गहन कृषि कार्यक्रम चलाया, जिसके अंतर्गत विशिष्ट फसलों के उत्पादन पर ध्यान केंद्रित किया गया।

हरित क्रांति के लाभ

हरित क्रांति के प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं—

(i) अधिक उत्पादकता वाले बीजों (HYV) **का प्रयोग**—अधिक उत्पादकता वाले बीजों का भरपूर उपयोग किया गया। इससे खाद्यान्न फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता दोनों में पर्याप्त वृद्धि दर्ज की गई। इन प्रयासों के फलस्वरूप भारत खाद्यान्न फसलों के उपलब्धता में आत्मनिर्भर देश बन गया।

(ii) कृषि में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग—हरित क्रांति के दौरान भारत में पहली बार कृषि में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग किया गया। इससे पूर्व भारत में पारंपरिक तरीके से कृषि उत्पादकता को बढ़ाने का प्रयास किया जाता था। कृषि का यंत्रीकरण किया गया, ताकि बुआई से कटाई तक यंत्रों का अधिकाधिक उपयोग किया जा सके।

(iii) सिंचाई हेतु आधुनिक तकनीकों का प्रयोग—हरित क्रांति के दौरान सिंचाई हेतु आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया गया। प्रारंभ में हरित क्रांति की शुरुआत वहीं हुई, जहाँ अपर्याप्त वर्षा होती थी। अत: स्वाभाविक रूप से सिंचाई साधनों को व्यवस्थित करना अनिवार्य भी था।

(iv) बहुफसली कार्यक्रम को प्रोत्साहन—हरित क्रांति ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नवीन आयाम प्रदान किया। खेती अब केवल निर्वाह के लिए न होकर व्यावसायिक दृष्टि से की जाने लगी। कृषि के व्यावसायीकरण का पहला चरण हरित क्रांति को ही माना जाता है। बहुफसली कार्यक्रम के अंतर्गत ज्यादा-से-ज्यादा फसलों के उत्पादन पर विशेष बल दिया गया।

(v) भूमि सुधार कार्यक्रमों को व्यापक स्तर पर प्रोत्साहन—हरित क्रांति ने देश में भूमि सुधार कार्यक्रमों को व्यापक स्तर पर प्रोत्साहित किया। साथ ही कृषि साख का भी विस्तार हुआ। कृषि संबंधित अनुसंधान हेतु अत्याधुनिक अनुसंधान संस्थानों की स्थापना की गई।

हरित क्रांति को सफल बनाने के उपाय

हरित क्रांति को सफल बनाने के उपाय निम्नलिखित हैं—

(i) किसानों को उन्नत बीज तथा उर्वरक सस्ते मूल्य पर मिलने चाहिए।

(ii) उपज का पर्याप्त मूल्य मिले तथा उसके भंडारण की व्यवस्था होनी चाहिए।

(iii) फसलों को आपदा से नुकसान की दशा में किसानों को क्षतिपूर्ति मिलनी चाहिए।

(iv) कृषि शिक्षा तथा उन्नत प्रौद्योगिकी का प्रसार होना चाहिए।

(v) शोध एवं अनुसंधान केंद्रों की वृद्धि की जानी चाहिए।

(vi) चकबंदी जैसे भूमि सुधार कार्यक्रम पुन: चलाए जाने चाहिए।

(vii) भूमि की गुणवत्ता की समय-समय पर जाँच होनी चाहिए।

(viii) कृषि उपज के व्यापार की उचित व्यवस्था होनी चाहिए तथा बिचौलियों का उन्मूलन होना चाहिए।

❑❑❑

5

खनिज तथा ऊर्जा संसाधन

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत के तीन एटॉमिक पावर स्टेशनों के नाम लिखिए तथा उनके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर भारत में परमाणु ऊर्जा केंद्र निम्नलिखित हैं—

(i) तारापुर-महाराष्ट्र
(ii) कलपक्कम एवं कुडनकुलम-तमिलनाडु
(iii) नरौरा उत्तर प्रदेश
(iv) रावतभाटा-राजस्थान
(v) काकरापारा-गुजरात
(vi) कैगा-कर्नाटक

भारत में परमाणु ऊर्जा के महत्त्व के लिए प्रश्न संख्या 25 का अध्ययन करें।

2. खनिजों के संरक्षण और ऊर्जा के संरक्षण पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर ➲ **खनिजों के संरक्षण**—खनिज संसाधनों को सुनियोजित एवं सतत पोषणीय ढंग से प्रयोग करके संरक्षित कर सकते हैं। निम्न कोटि के अयस्कों का कम लागतों पर प्रयोग करने के लिए उन्नत तकनीकियों का विकास करते रहना होगा। संसाधनों की उपलब्धता के लिए धातुओं के पुनर्चक्रण, व्यर्थ धातुओं के प्रयोग तथा अन्य प्रतिस्थापन उपायों पर बल देना चाहिए।

➲ **ऊर्जा संरक्षण**—विकास के लिए ऊर्जा संरक्षण को प्रोत्साहन देना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों को बढ़ावा देने के साथ हमें अपव्यय से बचने की आवश्यकता है। अत: ऊर्जा संरक्षण के लिए हमें व्यक्तिगत वाहन की अपेक्षा सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था, बिजली उपकरणों को प्रयोग से पूर्व बंद रखना, ऊर्जा बचत नियुक्तियों और गैर-परंपरागत स्रोतों को बढ़ावा देने जैसे महत्त्वपूर्ण व्यवहार को अपने अंदर लाना चाहिए। अंतत: ऊर्जा बचत ही ऊर्जा उत्पादन है। सतत विकास के
लिए हमें नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों के प्रयोग के साथ-साथ ऊर्जा का अपव्यय रोककर इसके संरक्षण की आवश्यकता है।

3. भारत में खनिजों के वितरण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत अच्छे और विविध प्रकार के खनिज संसाधनों से परिपूर्ण है, परंतु इनका वितरण बहुत ही असमान है।

➲ **प्रायद्वीपीय चट्टानें**—इनमें कोयला, धात्विक खनिज, अभ्रक व अन्य अनेक अधात्विक खनिजों के अधिकतर भंडार संचित हैं।

➲ **गुजरात एवं असम**—अवसादी शैल गुजरात में तथा असम में पेट्रोलियम के निक्षेप पाए जाते हैं।

➲ **राजस्थान**—अनेक अलौह खनिज प्रायद्वीपीय शैल क्रम के साथ पाए जाते हैं।

➲ **उत्तरी मैदान** उत्तरी भारत के विशाल जलोढ़ मैदान में खनिज की न्यूनता अथवा अभाव पाया जाता है।

पृथ्वी की सतह से खनिजों की निकासी की आर्थिक गतिविधि खनन कहलाती है। भारत में पाए जाने वाले लगभग सभी खनिज राष्ट्रीयकृत हैं और इनके खनन के लिए सरकारी सहमति आवश्यक है, किंतु भारत के उत्तर-पूर्वी जनजातीय क्षेत्रों में खनिज पदार्थों पर व्यक्ति विशेष या सामुदायिक स्वामित्व को स्पष्ट देखा जा सकता है।

4. मैग्नेटाइट तथा हैमेटाइट में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर मैग्नेटाइट तथा हैमेटाइट में निम्न अंतर हैं–

मैग्नेटाइट	हैमेटाइट
यह लौह-अयस्क सर्वोत्तम किस्म का होता है। इसमें लगभग 70% से अधिक लोहांश पाया जाता है।	इसमें अपेक्षाकृत कम लोहांश की मात्रा पाई जाती है। इसमें लगभग 50-60% लोहांश पाया जाता है।
इसका उपयोग विद्युत उद्योगों में बड़े पैमाने पर होता है।	इसका सर्वाधिक वाणिज्यिक उपयोग होता है।

5. धात्विक खनिज किसे कहा जाता है? ये कितने प्रकार के होते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर वे खनिज, जिनमें लौह के अंश पाए जाते हैं, धात्विक खनिज कहलाते हैं; जैसे—सोना, चाँदी, टंगस्टन आदि। इनके दो प्रकार होते हैं—

(i) लौह खनिज—लोहे के अंश वाले खनिज, लौह खनिज कहलाते हैं। लौह खनिज धात्विक खनिजों के कुल उत्पादन मूल्य का तीन-चौथाई भाग है।

(ii) अलौह खनिज—ऐसे खनिज, जिनमें लौह तत्त्व नहीं पाए जाते हैं, अलौह खनिज कहलाते हैं। भारत में अलौह खनिज के सीमित भंडार हैं। इसमें ताँबा, बॉक्साइट, सीसा और सोना जैसे खनिज आते हैं।

6. अभ्रक की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं? किन्हीं तीन का वर्णन कीजिए।

उत्तर अभ्रक की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

(i) इसका विद्युत व इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों में अधिक उपयोग होता है, क्योंकि यह परावैद्युत शक्ति से संपन्न व उच्च वोल्टेज का प्रतिरोधी होता है।

(ii) अभ्रक प्लेटों अथवा पत्रण क्रम के रूप में पाया जाता है, जिसे चादरों के रूप में आसानी से विभाजित किया जा सकता है।

(iii) अभ्रक मुख्यतया काला, हरा, लाल, पीला, भूरा तथा अपारदर्शी होता है।

(iv) भारत में अभ्रक का निक्षेप छोटानागपुर पठार के उत्तरी पठारी किनारों विशेषकर बिहार व झारखंड की कोडरमा-गया-हजारीबाग की पेटी में पाया जाता है।

राजस्थान में अजमेर और आंध्र प्रदेश में नेल्लोर देश के प्रमुख अभ्रक उत्पादक क्षेत्र हैं।

7. अभ्रक की उपयोगिता बताइए। भारत में इसके दो उत्पादक राज्य लिखिए।

उत्तर अभ्रक की उपयोगिता निम्न है—

(i) उच्च गलनांक होने के कारण इसका उपयोग बहुत-से उद्योगों में किया जाता है।

(ii) वर्तमान में इसका उपयोग बिजली के उपकरणों में किया जाता है, क्योंकि यह ताप एवं विद्युत का कुचालक होता है।

(iii) मुख्य रूप से इसका उपयोग छोटे-छोटे डायनेमो, बिजली की मोटरों, बेतार के तार, नेत्ररक्षक चश्मा, मोटर, हवाई जहाज, तार एवं टेलीफोन, रेडियो, स्टोव तथा साज-शृंगार की सामग्री बनाने में किया जाता है।

(iv) इसके अतिरिक्त कपड़ों, पंखों, खिलौनों, मिट्टी के बर्तनों में चमक देने आदि कार्यों के लिए भी अभ्रक का उपयोग किया जाता है।

भारत में अभ्रक के दो उत्पादक राज्य-झारखंड एवं आंध्र प्रदेश हैं।

8. अधात्विक खनिज की मुख्य विशेषता क्या है? किसी एक अधात्विक खनिज का वर्णन कीजिए।

उत्तर अधात्विक खनिज की मुख्य विशेषता यह है कि इसके गलने के पश्चात् किसी नए उत्पाद का निर्माण नहीं होता है। ये सामान्य: परतदार चट्टानों से निर्मित होते हैं; जैसे— ग्रेनाइट, सेनस्टॉन आदि। अभ्रक और चूना-पत्थर महत्त्वपूर्ण अधात्विक खनिज हैं, जिनका वर्णन निम्न प्रकार है—

अभ्रक—इसका विद्युत व इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों में अधिक उपयोग होता है, क्योंकि यह परावैद्युत शक्ति से संपन्न व उच्च वोल्टेज का प्रतिरोधी होता है।

अभ्रक प्लेटों अथवा पत्रण क्रम के रूप में पाया जाता है, जिसे चादरों के रूप में आसानी से विभाजित किया जा सकता है। अभ्रक मुख्यतया काला, हरा, लाल, पीला, भूरा तथा अपारदर्शी होता है।

9. ऊर्जा संसाधन से क्या आशय है? इन्हें कितने स्रोतों में वगीकृत किया जाता है।

उत्तर जिन संसाधनों का उद्योगों को चलाने के लिए शक्ति के रूप में उपयोग किया जाता है, उन्हें ऊर्जा संसाधन कहते हैं। कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, यूरेनियम जैसे खनिज ईंधन से ऊर्जा का उत्पादन किया जाता है। ऊर्जा संसाधनों को पारंपरिक और गैर-पारंपरिक स्रोतों में वर्गीकृत किया जाता है, जिनका वर्णन निम्न प्रकार है—

- **ऊर्जा के परंपरागत साधन**—इनमें लकड़ी, कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस तथा विद्युत आदि सम्मिलित हैं। इनके पुन: निर्माण में हजारों वर्ष लग जाते हैं। अत: ये अपनी प्रकृति में सीमित और अनवीकरणीय होते हैं।
- **ऊर्जा के गैर-परंपरागत साधन**—इनमें सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोगैस, भू-तापीय ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा और परमाणु ऊर्जा आदि सम्मिलित हैं। ये स्वतंत्र रूप में पाए जाते हैं। ये अपनी प्रकृति में अटूट और नवीकरणीय संसाधन हैं।

10. पेट्रोलियम के क्या लाभ हैं? पेट्रोलियम को बचाने के लिए किन्हीं दो तरीकों के सुझाव दीजिए।

उत्तर पेट्रोलियम के लाभ

- यह कोयले के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण ऊर्जा संसाधन है।
- इसका उपयोग ताप व प्रकाश के लिए, ईंधन, मशीनों के स्नेहक तथा विनिर्माण उद्योग के कच्चे माल के रूप में होता है।
- तेल शोधन केंद्र, उर्वरक, संश्लेषित वस्त्र तथा रसायन उद्योगों के लिए एक प्रमुख केंद्र बिंदु होता है।

खनिज तेल को बचाने के उपाय/तरीके

- इसके लिए वैकल्पिक संसाधन के उपयोग पर अधिक बल देना चाहिए।
- सार्वजनिक वाहनों के उपयोग को बढ़ावा देना।
- अन्य पहल जैसे कम दूरी के लिए साइकिल का प्रयोग, लाल बत्ती पर वाहनों के इंजन को बंद करना चाहिए आदि।

11. कोयले के लिए विभिन्न प्रकार के उत्तरदायी कारकों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर कोयले के विभिन्न प्रकार के लिए उत्तरदायी कारक निम्नवत् हैं—

पीट कोयला—इसमें कम कार्बन एवं कम ताप तथा उच्च मात्रा में नमी पाई जाती है।

लिग्नाइट कोयला—यह निम्न कोटि का एक भूरा एवं मुलायम कोयला होता है, जिसमें नमी की मात्रा बहुत अधिक होती है।

बिटुमिनस कोयला—इसका निर्माण गहराई में दबने तथा अधिक तापमान से प्रभावित होने से होता है। धातु शोधन में उच्च कोटि के बिटुमिनस कोयले का प्रयोग किया जाता है, जिसका लोहे के प्रगलन में भी विशेष महत्त्व होता है।

एंथ्रेसाइट कोयला—यह उच्च कोटि का कोयला है, जिसमें कठोरता पाई जाती है।

12. ऊर्जा संसाधन के रूप में कोयले के महत्त्व का वर्णन कीजिए।

उत्तर ऊर्जा संसाधन के रूप में कोयले का महत्त्व निम्न है—

- कोयला भारत में प्रमुख ऊर्जा संसाधन है।
- इसका मुख्यतया उपयोग ऊर्जा उत्पन्न करने, उद्योगों तथा घरेलू जरूरतों के लिए ऊर्जा की आपूर्ति से होता है।
- लौहा तथा इस्पात उद्योगों में यह आधारभूत साधन होता है। इसका प्रयोग सीमेंट उद्योग में भी होता है।

13. ऊर्जा के परंपरागत स्रोत किसे कहते हैं? भारत में खनिज तेल के दो क्षेत्रों के नाम दीजिए।

उत्तर भारत पेट्रोलियम की प्राकृतिक उपस्थिति से संबंधित घटनाएँ। टर्शियरी युग की शैल संरचनाओं की अपनति अर्थात् एक-दूसरे के विपरीत दिशा में झुकी भू-परतें व भ्रंश ट्रैपों से जुड़ी हैं।

तेलधारक परत, सरंध्र चूना-पत्थर या बालू पत्थर की होती है, जिसमें से तेल प्रवाहित हो सकता है।

भारत में कुल पेट्रोलियम का लगभग 63% भाग मुंबई हाई से, 18% भाग गुजरात से और 16% भाग असम से प्राप्त किया जाता है। अंकलेश्वर गुजरात का सबसे महत्त्वपूर्ण तेल उत्पादक क्षेत्र है और असम भारत का सबसे पुराना तेल उत्पादक राज्य है। इसके प्रमुख उत्पादक क्षेत्र डिग्बोई, नहरकटिया व मोरन-हुगरीजन हैं।

ऊर्जा के परंपरागत साधन (Conventional Sources)—इनमें लकड़ी, कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस तथा विद्युत आदि सम्मिलित हैं। इनके पुन: निर्माण में हजारों वर्ष लग जाते हैं। अत: ये अपनी प्रकृति में सीमित और अनवीकरणीय होते हैं।

14. ऊर्जा के गैर-परंपरागत साधन क्या हैं? ऊर्जा के इन संसाधनों के प्रयोग की इतनी जरूरत क्यों है?।

उत्तर नवीकरणीय संसाधनों के उपयोग की आवश्यकता निम्न कारणों से है—

- ऊर्जा के परंपरागत साधनों; जैसे—कोयला, तेल और गैस पर अतिनिर्भरता को कम करने के लिए।
- जीवाश्म ईंधनों की माँग की तुलना में इसके निर्माण की प्रक्रिया बहुत धीमी है।
- गैस व तेल की बढ़ती कीमत का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव।
- जीवाश्म ईंधनों के प्रयोग से भारी मात्रा में पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है।

15. भारत में विद्युत कितने प्रकार से उत्पन्न की जाती है?

उत्तर आधुनिक विश्व में विद्युत के प्रतिव्यक्ति उपभोग को विकास का सूचक माना जाता है। भारत में विद्युत दो प्रकार से उत्पन्न की जाती है—

(i) परंपरागत रूप से जीवाश्म ईंधन (कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस आदि) के जलने से विद्युत (तापीय ऊर्जा) का उत्पादन होता है। भारत में 310 से अधिक तापीय ऊर्जा संयंत्र हैं।

(ii) जल-विद्युत के सहयोग से गैर-परंपरागत तरीकों द्वारा बिजली का उत्पादन किया जाता है। यह एक प्रदूषण रहित ऊर्जा स्रोत है, जिससे संपूर्ण भारत में बिजली प्राप्त की जा रही है। भाखड़ा-नाँगल परियोजना, दामोदर घाटी परियोजना व कोयली जल-विद्युत परियोजना आदि विद्युत उत्पन्न करती हैं।

16. परमाणु खनिज किसे कहते हैं? कोई चार परमाणु खनिजों के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर परमाणु खनिज ऊर्जा के नए स्रोत हैं, जिससे परमाणु ऊर्जा प्राप्त की जाती है। यूरेनियम, थोरियम, बेरेलियम, जिरकन एवं इल्मेनाइट आदि परमाणु खनिज हैं।

भारत में परमाणु ऊर्जा का महत्त्व/विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) **अपार क्षमता से ऊर्जा की क्षतिपूर्ति**—भारत में उत्तम कोयले व खनिज तेल का अभाव है। इसके विपरीत, परमाणु ऊर्जा में अपार क्षमता एवं शक्ति होती है, जिसके द्वारा ऊर्जा के अभाव की क्षतिपूर्ति हो सकती है।

(ii) **परमाणु केंद्रों की सुविधानुसार स्थापना**—परमाणु ऊर्जा के संयंत्र वहाँ भी बनाए जा सकते हैं, जहाँ इसके स्रोत नहीं हैं। अत: विकास को दूर-दराज तक प्रसारित किया जा सकता है।

(iii) **बहुउपयोगी**—परमाणु ऊर्जा का प्रयोग अनेक कार्यों में किया जा सकता है। यह अपेक्षाकृत एक सस्ता संसाधन है।

(iv) **प्रदूषणमुक्त संसाधन**—नाभिकीय ऊर्जा प्रदूषणमुक्त होती है। अत: जीवाश्म ईंधनों की तुलना में उपयुक्त है।

(v) **राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में वृद्धि**—वर्तमान में विश्व में उन राष्ट्रों को शक्तिशाली माना जाता है, जिन्होंने परमाणु शक्ति का विकास कर लिया है।

17. भारत में गैर-परंपरागत ऊर्जा के अपनाने के किन्हीं दो कारणों को बताइए।

उत्तर गैर-नवीकरणीय संसाधनों का अत्यधिक उपयोग नई पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म देता है। अत: आवश्यक है कि नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर बल दिया जाए। भारत में गैर-परंपरागत ऊर्जा के अपनाने के कारण निम्नलिखित हैं

- **परमाणु अथवा आण्विक ऊर्जा**—परमाणु अथवा आण्विक ऊर्जा अणुओं की संरचना को बदलने से प्राप्त की जाती है। जब इस प्रकार का कोई परिवर्तन किया जाता है, तो ऊष्मा के रूप में काफी ऊर्जा विमुक्त होती है। यूरेनियम एवं थोरियम का प्रयोग परमाणु अथवा आण्विक ऊर्जा के उत्पादन में किया जाता है।
- **सौर ऊर्जा**—भारत एक उष्णकटिबंधीय देश है। इस कारण यहाँ सौर ऊर्जा की संभावना अत्यधिक होती है। इसका प्रयोग अनेक कार्यों में किया जाता है।

18. गोबर गैस अथवा बायोगैस क्या है? इसके तीन लाभ बताइए।

उत्तर बायोगैस ग्रामीण क्षेत्रों में झाड़ियों, कृषि अपशिष्ट, पशुओं और मानव के घरेलू उपयोग से उत्पन्न अपशिष्ट से उत्पन्न की जाती है। यह सस्ती और पर्यावरण मित्र होती है। इसका उपयोग मूलत: ईंधन और रोशनी प्राप्ति के लिए किया जाता है। इसके विभिन्न लाभ हैं—

- यह ऊर्जा के गैर-परंपरागत साधन हैं।
- यह प्रदूषण रहित होता है।
- किसानों को इससे कृषि के लिए जैविक खाद भी मिलते हैं।
- इसकी ताप क्षमता परंपरागत रूप से उपयोग हो रहे मिट्टी के तेल, गोबर के उपले, कोयला की तुलना में अधिक होती है। यह सस्ता साधन है।

19. सौर ऊर्जा क्या है? इसकी तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर भारत एक उष्णकटिबंधीय देश है। इस कारण यहाँ सौर ऊर्जा की संभावना अत्यधिक होती है। इसके प्रयोग अनेक कार्यों में किया जाता है; जैसे—फोटोवोल्टाइक प्रौद्योगिकी के द्वारा सूर्य के प्रकाश को सीधे विद्युत में परिवर्तित किया जाता है।

भारत का सबसे बड़ा सौर पावर प्लांट राजस्थान में माधोपुर के निकट भुज में स्थित है। इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- सौर ऊर्जा मुफ्त का उपहार है।
- यह प्रदूषण नहीं फैलाता है।
- यह ऊर्जा का गैर-परंपरागत साधन है।
- इसके प्रयोग से ग्रामीण घरों में गोबर के उपले और लकड़ियों पर निर्भरता न्यूनतम होती है।

20. ऊर्जा संसाधनों का संरक्षण भारत में क्यों आवश्यक है? कोई तीन कारण बताइए।

उत्तर ऊर्जा या शक्ति के वर्तमान में उपयोग में लाए जाने वाले संसाधनों की मात्रा सीमित है। इस कारण इनका संरक्षण नितांत आवश्यक है।

शक्ति के संसाधनों के संरक्षण के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

- शक्ति के प्रमुख संसाधन प्राकृतिक हैं, जिनका निर्माण लाखों-करोड़ों वर्षों में हुआ है। अत: इनका पुन: निर्माण नहीं किया जा सकता।
- गैर-नवीकरणीय साधनों के उपयोग की प्रौद्योगिकी अभी इतनी विकसित नहीं है कि वे पारंपरिक साधनों का स्थान ले सकें। अत: पारंपरिक साधनों का संरक्षण आवश्यक है।
- देश की बहुमूल्य मुद्रा जीवाश्म ईंधन को आयात करने में व्यय हो रही है। अत: अर्थव्यवस्था के विकास के लिए इनका संरक्षण किया जाना चाहिए।
- अधिकांश पारंपरिक ऊर्जा के स्रोत प्रदूषणकारी हैं। अत: इनका सीमित उपयोग करना चाहिए।
- शक्ति के संसाधन वर्तमान युग की सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक हैं। अत: इनको संरक्षित करना चाहिए, ताकि किसी प्रकार के ऊर्जा संकट का सामना न करना पड़े।

21. एल्युमीनियम एक महत्त्वपूर्ण धातु है। क्यों? उस अयस्क का नाम बताइए, जिससे एल्युमीनियम निकाला जाता है।

उत्तर निम्नलिखित कारणों से एल्युमीनियम महत्त्वपूर्ण है—

- यह लोहे जैसी मजबूत होती है तथा लोहे की अपेक्षा हल्की होती है।
- यह बिजली का एक अच्छा सुचालक होती है, इसलिए इससे भारी मात्रा में तार बनाए जाते हैं।
- आघातवर्ध्यता इसका एक विशिष्ट गुण है, जिससे इसको पतली सीटों में बदला जाता है।
- एल्युमीनियम बॉक्साइट से प्राप्त की जाती है।

22. खनन क्रिया को प्रायः 'घातक उद्योग' क्यों कहा जाता है? तीन कारण दीजिए।

उत्तर खनन को निम्नलिखित कारणों से घातक उद्योग कहा जाता है—

- खनन के कारण खनन क्षेत्र के जलस्रोत संक्रमित हो जाते हैं।
- खनन के द्वारा उत्पन्न हुए अपशिष्ट पदार्थों और गारे को जमीन के नीचे दबा दिए जाने के कारण भूमि तथा मृदा का क्षरण होता है तथा जलधाराओं और नदियों के प्रदूषण स्तर में वृद्धि होती है।
- खदानों की छत गिरने, जलभराव तथा कोयला खदानों में लगने वाली आग से भी खदानों में खतरा बना रहता है।
- खदान श्रमिकों के शरीर में पहुँचने वाली धूल तथा हानिकारक धुआँ उन्हें फेफड़ों से संबंधित रोगों के प्रति संवेदनशील बनाते हैं।

2‹. ''भारत जैसे ऊर्जा की कमी वाले देश में प्राकृतिक गैस एक बहुमूल्य उपहार है।'' चर्चा कीजिए।

उत्तर प्राकृतिक गैस का उपयोग ऊर्जा के साथ-साथ पेट्रो-रसायन उद्योग में कच्चे माल के रूप में होता हैं।

- प्राकृतिक गैस पर आधारित विद्युत संयंत्र के निर्माण कम समयावधि में होता है।
- प्राकृतिक गैस पर आधारित उर्वरक संयंत्रों की स्थापना से उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।
- इसका उपयोग गाड़ियों में तरल ईंधन का संपीड़ित प्राकृतिक गैस से प्रतिस्थापन के रूप में हो रहा है, जो अधिक लोकप्रिय हो रहा है।
- यह ऊर्जा का प्रदूषण मुक्त संसाधन है।

24. कोयले का संरक्षण क्यों आवश्यक है? तीन कारण बताइए।

उत्तर कोयले का संरक्षण मानव जीवन हेतु अति आवश्यक है। इसके तीन कारण निम्नलिखित हैं—

(i) कोयला कर सीमित भंडार होना—कोयला जीवाश्म ईंधन का स्रोत है। यह ऊर्जा का अनवीकरणीय स्रोत है। इसका उपयोग मुख्य रूप से विद्युत उत्पादन एवं ईंधन के रूप में होता है।

कोयले का दोहन बहुत ही तेजी से हो रहा है, जिसके कारण इसके संचित भंडार में कमी हो रही है। भविष्य की पीढ़ी की ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए इसका संरक्षण आवश्यक है।

(ii) उच्च गुणवत्ता के कोयले की कम मात्रा—कोयला मुख्य रूप से लिग्नाइट (40-45% कार्बन), बिटुमिनस (55–80% कार्बन) एवं एंथ्रासाइट (80–95% कार्बन) के रूप में पाया जाता है। भारत में कोयला ऊर्जा उत्पादन का महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

एंथ्रासाइट सर्वाधिक उच्च गुणवत्ता वाला कोयला है, जिसका भंडार बहुत सीमित है। ऊर्जा उत्पादन के दृष्टिकोण से इसका संरक्षण आवश्यक है।

(iii) कोयले के दोहन से प्रदूषण में वृद्धि—ईंधन के रूप में कोयले का प्रयोग करने से यह प्रदूषण उत्पन्न करता है, जो प्रकृति के लिए हानिकारक है। ईंधन के रूप में, जो स्वच्छ ईंधन प्रदूषण रहित हो (बायो गैस एवं एलपीजी) का उपयोग करना होता है। ऊर्जा आवश्कताओं की पूर्ति हेतु, अन्य नवीकरणीय संसाधनों की तलाश करनी चाहिए तथा कोयले का भंडार संरक्षित रखना चाहिए, क्योंकि कोयला ऊर्जा का एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. खनिजों को परिभाषित कीजिए। खनिज किस प्रकार आग्नेय और कायांतरित चट्टानों में बनते हैं?

उत्तर खनिज प्राय: अयस्कों के रूप में पाए जाते हैं। अयस्क शब्द का प्रयोग खनिज में अन्य अवयवों या तत्त्वों के मिश्रण या संचयन के लिए किया जाता है। खनिज निम्न शैल समूहों में पाया जाते हैं—

- खनिज आग्नेय तथा कायांतरित चट्टानों की दरारों, जोड़ों व भ्रंशों में मिलते हैं। खनिजों का छोटा जमाव शिराओं के रूप में तथा वृहत जमाव परत के रूप में होता है। जस्ता, ताँबा, जिंक और सीसा आदि खनिजों का जमाव इन्हीं शिराओं में होता है।
- कुछ खनिज अवसादी चट्टानों की परतों या संस्तरों में पाए जाते हैं। इनका निर्माण क्षैतिज परतों में जमाव, संचयन एवं निक्षेपण के कारण होता है। कोयला, लौह-अयस्क, जिप्सम, पोटाश, नमक व सोडियम जैसे खनिज भी अवसादी चट्टानों में पाए जाते हैं।
- कुछ खनिज पहाड़ियों के आधार तथा घाटी तल के रेत में, जलोढ़ जमाव के रूप में पाए जाते हैं। इन्हें 'प्लेसर निक्षेप' के रूप में भी जाना जाता है।
- महासागरीय जल में खनिज विशाल मात्रा में पाए जाते हैं, लेकिन ये बहुत ही विसरित होते हैं, जिससे ये आर्थिक रूप से कम महत्त्वपूर्ण होते हैं। महासागर की तली में मैंगनीज ग्रंथिकाएँ बहुतायत मात्रा में पाई जाती हैं। ऐसे ही साधारण नमक, मैग्नीशियम और ब्रोमीन समुद्री जल से प्राप्त किए जाते हैं।

2. भारत में लौह-अयस्क के उत्पादन पर लिखिए।

उत्तर भारत में लौह-अयस्क के प्रमुख क्षेत्रों का विवरण निम्नलिखित है—

- **ओडिशा-झारखंड पेटी**—ओडिशा के मयूरभंज व केंदुझार जिलों के बादाम पहाड़ से उच्च कोटि का हेमेटाइट लौह-अयस्क निकाला जाता है। इसी के पास झारखंड के सिंहभूम जिले में गुआ और नोआमुंडी से हेमेटाइट का खनन किया जाता है।
- **दुर्ग-बस्तर-चंद्रपुर पेटी**—इस पेटी के अंतर्गत छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र राज्य के क्षेत्र आते हैं। छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में अवस्थित बैलाडीला पहाड़ी में उच्च किस्म का हेमेटाइट पाया जाता है, जिसमें उच्च गुणवत्ता के लौह के 14 भंडार मिलते हैं।
- **बेल्लारी-चित्रदुर्ग, चिक्कमगलुरु-तुमकुरु पेटी**—कर्नाटक की इस पेटी में लौह-अयस्क विशाल मात्रा में संचित है। कर्नाटक में पश्चिमी घाट में अवस्थित कुद्रेमुख की खानें शत-प्रतिशत लौह-अयस्क की निर्यात इकाई हैं।
- **महाराष्ट्र-गोवा पेटी**—यह महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले और गोवा में स्थित है। यहाँ के लौह-अयस्क की गुणवत्ता निम्न कोटि की होती है। इसका मार्मागाओ पत्तन से निर्यात किया जाता है।

3. प्राकृतिक संसाधन का क्या तात्पर्य है? भारत के किन्हीं दो खनिजों के वितरण का उल्लेख कीजिए।

उत्तर पृथ्वी के धरातल के नीचे स्थित वे पदार्थ, जिन्हें खोदकर बाहर निकाला जाता है तथा जिनसे किसी धातु या अन्य उपयोग की वस्तु प्राप्त की जा सकती है, खनिज (Minerals) कहलाते हैं। वास्तव में 'खनिज' प्राकृतिक रूप से धरातल के नीचे मिलने वाले वे पदार्थ हैं, जिनकी अपनी भौतिक विशेषताएँ और एक निश्चित रासायनिक संयोजन होता है।

भारत में लौह-अयस्क का वितरण—भारत में लौह-अयस्क के भंडार मुख्यत: झारखंड व ओडिशा राज्यों में पाए जाते हैं। लौह-अयस्क का यह क्षेत्र विश्व का सबसे बड़ा क्षेत्र है। भू-गर्भवेत्ताओं के अनुसार, भारत में विश्व के 16.5% लौह-अयस्क के भंडार सुरक्षित हैं। यहाँ लगभग 23 अरब टन लौह-अयस्क के भंडार हैं।

भारत के लौह-अयस्क उत्पादक क्षेत्र—भारत में लौह-अयस्क उत्पादन क्षेत्र का विवरण निम्नलिखित है

- **ओडिशा**—इसका लौह-अयस्क उत्पादन में प्रथम स्थान है। यहाँ मयूरभंज जिले में गुरुमहिसानी, सुलेपात, बादाम-पहाड़ आदि लोहे की प्रमुख खानें हैं। क्योंझर में नोआमुंडी एशिया की सबसे बड़ी लोहे की खान है।
- **कर्नाटक**—यहाँ के चिकमंगलूर जिले की बाबा बूदन पहाड़ियों से लौह-अयस्क का उत्पादन होता है। इसके अतिरिक्त बेल्लारी एवं हॉस्पेट जिलों में सेंदूर की पहाड़ियों एवं शिमोगा, धारवाड़ से भी लौह-अयस्क का उत्पादन होता है।
- **छत्तीसगढ़**—इसका लौह-अयस्क उत्पादन में दूसरा स्थान है। यहाँ से कुल लौह-अयस्क उत्पादन का 25% प्राप्त होता है। बैलाडिला (बस्तर) यहाँ की प्रमुख खान है। दुर्ग के राजहरा पहाड़ी बस्तर, रायगढ़, सरगुजा, बिलासपुर में लौह-अयस्क प्रमुख रूप से मिलता है।
- **गोवा**—यहाँ लोहे की खुली खानें हैं, जिनसे देश के कुल लौह-अयस्क उत्पादन का 32% लौह-अयस्क उत्पादित किया जाता है। यहाँ घटिया किस्म का लौह-अयस्क मिलता है। पिरना-अदोल, पाले-ओनेडा, कुडनेम-पिसरूलेम तथा कुडनेम-सुरला लौह-अयस्क उत्पादन की खानें हैं।
- **झारखंड**—यह कुल लौह-अयस्क का 16% भाग उत्पादित करता है। इस राज्य की लौह-अयस्क खानें ओडिशा लौह पेटी से जुड़ी हैं। यहाँ सिंहभूम से प्रचुर मात्रा में लौह-अयस्क निकाला जाता है। यहाँ से लौह- अयस्क की सर्वोत्तम किस्म का मैग्नेटाइट तथा हेमेटाइट निकलता है।
- **महाराष्ट्र**—यहाँ के चंद्रपुर जिले में उत्तम श्रेणी के पर्याप्त भंडार हैं। यहाँ लोहारा, रत्नागिरि एवं पीपल गाँव से लौह-अयस्क उत्पादित होता है।
- **आंध्र प्रदेश-तेलंगाना**—इस क्षेत्र में लौह-अयस्क का खनन कृष्णा कुर्नूल, चित्तूर, गुंटूर एवं वारंगल से लौह-अयस्क का उत्पादन होता है।
- **अन्य राज्य**—अन्य राज्यों में तमिलनाडु के सलेम, तिरुचिरापल्ली में मैग्नेटाइट के भंडार आकलित हैं। पश्चिम बंगाल के वीरभूम जिले में दामूदा एवं महादेव श्रेणियों की बालुका पत्थर शैलों से लौह-अयस्क निकाला जाता है।
- **मध्य प्रदेश**—मध्य प्रदेश में जबलपुर, मंडला तथा बालाघाट में लौह- अयस्क के भंडार पाए जाते हैं।

भारत में मैंगनीज का वितरण या उत्पादन क्षेत्र

भारत में मैंगनीज के वितरण क्षेत्र विभिन्न राज्यों में निम्न प्रकार हैं

- **ओडिशा**—ओडिशा मैंगनीज उत्पादक राज्यों में अग्रणी स्थान रखता है। यहाँ भारत का एक-तिहाई मैंगनीज उत्पादित किया

जाता है। ओडिशा में मैंगनीज की प्रमुख खदानें बोनई, मयूरभंज, क्योंझर, तालचिर, सुंदरगढ़, संभलपुर, गंगपुर, कोरापुट, कालाहांडी और बोलनगिरि में स्थित हैं।

- **महाराष्ट्र**—यह भारत का एक-चौथाई मैंगनीज का उत्पादन करने वाला राज्य है। यह भारत में मैंगनीज उत्पादन करने वाला दूसरा बड़ा राज्य है। इस राज्य के मुख्य मैंगनीज उत्पादक पेटी नागपुर, रत्नागिरि तथा भंडारा जिलों में विस्तृत है।
- **कर्नाटक**—कर्नाटक भी मैंगनीज के महत्त्वपूर्ण उत्पादक राज्यों में से एक है। यहाँ की प्रमुख मैंगनीज खदानें, धारवाड़, बेल्लारी, बेलगाम, शिमोगा, तुमकुर, चित्रदुर्ग, कादूर व चिकमंगलूर जिलों में हैं।
- **मध्य प्रदेश**—इस राज्य में मैंगनीज की पट्टी बालाघाट, छिंदवाड़ा, निमाड़, मांडला, सिवनी और झाबुआ जिलों में फैली है। यह पेटी महाराष्ट्र के नागपुर, भंडारा जिलों की मैंगनीज पेटी का ही विस्तार है। छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर तथा बस्तर जिलों से भी मैंगनीज निकाला जाता है।
- **आंध्र प्रदेश**—इस राज्य के विजयनगर, आदिलाबाद, विशाखापत्तनम, श्रीकाकुलम, कुडप्पा व गुंटूर में देश का 8% मैंगनीज निकाला जाता है।
- **राजस्थान**—राजस्थान से मध्यम श्रेणी का मैंगनीज उदयपुर, बांसवाड़ा, सिरोही एवं डूँगरपुर जिलों से प्राप्त होता है।
- **गुजरात**—गुजरात में मैंगनीज की संचित मात्रा का अनुमान 25 लाख टन लगाया गया है। इन जिलों में बड़ोदरा एवं पंचमहल जिले प्रमुख हैं।
- **अन्य राज्य**—उपरोक्त राज्यों के अतिरिक्त झारखंड (चाईबासा), गुजरात, गोवा व राजस्थान से भी मैंगनीज की प्राप्ति होती है।

4. ''ऊर्जा के विकास के सतत पोषणीय मार्ग को विकसित करने की तुरंत आवश्यकता है।'' व्याख्या कीजिए।

उत्तर इसके लिए निम्नलिखित सुझाव अधिक उपयोगी होंगे

- **ऊर्जा के साधनों की सीमितता**—हमारे प्रमुख ऊर्जा संसाधन; जैसे—कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस समाप्य हैं, इसलिए इनका उपयोग समझदारी के साथ करना चाहिए।
- **ऊर्जा मानव की मूलभूत आवश्यकता है**—हमारे सभी क्रियाकलाप के लिए ऊर्जा आवश्यक होती है; जैसे— घर में खाना पकाने से लेकर उद्योगों में बड़ी-बड़ी मशीनों के संचालन के लिए।
- **ऊर्जा संसाधनों के निर्माण**—ऊर्जा संसाधनों के निर्माण की गति बहुत ही धीमी होती है, जबकि उसका उपभोग बहुत ही तीव्रता से होता है। ऐसे में इसका उपयोग ऐसा हो कि माँग और पूर्ति का संतुलन भविष्य तक बना रहे।
- ऊर्जा को भावी पीढ़ी के लिए बचाकर रखना चाहिए, क्योंकि ये अनवीकरणीय हैं।
- पर्यावरण के प्रदूषण में ऊर्जा संसाधनों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, इसलिए हमें चाहिए कि हम इसका अत्यधिक उपयोग करने से बचें।

5. अलौह खनिज किसे कहते हैं? अलौह खनिज में किन-किन खनिजों को शामिल किया जाता है स्पष्ट कीजिए।

उत्तर ऐसे खनिज, जिनमें लौह तत्त्व नहीं पाए जाते हैं, अलौह खनिज कहलाते हैं। भारत में अलौह खनिज के सीमित भंडार हैं। इसमें ताँबा, बॉक्साइट, सीसा और सोना जैसे खनिज आते हैं। अलौह खनिजों का उपयोग धातु शोधन, इंजीनियरिंग तथा विद्युत उद्योगों में होता है। अलौह खनिज में ताँबा और बॉक्साइट का वर्णन इस प्रकार है—

- **ताँबा**—ताँबे का उपयोग बिजली के तार बनाने, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं रसायन उद्योग में किया जाता है। मध्य प्रदेश का बालाघाट इसका प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है। झारखंड का सिंहभूम और राजस्थान का खेतड़ी भारत में ताँबा अपने उत्कृष्ट विद्युत चालकता के गुण के कारण एक महत्त्वपूर्ण खनिज है।
- **बॉक्साइट**—बॉक्साइट निक्षेपों की रचना एल्युमीनियम सिलिकेटों से समृद्ध व्यापक भिन्नता वाली चट्टानों के विघटन से होती है। एल्युमीनियम अपनी मजबूती और कम वजन के लिए जाना जाता है। इसका उपयोग बर्तन, बिजली के सामान आदि के निर्माण में व्यापक रूप से किया जाता है।
- भारत में बॉक्साइट मुख्यत: अमरकंटक पठार, मैकाल की पहाड़ियाँ तथा बिलासपुर-कटनी के पठारी प्रदेश में पाया जाता है। ओडिशा में कोरापुट बॉक्साइट का सबसे अधिक उत्पादन करता है। भारत में ओडिशा बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है।

6. गैर-परम्परागत ऊर्जा संसाधनों के दो महत्त्व बताइए। किन्हीं चार ऐसे संसाधनों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर **ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्रोत**—ऊर्जा के वे संसाधन जो दीर्घकाल तक उपयोग करने के पश्चात् पुन: बने रहते हैं तथा उपयोग में लाए जाते हैं, उन्हें अक्षयी या नवीकरणीय या गैर-परंपरागत ऊर्जा संसाधन कहते हैं। गैर-परंपरागत ऊर्जा स्रोतों की आवश्यकता इसलिए हुई है, क्योंकि जीवाश्म ईंधनों; जैसे—कोयला, पेट्रोलियम आदि परंपरागत या गैर-नवीकरणीय संसाधनों के तीव्र दोहन के कारण इनके शीघ्र समाप्त होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त ये ऊर्जा संसाधन पर्यावरण प्रदूषण के भी बड़े कारक हैं। ऐसे में ऊर्जा के गैर-परंपरागत साधनों; जैसे—सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, भू-तापीय ऊर्जा आदि के प्रयोग पर बल दिया जा रहा है। ये स्रोत नवीकरणीय होने के साथ-साथ प्रदूषण रहित भी होते हैं।

भारत में गैर-परंपरागत ऊर्जा संसाधन

भारत में गैर-परंपरागत ऊर्जा संसाधन निम्न हैं—

- **सौर ऊर्जा**—यह सूर्य की किरणों से प्राप्त की जाती है। इसे प्रौद्योगिकी के उपयोग द्वारा विद्युत ऊर्जा या तापीय ऊर्जा में परिवर्तित किया जाता है। भारत में सौर ऊर्जा की असीम संभावनाएँ हैं। भारत में इस ऊर्जा के उपयोग की ओर तेजी से सरकार का ध्यान गया है। भारत में गुजरात के **पाटन** में एशिया का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है। भारत में **जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय सौर मिशन** के अंतर्गत वर्ष 2022 तक 20,000 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। वर्तमान में 2,647 मेगावाट सौर ऊर्जा का उत्पादन किया जा रहा है।

- **भू-तापीय ऊर्जा**—इस ऊर्जा के अंतर्गत भू-गर्भ की ऊर्जा का उपयोग विद्युत उत्पादन या ताप ऊर्जा के लिए किया जाता है। इस प्रकार के संयंत्र गर्म जल के स्रोतों के पास लगाए जाते हैं। भारत में तातापानी (छत्तीसगढ़), पूग घाटी (जम्मू-कश्मीर) तथा चमोली (उत्तराखंड) व पार्वती घाटी (हिमाचल देश) में इसकी संभावनाएँ हैं। इन स्थानों पर भू-तापीय ऊर्जा के संयंत्र स्थापित किए जा रहे हैं।
- **पवन ऊर्जा**—इसके अंतर्गत वर्षभर हवा के प्रवाह वाले स्थानों पर पवन चक्कियाँ लगाकर उससे विद्युत उत्पन्न की जाती है। भारत पवन ऊर्जा उत्पादन में विश्व में पाँचवें स्थान पर है। वर्तमान में भारत में पवन ऊर्जा की उत्पादन क्षमता 11,806 मेगावाट है।
- भारत के प्रमुख पवन ऊर्जा उत्पादन केंद्र तमिलनाडु (4,900 मेगावाट), महाराष्ट्र (1,945 मेगावाट), गुजरात (1,580 मेगावाट), कर्नाटक (1,350 मेगावाट) और राजस्थान (745 मेगावाट) राज्यों में हैं।
- **ज्वारीय ऊर्जा**—ज्वार से उत्पन्न की जाने वाली ऊर्जा को 'ज्वारीय ऊर्जा' कहते हैं। इस ऊर्जा का दोहन समुद्र के संकरे मुहाने में बाँध का निर्माण कर किया जाता है, जिसमें ज्वार के समय समुद्री पानी एकत्र हो जाता है। इसके द्वारा टरबाइन घूमती है, जिससे विद्युत उत्पन्न होती है। भारत में खंभात की खाड़ी में ज्वारीय ऊर्जा की संभावनाएँ हैं। भारत में 8,000 मेगावाट ज्वारीय ऊर्जा निर्माण की क्षमता आकलित की गई है।
- **बायोगैस**—इसमें पशुओं के अपशिष्ट यथा गोबर को गैस में बदलकर ऊर्जा प्राप्त की जाती है। इसका उपयोग भोजन पकाने व प्रकाश के लिए किया जा सकता है। भारत में इसकी बड़ी संभावनाएँ हैं, क्योंकि विश्व में सर्वाधिक पशु भारत में ही पाए जाते हैं। भारत में 4,838 करोड़ घन मी प्रतिवर्ष बायोगैस उत्पादन की क्षमता है।
- **नगरीय व औद्योगिक कचरे से ऊर्जा**—इसके अंतर्गत नगरीय कूड़े-कचरे से उत्पन्न गैस से ऊर्जा प्राप्त की जाती है। दिल्ली व मुंबई में इस प्रकार की ऊर्जा के संयंत्र स्थापित किए गए हैं।
- **समुद्री तरंग ऊर्जा**—समुद्री लहरों से देश में 40,000 मेगावाट विद्युत उत्पादन की क्षमता है। केरल के तिरुअनंतपुरम में 150 मेगावाट क्षमता का समुद्री लहर विद्युत केंद्र स्थापित किया गया है।

7. खनन का क्या अर्थ है? भारत में खनन व्यवसाय की विशेषताएँ बताइए तथा इसके सुधार के तीन उपाय भी लिखिए।

उत्तर पृथ्वी की सतह से अथवा भू-गर्भ से चट्टानी पदार्थों को अधिक मानवोपयोगी तथा मूल्यवान बनाने के उद्देश्य से संसाधित करने के लिए खोदना या परत को हटाना **खनन** कहलाता है। चूँकि किसी भी देश के लिए औद्योगिक विकास का महत्त्वपूर्ण आधार खनिज होते हैं।

अत: इस संदर्भ में खनन का अर्थ अत्यंत ही व्यापक हो गया है। खनन के अंतर्गत बालू की परत हटाने से लेकर भूमिगत सुरंगों की खुदाई, चट्टानों को बारूद से तोड़ना, समुद्र के तल से खनिजों को प्राप्त करना जैसे कठिन कार्य शामिल होते हैं। अयस्कों का उत्खनन इसमें शामिल है।

भारत में खनन व्यवसाय की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

- भारत में सतही खनन किया जाता है, जिसे खुले गर्त वाली खान से उत्खनन करना भी कहते हैं।
- सतही खनन के अंतर्गत खनन लागत अपेक्षाकृत कम होती है तथा खनिजों का उत्पादन भी शीघ्र एवं अधिक होता है।
- भारत के कुछ खनिज अयस्कों का भू-गर्भिक खनन भी किया जाता है। यह खुले गर्त वाले खनन की तुलना में अधिक जोखिम भरा होता है।
- भारत में मुख्य रूप से खनिजों का संकेंद्रण दुर्गम पहाड़ियों एवं हिमालय के पर्वतीय भागों में हैं, इसलिए उचित सर्वेक्षण नहीं हो पाया है।

खनन व्यवसाय में सुधार के उपाय

देश के खनन व्यवसाय में सुधार के लिए निम्नलिखित उपाय करने की आवश्यकता है—

राष्ट्रीयकरण—राष्ट्रीय हित में भारत की सभी खदानों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए।

आधुनिकीकरण—खदानों के यंत्रीकरण करने के संदर्भ में इनके आधुनिकीकरण करने की प्रक्रिया पर जोर देना होगा, जिससे इन खदानों से खनिज संसाधनों का उचित दोहन किया जा सके।

खनिजों की बर्बादी पर नियंत्रण—खनन के समय खनिज पदार्थों की होने वाली बर्बादी की रोकथाम आवश्यक है, जिससे कि ज्यादा-से-ज्यादा खनिजों का उपयोग किया जा सके।

वैज्ञानिक प्रबंधन—खनन कार्यों को सुनियोजित ढंग से संपादित करने के लिए यह आवश्यक है कि इनका वैज्ञानिक प्रबंधन किया जाए।

वैकल्पिक साधनों की खोज—जिन बहुमूल्य खनिजों के भंडार सीमित हैं, उनके वैकल्पिक साधनों की खोज की जानी चाहिए।

8. भारत के खनिज तेल उत्पादक क्षेत्रों एवं किन्हीं तीन तेल शोधक केन्द्रों का वर्णन कीजिए।

उत्तर **ऊर्जा या शक्ति संसाधन**—जिन पदार्थों से मनुष्य को कृषि, परिवहन, उद्योग तथा घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ऊर्जा की प्राप्ति होती है, उन्हें 'ऊर्जा या शक्ति संसाधन' कहा जाता है। प्राचीनकाल में मानव ऊर्जा प्राप्त करने के लिए लकड़ी, पशु शक्ति तथा मानव शक्ति का उपयोग करता था, किंतु वर्तमान में ऊर्जा के संसाधनों में खनिज तेल, कोयला, प्राकृतिक गैस तथा परमाणु ऊर्जा प्रमुख ऊर्जा या शक्ति संसाधन हैं, इन्हें 'ऊर्जा के परंपरागत स्रोत' कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त, वर्तमान में कुछ अन्य नई प्रौद्योगिकियाँ विकसित कर भू-तापीय ऊर्जा, सौर ऊर्जा तथा पवन ऊर्जा को भी शक्ति के स्रोतों के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। ये स्रोत 'गैर-परंपरागत ऊर्जा संसाधन' कहलाते हैं।

भारत में खनिज तेल उत्पादन क्षेत्र—भारत के प्रमुख तेल उत्पादक क्षेत्रों का विवरण निम्नलिखित है—

- **असम तेल क्षेत्र**—इस क्षेत्र के अंतर्गत निम्नलिखित तेल क्षेत्र आते हैं—

- **डिग्बोई तेल क्षेत्र**—यह भारत का प्राचीनतम तेल क्षेत्र है। इसकी खोज ब्रिटिश काल में की गई थी। यह तेल क्षेत्र असम में टीपम पहाड़ियों से पूर्वोत्तर में लखीपुर तक फैला है। प्रमुख तेल के कुएँ बटयायांग, हस्सापांग, डिग्बोई तथा पानीटोला हैं।
- **सुरमा नदी घाटी तेल क्षेत्र**—इस क्षेत्र में हल्की श्रेणी का तेल बदरपुर एवं पथरीला में निकाला जाता है। दूसरा प्रमुख क्षेत्र मसीमपुर में स्थित है।
- **नाहरकटिया तेल क्षेत्र**—इस तेल क्षेत्र में स्वतंत्रता के उपरांत वर्ष 1953 में तेल उत्पादन आरंभ किया गया था।
- **हुगरीजन-मोरेन तेल क्षेत्र**—यह तेल क्षेत्र नाहरकटिया से 40 किमी दक्षिण-पश्चिम में है। यहाँ तेल के लगभग 29 कुएँ हैं, जिनमें से 22 कुओं से प्राकृतिक गैस भी प्राप्त होती है।
- **रुद्रसागर-लकवा तेल क्षेत्र**—इस तेल क्षेत्र का विस्तार मोरेन तेल क्षेत्र के दक्षिण में शिवसागर जिले में है।
- **गुजरात तेल क्षेत्र**—इस क्षेत्र के अंतर्गत निम्नलिखित तेल क्षेत्रों को शामिल किया जाता है
- **अंकलेश्वर तेल क्षेत्र**—यह तेल क्षेत्र वर्ष 1958 में खोजा गया था। यह क्षेत्र बड़ोदरा से 44 किमी दक्षिण-पश्चिम में नर्मदा घाटी में स्थित है। यहाँ से 1,200 मी की गहराई से तेल व प्राकृतिक गैस का उत्पादन किया जाता है।
- **अहमदाबाद-कलोल तेल क्षेत्र**—इस तेल क्षेत्र की स्थिति अहमदाबाद शहर के पश्चिम में है। कलोल तेल क्षेत्र के समीपवर्ती क्षेत्रों नवगाँव, कोसंबा, कोघना, मेहसाना, सानंद, बचराजी, बकरोल, कादी, वासना, धोलका, बावेल, ओल्पाद, सोभासन आदि स्थानों पर भी खनिज तेल मिला है।
- **खंभात या लुनेज तेल क्षेत्र**—यह तेल क्षेत्र खंभात की खाड़ी के ऊपरी सिरे पर बड़ोदरा से 60 किमी पश्चिम में बाड़सर में स्थित है। यहाँ वर्ष 1969 तक 62 कुओं की खुदाई की गई थी, जिनमें से 43 में तेल तथा 19 में से गैसें प्राप्त हुई हैं।
- **अपतटीय तेल क्षेत्र**—इस क्षेत्र में निम्नलिखित तेल क्षेत्रों को शामिल किया जाता है।
- **मुंबई हाई**—यह तेल क्षेत्र मुंबई के निकट अरब सागर में स्थित है। यहाँ से ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड (ओ एन जी सी) द्वारा तेल का उत्पादन किया जा रहा है। यहाँ वर्ष 1976 से जापानी प्लेटफॉर्म **सागर सम्राट** की सहायता से तेल का उत्पादन हो रहा है। यह देश का सबसे बड़ा तेल उत्पादन क्षेत्र है, जो देश के 60% से अधिक खनिज तेल का उत्पादन करता है।
- **अलियाबेट क्षेत्र**—यह गुजरात के सौराष्ट्र में भावनगर जिले से 45 किमी दूर अरब सागर में स्थित अलियाबेट द्वीप में स्थित है।
- **बेसिन तेल क्षेत्र**—इसकी स्थिति मुंबई हाई के दक्षिण में है। यहाँ 1900 मी की गहराई से तेल की खुदाई की जा रही है।

कोयला उत्पादक क्षेत्र

भारत में कोयला उत्पादन के निम्नलिखित दो प्रमुख क्षेत्र हैं—

- **गोंडवाना कोयला क्षेत्र**—भारत में इस क्षेत्र में 96% कोयला संचित है तथा कुल उत्पादन का 98% भाग इसी कोयला क्षेत्र से प्राप्त होता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित कोयला क्षेत्र आते हैं
- **झारखंड**—भारत में कुल कोयला उत्पादन का 36% उत्पादन झारखंड के कोयला क्षेत्रों से होता है। यहाँ झरिया, बोकारो, राजमहल, उत्तरी-दक्षिणी कर्णपुरा, डाल्टनगंज तथा गिरिडीह जैसी कोयले की खदानें हैं। झरिया यहाँ की सबसे बड़ी खान है, जो 436 वर्ग किमी क्षेत्र में फैली है।
- **छत्तीसगढ़ एवं मध्य प्रदेश**—इन क्षेत्रों का कोयला उत्पादन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन दोनों राज्यों से संयुक्त रूप से कुल उत्पादन का 28% भाग प्राप्त होता है। पेंच घाटी, उमरिया, सोहागपुर, सिंगरौली, रामकोला, तातापानी, कोरबा तथा बिलासपुर इन राज्यों के प्रमुख कोयला क्षेत्र हैं।
- **पश्चिम बंगाल**—यह क्षेत्र कुल कोयला उत्पादन का 13% भाग उत्पादित करने के लिए तीसरे स्थान पर है। रानीगंज यहाँ की प्रमुख कोयला खान है। यह खान 1,536 वर्ग किमी क्षेत्र में फैली है।
- **तेलंगाना एवं आंध्र प्रदेश** (गोदावरी घाटी क्षेत्र)—यह कोयला क्षेत्र तेलंगाना तथा आंध्र प्रदेश राज्यों में फैला है। कुल कोयला उत्पादन में इसका चौथा स्थान है। यहाँ कुल कोयला उत्पादन का 10% कोयला उत्पादित किया जाता है। गोदावरी घाटी में सिगरेनी, तंदूर तथा सस्ती प्रमुख खदानें हैं। आदिलाबाद, पश्चिमी गोदावरी, करीमनगर खंभात एवं वारंगल प्रमुख कोयला उत्पादक क्षेत्र हैं।
- **ओडिशा महानदी घाटी क्षेत्र**—इस कोयला क्षेत्र का विस्तार ओडिशा राज्य में है। दकोनाल, सुंदरगढ़ तथा संभलपुर प्रमुख कोयला उत्पादक जिले हैं।
- **सतपुड़ा कोयला क्षेत्र**—इसका विस्तार महाराष्ट्र व मध्य प्रदेश राज्यों में है। नरसिंहपुर जिले में मोहपानी, कान्हा घाटी, पेंच घाटी तथा बैतूल जिले में पाथरखेड़ा उल्लेखनीय कोयला क्षेत्र हैं।
- **महाराष्ट्र गोदावरी-वर्धा घाटी क्षेत्र**—इसके अंतर्गत महाराष्ट्र में चंद्रपुर, बलारपुर, बरोरा, यवतमाल, नागपुर आदि जिले तथा आंध्र प्रदेश में सिगरेनी, सस्ती व तंदूर क्षेत्र शामिल हैं।
- **टर्शियरी कोयला क्षेत्र**—यह कोयला क्षेत्र प्रायद्वीप के बाह्य भागों में पाया जाता है। सम्पूर्ण भारत का 2% भाग इस कोयला क्षेत्र से प्राप्त होता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित कोयला क्षेत्र आते हैं
- **मेघालय**—यहाँ की मिकिर पहाड़ियों में 1 से 2 मी मोटाई वाला हल्की श्रेणी का कोयला पाया जाता है। यहाँ गारो, खासी तथा जयंतिया पहाड़ियों में कोयला मिलता है।
- **राजस्थान**—यहाँ कोयला बीकानेर के दक्षिण-पश्चिम में 2 किमी की दूरी पर पालना नामक स्थान पर और उसके समीपवर्ती क्षेत्रों मढ़, चनेरी गंगा, गंगा-सरोवर एवं खारी क्षेत्रों में मिलता है।
- **असम**—यहाँ पूर्वी नागा पर्वत के उत्तर-पश्चिमी ढाल पर तथा लखीपुर एवं शिवसागर जिलों में कोयला पाया जाता है।
- **जम्मू-कश्मीर**—दक्षिणी-पश्चिमी कश्मीर में करेवा चट्टानों में निम्न किस्म का कोयला मिलता है।

कोयले की उपयोगिता या महत्त्व

कोयला बहुतायत में पाया जाने वाला जीवाश्म ईंधन है। कोयला, भारत में शक्ति का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। इसका उत्पादन तथा उपयोग किसी भी देश की प्रगति का सूचक होता है।

कोयला अपनी तीन उपयोगिताओं; जैसे-ताप प्रदान करने, भाप बनाने तथा कठोर धातुओं को पिघलाने के कारण वर्तमान औद्योगिक युग की रीढ़ बन गया है। कोयले से प्राप्त शक्ति खनिज तेल से प्राप्त की गई शक्ति से दोगुना, प्राकृतिक गैस से प्राप्त की गई शक्ति से पाँच गुना तथा जल-विद्युत शक्ति से आठ गुना अधिक होती है।

भारत में कुल विद्युत उत्पादन का लगभग 75% भाग कोयला आधारित ताप-विद्युत से उत्पन्न किया जाता है। कोयले का महत्त्व देखते हुए इसे **काला सोना** या **काला हीरा** कहा जाता है।

9. परमाणु ऊर्जा से क्या समझते हैं? इसकी किन्हीं पाँच विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर परमाणु खनिजों के विखंडन के परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाली ऊर्जा को **परमाणु ऊर्जा** (Atomic Power) कहते हैं। इस ऊर्जा से विद्युत बनाई जाती है। इन परमाणु खनिजों में यूरेनियम, थोरियम, बेरीलियम, ऐण्टिमनी, प्लूटोनियम, जर्कोनियम, इल्मेनाइट आदि मुख्य हैं। ऐसा अनुमानित है कि एक किलोग्राम यूरेनियम से इतनी ऊर्जा प्राप्त होती है, जितनी 27000 टन कोयले से प्राप्त होती है।

भारत में परमाणु ऊर्जा

भारत में विद्युत उत्पादन के लिए नाभिकीय या परमाणु ऊर्जा के प्रयोग के संबंध में सशक्त प्रयास किए गए हैं। इसके लिए परमाणु ऊर्जा अधिनियम बनाकर इसका क्रियान्वयन किया गया। इसके अंतर्गत निर्धारित उद्देश्यों में प्राकृतिक रूप से उपलब्ध तथा उच्च संभावना वाले तत्त्वों—यूरेनियम व थोरियम का उपयोग भारतीय परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों में नाभिकीय ईंधन के रूप में करना है। भारत में कुल विद्युत उत्पादन का 2.4% भाग परमाणु ऊर्जा केंद्रों द्वारा प्राप्त किया जा रहा है। भारत में परमाणु ऊर्जा का विकास तीन चरणों में किए जाने की योजना है, जिसमें

(i) प्रथम चरण—दाबित भारी पानी रिएक्टर,

(ii) दूसरा चरण—तीव्र प्रजनक रिएक्टर,

(iii) तीसरा चरण—प्रजनक रिएक्टर पर आधारित है।

भारत में परमाणु ऊर्जा का महत्त्व/विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- **अपार क्षमता से ऊर्जा की क्षतिपूर्ति**—भारत में उत्तम कोयले व खनिज तेल का अभाव है। इसके विपरीत, परमाणु ऊर्जा में अपार क्षमता एवं शक्ति होती है, जिसके द्वारा ऊर्जा के अभाव की क्षतिपूर्ति हो सकती है।
- **परमाणु केंद्रों की सुविधानुसार स्थापना**—परमाणु ऊर्जा के संयंत्र वहाँ भी बनाए जा सकते हैं, जहाँ इसके स्रोत नहीं हैं। अत: विकास को दूर-दराज तक प्रसारित किया जा सकता है।
- **बहुउपयोगी**—परमाणु ऊर्जा का प्रयोग अनेक कार्यों में किया जा सकता है। यह अपेक्षाकृत एक सस्ता संसाधन है।
- **प्रदूषणमुक्त संसाधन**—नाभिकीय ऊर्जा प्रदूषणमुक्त होती है। अत: जीवाश्म ईंधनों की तुलना में उपयुक्त है।
- **राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में वृद्धि**—वर्तमान में विश्व में उन राष्ट्रों को शक्तिशाली माना जाता है, जिन्होंने परमाणु शक्ति का विकास कर लिया है।

❑❑❑

6

विनिर्माण उद्योग

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विनिर्माण उद्योग किसे कहा जाता है? इसके महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कच्चे पदार्थ को मूल्यवान उत्पाद में परिवर्तित कर अधिक मात्रा में वस्तुओं का उत्पादन करना विनिर्माण या वस्तु निर्माण कहलाता है। विनिर्माण उद्योग द्वितीयक क्षेत्र के अंतर्गत आता है। द्वितीयक गतिविधियों में कार्यरत लोग कच्चे माल से अंतिम उत्पाद का निर्माण करते हैं। विनिर्माण उद्योग बहुत महत्त्वपूर्ण उद्योग है, जिसे आर्थिक विकास का आधार स्तंभ माना जाता है, क्योंकि—

- विनिर्माण उद्योग कृषि के आधुनिकीकरण में सहायक है, जो हमारी अर्थव्यवस्था का आधार स्तंभ है।
- विनिर्माण उद्योग द्वितीयक व तृतीयक क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध कराकर लोगों की कृषि पर आधारित आय की निर्भरता को कम करता है। औद्योगिक विकास बेरोजगारी और निर्धनता के उन्मूलन में सहायक है।

2. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में उद्योगों के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर पिछले 20 वर्षों से विनिर्माण क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान 17% रहा है। पूर्वी एशियायी अर्थव्यवस्थाओं में विनिर्माण क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान 25-35% रहता है, जिसकी अपेक्षा हमारे देश में यह बहुत कम है। अगले कुछ दशकों में आवश्यक वृद्धि दर 12% रही है, जो पिछले दशकों में केवल 7% के आस-पास ही रही। विनिर्माण उद्योग के क्षेत्र में विकास करने के लिए सरकार ने राष्ट्रीय विनिर्माण प्रतिस्पर्द्धा परिषद की स्थापना की है।

3. लघु उद्योग को परिभाषित कीजिए और भारतीय अर्थव्यवस्था में उसके तीन योगदानों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर लघु उद्योग वैतनिक मजदूरों की सहायता से संचालित होने वाले वे उद्योग हैं, जिनकी निवेश सीमा ₹ 5 करोड़ तक है। ये उद्योग यंत्रों एवं विद्युत पर आधारित होते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में लघु उद्योग का प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं—

1. लघु उद्योग का औद्योगिक मूल संवर्धन में लगभग 40% योगदान है।
2. लघु उद्योग लगभग 4.62 मिलियन मूल्य की वस्तुओं अथवा सेवाओं का उत्पादन करता है।
3. लघु उद्योग क्षेत्र कृषि के बाद भारतीय जनसंख्या के लिए सर्वाधिक रोजगार अवसर सृजन करता है।
4. लघु उद्योग भारतीय निर्यात में 45-50% योगदान करता है।

4. प्रयोग किए गए कच्चे माल के आधार पर एवं कच्चे माल द्वारा निभाई गई भूमिका के आधार पर उद्योगों के वर्गीकरण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर (i) प्रयोग किए गए कच्चे माल के आधार पर

- **कृषि आधारित उद्योग**—सूती वस्त्र, ऊनी वस्त्र, पटसन, रेशमी वस्त्र, रबड़, चीनी, चाय, कॉफी, खाद्य तेल।
- **खनिज आधारित उद्योग**—लोहा एवं इस्पात उद्योग, सीमेंट, एल्युमीनियम, यांत्रिक उपकरण, पेट्रो-रसायन।

(ii) कच्चे माल द्वारा निभाई गई भूमिका के आधार पर

- **आधारभूत उद्योग**—वे उद्योग जो अपने तैयार उत्पादों की आपूर्ति दूसरे उद्योगों को कच्चे माल के रूप में करते हैं, आधारभूत उद्योग कहलाते है; जैसे—लौह-इस्पात, प्रगलित ताँबा, प्रगलित एल्युमीनियम।
- **उपभोक्ता उद्योग**—वे उद्योग, जो सीधे उपभोक्ताओं के उपयोग हेतु उत्पादन करते हैं, उपभोक्ता उद्योग कहलाते हैं; जैसे—चीनी, कागज, टूथपेस्ट, सिलाई मशीन, पंखे आदि।

5. स्वामित्व के आधार पर उद्योगों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर स्वामित्व के आधार पर उद्योग निम्नलिखित हैं

- **सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग** वे उद्योग, जिनका संचालन व स्वामित्व सरकारी एजेंसियों द्वारा किया जाता है; जैसे—भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स व स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड आदि।
- **निजी क्षेत्र के उद्योग** वे उद्योग जिनका संचालन व स्वामित्व किसी विशिष्ट व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह द्वारा किया जाता है, निजी क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं; जैसे—टिस्को, बजाज ऑटो लिमिटेड व डाबर उद्योग आदि।
- **संयुक्त उद्योग** ऐसे उद्योग, जो राज्य सरकार और विशिष्ट व्यक्तियों या उनके समूह के संयुक्त प्रयास से चलाए जाते हैं; जैसे—ऑयल इंडिया लिमिटेड आदि।

6. हुगली बेसिन के समीप पटसन मिलों की अवस्थिति के लिए उत्तरदायी कारकों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर हुगली बेसिन के समीप पटसन मिलों की अवस्थिति के लिए उत्तरदायी कारक निम्नलिखित हैं—

- पटसन उत्पादक क्षेत्रों के समीप मिल स्थापित करने में परिवहन लागत कम हो जाती है।
- रेलवे नेटवर्क और सड़क परिवहन द्वारा कच्चे माल को मिलों तक आसानी से सुगमतापूर्वक पहुँचाया जा सकता है।
- कच्चे पटसन को संसाधित करने के लिए नदी के जल की भारी मात्रा में आवश्यकता होती है।
- पश्चिम बंगाल और आस-पास के क्षेत्रों; जैसे—बिहार, ओडिशा, पूर्वी उत्तर प्रदेश आदि से सस्ते श्रम की प्राप्ति हो जाती है।

➲ कोलकाता विशाल नगरीय केंद्र है, जो बैंकिंग, बीमा और हुगली नदी से पटसन उत्पादों के निर्यात के लिए पत्तन सुविधाएँ आदि प्रदान करता है।

7. भारत में कागज के स्थानीयकरण के कोई पाँच कारक बताइए।

उत्तर भारत में कागज के स्थानीयकरण के पाँच कारक निम्नलिखित हैं—

(i) पृष्ठभूमि में उपस्थित वनों से कच्चे माल, जैसे कि कोमल लकड़ी, बाँस इत्यादि की उपलब्धता।

(ii) स्वच्छ जल की उपलब्धता।

(iii) विद्युत शक्ति की उपलब्धता।

(iv) रेल, सड़क व जल परिवहन संसाधनों की उपलब्धता।

(v) सस्ते व कुशल श्रमिकों की उपलब्धता।

8. भारत में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग के महत्त्व का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर इस उद्योग के अंतर्गत ट्रांजिस्टर सेटों से लेकर टेलीविजन, सेलफोन, टेलीफोन एक्सचेंज, राडार, कंप्यूटर और दूरसंचार तथा कंप्यूटर उद्योग के लिए आवश्यक अन्य उपकरण आदि आते हैं। बंगलुरु भारत की इलेक्ट्रॉनिक राजधानी के रूप में उभरा है। इलेक्ट्रॉनिक सामानों के अन्य महत्त्वपूर्ण केंद्र मुंबई, दिल्ली, हैदराबाद, पुणे, चेन्नई, कोलकाता, लखनऊ और कोयंबटूर हैं।

सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी—वर्तमान में भारत में 46 सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी पार्क हैं, जिनमें 30% महिला कर्मचारी हैं। तीव्र गति से वृद्धि के कारण बी पी ओ क्षेत्र देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने का प्रमुख स्रोत बना है। महत्त्वपूर्ण आई टी केंद्र बंगलुरु, नोएडा, मुंबई, चेन्नई, हैदराबाद तथा पुणे हैं।

9. इलेक्ट्रॉनिक उद्योग ने भारत के आम लोगों के जीवन और देश की अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर हाँ हम इस कथन से सहमत है। निम्न बिंदु इस कथन की पुष्टि करते हैं—

(i) इस उद्योग के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के उत्पाद व्यापक रूप से तैयार किए जाते हैं, जो मानव जीवन को प्रभावित करते हैं; जैसे- ट्रांजिस्टर टेलीविजन, टेलीफोन, सेल्युलर फोन, पेजर, कंप्यूटर, रडार आदि।

(ii) यह उद्योग डाकघरों, तारघरों, रक्षा, रेलवे, बैंक, वायु परिवहन और मौसम विभाग के लिए उनकी आवश्यकतानुसार अनेक प्रकार के उपकरण तैयार करता है।

(iii) संचार के साधनों में करोड़ों लोग मोबाइल फोन का उपयोग कर रहे हैं, जिसने मानव को सबसे ज्यादा प्रभावित किया है।

(iv) सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग से करोड़ों लोगों को रोजगार मिला है।

10. वायु प्रदूषण एवं जल प्रदूषण पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **वायु प्रदूषण** यह प्रदूषण वायु में सल्फर डाइ-ऑक्साइड और कार्बन मोनो-क्साइड की उच्च अनुपात में उपस्थिति के कारण होता है। ये गैसें रसायन और पेपर मिलों, ईंट-भट्ठों, रिफाइनरी, प्रगलित संयंत्रों और बड़े व छोटे कारखानों में जीवाश्म ईंधनों को जलाने से उत्सर्जित होती हैं। वायु प्रदूषण के कारण श्वसन संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

जल प्रदूषण—उद्योगों द्वारा कार्बनिक और अकार्बनिक अपशिष्ट पदार्थों के नदियों में छोड़ने से जल प्रदूषण फैलता है। जल प्रदूषण के प्रमुख कारक कागज, लुग्दी, रसायन, वस्त्र तथा रंगाई उद्योग, तेल शोधन शलाएँ, चमड़ा उद्योग तथा इलैक्ट्रोप्लेटिंग उद्योग हैं। जो रंग, अपमार्जक, अम्ल, लवण तथा भारी धातुएँ जैसे पारा, कीटनाशक, उर्वरक, कार्बन, प्लास्टिक और रबर सहित कृत्रिम रसायन आदि जल में वाहित करते हैं। भारत के मुख्य अपशिष्ट पदार्थों में फ्लाई एश, फोस्फो-जिप्सम तथा लोहा-इस्पात की अशुद्धियाँ हैं।

11. भारत में कृषि और उद्योगों की पारस्परिक निर्भरता की विवेचना कीजिए।

उत्तर भारत के कई महत्त्वपूर्ण उद्योग, कच्चे माल के लिए कृषि उत्पादों पर निर्भर रहते हैं; जैसे—सूती वस्त्र उद्योग, जूट उद्योग, चीनी उद्योग आदि। इसके अतिरिक्त कई ऐसे महत्त्वपूर्ण लघु एवं कुटीर उद्योग भी हैं, जो अपनी उत्पादन प्रक्रिया में कृषि-प्रदत्त पदार्थों का उपयोग कर आर्थिक विकास को गति प्रदान करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत में कृषि एवं उद्योगों की पारस्परिक निर्भरता आपस में जुड़ी हुई हैं। हरितक्रांति के बाद भारत में पहली बार फसलों का व्यवसायीकरण किया जाने लगा।

नगदी फसलों के उत्पादन पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया, जिससे कृषि आधारित उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति आसानी से उपलब्ध हो सके। भारत में चीनी, पटसन, सूती वस्त्र, रेशम वस्त्र तथा रबड़ उद्योग कृषि आधारित उद्योग हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि आधारित उद्योगों का विशेष महत्त्व है। कृषि आधारित उद्योग किसानों को आजीविका उपलब्ध कराते हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलती है।

12. भारत में कुटीर उद्योग के विकास के लिए तीन सुझाव दीजिए।

उत्तर भारत में कुटीर उद्योग के विकास की अनेक संभावनाएँ विद्यमान हैं, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ स्थानीय संसाधनों के उपयोग से ऐसे उद्योगों को विकसित किया जा सकता है। काफी प्रयासों के पश्चात् भी कुटीर उद्योगों के विकास में अनेक बाधाएँ उत्पन्न होती रही हैं। कुटीर उद्योग के विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव हैं

(i) पूँजी की उपलब्धता—सरकार को पूँजी की उपलब्धता पर विशेष ध्यान केंद्रित करना होगा, जिससे कुटीर उद्योगों को विकास में सहायता मिल सके।

(ii) संसाधनों का इस्तेमाल—सरकार को स्थानीय संसाधनों के उपयोग पर विशेष बल देना होगा।

(iii) विद्युतीकरण की अनिवार्यता—ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण किया जाना आवश्यक है। इसके अभाव में कुटीर उद्योगों का विकास संभव नहीं है।

13. कुटीर उद्योग को परिभाषित कीजिए। इसके दो महत्त्वों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर वे उद्योग जिनमें उत्पाद एवं सेवाओं का सृजन अपने घर में ही किया जाता है, उन्हें कुटीर उद्योग कहते हैं; जैसे—हथकरघा एवं मिट्टी के बर्तन आदि।

कुटीर उद्योग के प्रमुख दो महत्त्व निम्नलिखित हैं—

(i) ग्रामीण विकास में योगदान

(ii) स्वरोजगार के सृजन में योगदान तथा गरीबी दूर करने में सहायक

14. भारत में उद्योगों की निम्न उत्पादकता के तीन कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर भारत में उद्योगों की निम्न उत्पादकता के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(i) अल्पविकसित आधारभूत संरचना

(ii) उद्योगों की रूग्णता

(iii) पूँजी की कमी

(iv) कच्चा माल की कमी

(v) अधिक उत्पादन लागत और उत्पादों की निम्न गुणवत्ता

(vi) कुशल श्रमिकों का अभाव

(vii) पुरानी मशीनें

15. कुटीर एवं लघु उद्योग में क्या अंतर है? कुटीर उद्योग के विकास के लिए दो सुझाव दीजिए।

उत्तर कुटीर एवं लघु उद्योग में निम्नलिखित अंतर हैं—

लघु उद्योग	कुटीर उद्योग
जिन उद्योगों की निवेश सीमा 5 करोड़ तक होती है, लघु उद्योग कहलाते हैं।	जिन उद्योगों उत्पाद एवं सेवाओं का सृजन अपने घर में ही किया जाता है, कुटीर उद्योग कहलाते हैं।
ये उद्योग यन्त्रों व विद्युत पर आधारित होते हैं।	ये उद्योग केवल मानवीय कार्यबल पर आधारित होते हैं।

कुटीर उद्योग के विकास के लिए प्रमुख सुझाव निम्नलिखित हैं—

(i) पूँजी की उपलब्धता—सरकार को पूँजी की उपलब्धता पर विशेष ध्यान केंद्रित करना होगा, जिससे कुटीर उद्योगों को विकास में सहायता मिल सके।

(ii) संसाधनों का उपयोग—सरकार को स्थानीय संसाधनों के उपयोग पर विशेष बल देना होगा।

(iii) विद्युतीकरण की अनिवार्यता—ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण किया जाना आवश्यक है। इसके अभाव में कुटीर उद्योगों का विकास संभव नहीं है।

16. भारत में औद्योगिक विकास के लिए तीन सुझाव दीजिए।

उत्तर भारत में औद्योगिक विकास के लिए तीन सुझाव निम्नलिखित हैं—

(i) औद्योगिक इकाइयों को प्रतिस्पर्द्धात्मक बनाना—इसके द्वारा उत्पादकता के साथ-साथ वस्तु एवं सेवाओं की गुणवत्ता में भी व्यापक सुधार लाया जा सकता है। औद्योगिक इकाइयों में प्रतिस्पर्द्धा होने से उत्पादित वस्तुओं की गुणवत्ता में बढ़ोतरी होगी तथा बाजार में एकाधिकार स्थापित नहीं होगा।

(ii) कच्चे माल की उपलब्धता—खनिज संसाधनों के अभाव में उत्पादकता को बढ़ाना संभव नहीं है। इसलिए पर्याप्त मात्रा में खनिज संसाधनों की उपलब्धता अनिवार्य है।

(iii) परिवहन का विकास—औद्योगिक इकाइयों की स्थापना उन क्षेत्रों में अधिक होती है, जहाँ परिवहन एवं संचार व्यवस्था सुदृढ़ होती है। परिवहन के माध्यम से ही कच्चे मालों एवं तैयार वस्तुओं को दूसरे स्थानों तक पहुँचाया जाता है।

17. वायु प्रदूषण को कम करने के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को बताइए।

उत्तर वायु प्रदूषण को कम करने के महत्त्वपूर्ण बिंदु निम्नलिखित हैं—

- उद्योगों द्वारा भूमिगत जल की अधिकतम निकासी को कानूनी रूप से नियमित किए जाने की आवश्यकता है।
- जनरेटर और अन्य मशीनरी व उपकरणों में उनकी ध्वनि को कम करने के लिए साइलेंसर लगाना चाहिए।
- कारखानों की धूम्र चिमनियों पर स्थिर विद्युत अवक्षेपक, कपड़े के फिल्टर, कसबी तथा जड़त्वीय पृथक्कारक लगाकर हवा में छोटे-छोटे कणों को कम किया जा सकता है।

18. औद्योगिक अपशिष्ट का शोधन कितने चरणों में किया जाता है।

उत्तर औद्योगिक अपशिष्ट का शोधन तीन चरणों में किया जा सकता है—

(i) यांत्रिक साधनों द्वारा प्राथमिक शोधन—इसमें अपशिष्ट पदार्थों की छँटाई व उनके छोटे-छोटे टुकड़े करना, ढकना तथा तलछट जमाव आदि सम्मिलित हैं।

(ii) जैविक प्रक्रियाओं द्वारा द्वितीयक शोधन—इसमे वृक्षारोपण, वर्षा जल संग्रहण आदि सम्मिलित हैं।

(iii) रासायनिक, जैविक तथा भौतिक प्रक्रियाओं द्वारा तृतीयक शोधन—इसमें अपशिष्ट जल को पुनर्चक्रण द्वारा पुन: प्रयोग योग्य बनाया जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. उद्योगों का एक संक्षिप्त वर्गीकरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर उद्योगों का वर्गीकरण निम्न आधारों पर किया जा सकता है—

(i) प्रयोग किए गए कच्चे माल के आधार पर—

- **कृषि आधारित उद्योग**—सूती वस्त्र, ऊनी वस्त्र, पटसन, रेशमी वस्त्र, रबड़, चीनी, चाय, कॉफी, खाद्य तेल।
- **खनिज आधारित उद्योग**—लोहा एवं इस्पात उद्योग, सीमेंट, एल्युमीनियम, यांत्रिक उपकरण, पेट्रो-रसायन।

(ii) कच्चे माल द्वारा निभाई गई भूमिका के आधार पर—

- **आधारभूत उद्योग**—वे उद्योग जो अपने तैयार उत्पादों की आपूर्ति दूसरे उद्योगों को कच्चे माल के रूप में करते है, आधारभूत उद्योग कहलाते है; जैसे—लौह-इस्पात, प्रगलित ताँबा, प्रगलित एल्युमीनियम।
- **उपभोक्ता उद्योग**—वे उद्योग, जो सीधे उपभोक्ताओं के उपयोग हेतु उत्पादन करते हैं, उपभोक्ता उद्योग कहलाते हैं; जैसे—चीनी, कागज, टूथपेस्ट, सिलाई मशीन, पंखे आदि।

(iii) पूँजी निवेश के आधार पर

- **लघु उद्योग**—इन उद्योगों का अधिकतम निवेश एक करोड़ रुपये तक होता है।
- **दीर्घ उद्योग**—इन उद्योगों में निवेश की सीमा एक करोड़ रुपये से अधिक है।

(iv) स्वामित्व के आधार पर

- **सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग**—वे उद्योग, जिनका संचालन व स्वामित्व सरकारी एजेंसियों द्वारा किया जाता है।
- **निजी क्षेत्र के उद्योग**—वे उद्योग जिनका संचालन व स्वामित्व किसी विशिष्ट व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह द्वारा किया जाता है, निजी क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं। जैसे—टिस्को, बजाज ऑटो लिमिटेड व डाबर उद्योग आदि।

2. कृषि आधारित उद्योगों का वर्णन करें।

उत्तर प्रयोग की गई सामग्री के आधार पर उद्योगों को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है, जो निम्नलिखित हैं—

- **कृषि आधारित उद्योग**—वे उद्योग जो कच्चे माल के लिए कृषि पर आश्रित हैं, कृषि आधारित उद्योग के अंतर्गत सम्मिलित किए जाते है। सूती वस्त्र, पटसन, रेशम, ऊनी वस्त्र, चीनी तथा खाद्य तेल आदि उद्योग कृषि से प्राप्त कच्चे माल पर आधारित हैं।
- **वस्त्र उद्योग**—औद्योगिक उत्पादन में इस उद्योग का योगदान 14% है। यह देश में एकमात्र उद्योग है, जो आत्मनिर्भर और मूल्य श्रृंखला में पूर्ण है अर्थात् कच्चे माल से लेकर उच्चतम अतिरिक्त मूल्य उत्पाद तक प्रत्येक वस्तु भारत में ही उत्पन्न की जाती है।
- **सूती वस्त्र उद्योग**—भारत में पहली सूती वस्त्र मिल की स्थापना 1854 ई. में मुंबई में हुई थी। वर्तमान में हथकरघों का स्थान विद्युतीय करघों ने ले लिया और मिलों का 80% निजी क्षेत्र में है।
  मुख्यत: यह उद्योग गुजरात, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में स्थित है। यह बुनाई करने वालों, कपास का उत्पादन करने वाले किसानों और मिल श्रमिकों को रोजगार प्रदान करता है तथा रसायन मिलों, रँगाई उद्योगों और अभियांत्रिकी कारखानों को सहायता प्रदान करता है।
- **चीनी उद्योग**—भारत का चीनी उत्पादन में विश्व में दूसरा स्थान है और गुड़ व खांडसारी के उत्पादन में प्रथम स्थान है। प्रमुख चीनी मिलें उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में स्थित हैं। हाल ही के वर्षों में दक्षिणी और पश्चिमी राज्यों में विशेष रूप से महाराष्ट्र में चीनी मिलों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि यहाँ पैदा होने वाले गन्ने में सूक्रोज की उच्च मात्रा उपस्थित है और अपेक्षाकृत ठंडी जलवायु भी एक लंबे पेराई सत्र को सुनिश्चित करती है।

3. कुटीर एवं लघु उद्योग में अंतर बताइए तथा कुटीर उद्योग के विकास के लिए सुझाव दीजिए।

उत्तर कुटीर एवं लघु उद्योग में निम्नलिखित अंतर है—

लघु उद्योग	कुटीर उद्योग
जिन उद्योगों की निवेश सीमा 5 करोड़ तक होती है, लघु उद्योग कहलाते हैं।	जिन उद्योगों में उत्पाद एवं सेवाओं का सृजन अपने घर में ही किया जाता है, कुटीर उद्योग कहलाते हैं।
ये उद्योग यन्त्रों व विद्युत पर आधारित होते हैं।	ये उद्योग केवल मानवीय कार्यबल पर आधारित होते हैं।

भारत में कुटीर उद्योग के विकास की अनेक संभावनाएँ विद्यमान हैं, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ स्थानीय संसाधनों के प्रयोग से ऐसे उद्योगों को विकसित किया जा सकता है। काफी प्रयासों के पश्चात् भी कुटीर उद्योगों के विकास में अनेक बाधाएँ उत्पन्न होती रही हैं। कुटीर उद्योग के विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव हैं—

(i) पूँजी की उपलब्धता—सरकार को पूँजी की उपलब्धता पर विशेष ध्यान केंद्रित करना होगा, जिससे कुटीर उद्योगों को विकास में सहायता मिल सके।

(ii) संसाधनों का प्रयोग—सरकार को स्थानीय संसाधनों के प्रयोग पर विशेष बल देना होगा।

(iii) विद्युतीकरण की अनिवार्यता—ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण किया जाना आवश्यक है। इसके अभाव में कुटीर उद्योगों का विकास संभव नहीं है।

(iv) कौशल विकास की सुविधा—सरकार को स्थानीय स्तर पर युवाओं के कौशल विकास की व्यवस्था करनी चाहिए।

(v) कच्चे माल की उपलब्धता—सरकार को कुटीर उद्योग से संबंधित कच्चे माल की पूर्ति सुनिश्चित करनी चाहिए।

(vi) विपणन की सुविधा—सरकार को कुटीर उद्योग में निर्मित उत्पादों के विपणन की उचित व्यवस्था करनी चाहिए, ताकि कुटीर उत्पाद की बाजार तक पहुँच हो सके।

कुटीर एवं लघु उद्योग का आर्थिक विकास में महत्त्व/लाभ निम्नलिखित हैं—

(i) कुटीर एवं लघु उद्योग कम पूँजी में शुरू हो सकते हैं अर्थात् कम पूँजी की आवश्यकता होती है।

(ii) कुटीर एवं लघु उद्योग रोजगार सृजन एवं संतुलित क्षेत्रीय विकास की प्रक्रिया में योगदान देते हैं।

(iii) कुटीर एवं लघु उद्योग में भारत की अर्थव्यवस्था में एक मजबूत, जीवंत और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्द्धी क्षेत्र के रूप में उभरने की क्षमता है।

(iv) भारत में युवा जनसंख्या अधिक है। उसका उचित उपयोग कुटीर एवं लघु उद्योग में किया जा सकता है।

(v) कुटीर एवं लघु उद्योग भारत के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4. उद्योगों की निम्न उत्पादकता के कोई तीन कारण बताइए। उत्पादकता बढ़ाने के लिए उपयोगी सुझाव दीजिए। भारत में औद्योगिक उत्पादकता बढ़ाने के लिए छः सुझाव दीजिए।

उत्तर उद्योगों की निम्न उत्पादकता के तीन कारण निम्न हैं—

(i) तकनीकी अभाव के कारण उद्योगों की उत्पादकता कम होती है।

(ii) बढ़ती जनसंख्या और सीमित संसाधन भी निम्न औद्योगिक उत्पादकता के कारण हैं।

(iii) परिवहन के साधनों का विकास न हो पाने से भी औद्योगिक उत्पादकता कम होती है। पहाड़ी क्षेत्रों में परिवहन के साधन

विकसित नहीं है इसलिए इन क्षेत्रों में औद्योगिक उत्पादकता भी कम है।

औद्योगिक उत्पादकता बढ़ाने के सुझाव

औद्योगिक उत्पादकता को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित कार्यप्रणालियों में सुधार करने की आवश्यकता है—

(i) **औद्योगिक इकाइयों को प्रतिस्पर्द्धात्मक बनाना**—इसके द्वारा उत्पादकता के साथ-साथ वस्तु एवं सेवाओं की गुणवत्ता में भी व्यापक सुधार लाया जा सकता है। औद्योगिक इकाइयों में प्रतिस्पर्द्धा होने से उत्पादित वस्तुओं की गुणवत्ता में बढ़ोतरी होगी तथा बाजार में एकाधिकार स्थापित नहीं होगा।

(ii) **कच्चे माल की उपलब्धता**—खनिज संसाधनों के अभाव में उत्पादकता को बढ़ाना संभव नहीं है। इसलिए पर्याप्त मात्रा में खनिज संसाधनों की उपलब्धता अनिवार्य है।

(iii) **परिवहन का विकास**—औद्योगिक इकाइयों की स्थापना उन क्षेत्रों में अधिक होती है, जहाँ परिवहन एवं संचार व्यवस्था सुदृढ़ होती है। परिवहन के माध्यम से ही कच्चे मालों एवं तैयार वस्तुओं को दूसरे स्थानों तक पहुँचाया जाता है।

(iv) **कुशल एवं अकुशल श्रमिकों की उपलब्धता**—उत्पादकता बढ़ाने में दोनों प्रकार के श्रमिकों की आवश्यकता होती है। श्रमिकों के अभाव में औद्योगिक इकाइयों में उत्पादन एवं उत्पादकता प्रभावित होती है।

(v) **राजनीतिक नीतियों में व्यापक सुधार**—राजनीतिक नीतियों में व्यापक सुधार करके उत्पादन एवं उत्पादकता में व्यापक बढ़ोतरी की जा सकती है। प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में वैश्विक बाजार के साथ-साथ घरेलू बाजार पर भी पकड़ रखने की आवश्यकता है। इसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति को मजबूत बनाना होगा।

(vi) **पूँजी की उपलब्धता**—पूँजी के अभाव में विकास की कल्पना करना व्यर्थ है। पूँजी की पर्याप्तता से विकास की रूपरेखा तैयार होती है। इससे औद्योगिक इकाइयों की स्थापना संभव है, तभी उत्पादकता में वृद्धि संभव है।

उपरोक्त पहलुओं में प्रभावी तरीके से सुधार लाकर औद्योगिक उत्पादकता में व्यापक सुधार सम्भव है।

5. भारतीय अर्थव्यवस्था में उद्योगों के किन्हीं छः योगदानों का वर्णन कीजिए।

उत्तर किसी भी देश के तीव्र आर्थिक विकास के लिए उद्योगों का विकास अत्यंत आवश्यक है। औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ देश दुर्बल होता है उसकी अर्थव्यवस्था असंकुचित होती है, अपनी जनता के उपभोग के लिए उसे विकसित देशों से वस्तुओं का आयात करना पड़ता है। औद्योगिक विकास से देश की अर्थव्यवस्था में निम्नलिखित योगदान है—

(i) उपभोक्ता वस्तुओं का निर्माण कर निर्यात किया जाता है, जिससे देश को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है व आत्मनिर्भरता भी आती है।

(ii) उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का समुचित दोहन किया जाता है, जिससे देश के विकास की गति तेज होती है व राष्ट्रीय व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है।

(iii) जिन स्थानों पर बड़े उद्योग स्थापित होते हैं, वहाँ प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से लाखों रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं।

(iv) बड़े उद्योगों की सहायता से वस्तुओं का कम लागत में विशालस्तरीय उत्पादन संभव हो जाता है।

(v) उद्योगों के विकास से प्रतिव्यक्ति आय बढ़ने के कारण उनकी बचत क्षमता में वृद्धि होती है जिससे निवेश में वृद्धि होने के कारण विकास की गति बढ़ती है।

(vi) उद्योगों से मिलने वाले विभिन्न करों के कारण सरकारी आय में वृद्धि होती है।

6. ऐसे उपायों का वर्णन कीजिए जो पर्यावरण निम्नीकरण की रोकथाम में सहायक हों।

उत्तर निम्नलिखित उपाय पर्यावरण निम्नीकरण की रोकथाम में सहायक हैं—

- विभिन्न प्रक्रियाओं में जल का न्यूनतम उपयोग कर तथा व्यर्थ जल का दो स्तरों पर पुनर्चक्रण द्वारा पुनः जल की आवश्यकता पूर्ति हेतु वर्षा जल संग्रहण।
- नदियों व तालाबों में गर्म जल को प्रवाहित करने से पहले उसका शोधन किया जाए। औद्योगिक अपशिष्ट का शोधन तीन चरणों में किया जा सकता है

(i) **प्राथमिक शोधन**—इसमें अपशिष्ट पदार्थों की छँटाई व उनके छोटे-छोटे टुकड़े करना, ढकना तथा तलछट जमाव आदि सम्मिलित हैं।

(ii) **द्वितीयक शोधन**—इसमे वृक्षारोपण, वर्षा जल संग्रहण आदि सम्मिलित हैं।

(iii) **तृतीयक शोधन**—इसमें अपशिष्ट जल को पुनर्चक्रण द्वारा पुनः प्रयोग योग्य बनाया जाता है।

पर्यावरणीय प्रदूषण को कम करने के कुछ सामान्य बिंदु निम्नलिखित हैं—

- उद्योगों द्वारा भूमिगत जल की अधिकतम निकासी को कानूनी रूप से नियमित किए जाने की आवश्यकता है।
- जनरेटर और अन्य मशीनरी व उपकरणों में उनकी ध्वनि को कम करने के लिए साइलेंसर लगाना चाहिए।

कारखानों की धूम्र चिमनियों पर स्थिर विद्युत अवक्षेपक, कपड़े के फिल्टर, कसबी तथा जड़त्वीय पृथक्कारक लगाकर हवा में छोटे-छोटे कणों को कम किया जा सकता है।

7. भारत में कागज उद्योग के उत्पादन एवं वितरण का वर्णन कीजिए।

उत्तर **भारत में कागज उद्योग**—कागज निर्माण की कला चीन में विकसित हुई थी। भारत में कागज निर्माण प्राचीन काल से कुटीर उद्योग के रूप में किया जा रहा है।

आधुनिक काल में कागज की प्रथम सफल मिल 1867 ई. में कोलकाता में तथा 1879 ई. में दूसरी सफल मिल लखनऊ में 'अपर इंडिया पेपर मिल्स' स्थापित की गई। 1881 ई. में पश्चिम बंगाल के टीटागढ़ में स्थापित पेपर मिल से इस उद्योग को गति प्राप्त हुई।

इसके बाद से लगातार मिलों की स्थापना होती गई। इसका वर्तमान व्यापार ₹ 2,500 करोड़ का है, जिसमें तीन लाख लोगों को प्रत्यक्ष तथा दस लाख लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार मिला है।

कागज उत्पादन हेतु कच्चा माल—कागज उद्योग के लिए कच्चे माल के रूप में कोमल लकड़ी, बाँस, रद्दी एवं चिथड़े बाँस आदि का उपयोग होता है। इसके अलावा स्वच्छ जल, शक्ति संसाधन भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करते हैं। अत: यह उद्योग वहाँ अधिक फला-फूला है, जहाँ ये सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

कागज उत्पादन एवं वितरण केंद्र—उत्पादन एवं वितरण केंद्र निम्नलिखित हैं—

(i) आंध्र प्रदेश-तेलंगाना—इस क्षेत्र में भारत के कुल कागज उत्पादन का 18% कागज उत्पादित होता है। यहाँ 18 कागज की मिलें हैं। इस क्षेत्र में कागज उद्योग का विस्तार बल्लारशाह, भद्राचलम, बोधन, खंभन, कुर्नूल तथा तिरुपति में है।

(ii) महाराष्ट्र—यहाँ 35 कागज मिलें हैं, जो कुल कागज उत्पादन में 14% का योगदान करती हैं। ये कारखाने बल्लारपुर, पुणे, जलगाँव, सांगली, खंडाला, खोपोली आदि में स्थापित हैं, जिसमें से सांगली तथा बल्लारपुर अखबारी कागज हेतु प्रसिद्ध हैं।

(iii) पश्चिम बंगाल—देश के कुल कागज उत्पादन में 11% का योगदान करता है। इस राज्य में आलमबाजार, बन्सबेरिया, बारानगर, चंद्राहाती, दमदम, हावड़ा आदि स्थानों पर कागज मिलें स्थापित हैं।

(iv) ओडिशा—यह कुल कागज उत्पादन में 8% का योगदान करता है। यहाँ 6 कागज मिलें हैं, जिनमें बृजनगर, चौधवार तथा रायगढ़ सबसे महत्त्वपूर्ण हैं।

(v) कर्नाटक—इसका कुल कागज उत्पादन में 7% का योगदान है। यहाँ बंगलुरु, भद्रावती, डंडेली, रामानगरम में कागज की मिलें हैं।

(vi) मध्य प्रदेश—यहाँ कागज की 12 मिलें हैं, ये मिलें अमलाई, भोपाल, नेपानगर, रतलाम तथा विदिशा में अवस्थित हैं।

(vii) तमिलनाडु—यहाँ 16 कागज की मिलें हैं ये मिलें चरणमहादेवी, पल्ली-पलयम, सलेम उदामल्पिट में अवस्थित हैं।

(viii) उत्तर प्रदेश—यहाँ 48 कागज की मिलें हैं। जो कुल उत्पादन में 5% का योगदान करती हैं। ये मिलें मैनपुरी, मोदीनगर, नैनी व में हैं।

(ix) अन्य राज्य—अन्य राज्यों में बिहार, केरल, उत्तराखंड, हरियाणा व असम आदि हैं, जहाँ कागज का उत्पादन होता है।

8. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि और उद्योगों के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर भारतीय अर्थव्यवस्था में उद्योगों का योगदान निम्नलिखित हैं—

(i) उपभोक्ता वस्तुओं का निर्माण कर निर्यात किया जाता है, जिससे देश को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है व आत्मनिर्भरता भी आती है।

(ii) उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का समुचित दोहन किया जाता है, जिससे देश के विकास की गति तेज होती है व राष्ट्रीय तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है।

(iii) जिन स्थानों पर बड़े उद्योग स्थापित होते हैं, वहाँ प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से लाखों रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं।

(iv) बड़े उद्योगों की सहायता से वस्तुओं का कम लागत में विशालस्तरीय उत्पादन सम्भव हो जाता है।

(vi) उद्योगों के विकास से प्रतिव्यक्ति आय बढ़ने के कारण उनकी बचत क्षमता में वृद्धि होती है, जिससे निवेश में वृद्धि होने के कारण विकास की गति बढ़ती है।

(vi) उद्योगों से मिलने वाले विभिन्न करों के कारण सरकारी आय में वृद्धि होती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के योगदान निम्नलिखित हैं—

- कृषि आधारित उद्योग किसानों को आजीविका उपलब्ध कराते हैं।
- लोगों को उत्पाद सस्ते मूल्यों पर उपलब्ध कराते हैं।
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करते हैं।
- रोजगार के अवसर सृजित होते हैं।
- निर्यात से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

9. कृषि और उद्योगों की पारस्परिक निर्भरता का वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत के कई महत्त्वपूर्ण उद्योग, कच्चे माल के लिए कृषि उत्पादों पर निर्भर रहते हैं; जैसे—सूती वस्त्र उद्योग, जूट उद्योग, चीनी उद्योग आदि। इसके अतिरिक्त कई ऐसे महत्त्वपूर्ण लघु एवं कुटीर उद्योग भी हैं, जो अपनी उत्पादन प्रक्रिया में कृषि-प्रदत्त पदार्थों का उपयोग कर आर्थिक विकास को गति प्रदान करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत में कृषि एवं उद्योगों की पारस्परिक निर्भरता आपस में जुड़ी हुई है। हरितक्रांति के बाद भारत में पहली बार फसलों का व्यवसायीकरण किया जाने लगा।

नगदी फसलों के उत्पादन पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया, जिससे कृषि आधारित उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति आसानी से उपलब्ध हो सके। भारत में चीनी, पटसन, सूती वस्त्र, रेशम वस्त्र तथा रबड़ उद्योग कृषि आधारित उद्योग हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि आधारित उद्योगों का विशेष महत्त्व है। कृषि आधारित उद्योग किसानों को आजीविका उपलब्ध कराते हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलती है।

उद्योग एवं कृषि की परस्पर निर्भरता को निम्नलिखित बिंदुओं में देखा जा सकता है

(i) उद्योगों हेतु कच्चे माल की आपूर्ति करना—उद्योगों के लिए कच्चे माल की आवश्यकता पड़ती है, जो कृषि से प्राप्त होता है। अत: कच्चे माल के लिए उद्योग कृषि पर निर्भर है।

(ii) बेरोजगारी में कमी—कृषि श्रमिक अधिकांश समय बेरोजगार रहते हैं। अत: उद्योगों के विकसित होने पर उन्हें वहाँ रोजगार मिलता है, तब कृषि का अतिरिक्त श्रम उद्योगों में रोजगार प्राप्त करता है।

(iii) वस्तुओं की माँग में वृद्धि—कृषि का विकास होने से उत्पादन में वृद्धि होती है तथा किसानों की आय बढ़ती है। उनका जीवन-स्तर सुधरता है तथा उनकी क्रय करने की क्षमता बढ़ती है, जिससे उद्योगों में निर्मित वस्तुओं की माँग बढ़ती है।

(iv) स्थानीय उद्योगों का प्रोत्साहन—जिस क्षेत्र में कृषि उपज का अधिकतम उत्पादन होता है, उससे संबंधित उद्योग भी वहीं

विकसित होते हैं, जिस प्रकार गुजरात में कपास का अधिक उत्पादन होता है। अत: गुजरात में सूती वस्त्र उद्योग विकसित अवस्था में है। अत: उद्योगों के स्थानीकरण में कृषि महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

(v) **कृषि आधारित उद्योगों का विकास**—अनेक क्रियाएँ ऐसी हैं, जो कृषि से संबंधित हैं; जैसे—मत्स्यपालन एवं मुर्गी पालन आदि। परंतु ये उद्योगों के रूप में विकसित हो रहे हैं। अत: इन उद्योगों के विकास के लिए कृषि का विकास आवश्यक है।

(vi) **पूँजी आधारित उद्योगों का विकास**—वर्तमान समय में आधुनिक तकनीक से कृषि की जा रही है, जिसमें रासायनिक उर्वरकों तथा कृषि यन्त्रों का प्रयोग अधिक किया जा रहा है, जिससे इनकी माँग बढ़ जाती है। इस कारण पूँजी आधारित उद्योग विकसित होते हैं।

10. भारत में औद्योगिक विकास का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों में कीजिए।

(क) कुटीर उद्योग

(ख) लघु उद्योग

(ग) बड़े पैमाने के उद्योग

उत्तर

(क) कुटीर उद्योग—जिन उद्योगों में उत्पाद एवं सेवाओं का सृजन अपने घर में ही परिवार के सदस्यों द्वारा किया जाता है, उन्हें कुटीर उद्योग कहते हैं। ये उद्योग केवल मानवीय कार्यबल पर आधारित होते हैं। उदाहरण के लिए, हथकरघा, चटाई बनाना, पत्तल बनाना एवं टोकरी बनाना आदि।

(ख) लघु उद्योग

- जिन उद्योगों की निवेश सीमा ₹ 5 करोड़ तक होती है, उन्हें लघु उद्योग कहते हैं। ये उद्योग यंत्रों एवं विद्युत पर आधारित होते हैं। उदाहरण के लिए, आईसक्रीम उद्योग एवं बेकरी उद्योग आदि।

(ग) बड़े पैमाने के उद्योग

बड़े पैमाने के उद्योगों में वे उद्योग शामिल होते हैं, जिनमें करोड़ों की पूँजी, भारी यंत्रीकरण तथा सैकड़ों की संख्या में मजदूर कार्यरत् होते हैं। इन उद्योगों में उत्पादन भी बड़ी मात्रा में ही होता है। ये उद्योग मुख्यत: यंत्रीकरण पर आधारित होते हैं तथा कोयला, गैस, विद्युत आदि से संचालित होते हैं।

- बड़े पैमाने के उद्योग प्राथमिक व्यवसायों के उत्पादों को उपभोग योग्य बनाने का कार्य करते हैं, जिससे कृषकों तथा अन्य प्राथमिक व्यवसायों को रोजगार प्राप्त होता है, साथ ही ये उद्योग बड़ी जनसंख्या को रोजगार प्रदान करते हैं।
- बड़े पैमाने के उद्योगों को विनिर्माण उद्योग भी कहा जाता है। यहाँ जन सामान्य को उपभोक्ता वस्तुएँ आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं।
- उपभोक्ता वस्तुओं का निर्माण कर निर्यात किया जाता है, जिससे देश को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।
- उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का समुचित दोहन किया जाता है, जिससे देश के विकास की गति तेज होती है।
- बड़े उद्योगों में भारी मशीनरी; जैसे—कृषि यंत्र, मोटर वाहन तथा अन्य टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं का निर्माण अपने देश में ही होता है, जिससे वे आम लोगों को सरलता से व अपेक्षाकृत कम मूल्य में मिलती हैं। जिससे देश की आयात पर निर्भरता कम होती है।
- वैश्वीकरण के युग में इन उद्योगों की प्रासंगिकता बढ़ रही है। इन उद्योगों के द्वारा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) आकर्षित होता है, जिससे अर्थव्यवस्था में सुधार होता है तथा रोजगार के अवसर सृजित होते हैं। जिन स्थानों पर बड़े उद्योग स्थापित होते हैं, वहाँ प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से लाखों रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं।

❑❑❑

7

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ

↘ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जिला सड़कें एवं सीमावर्ती सड़कों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **जिला सड़क**— ये सड़कें जिले के विभिन्न प्रशासनिक केंद्रों को जिला मुख्यालय से जोड़ती हैं। इन सड़कों की व्यवस्था का उत्तरदायित्व जिला परिषद् का होता है।

सीमावर्ती सड़कें या सीमांत सड़कें—सीमावर्ती सड़कों का निर्माण एवं प्रबंधन सीमा सड़क विकास बोर्ड द्वारा किया जाता है। सीमा सड़क संगठन की स्थापना वर्ष 1960 में हुई थी।

2. भारत के आर्थिक विकास में सड़क परिवहन के किन्हीं तीन योगदानों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत के आर्थिक विकास में सड़क परिवहन का योगदान निम्नलिखित हैं—

- सड़कों को असमान सतहों जैसे पहाड़ियों और पहाड़ों में बनाया जा सकता है।
- यह घर-घर सेवाएँ उपलब्ध करवाता है तथा सामान चढ़ाने व उतारने की लागत भी अपेक्षाकृत कम है।
- सड़क परिवहन, अन्य परिवहन साधनों के उपयोग में एक कड़ी के रूप में भी कार्य करता है; जैसे-सड़कें, रेलवे स्टेशन, वायु व समुद्री पत्तनों को जोड़ती हैं।

3. देश के आर्थिक विकास में रेलों का क्या महत्त्व है?

उत्तर भारत में रेल परिवहन यातायात का महत्त्वपूर्ण साधन है। भारत में रेलों के आगमन ने अब तक आर्थिक विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण उपयोगिता सिद्ध की है।

रेल परिवहन के आर्थिक महत्त्व

- भारत में रेलवे का आर्थिक महत्त्व निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट होता है
- रेल परिवहन के द्वारा औद्योगिक विकास को गति मिली है। कच्चे माल को उत्पादन केंद्रों तक तथा निर्मित माल को उत्पादन केंद्रों से विपणन केंद्रों तक लाने व ले जाने का काम रेलवे द्वारा ही प्रमुख रूप से किया जाता है।
- रेलवे ने उद्योगों के विकेंद्रीकरण में प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया है, क्योंकि कच्चे माल को रेल आसानी से स्रोतों से उत्पादन केंद्रों तक पहुँचा देती है।
- रेलों ने निर्यात को बढ़ावा दिया है। तैयार माल को बड़ी मात्रा में बंदरगाह तक रेल सस्ती दरों पर पहुँचाती है।
- कृषि उपजों के विकास में भी रेलों का उल्लेखनीय योगदान है। रेलों ने अतिरिक्त उत्पादन को सुदूर क्षेत्रों में पहुँचाने का कार्य किया है।
- वस्तुओं के उत्पादन व वितरण को सुगम बनाकर रेलवे ने व्यापार को महत्त्वपूर्ण प्रोत्साहन दिया है।
- अकाल व बाढ़ या किसी आपदा के समय राहत सामग्री को तत्काल रेलों द्वारा ही पहुँचाया जा सकता है।

4. रेल परिवहन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर भारत में रेल परिवहन वस्तुओं तथा यात्रियों के परिवहन का प्रमुख साधन है। रेल परिवहन अनेक कार्यों में सहायक है; जैसे—व्यापार, तीर्थ यात्राएँ व लंबी दूरी तक सामान का परिवहन आदि। भारतीय रेल परिवहन की मार्गीय लंबाई 64,460 किमी है, जिस पर 7133 स्टेशन हैं। भारतीय रेल परिवहन को 16 क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। भारतीय रेल परिवहन की तीन गेज-बड़ी लाइन, मीटर लाइन एवं छोटी लाइन हैं। भारतीय रेल परिवहन देश का सर्वाधिक बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का प्राधिकरण है। देश की पहली रेलगाड़ी 1853 ई. में मुंबई और थाणे के मध्य चलाई गई, जो 34 किमी की दूरी तय करती थी।

5. तूतीकोरिन, चेन्नई एवं पारादीप पत्तनों के विषय में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

- **तूतीकोरिन**—तमिलनाडु राज्य के दक्षिण-पूर्वी छोर पर स्थित तूतीकोरिन पत्तन एक प्राकृतिक पत्तन है। यह पत्तन भारत के पड़ोसी देशों; जैसे—श्रीलंका, मालदीव तथा भारत के तटीय क्षेत्रों तक भिन्न वस्तुओं के व्यापार को संचालित करता है।
- **चेन्नई**—तमिलनाडु राज्य में स्थित चेन्नई बंदरगाह भारत का सबसे प्राचीन बंदरगाह है। यह एक कृत्रिम बंदरगाह है। व्यापार की मात्रा और लदे सामान के संदर्भ में मुंबई के बाद इसका दूसरा स्थान है।
- **पारादीप**—ओडिशा में स्थित यह पत्तन मुख्यत: लौह-अयस्क का निर्यात करता है।

6. वायु परिवहन पर संक्षिप्त लेख लिखिए।

उत्तर वायु परिवहन तीव्रतम, आरामदायक व प्रतिष्ठित परिवहन का साधन है। इसके द्वारा अति दुर्गम स्थानों; जैसे—ऊँचे पर्वत, मरुस्थलों घने जंगलों व लंबे समुद्री रास्तों को सुगमता से पार किया जा सकता है। वर्ष 1953 में वायु परिवहन का राष्ट्रीयकरण किया गया।

इंडियन एयर लाइंस, एलाइंस एयर तथा कई निजी एयर लाइंस घरेलू विमान सेवाएँ उपलब्ध कराती हैं। एयर इंडिया अंतर्राष्ट्रीय वायु सेवाएँ प्रदान करती है। पवनहंस हेलीकॉप्टर लिमिटेड तेल व प्राकृतिक गैस आयोग को इसकी अपतटीय संक्रिया में तथा अगम्य व दुर्लभ भू-भागों; जैसे—उत्तरी पूर्वी राज्यों तथा जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश व उत्तराखंड के आंतरिक क्षेत्रों में हेलीकॉप्टर सेवाएँ उपलब्ध कराता है।

7. पाइपलाइन परिवहन किसे कहते हैं? इसके दो महत्त्व बताइए।

उत्तर पाइपलाइन का प्रयोग कच्चा तेल, पेट्रोल उत्पाद तथा तेल से प्राप्त प्राकृतिक गैस (खनिज) क्षेत्र से उपलब्ध गैस शोधनशालाओं, उर्वरक कारखानों व बड़े ताप विद्युत गृहों तक पहुँचाने में किया जाता है।

पाइपलाइन परिवहन के महत्त्व निम्न प्रकार हैं—

- ठोस पदार्थों को तरल अवस्था में परिवर्तित कर पाइपलाइनों के माध्यम से गंतव्य स्थान तक पहुँचाया जाता है।
- सुदूर आंतरिक भागों में स्थित शोधनशालाएँ (Refineries); जैसे-बरौनी, मथुरा, पानीपत तथा गैस पर आधारित उर्वरक कारखानों की स्थापना पाइपलाइनों के कारण ही संभव हो पाई है।
- पाइपलाइन बिछाने की प्रारंभिक लागत अधिक है, लेकिन इसको चलाने की लागत न्यूनतम है।
- सामानों के परिवहन में देरी तथा हानियाँ इसमें नहीं के बराबर हैं।

8. डाक संचार को समझाएँ। डाक संचार को कितनी श्रेणी में बाँटा गया है बताइए।

उत्तर डाक संचार

भारत का डाक संचार तंत्र विश्व का वृहत्तम तंत्र है। भारतीय डाक नेटवर्क, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी (भारत सरकार) के अंतर्गत पोस्ट विभाग द्वारा सँभाला जाता है। यह पार्सल, निजी पत्र व्यवहार आदि को संचालित करता है। डाक संचार को प्रथम श्रेणी व द्वितीय श्रेणी में बाँटा जाता है।

(i) **पहली श्रेणी**—कार्ड व लिफाफा, बंद चिट्ठी, पहली श्रेणी की डाक समझी जाती है।

(ii) **द्वितीय श्रेणी**—रजिस्टर्ड पैकेट, किताबें, अखबार तथा मैगजीन द्वितीय श्रेणी की डाक में आते हैं।

9. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर राज्यों व देशों में व्यक्तियों के बीच वस्तुओं का आदान-प्रदान व्यापार कहलाता है। दो देशों के मध्य वस्तुओं का आदान-प्रदान अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है।

आयात तथा निर्यात व्यापार के दो प्रमुख घटक हैं। जब माल किसी दूसरे देश को बिक्री के लिए भेजा जाता है, इसे निर्यात कहा जाता है, जबकि जब माल किसी अन्य देश से भारत में बेचा जाता है, इसे आयात कहा जाता है। वर्ष 1991 में उदारीकरण की शुरुआत के बाद अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में एक बदलाव आया है। भारत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक सॉफ्टवेयर कंपनी के रूप में उभरा है और सूचना प्रौद्योगिकी के निर्यात के माध्यम से बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहा है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. क्षमता के आधार पर सड़कों का वर्गीकरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर भारत में सड़कों की क्षमता के आधार पर इन्हें छः वर्गों में वर्गीकृत किया गया है—

(i) **स्वर्णिम चतुर्भुज महाराजमार्ग**—यह राजमार्ग परियोजना भारत के राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकार क्षेत्र में है। भारत सरकार ने दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई व मुंबई को जोड़ने वाली 6 लाइन वाली महाराजमार्गों की योजना प्रारंभ की। इस महाराजमार्ग का प्रमुख उद्देश्य भारत के मेगासिटी के मध्य परिवहन दूरी को कम करना है।

(ii) **राष्ट्रीय राजमार्ग**—राष्ट्रीय राजमार्ग देश के दूरस्थ भागों को आपस में जोड़ते हैं। यह देश का प्राथमिक सड़क तंत्र है। इसके निर्माण, प्रबंध एवं रख-रखाव की जिम्मेदारी भारत सरकार द्वारा निभाई जाती है। इनका नियंत्रण केंद्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा किया जाता है।

(iii) **राज्य राजमार्ग**—राज्यों की राजधानियों को जिला मुख्यालयों से जोड़ने वाली सड़कें, राज्य राजमार्ग कहलाती हैं। राज्यों एवं केंद्रशासित क्षेत्रों में इन सड़कों के निर्माण एवं रख-रखाव की जिम्मेदारी राज्य सरकार के अधीन राज्य के सार्वजनिक निर्माण विभाग की होती है।

(iv) **जिला सड़क**—ये सड़कें जिले के विभिन्न प्रशासनिक केंद्रों को जिला मुख्यालय से जोड़ती हैं। इन सड़कों की व्यवस्था का उत्तरदायित्व जिला परिषद् का होता है।

(v) **अन्य सड़कें**—इसके अंतर्गत वे सड़कें आती हैं, जो गाँवों को शहरों से जोड़ती हैं। 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना' के अंतर्गत 500 की जनसंख्या वाले सभी गाँवों को बारहमासी सड़कों से जोड़ने का लक्ष्य निर्धारित है, जिससे इन सड़कों के विकास को प्रोत्साहन मिला है।

(vi) **सीमावर्ती सड़कें या सीमांत सड़कें**—सीमावर्ती सड़कों का निर्माण एवं प्रबंधन सीमा सड़क विकास बोर्ड द्वारा किया जाता है। सीमा सड़क संगठन की स्थापना वर्ष 1960 में हुई थी। इनकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य उत्तर-पूर्वी राज्यों में सामरिक महत्त्वों हेतु सड़कों का विकास करना था।

2. रेल परिवहन की अपेक्षा सड़क परिवहन अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्यों?

उत्तर भारत विश्व के उन देशों में शामिल है, जहाँ सड़कों का जाल सर्वाधिक है। भारत में सड़कों का जाल लगभग 33.2 लाख किमी से भी अधिक फैला है। भारत में सड़क परिवहन का विकास रेल परिवहन से भी पहले हुआ है अर्थात् निर्माण एवं रख-रखाव व व्यवस्था के अनुरूप सड़क परिवहन, रेल परिवहन की अपेक्षा अधिक सुविधाजनक है।

भारत में सड़क परिवहन की बढ़ती महत्ता निम्न कारणों से है—

- रेलवे लाइन की अपेक्षा सड़कों की निर्माण लागत बहुत कम है।
- अपेक्षाकृत ऊबड़-खाबड़ व विच्छिन्न भू-भागों पर सड़कें बनाई जा सकती हैं। अधिक ढाल प्रवणता तथा पहाड़ी क्षेत्रों में भी सड़कें निर्मित की जा सकती हैं।
- अपेक्षाकृत कम व्यक्तियों, कम दूरी व कम वस्तुओं के परिवहन में सड़क मितव्ययी है।
- यह घर-घर सेवाएँ उपलब्ध करवाता है तथा सामान चढ़ाने व उतारने की लागत भी अपेक्षाकृत कम है।
- सड़क परिवहन, अन्य परिवहन साधनों के उपयोग में एक कड़ी के रूप में भी कार्य करता है; जैसे—सड़कें, रेलवे स्टेशन, वायु व समुद्री पत्तनों को जोड़ती हैं।

3. भारत में पाइपलाइन की बढ़ती उपयोगिता के साथ देश में इसके वितरण क्षेत्र को बताइए।

उत्तर आधुनिक समय में परिवहन के साधनों में पाइपलाइन की महत्ता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। पहले पाइपलाइन का उपयोग शहरों एवं उद्योगों में पानी पहुँचाने के लिए होता था, परंतु आधुनिक परिदृश्य में इसकी उपयोगिता और बढ़ गई है; जैसे—

- इसका प्रयोग कच्चा तेल, पेट्रोल उत्पाद तथा तेल से प्राप्त प्राकृतिक तथा गैस क्षेत्र से उपलब्ध गैस शोधनशालाओं, उर्वरक कारखानों व बड़े ताप विद्युत गृहों तक पहुँचाने में किया जाता है।
- ठोस पदार्थों को तरल अवस्था में परिवर्तित कर पाइपलाइनों के माध्यम से गंतव्य स्थान तक पहुँचाया जाता है।
- सुदूर आंतरिक भागों में स्थित शोधनशालाएँ; जैसे—बरौनी, मथुरा, पानीपत तथा गैस पर आधारित उर्वरक कारखानों की स्थापना पाइपलाइनों के कारण ही संभव हो पाई है।
- पाइपलाइन बिछाने की प्रारंभिक लागत अधिक है, लेकिन इसको चलाने की लागत न्यूनतम है। सामानों के परिवहन में देरी तथा हानियाँ इसमें नहीं के बराबर हैं।

भारत में पाइपलाइन परिवहन का वितरण निम्न प्रकार है—

- ऊपरी असम के तेल क्षेत्रों से गुवाहाटी, बरौनी व इलाहाबाद के रास्ते कानपुर (उत्तर प्रदेश) तक। इसकी एक शाखा बरौनी से राजबंध होकर हल्दिया तक है। दूसरी राजबंध से मौरी ग्राम तक तथा गुवाहाटी से सिलिगुड़ी तक है।
- गुजरात में सलाया से वीरमगाँव, मथुरा, दिल्ली व सोनीपत के रास्ते पंजाब में जालंधर तक। इसकी अन्य शाखा बड़ोदरा के निकट कोयली को चक्शु व अन्य स्थानों से जोड़ती है।
- गैस पाइपलाइन गुजरात में हजीरा को उत्तर प्रदेश में जगदीशपुर से मिलाती है। यह मध्य प्रदेश के विजयपुर के रास्ते होकर जाती है। इसकी शाखाएँ राजस्थान में कोटा तथा उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर, बबराला व अन्य स्थानों पर हैं।

4. जल परिवहन के किन्हीं तीन आर्थिक लाभों का वर्णन कीजिए।

उत्तर परिवहन के अलग-अलग साधनों में जल परिवहन आर्थिक दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। जल परिवहन के आर्थिक दृष्टिकोण से निम्नलिखित लाभ हैं—

- जल परिवहन रेलवे, सड़क परिवहन की अपेक्षाकृत एक सस्ता साधन है। इसमें परिवहन के अन्य साधनों के समान मार्गों का निर्माण नहीं करना पड़ता है।
- सड़क, रेल तथा वायु यातायात की तुलना में जल यातायात के साधनों में कम पूँजी की आवश्यकता पड़ती है।
- जल परिवहन के लिए सस्ती जल शक्ति अथवा भाप द्वारा चालित शक्ति की आवश्यकता होती है। पानी के बहाव के कारण इसमें काफी कम खर्च आता है।
- रेल या सड़क यातायात के साधनों की तुलना में जलयान का सामान लाने व ले जाने की क्षमता अधिक होती है।

5. भारत के प्रमुख राष्ट्रीय जलमार्ग के बारे में बताएँ ।

उत्तर भारत में बहुत सारा परिवहन जलमार्ग द्वारा होता है वर्ष 1986 में भारतीय आंतरिक जलमार्ग प्राधिकरण का गठन किया गया। भारत में अब तक छः राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किए गए हैं इनमें हल्दिया-प्रयागराज खंड देश का प्रथम जलमार्ग था।

भारत के प्रमुख राष्ट्रीय जलमार्ग निम्नलिखित हैं—

- **राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-1**—प्रयागराज (इलाहाबाद) से हल्दिया के बीच का यह जलमार्ग गंगा-भागीरथी एवं हुगली नदी तंत्र के अंतर्गत है। इस जलमार्ग की लंबाई 1,620 किमी है।
- **राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-2**—यह जलमार्ग सदिया से धुबरी (असम) तक ब्रह्मपुत्र नदी में 891 किमी की दूरी में विस्तृत है।
- **राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-3**—इसका विस्तार केरल के पश्चिमी तटीय क्षेत्र में है। इसके अंतर्गत पश्चिमी तट नहर [कोट्टापुरम (केरल) से कोल्लम (केरल)], [उद्योग मंडल नहर (कोच्चि केरल) से पाथलम सेतु (केरल) तथा चंपकारा नहर (कोच्चि से अंबलामुगला (केरल)] को शामिल किया गया है।
- **राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-4**—इस जलमार्ग की घोषणा 25 नवंबर, 2008 को की गई है। राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-4 के अंतर्गत भद्राचलम से राजमुंद्री के बीच गोदावरी नदी के जलमार्ग को, वजीराबाद से विजयवाड़ा के बीच कृष्णा नदी जलमार्ग तथा काकीनाडा से पुदुचेरी के बीच नहर-जलमार्ग को शामिल किया गया है।
- **राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-5**—इस जलमार्ग की घोषणा भी राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-4 के साथ ही 25 नवंबर, 2008 को की गई।

  इसके अंतर्गत तालचेर से धमरा के बीच ब्रह्मणी नदी तंत्र के जलमार्ग को जियोनखली से, चरबतिया के बीच पूर्वी तट नहर जलमार्ग को, चरबतिया से धमरा के बीच मताई नदी जलमार्ग को तथा मंगलगढ़ी से पाराद्वीप के बीच महानदी के डेल्टाई नदियों के जलमार्ग को शामिल किया गया है।
- **राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-6** बराक नदी के जलमार्ग को लखीपुर (असम) से भांगा (करीमागंज, असम) के बीच, भाया सिलचर (असम) अगला राष्ट्रीय जलमार्ग के रूप में प्रस्तावित किया गया है। यह जलमार्ग 121 किमी लंबा है।

6. वायु परिवहन आजकल अधिक उपयोगी क्यों है? कोई तीन बिंदु लिखिए।

उत्तर वायु परिवहन यातायात का सबसे तीव्रगामी साधन है। दुर्गम क्षेत्रों; जैसे- पर्वत, सघन वन एवं मरुस्थलीय क्षेत्रों में रेल एवं सड़क मार्गों का विकास करना असंभव लगता है, परंतु वायु परिवहन द्वारा इन दोनों की सरलता से जोड़ा जा सकता है। वर्तमान युग में किसी भी राष्ट्र के त्वरित आर्थिक विकास हेतु इसके महत्त्व को कम करके नहीं आँका जा सकता है।

वर्तमान में वायु परिवहन के निम्नलिखित महत्त्व हैं—

(i) बहुमूल्य तथा हल्की वस्तुओं का स्थानांतण

(ii) न्यूनतम मार्ग व्यय होता है।

(iii) भौगोलिक बाधाओं से मुक्ति होती है।

7. संचार सेवाओं का अर्थ, प्रकार तथा महत्त्व बताइए।

उत्तर संचार, सूचना का आदान-प्रदान करने का एक कार्य है। व्यक्तिगत संचार और जनसंचार देश में संचार के प्रमुख साधन हैं—

निजी संचार यह दो लोगों के बीच संदेश हस्तांतरण या प्रेषण की प्रक्रिया है। मोबाइल फोन, डाक-पत्र व्यक्तिगत संचार के उदाहरण हैं।

डाक संचार भारत का डाक संचार तंत्र विश्व का वृहत्तम तंत्र है। भारतीय डाक नेटवर्क, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी (भारत सरकार) के अंतर्गत पोस्ट विभाग द्वारा संभाला जाता है। यह पार्सल, निजी पत्र व्यवहार आदि को संचालित करता है। डाक संचार को प्रथम श्रेणी व द्वितीय श्रेणी में बाँटा जाता है—

(i) पहली श्रेणी—कार्ड व लिफाफा, बंद चिट्ठी, पहली श्रेणी की डाक समझी जाती है।

(ii) द्वितीय श्रेणी—रजिस्टर्ड पैकेट, किताबें, अखबार तथा मैगजीन द्वितीय श्रेणी की डाक में आते हैं।

मेल चैनल—बड़े शहरों में डाक संचार में तीव्रता हेतु राजधानी मार्ग, मेट्रो चैनल, ग्रीन चैनल, व्यापार चैनल, पार्टी चैनल, दस्तावेज चैनल मार्ग अपनाए गए हैं।

दूरसंचार नेटवर्क—टेलीफ़ोनिक संचार मे सुधार के लिए सरकार ने देश के हर गाँव में सब्सक्राइबर ट्रंक डायलिंग (एसटीडी) की सुविधा का 24 घंटे विस्तार करने के लिए विशेष प्रावधान किया है। तेजी से व्यक्तिगत संचार सुनिश्चित करने के लिए इसी तरह स्थिर लैंडलाइन और मोबाइल सेवाएँ बेहतर हुई हैं।

जनसंचार—यह लोगों के बड़े समूह को, एक संदेश को हस्तांतरित करने या प्रसारित करने की एक प्रक्रिया है, जिसके लिए कुछ प्रकार के मीडिया का उपयोग करना आवश्यक है। यह मनोरंजन प्रदान करता है और विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों और नीतियों के बारे में लोगों के बीच जागरूकता पैदा करता है। इस मीडिया में रेडियो, टेलीविजन, समाचार-पत्र, इंटरनेट, पत्रिकाएँ, किताबें और फिल्म शामिल हैं।

टेलीविजन और रेडियो—ऑल इंडिया रेडियो (आकाशवाणी) और दूरदर्शन, राष्ट्रीय टीवी चैनल क्षेत्रीय तथा स्थानीय भाषा में देश के विभिन्न भागों में कार्यक्रम प्रसारित करता है।

समाचार-पत्र/पत्रिकाएँ—संपूर्ण भारत में अनेक समाचार-पत्र व सामयिक पत्रिकाएँ प्रकाशित की जाती हैं। भारत में हिंदी भाषा में सर्वाधिक समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं। उसके बाद क्रमश: अंग्रेजी और उर्दू के समाचार-पत्र आते हैं।

चलचित्र भारत—चलचित्र (Films) उत्पादक राष्ट्र के रूप में भी जाना जाता है। भारतीय व सभी विदेशी फिल्मों को प्रमाणित करने का अधिकार 'केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड' को होता है। संचार साधनों का महत्त्व निम्नलिखित हैं—

- संचार के माध्यम से किसानों के लिए अनेक कार्यक्रम, जिसमें कृषि से संबंधित अनेक तथ्य आदि का प्रसारण होता है, जो किसानों में कृषि के प्रति नवीन प्रौद्योगिकी के माध्यम को उनके बीच पहुँचाता है तथा इन्हें जागरूक करने का प्रयास करता है।
- टेलीविजन आदि के माध्यम से देश-विदेश की खबरें, स्वास्थ्य संबंधी सलाह व अनेक मनोरंजक कार्यक्रमों का प्रसारण लोगों को मनोरंजन प्रदान करने के साथ-साथ जनचेतना का विकास भी करता है।

8. रेल परिवहन के वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों को बताइए।

उत्तर भारत में रेल परिवहन के वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों में मुख्यत: भू-आकृतिक पृष्ठभूमि, आर्थिक क्षेत्र व प्रशासकीय कारक प्रमुख हैं। उत्तरी मैदान अपनी विस्तृत समतल भूमि, सघन जनसंख्या घनत्व, संपन्न कृषि व प्रचुर संसाधनों के कारण रेल परिवहन के विकास व वृद्धि में सहायक रहा है। यद्यपि असंख्य नदियों के विस्तृत जल मार्गों पर पुलों के निर्माण में बाधाएँ दृष्टिगोचर होती हैं। प्रायद्वीप भारत में रेलमार्ग ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी क्षेत्रों, छोटी पहाड़ियों और सुरंगों आदि से होकर जाता है। हिमालय पर्वतीय क्षेत्र भी दुर्लभ उच्चावच, विरल जनसंख्या तथा आर्थिक अवसरों की कमी के कारण रेलवे लाइन के निर्माण में प्रतिकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है। इस प्रकार पश्चिमी राजस्थान, गुजरात के दलदली भाग, मध्य प्रदेश के वन-क्षेत्र, छत्तीसगढ़, ओडिशा व झारखंड में रेल निर्माण करना कठिन है। सह्याद्रि तथा उससे सटे क्षेत्रों को भी घाट या दर्रों द्वारा ही पार कर पाना संभव है। कुछ वर्ष पहले भारत के महत्त्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्र में पश्चिमी तट के साथ कोंकण रेलवे के विकास ने यात्री व वस्तुओं के आवागमन को सुविधाजनक बनाया है। यद्यपि यहाँ असंख्य समस्याएँ भी हैं; जैसे—भूस्खलन तथा किसी-किसी भाग में रेलवे ट्रैक का धँसना आदि।

9. भारत में विभिन्न जनसंचार साधनों पर विस्तृत विवरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर **जनसंचार**—जनसंचार के साधनों से मानव मनोरंजन के साथ-साथ बहुत-से राष्ट्रीय कार्यक्रमों व नीतियों के विषय में जागरूक हो पाता है। इसमें रेडियो, दूरदर्शन, समाचार-पत्र पत्रिकाएँ, किताबें तथा चलचित्र सम्मिलित हैं।

आकाशवाणी (ऑल इंडिया रेडियो)—यह राष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा स्थानीय भाषा में देश के विभिन्न भागों में अनेक वर्गों के व्यक्तियों के लिए विविध कार्यक्रम प्रसारित करता है।

दूरदर्शन—यह देश का राष्ट्रीय समाचार व संदेश माध्यम है तथा विश्व के वृहत्तम संचार-तंत्र में से एक है। यह विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियों हेतु मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक व खेल-जगत संबंधी कार्यक्रम प्रसारित करता है।

समाचार-पत्र/पत्रिकाएँ—भारत में वर्षभर में अनेक समाचार-पत्र व सामयिक पत्रिकाएँ प्रकाशित की जाती हैं। ये पत्रिकाएँ सामयिक होने के नाते कई प्रकार की होती हैं—मासिक, साप्ताहिक, वार्षिक आदि। समाचार-पत्र लगभग 100 भाषाओं तथा बोलियों में प्रकाशित होते हैं। भारत में हिंदी भाषा में सर्वाधिक समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं। उसके बाद क्रमश: अंग्रेजी और उर्दू के समाचार-पत्र आते हैं।

चलचित्र—भारत में चलचित्र संचार का सशक्त माध्यम है। यहाँ कम अवधि वाली फिल्में, वीडियो फीचर फिल्म तथा छोटी वीडियो फिल्में भी बनती हैं। भारतीय व विदेशी सभी फिल्मों को प्रमाणित करने का अधिकार केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड को है।

10. "परिवहन, व्यापार व संचार एक-दूसरे के पूरक हैं।" व्याख्या कीजिए।

उत्तर वस्तुओं एवं सेवाओं को लाना-ले जाना तीन महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर आधारित है—स्थल, जल एवं वायु परिवहन। अधिक समय तक व्यापार एवं परिवहन सुविधा एक सीमित क्षेत्र तक ही होती थी। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास के साथ व्यापार एवं परिवहन के प्रभाव-क्षेत्र में विस्तृत वृद्धि हुई है। सक्षम व तीव्र गति वाले परिवहन से आज विश्व एक बड़े गाँव में परिवर्तित हो गया है। परिवहन का यह विकास संचार साधनों के विकास की सहायता से संभव हो सका है।

आज भारत अपने विशाल आकार, विविधताओं, भाषायी, सामाजिक व सांस्कृतिक बहुलताओं के बावजूद संसार के सभी क्षेत्रों से सुचारु रूप से जुड़ा हुआ है। रेल, वायु एवं जल परिवहन, समाचार-पत्र, रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा तथा इंटरनेट आदि इसके सामाजिक-आर्थिक विकास में अनेक प्रकार से सहायक हैं।

स्थानिक से अंतर्राष्ट्रीय स्तरीय व्यापार ने अर्थव्यवस्था को जीवन शक्ति प्रदान की है। इसने हमारे जीवन को समृद्ध किया है तथा आरामदायक जीवन के लिए सुविधाओं व साधनों में बढ़ोतरी की है। आधुनिक संचार तथा परिवहन के साधन हमारे देश और इसकी आधुनिक अर्थव्यवस्था को संचालित करते हैं।

अत: यह स्पष्ट है कि सघन व सक्षम परिवहन का जाल तथा संचार के साधन आज विश्व, राष्ट्र व स्थानीय व्यापार हेतु पूर्व अपेक्षित हैं, इसलिए परिवहन, व्यापार व संचार एक-दूसरे के पूरक हैं।

11. भारत में उपलब्ध परिवहन सेवाओं के नाम लिखिए तथा उनमें से किसी एक के विकास की विवेचना कीजिए।

उत्तर परिवहन के साधनों के अंतर्गत उन साधनों को शामिल किया जाता है, जो लोगों, वस्तुओं तथा डाक आदि का परिवहन करते हैं अर्थात् एक-स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं। परिवहन के साधनों को उनकी प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित तीन वर्गों में बाँटा जाता है

(i) स्थल परिवहन के साधन—रेल एवं सड़क यातायात।

(ii) जल परिवहन के साधन—समुद्री जलमार्ग एवं नदी जलमार्ग।

(iii) वायु परिवहन के साधन—वायुयान, हेलिकॉप्टर।

स्थल/भू-तल परिवहन के साधन

परिवहन के स्थलीय साधन भूमि पर आधारित होते हैं। इसके अंतर्गत दो साधन मुख्य रूप से शामिल किए जाते हैं—

(i) सड़क परिवहन—सड़क परिवहन यातायात का प्रमुख साधन है। सड़कों पर कार, स्कूटर, साइकिल, बस, ट्रक आदि चलाए जाते हैं। भारत में सड़क परिवहन ने सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह की है। कम तथा मध्यम दूरी तय करने के लिए यह परिवहन का सुगम एवं सस्ता साधन भी है। वास्तव में, यह परिवहन सेवा अन्य परिवहन के साधनों की सहायक है, क्योंकि इसकी विश्वसनीयता, लचीलापन तथा दरवाजे तक प्रदान की जाने वाली सुविधा अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। भारत में सड़कों को प्रबंध की दृष्टि से 6 भागों में वर्गीकृत किया गया है—

(i) एक्सप्रेस-वे (ii) राष्ट्रीय राजमार्ग
(iii) प्रांतीय राजमार्ग (iv) जिला सड़कें
(v) ग्रामीण सड़कें (vi) सीमावर्ती सड़कें

वर्तमान में भारत में सड़कों की कुल लंबाई 33,14,000 किमी है। इसके अंतर्गत एक्सप्रेस-वे, राष्ट्रीय राजमार्ग, बड़े जिलों की सड़कें, अन्य जिला सड़कें तथा ग्रामीण सड़कें शामिल हैं।

(ii) रेल परिवहन—आंतरिक परिवहन में रेल परिवहन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत में रेल परिवहन की शुरुआत ब्रिटिशकाल में 1853 ई. में मुंबई से थाणे के बीच की गई थी। भारतीय रेल एशिया में प्रथम तथा विश्व में चौथा रेल नेटवर्क है। भारतीय रेल के 66,687 किमी लंबे मार्ग 7,216 स्टेशनों के बीच फैले हुए हैं। भारतीय रेल सार्वजनिक क्षेत्र का सबसे बड़ा नियोक्ता भी है। इसमें लगभग 16 लाख व्यक्ति नियोजित हैं। कुशल प्रबंधन के लिए भारतीय रेल को 17 प्रशासनिक मंडलों में विभाजित किया गया है।

जलीय परिवहन के साधन

जलमार्ग भी परिवहन के प्रमुख साधन है। जलमार्गों की प्रवृत्ति के अनुसार इन्हें दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है

(i) आंतरिक जलमार्ग–इसमें देश के अंदर प्रवाहित होने वाली नौवहन योग्य नदियाँ तथा नहरों को शामिल किया जाता है। भारत में गंगा, ब्रह्मपुत्र, कावेरी, यमुना, घाघरा आदि नदियाँ नौवहन योग्य हैं। भारत में आंतरिक जलमार्गों का विकास एवं प्रबंधन भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (आईआई- डब्ल्यूए) करता है। भारत में छ: राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किए जा चुके हैं। हल्दिया-प्रयागराज खंड देश का प्रथम जलमार्ग था।

(ii) समुद्री जलमार्ग—यह जलमार्ग मुख्य रूप से अंतर्राष्ट्रीय परिवहन के लिए उपयोग में आते हैं। समुद्री परिवहन की अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का अधिकांश भाग जल परिवहन द्वारा ही संचालित होता है। यह यातायात का सरल एवं सस्ता साधन है। भारत के पश्चिमी तथा पूर्वी तटों पर अनेक पत्तन हैं, जिनसे जल यातायात संचालित होता है।

12. यातायात के साधनों का वर्गीकरण कर किन्हीं दो परिवहन मार्गों के बारे में बताएँ।

उत्तर परिवहन सहयोगी अथवा तृतीयक व्यवसाय के रूप में किया जाने वाला एक व्यवसाय है, जो प्राथमिक और द्वितीयक व्यवसाय में संलग्न लोगों की सहायता के लिए अपनाया जाता है। परिवहन पारस्परिक सम्मिलन का मार्ग होता है, जिनकी सहायता से व्यापार किया जाता है। इन पारस्परिक या व्यापारिक मार्गों के अंतर्गत सड़कें, रेलमार्ग, वायुमार्ग व जलमार्ग (पत्तन) आते हैं। पथ (मार्ग) और उस पथ पर चलने वाले वाहनों के आधार पर यातायात के साधनों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

(i) स्थल परिवहन (ii) जल परिवहन (iii) वायु परिवहन

सड़क परिवहन—सड़क परिवहन यातायात का प्रमुख साधन है। सड़कों पर कार, स्कूटर, साइकिल, बस, ट्रक आदि चलाए जाते हैं। भारत में सड़क परिवहन ने सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह की है। कम तथा मध्यम दूरी तय करने के लिए यह परिवहन का सुगम एवं सस्ता साधन भी है।

रेल परिवहन—आंतरिक परिवहन में रेल परिवहन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारतीय रेल सार्वजनिक क्षेत्र का सबसे बड़ा नियोक्ता भी है। इसमें लगभग 16 लाख व्यक्ति नियोजित हैं। कुशल प्रबंधन के लिए भारतीय रेल को 17 प्रशासनिक मंडलों में विभाजित किया गया है। भारत में रेलवे का प्रारंभ 1853 ई. में हुआ। जब बंबई से थाणे के बीच (34 किमी) पहली रेलगाड़ी चलाई गई। प्रारंभ में भारतीय रेलवे का विकास अंग्रेजों द्वारा इस रूप में किया गया, ताकि कच्चे माल को निर्यात हेतु कलकत्ता (कोलकाता), बंबई (मुंबई), मद्रास (चेन्नई) जैसे बंदरगाह नगरों तक पहुँचाया जा सके। देश में रेलों का वास्तविक निर्माण कार्य लॉर्ड डलहौजी के शासन में प्रारंभ हो पाया।

जल परिवहन—जल में चलने वाले परिवहन के ऐसे साधन, जिनका संचालन जल शक्ति या यांत्रिक शक्ति की सहायता से किया जाता है, 'जल परिवहन के साधन' कहलाते हैं। इनके उदाहरण हैं- नदियों व नहरों में चलने वाली नावें व स्टीमर तथा समुद्रों में चलने वाले बड़े जलयान, छोटे स्टीमर आदि।

भारत में जल परिवहन का उपयोग प्राचीन काल से हो रहा है। यह परिवहन का सबसे सस्ता एवं पारस्थितिकी अनुकूल (पर्यावरण के अनुकूल) साधन है।

❑❑❑

1

राजनीति विज्ञान (लोकतांत्रिक राजनीति-2)

सत्ता की साझेदारी

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सत्ता के बँटवारे के बेल्जियम मॉडल की कुछ मुख्य बातें क्या हैं? कोई तीन लिखिए।

अथवाबेल्जियम के सत्ता बंटन के प्रारूप के कोई तीन तत्त्व बताइए।

उत्तर सत्ता के बँटवारे के बेल्जियम मॉडल की निम्नलिखित मुख्य बातें थीं; जैसे—

- **सत्ता में मंत्रियों की समान संख्या**—बेल्जियम के संविधान में इस बात का स्पष्ट प्रावधान है कि केंद्रीय सरकार में डच और फ्रेंच भाषी मंत्रियों की संख्या समान होगी। इस प्रकार कुछ विशेष कानून तभी बनाए जा सकते हैं जब दोनों भाषायी समूह के सांसदों का बहुमत उसके पक्ष में हो।
- **राजधानी ब्रुसेल्स में अलग सरकार**—बेल्जियम की राजधानी ब्रुसेल्स में अलग सरकार है और इनमें डच तथा फ्रांसीसी दोनों समुदायों का समान प्रतिनिधित्व है। फ्रेंच भाषी लोगों ने ब्रुसेल्स में समान प्रतिनिधित्व के प्रस्ताव को स्वीकार किया, क्योंकि डच भाषी लोगों ने भी केंद्रीय सरकार में बराबरी का प्रतिनिधित्व स्वीकार किया था।
- **सत्ता की साझेदारी**—बेल्जियम में केंद्र सरकार की अनेक शक्तियाँ देश के दो इलाकों के सरकारों को सुपुर्द कर दी गईं अर्थात् राज्य सरकार केंद्रीय सरकार के अधीन नहीं है।

2. वर्ष 1970 और 1993 के मध्य बेल्जियम के संविधान में कितने संशोधन हुए? किन्हीं तीन संशोधनों का वर्णन कीजिए।

उत्तर बेल्जियम के नेताओं ने क्षेत्रीय अंतरों और सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार कर अलग मार्ग अपनाने का निर्णय लिया। वर्ष 1970 और 1993 के बीच बेल्जियम के संविधान में चार संशोधन हुए। इन संशोधनों का वर्णन इस प्रकार है—

(i) बेल्जियम के संविधान में इस बात का स्पष्ट प्रावधान है कि केंद्रीय सरकार में डच और फ्रेंच-भाषी मंत्रियों की संख्या समान रहेगी, विशेष कानून तभी बन सकते हैं, जब दोनों भाषायी समूह के सांसदों का बहुमत उनके पक्ष में हो। इस प्रकार कोई भी एक समुदाय एकतरफा निर्णय नहीं ले सकता है।

(ii) राज्य सरकारे केंद्रीय सरकार के अधीन नहीं हैं। केंद्र सरकार की अनेक शक्तियाँ देश के दो क्षेत्रों की क्षेत्रीय सरकारों अर्थात् राज्य सरकारों को दे दी गई।

(iii) ब्रूसेल्स में अलग सरकार है और इसमें दोनों समुदायों फ्रेंच भाषी लोगों और डच-भाषी लोगों ने समान प्रतिनिधित्व स्वीकार किया था।

3. बेल्जियम में सभी समूहों को व्यवस्थित रूप में रखने के लिए क्या व्यवस्था की गई है?

उत्तर बेल्जियम में सभी समूहों को व्यवस्थित रूप में रखने के लिए निम्न व्यवस्थाएँ हैं—

- केंद्रीय सरकार में दोनों भाषायी समूहों को एक-समान प्रभुत्व देने का प्रबंध किया गया।
- किसी भी समूह को स्वतंत्र निर्णय लेने की अनुमति नहीं थी।
- राज्य सरकारों को केंद्रीय सरकार की कुछ शक्तियाँ सौंप दी गईं।
- राज्य सरकारों को अब केंद्रीय सरकार की तरह एक समान शक्तियाँ दी गईं।
- सामुदायिक सरकार की स्थापना की गई, जिसको भाषायी, शैक्षिक इत्यादि बहुत सारे मुद्दे तथा संवैधानिक अधिकार सौंपे गए।

4. क्षेत्रीय तथा सांस्कृतिक विविधताओं को स्वीकार करने के लिए बेल्जियम सरकार द्वारा अपनाए गए किन्हीं तीन उपायों का वर्णन कीजिए।

उत्तर बेल्जियम सरकार द्वारा अपनाए गए तीन उपायों का वर्णन निम्न है—

(i) सामुदायिक सरकार का गठन—बेल्जियम में केंद्रीय और राज्य सरकारों के अतिरिक्त एक-तीसरे स्तर की सरकार भी काम करती है, जिसे सामुदायिक सरकार कहते हैं। सामुदायिक सरकार का चुनाव एक ही भाषा बोलने वाले लोग करते हैं। इस प्रकार डच, फ्रांस और जर्मन बोलने वाले लोग चाहे जहाँ भी रहते हों, सामुदायिक सरकार को चुनते हैं।

(ii) डच और फ्रांसीसी दलों के मंत्रियों की समान संख्या—बेल्जियम संविधान में इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि केंद्र सरकार में डच तथा फ्रेंच भाषी मंत्रियों की संख्या समान रहेगी। कुछ विशेष कानून तभी बन सकते हैं, जब दोनों भाषायी समूह के सांसदों का बहुमत उसके पक्ष में हो।

(iii) राज्य तथा केंद्रीय स्तर पर समान प्रतिनिधित्व—बेल्जियम की राजधानी ब्रुसेल्स में अलग सरकार है और इसमें डच तथा फ्रांसीसी दोनों समुदायों का समान प्रतिनिधित्व है।

5. श्रीलंका कैसा देश है? श्रीलंका में तमिलों के उपसमूह को बताइए।

उत्तर श्रीलंका एक द्वीपीय देश है। श्रीलंका में तमिलों के दो उप-समूह हैं, जिनका वर्णन इस प्रकार है—

(i) श्रीलंकाई तमिल—श्रीलंका के तमिल मूल निवासियों को श्रीलंकाई तमिल कहते हैं। इनकी संख्या 13% है तथा यह मुख्य रूप से उत्तर और पूर्वी प्रांतों में निवास करते हैं। श्रीलंका में सिंहली-भाषी लोग बौद्ध हैं, जबकि तमिल-भाषी लोगों में कुछ हिंदू और मुसलमान हैं।

(ii) **भारतीय तमिल**—औपनिवेशिक शासनकाल के समय कुछ तमिलों के वंशज यहाँ बागान मजदूरों के रूप में आए थे, और बाद में वे यहीं बस गए। इन्हीं लोगों को भारतीय तमिल कहा जाता है। ये कुल जनसंख्या के केवल 5% हैं। जनसंख्या के 7% भाग में ईसाई हैं जो तमिल और सिंहली दोनों भाषाएँ बोलते हैं।

6. तमिल को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए कौन-कौन से संघर्ष हुए। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर श्रीलंकाई तमिलों ने अपनी राजनीतिक पार्टियाँ बनाई और तमिल को राजभाषा घोषित किया। इन्होंने क्षेत्रीय स्वायत्तता प्राप्त करने तथा शिक्षा और रोजगारों में समान अवसरों की माँग की, परंतु इनकी माँग को अनदेखा कर दिया गया।

वर्ष 1980 में लिट्टे नामक संगठन बनाकर तमिलों द्वारा उत्तर-पूर्वी श्रीलंका में स्वतंत्र तमिल ईलम (सरकार) बनाने की माँग की गई, जिसके परिणामस्वरूप दोनों समुदायों में पारस्परिक अविश्वास ने संघर्ष का रूप ले लिया। यह संघर्ष धीरे-धीरे बढ़कर गृहयुद्ध में परिवर्तित हो गया।

7. सत्ता के क्षैतिज बँटवारे को नियंत्रण तथा संतुलन की व्यवस्था क्यों कहते हैं? इसके किन्हीं तीन कारणों को बताइए।

उत्तर सत्ता के क्षैतिज बँटवारे में शासनाधिकार सरकार के विभिन्न अंगों; जैसे—कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के बीच विभाजित किया जाता है। इसे नियंत्रण और संतुलन की व्यवस्था भी कहते हैं। सत्ता के क्षैतिज बँटवारे के तीन कारण निम्नवत् हैं—

(i) सरकार के तीनों अंगों को समान स्तर पर रखा जाता है।

(ii) सत्ता की बनावट यह सुनिश्चित करती है कि किसी भी अंग को अधिक शक्तियाँ न दी जाएँ।

(iii) इस व्यवस्था के अंतर्गत प्रत्येक अंग एक-दूसरे पर नियंत्रण रखता है ताकि संतुलन बना रहे।

8. सत्ता के ऊर्ध्वाधर वितरण तथा क्षैतिज वितरण में क्या अंतर है?

उत्तर सत्ता के ऊर्ध्वाधर वितरण तथा क्षैतिज वितरण में निम्नलिखित अंतर है—

ऊर्ध्वाधर वितरण	क्षैतिज वितरण
ऊर्ध्वाधर वितरण के अंतर्गत सरकार के विभिन्न स्तरों में सत्ता का बँटवारा होता है।	क्षैतिज वितरण के अंतर्गत सरकार के विभिन्न अंगों; जैसे—कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका में सत्ता का बँटवारा होता है।
इसमें उच्चतर तथा निम्नतर स्तर की सरकारें होती हैं।	इसमें सरकार के विभिन्न अंग एक ही स्तर पर रहकर अपनी-अपनी शक्ति का उपयोग करते हैं।
इसमें निम्नतर स्तर के अंग उच्चतर स्तर के अंगों के अधीन काम करते हैं।	इसमें प्रत्येक अंग दूसरे पर नियंत्रण रखता है।

9. बेल्जियम और श्रीलंका दोनों की जनसंख्या में विविधता है, परंतु दोनों देशों में स्थितियाँ भिन्न है। कैसे?

उत्तर बेल्जियम और श्रीलंका दोनों की जनसंख्या में विविधता है, परंतु दोनों देशों में स्थितियाँ भिन्न हैं। इन दोनों देशों की स्थिति का वर्णन इस प्रकार है—

- **बेल्जियम**—देश की जातीय बनावट बहुत जटिल है, देश की आबादी के कुल 59% लोग फ्लेमिश क्षेत्र में रहते हैं और डच भाषा बोलते हैं तथा 40% लोग वेलोनिया क्षेत्र में रहते हैं और फ्रेंच भाषा बोलते हैं। इस देश के मात्र 1% लोग जर्मन भाषा बोलते हैं। बेल्जियम की राजधानी ब्रुसेल्स है, जहाँ 80% लोग फ्रेंच बोलते हैं। जबकि 20% लोग डच भाषा बोलते हैं।
- **श्रीलंका**—एक द्वीपीय देश है, जो तमिलनाडु के दक्षिण तट से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस देश की सबसे प्रमुख सामाजिक समूह सिंहलियों का है, जिसकी आबादी कुल जनसंख्या की 74% है। श्रीलंका में दूसरे नंबर पर तमिल समूह के लोगों की जनसंख्या है, जो कुल जनसंख्या का 18% है।

10. बेल्जियम तथा श्रीलंका सरकार ने जातीय संघर्ष को किस प्रकार सुलझाया?

उत्तर बेल्जियम तथा श्रीलंका सरकार ने जातीय संघर्ष को निम्न प्रकार से सुलझाया—

- बेल्जियम के नेताओं ने विभिन्न समुदायों तथा क्षेत्रों के हितों तथा भावनाओं को स्वीकार किया, जबकि श्रीलंका की सरकार ने बहुसंख्यकवाद के माध्यम से समस्या को सुलझाना चाहते थे।
- बेल्जियम के नेताओं ने संघीय ढाँचा स्थापित किया, जिसके अंतर्गत संघ सरकार तथा इसके अन्य अंगों के बीच शक्तियों को बाँटा गया था, जबकि श्रीलंका के नेताओं ने एकात्मक सरकार का ढाँचा स्वीकार किया था।
- बेल्जियम के समाधान ने देश में गृहयुद्ध की आशंकाओं पर विराम लगा दिया, जबकि श्रीलंका में बहुसंख्यकवाद गृहयुद्ध का कारण बना।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लोकतंत्र में क्यों तथा कैसे शक्ति की भागीदारी की जाती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर (I) क्यों—लोकतंत्र में शक्ति की भागीदारी क्यों की जाती है? इसके निम्नलिखित कारण हैं—

1. देश को अधिनायक अथवा निरंकुश शासन से बचाने के लिए शक्तियों का विभाजन किया जाता है। भारत में शक्तियों का विभाजन केन्द्र, राज्य तथा स्थानीय स्तर पर किया गया है जिससे कोई व्यक्ति अपनी स्वार्थपूर्ति में शक्तियों का दुरुपयोग न कर सके। लोकतंत्र सीमित शासन का पक्षधर है।
2. लोकतंत्र शक्तियों के विकेन्द्रीकरण को मान्यता प्रदान करता है। शक्तियों का एकीकरण अधिनायकतंत्र का द्योतक है। लोकतंत्र में शासन के विभिन्न स्तरों पर शक्ति में भागीदारी की व्यवस्था की जाती है। शक्ति के विभाजन की दृष्टि से संविधान में तीन सूचियों का उल्लेख किया गया है।

3. भारत जनसंख्या तथा क्षेत्र (आकार) की दृष्टि से भी विशाल देश है। इसके समक्ष अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा प्रतिरक्षा से सम्बन्धित समस्याएँ हैं। शक्ति के विभाजन से उत्तरदायित्व अथवा जिम्मेदारी का अहसास होता है। अधिक-से-अधिक व्यक्तियों की शासन तथा प्रशासन में सहभागिता होती है तथा प्रशासन में अधिक व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त होता है। शक्ति विभाजन से शासन तथा प्रशासन की क्षमता तथा कार्यकुशलता में वृद्धि होती है।
4. भारत विविधताओं वाला देश है। भारत में धर्म, जाति, भाषा तथा क्षेत्र के आधार पर अनेक प्रकार के समूहों का अस्तित्व है। अत: सत्ता की भागीदारी में इन समूहों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अत: शक्ति का विभाजन होना चाहिए।
5. सरकार के तीनों अंगों—विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका में भी अधिकारों तथा शक्तियों का वितरण किया जाता है। सरकार के तीनों अंगों के पृथक्-पृथक् कार्यक्षेत्र निर्धारित किए गए हैं।

(II) कैसे—लोकतंत्र में शक्ति में हिस्सेदारी कैसे होती है? इसे निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—

1. सम्पूर्ण क्षेत्र में सात संघीय क्षेत्र हैं। संघीय क्षेत्र के प्रशासक केन्द्र सरकार द्वारा निर्मित कानूनों को लागू करने की व्यवस्था करते हैं।
2. लोकतंत्र में शक्ति विभाजन करने के लिए तीन स्तरों पर तीन प्रकार की सरकारों का निर्माण किया जाता है। केन्द्र सरकार पर सरकार सम्पूर्ण देश का शासन संचालित करती है। संसद संघ सूची में वर्णित विषयों पर कानून का निर्माण करती है। संसद के सदस्य देश के सभी भागों, राज्यों तथा संघीय क्षेत्रों से निर्वाचित होकर आते हैं। ये केन्द्रीय कार्यपालिका पर अपना नियंत्रण रखते हैं। कार्यपालिका संसद द्वारा निर्मित कानूनों को लागू करती है तथा न्यायपालिका (सर्वोच्च न्यायालय) कानून के उल्लंघन करने वालों के लिए दण्ड की व्यवस्था करती है।
3. स्थानीय स्तर पर प्रमुख रूप से दो प्रकार की सरकारें कार्य करती हैं। पंचायतें ग्रामीण स्तर पर तथा नगरपालिकाएँ एवं नगर निगम शहरी क्षेत्र में कार्य करते हैं।
4. राज्य सूची में वर्णित नियमों पर राज्य विधानमण्डल कानून का निर्माण करते हैं। मुख्यमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद् के सदस्य विधानमण्डलों द्वारा निर्मित कानूनों को लागू करते हैं तथा न्यायपालिका (उच्च न्यायालय) कानून का उल्लंघन करने वालों को दण्ड देती हैं।

2. बहुसंख्यकवाद का अर्थ बताइए। श्रीलंका में गृह युद्ध व अशांति का विकास क्यों हुआ?

उत्तर **बहुसंख्यकवाद**—यह मान्यता कि यदि कोई समुदाय बहुसंख्यक है तो वह अपने मनचाहे ढंग से देश का शासन कर सकता है और इसके लिए वह अल्पसंख्यक समुदाय की आवश्यकता या इच्छाओं की अवहेलना कर सकता है।

श्रीलंका में गृहयुद्ध व अशान्ति—श्रीलंका सन् 1948 में एक स्वतंत्र राष्ट्र बना। सिंहली समुदाय के नेताओं ने अपनी बहुसंख्या के बल पर शासन पर प्रभुत्व जमाने का प्रयास किया। इस कारण लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार ने सिंहली समुदाय को स्थापित करने के लिए अपनी बहुसंख्यक-परस्ती के अंतर्गत अनेक कदम उठाए।

सन् 1956 में एक कानून बनाया गया जिसके अंतर्गत तमिल को महत्त्व न देते हुए सिंहली को एकमात्र राजभाषा घोषित कर दिया गया। विश्वविद्यालयों और सरकारी नौकरियों में सिंहलियों को प्राथमिकता देने की नीति भी चली। नए संविधान में यह प्रावधान भी किया गया कि सरकार बौद्ध मत को संरक्षण और बढ़ावा देगी।

एक-एक करके आए इन सरकारी निर्णयों ने श्रीलंकाई तमिलों की नाराज़गी को बढ़ाने का कार्य किया। उन्हें लगा कि बौद्ध धर्मावलम्बी सिंहलियों के नेतृत्व वाले सभी राजनीतिक दल उनकी भाषा और संस्कृति को लेकर असंवेदनशील हैं। उन्हें लगने लगा कि संविधान और सरकार की नीतियाँ उन्हें समान राजनीतिक अधिकारों से वंचित कर रही हैं। नौकरियों और लाभ के अन्य कामों में उनके साथ भेदभाव हो रहा है और उनके हितों की अनदेखी की जा रही है। परिणाम यह हुआ कि तमिल और सिंहली समुदायों के सम्बन्ध बिगड़ते चले गए।

श्रीलंकाई तमिलों ने अपने राजनीतिक दलों का गठन किया और तमिल को राजभाषा बनाने, क्षेत्रीय स्वायत्तता प्राप्त करने तथा शिक्षा और रोज़गार में समान अवसरों की माँग को लेकर संघर्ष किया, लेकिन तमिलों की आबादी वाले क्षेत्र की स्वायत्तता की उनकी माँगों को निरन्तर नकारा गया। 1980 के दशक तक उत्तर-पूर्वी श्रीलंका में स्वतंत्र तमिल ईलम (सरकार) बनाने की माँग को लेकर अनेक राजनीतिक संगठन बने।

3. सत्ता की साझेदारी से आप क्या समझते हैं? व्याख्या कीजिए।

उत्तर सत्ता की साझेदारी एक ऐसी कुशल राजनीतिक पद्धति है जिसके द्वारा समाज के सभी वर्गों को देश की शासन प्रक्रिया में भागीदार बनाया जाता है जिससे कोई भी वर्ग यह महसूस न करें कि उसकी अवहेलना हो रही है। वास्तव में सत्ता की भागीदारी लोकतंत्र का मूलमंत्र है। जो देश इस मूलमंत्र को नहीं समझते वहाँ श्रीलंका की भाँति सदा आपसी कलह-कलेश ही चलता रहता है। और कई बार नौबत गृह युद्ध की सी बन जाती है। जिन देशों ने बेल्जियम की भाँति इस मूलमंत्र को समझ लिया है, वहाँ आपसी मतभेद होने पर भी देश का सारा काम-काज ठीक-ठाक चलता रहता है। देश में सरकार के तीनों अंगों 'विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका' में भी इस सत्ता की भागीदारी के नियम को अपनाया जाता है। इस प्रकार केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों में भी सत्ता की साझेदारी के लिए सिद्धांत पर शक्ति का बँटवारा कर दिया जाता है। इससे आपसी मतभेद, कलह आदि की संभावनाएँ समाप्त हो जाती हैं। अन्यथा बहुसंख्यावाद को थोपने से इन सभी मुसीबतों को बुलावा देना है और कुछ नहीं।

सत्ता की साझेदारी ही लोकतन्त्र का मूलमंत्र है। लोकतांत्रिक शासन में लोकतंत्र से प्रभावित होने वाले और उस प्रभाव में जीने वाले लोगों के बीच सत्ता की साझेदारी निहित है। इस शासन-व्यवस्था में प्रत्येक सामाजिक और समुदाय की भागीदारी सरकार में होती है। लोकतांत्रिक सरकार में सारी ताकत किसी एक अंग तक सीमित नहीं होती बल्कि यह विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच विकेन्द्रित

होती है। इस अध्याय में हम सत्ता के बँटवारे पर सोच-विचार को आगे बढ़ाएँगे और जानने का प्रयास करेंगे कि लोकतंत्र में सत्ता में बँटवारे की आवश्यकता क्यों होती है।

4. 73वें तथा 74वें संविधान संशोधन की स्थानीय स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करने में क्या भूमिका रही है? विवेचना कीजिए।

उत्तर संसद ने सन् 1992 में संविधान का 73वाँ संशोधन किया। इन संशोधनों द्वारा स्थानीय स्वायत्त शासन संस्थाओं में ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के व्यक्तियों की प्रभावशाली भागीदारी को सुनिश्चित करने का सार्थक प्रयास किया गया है। इन संशोधनों का राजनीतिक व्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। इसे निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है—

1. इन अधिनियमों के पारित होने के पश्चात् स्थानीय स्वायत्त सरकारों को संसद तथा विधानमण्डलों द्वारा मान्यता प्राप्त हो गई है।
2. इन संशोधनों ने ग्रामीण क्षेत्र में पंचायती राजव्यवस्था तथा शहरी क्षेत्र में नगरपालिकाओं तथा नगर निगमों को व्यापक अधिकार एवं शक्तियाँ प्रदान की हैं।
3. इस अधिनियम में वित्त आयोग की स्थापना को भी मान्यता प्रदान की गई है।
4. इन संस्थाओं के नियत समय पर चुनाव कराने की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। इन संस्थाओं को अब धन केन्द्र सरकार से सीधे प्राप्त होता है।
5. प्रत्येक पाँच वर्ष के उपरान्त अनिवार्य रूप से इन सरकारों के निर्वाचन कराए जाते हैं। यदि किसी कारणवश कोई स्थान रिक्त हो जाता है तो छह माह की अवधि में उस स्थान के लिए चुनाव कराया जाता है। चुनाव राज्य निर्वाचन आयोग की देख-रेख में कराए जाते हैं।
6. पंचायती राज व्यवस्था को अब संवैधानिक स्तर प्रदान किया गया है। अब ये संस्थाएँ राज्य सरकारों की दया पर निर्भर नहीं हैं।
7. 73वें तथा 74वें संविधान संशोधन ने हमारे देश के लोकतंत्र को नीचे मूल स्तर (Grass root level) तक पहुँचाया है। स्थानीय स्वायत्त सरकारों में महिलाओं के लिए एक-तिहाई स्थान आरक्षित किए गए हैं। अनुसूचित जातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों के लिए भी स्थान आरक्षित किए गए हैं।
8. इन संस्थाओं को कार्यों सम्बन्धी तथा वित्त सम्बन्धी स्वायत्तता भी प्रदान की गई है।

5. श्रीलंकाई तमिलों की किन्हीं तीन माँगों का वर्णन कीजिए? उन्होंने अपनी माँगों के लिए किस प्रकार का संघर्ष किया?

उत्तर श्री लंकाई तमिलों की तीन माँगें—

1. क्षेत्रीय स्वायत्तता,
2. शिक्षा तथा रोजगार में समान अवसर,
3. तमिल को राजभाषा बनाने की माँग।

श्रीलंकाई तमिलों का स्वतंत्रता के लिए संघर्ष—श्रीलंका का इतिहास विश्व का दूसरा सबसे पुराना निरन्तर लिखित इतिहास माना जाता है, मगर इतिहास और धार्मिक दंतकथाओं ने देश में जातीय विवाद में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। विवाद का प्रमुख युद्ध था कि श्रीलंका में पहले आकर कौन बसे थे—तमिल या सिंहली।

सन् 16वीं शताब्दी में पुर्तगाली व्यापारियों ने यहाँ पहुँचना शुरू किया। उनके बाद डच और फिर ब्रितानी व्यापारियों का प्रभाव देश पर बढ़ने लगा। सन् 1815 में ब्रिटेन ने श्रीलंका पर पूरी तरह कब्जा कर लिया और बागान पर आधारित अर्थव्यवस्था कायम की। लंबे राजनीतिक आन्दोलन के बाद सन् 1931 में श्रीलंका को स्वशासन का अधिकार प्राप्त हुआ और 4 फरवरी 1948 को देश स्वतन्त्र हुआ।

तमिलों की समस्या—ब्रिटेन ने 'बाँटो और राज करो' की नीति के द्वारा तमिलन और सिंहला समुदाय के बीच तनाव को और गहरा बना दिया। ब्रिटेन उपनिवेशों ने तमिलनों को प्रशासन में उनकी जनसंख्या से कहीं बड़े अनुपात में बड़ी नौकरियाँ दीं।

श्रीलंका भी आजादी के बाद सिंहला राजनीतिज्ञों ने संतुलन कायम करने के लिए, सिंहला जनता को खुश करने वाली नीतियाँ अपनाई और तमिलों के विरुद्ध भेदभाव की नीतियाँ अपनाई। सन् 1956 में सोलोमन बंडारनायके ने राष्ट्रीयवाद के मुद्दे पर चुनाव में बहुमत प्राप्त कर सिंहला को देश की आधिकारिक भाषा घोषित कर दी। इस फैसेल से सिंहला और तमिलों के बीच तनाव बढ़ गया। सन् 1970 के दशक के मध्य में तमिलन ने देश के पूर्वोत्तर क्षेत्रों को मिलाकर पृथक् तमिल राष्ट्र की माँग रखी। उन्होंने अपने राजनीतिक संगठन बनाए। सन् 1977 के चुनावों में तमिल युनाइटेड लिबरेशन फ्रण्ट ने तमिल इलाकों की सारी सीटें जीत लीं। वहीं लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिलईलम ने हिंसा का मार्ग अपनाया। सन् 1983 में तमिलों द्वारा 13 श्रीलंकाई सैनिकों की हत्या के बाद देश में जातीय हिंसा भड़क उठी। कोलम्बो में सैकड़ों तमिल मारे गए और लगभग एक लाख तमिल भागकर भारत पहुँच गए। TULF के सांसदों को संसद से निकाल दिया गया और चरमपंथी गुटों का खात्मा करने के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्रों में सैनिक कार्रवाई शुरू की। परिणामस्वरूप श्रीलंका में गृह युद्ध हुआ।

❑❑❑

2

संघवाद

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संघवाद की किन्हीं चार विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर संघवाद की चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) यहाँ सरकार दो या दो से अधिक स्तरों वाली होती है।

(ii) विभिन्न स्तर की सरकारें एक ही नागरिक समूह पर शासन करती हैं, परंतु कानून बनाने, कर वसूलने एवं प्रशासनिक कार्यों पर दोनों का अपना-अपना **अधिकार क्षेत्र** होता है।

(iii) संविधान, सरकार के प्रत्येक स्तर के अस्तित्व और प्राधिकार की गारंटी और सुरक्षा देता है।

(iv) संविधान में संशोधन पर मौलिक प्रावधानों को केवल संघ परिवर्तित नहीं कर सकता, ऐसे परिवर्तन करने के लिए संघ एवं राज्य दोनों स्तर की सरकारों की सहमति की आवश्यकता होती है।

2. संघीय शासन व्यवस्था प्रमुख रूप से कितने माध्यमों से गठित होती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर राज्य और केंद्र सरकारों के बीच सत्ता का बँटवारा प्रत्येक संघीय सरकार में अलग-अलग माध्यमों से होता है। संघीय शासन व्यवस्था प्रमुख रूप से दो माध्यमों से गठित होती है—

(i) इस माध्यम में दो या दो से अधिक स्वतंत्र राष्ट्रों साथ मिलकर एक बड़ी इकाई का निर्माण करते हैं। दोनों स्वतंत्र राष्ट्र अपनी संप्रभुता को साथ रखते हैं एवं अपनी अलग-अलग पहचान को भी बनाए रखते हैं और अपनी सुरक्षा तथा खुशहाली को बढ़ावा देते हैं; जैसे— संयुक्त राज्य अमेरिका, स्विट्जरलैंड और ऑस्ट्रेलिया।

(ii) दूसरे, राज्यों की अपेक्षा केंद्र सरकार अधिक शक्तिशाली होती है। यदि कोई बड़े देश द्वारा अपनी आंतरिक विविधता के कारण राज्यों का गठन करता है और फिर राज्य और संघ सरकार के बीच सत्ता का बँटवारा होता है, तो संघीय शासन का गठन होता है; जैसे-भारत, बेल्जियम तथा स्पेन।

3. संघीय व्यवस्था बनाम एकात्मक शासन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर संघीय शासन में सरकारें अपने-अपने स्तर पर स्वतंत्र होकर अपना कार्य करती हैं। इस अर्थ में संघीय शासन व्यवस्था एकात्मक शासन से ठीक विपरीत है। इस शासन व्यवस्था में शासन का एक ही स्तर होता है और शेष इकाइयाँ उसके अधीन होकर कार्य करती हैं।

संघीय व्यवस्था में केंद्रीय सरकार प्रांतीय या स्थानीय सरकारों को आदेश दे सकती है, परंतु केंद्रीय सरकार, राज्य सरकार को कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य करने का आदेश नहीं दे सकती। राज्य सरकारों के पास अपनी शक्तियाँ होती हैं और इसके लिए वह केंद्रीय सरकार को जवाबदेह नहीं होती हैं। ये दोनों ही सरकारें अपने-अपने स्तर पर लोगों को जवाबदेह होती हैं।

4. विकेन्द्रीकरण क्या है? इसके लिए भारतीय संविधान में क्या व्यवस्था दी गई है? किन्हीं चार का उल्लेख कीजिए।

उत्तर जब शक्तियाँ केंद्र सरकार और राज्य सरकार से लेकर स्थायी सरकारों को दी जाती हैं, तो उसे सत्ता का विकेंद्रीकरण कहते हैं। भारत में तीन स्तरीय सरकार केंद्र सरकार, राज्य सरकार तथा स्थानीय सरकार है। वर्ष 1992 के बाद स्थानीय स्वशासी निकायों के चुनाव कराना संवैधानिक बाध्यता हो गया है; जैसे—

- प्रत्येक राज्य में पंचायत और नगरपालिका चुनाव कराने के लिए राज्य चुनाव आयोग जैसी स्वतंत्र संस्था का गठन किया गया है।
- स्थानीय स्वशासी निकायों को राज्य सरकार को अपने राजस्व और अधिकारों का कुछ हिस्सा देना पड़ता है। इस प्रकार सत्ता की भागीदारी की प्रकृति प्रत्येक राज्य की अलग-अलग है।
- स्थानीय स्वशासी निकायों के सदस्य तथा पदाधिकारियों के पदों में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और पिछड़ी जातियों के लिए सीटें आरक्षित की गई हैं। स्थानीय निकायों में कम-से-कम एक-तिहाई पद महिलाओं के लिए भी आरक्षित किए गए हैं।

5. तीन सूचियाँ किसे कहा जाता है? किसी एक सूची का वर्णन कीजिए।

उत्तर संघीय शासन व्यवस्था में तीसरे स्तर के शासन को जोड़ा गया, जिसे पंचायत या नगरपालिका कहते हैं। भारतीय संविधान में स्पष्ट रूप से केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शक्तियों को तीन भागों में बाँटा गया है, जिसे हम तीन सूचियाँ भी कहते हैं—संघ या केंद्र सूची, राज्य सूची तथा समवर्ती सूची। इनमें से संघ सूची का वर्णन इस प्रकार है—

संघ सूची—इस सूची के अंतर्गत प्रतिरक्षा, विदेशी मामले, बैंकिंग, संचार और मुद्रा जैसे राष्ट्रीय महत्त्व के विषय आते हैं। संघ सूची के विषयों पर कानून बनाने का अधिकार केवल केंद्र सरकार को होता है।

6. जम्मू-कश्मीर के लिए विशेष स्थिति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर भारतीय संघ के सभी राज्यों को एक बराबर अधिकार प्राप्त नहीं है। भारतीय संघ में जम्मू-कश्मीर एकमात्र ऐसा राज्य है, जिसको विशेष राज्य का दर्जा प्राप्त है और इस राज्य का अपना संविधान है। जम्मू-कश्मीर के विधानसभा की अनुमति के बिना इस राज्य में भारतीय संविधान के प्रावधानों को लागू नहीं किया जा सकता। राज्य के स्थायी निवासियों के अतिरिक्त कोई भी भारतीय नागरिक इस राज्य में जमीन या मकान नहीं खरीद सकता। भारत के कई अन्य प्रदेशों के लिए भी कुछ ऐसे ही विशेष प्रावधान किए गए हैं।

7. केंद्र और राज्य सरकारों के मध्य सत्ता के बँटवारे को संक्षेप रूप से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर हमारा संविधान संघ और राज्य सरकार के मध्य सत्ता को साझा करने की सीमा को निर्धारित करता है। अधिकारों के इस बँटवारे या साझेदारी में परिवर्तन आसान नहीं है। अकेले संसद इस व्यवस्था में परिवर्तन नहीं कर सकती। ऐसे किसी भी परिवर्तन के लिए संसद के दोनों सदनों में दो-तिहाई बहुमत की मंजूरी होना आवश्यक है और फिर कम-से-कम आधे राज्यों की विधानसभाओं की मंजूरी होना भी आवश्यक है।

केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शक्तियों के बँटवारे से संबंधित कोई भी विवाद होने पर उन विवादों की सुनवाई उच्च न्यायालय तथा सर्वोच्च न्यायालय करता है। सरकार चलाने और अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करने के लिए राजस्व की उगाही के संबंध में केंद्र और राज्य सरकारों को कर लगाने और संसाधन जमा करने के अधिकार हैं।

8. भाषायी-नीति की प्रमुख विशेषताओं को बताइए।

उत्तर भाषायी-नीति की प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं—

- भारत के संघीय ढाँचे की दूसरी परीक्षा भाषा नीति थी। हमारे संविधान में किसी एक भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिया गया।
- हिंदी को राजभाषा माना गया पर भारत में केवल 40% लोगों की मातृभाषा हिंदी है।
- भारतीय संविधान में हिंदी के अतिरिक्त अन्य 21 भाषाओं को अनुसूचित भाषा का दर्जा दिया गया है। केंद्र सरकार के किसी पद का उम्मीदवार इनमें से किसी भी भाषा में परीक्षा दे सकता है।
- राज्यों की भी अपनी राजभाषाएँ होती हैं तथा इनका अधिकांश कार्य अपनी राजभाषा में ही होता है। वर्ष 1965 में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग सरकारी कार्य के लिए बंद कर दिया गया था।

9. भारत में भाषायी विविधता पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार, भारत में 1500 से अधिक अलग-अलग भाषाओं को मातृभाषा के रूप में दर्ज किया गया था। भोजपुरी, मगही, बुंदेलखंडी, छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी, भीली और इन भाषाओं से संबंधित दूसरी भाषाओं को भी हिंदी भाषा के अंदर जोड़ दिया गया है।

समूहबद्धता के बाद भी जनगणना में 114 प्रमुख भाषाएँ पाई गईं, जिनमें से 22 भाषाओं को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में रखा गया है और इसी कारण इन्हें अनुसूचित भाषा कहते हैं और शेष को गैर-अनुसूचित भाषा कहते हैं।

10. जिला परिषद् एवं नगर निगम पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।

उत्तर **जिला परिषद्** जिले की सभी पंचायत समितियों को मिलाकर जिला परिषद् का गठन किया जाता है। जिला परिषद् के अधिकतर सदस्यों का चुनाव होता है।

जिला परिषद् में उस जिले से चुने गए लोकसभा और विधानसभा के सांसद और विधायक तथा जिला स्तर की संस्थाओं के कुछ अधिकारी भी सदस्य होते हैं। जिला परिषद् का प्रधान, जिला परिषद् का राजनीतिक प्रधान होता है। शहरों में स्थानीय स्वशासन को नगरपालिका कहते हैं। इसी प्रकार बड़े शहरों में नगर निगम होता है।

नगरपालिका और नगर निगम दोनों स्तरों के कामकाज जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि करते हैं। नगरपालिका प्रमुख, नगरपालिका के राजनीतिक प्रधान होते हैं। नगर निगम के चुने गए प्रतिनिधि को मेयर (Mayor) कहते हैं। भारत में नगरपालिकाओं और ग्राम पंचायतों के लिए करीब 36 लाख लोगों का चुनाव होता है।

11. वर्ष 1992 में स्थानीय शासन व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा देने के बाद कौन-कौन से प्रावधान किए गए थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर वर्ष 1992 में स्थानीय शासन व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा देने के बाद निम्नलिखित प्रावधान किए गए थे—

- स्थानीय स्वशासी निकायों के चुनाव नियमित रूप से कराना संवैधानिक बाध्यता हो गई।
- स्वशासन निकायों के निर्वाचित सदस्य तथा पदाधिकारियों के पदों में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और पिछड़ी जातियों के लिए सीटें आरक्षित की गई।
- महिलाओं के लिए भी एक-तिहाई पद आरक्षित किए गए हैं।
- प्रत्येक राज्य में स्थानीय पंचायत और नगरपालिका चुनाव कराने के लिए राज्य चुनाव आयोग जैसी स्वतंत्र संस्था का गठन किया गया है।

12. पंचायती राज के नाम से किसे जाना जाता है? इसकी विशेषताओं को बताइए।

उत्तर गाँवों के स्तर पर उपस्थित स्थानीय शासन व्यवस्था को पंचायती राज के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक गाँव में एक ग्राम पंचायत होती है, जो एक तरह की परिषद् होती है। ग्राम पंचायत में कई सदस्य तथा एक अध्यक्ष होते हैं। सदस्य वार्डों से चुने जाते हैं, जिन्हें 'पंच' कहा जाता है तथा पंचायत अध्यक्ष को प्रधान या सरपंच कहते हैं। पंच तथा सरपंच का चुनाव गाँव अथवा वार्ड में रहने वाले सभी वयस्क लोग मतदान के द्वारा करते हैं। ग्राम पंचायतों का सभी काम ग्राम-सभा की देख-रेख में चलता है।

ग्राम पंचायत का बजट पास करने और पंचायतों के सभी कामकाज की समीक्षा करने के लिए पंचायतों में साल में कम-से-कम दो या तीन बार बैठक करनी होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. संघवाद की प्रमुख प्रवृत्तियों को संक्षेप रूप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर संघवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं—

- यहाँ सरकार दो या दो से अधिक स्तरों वाली होती हैं।
- विभिन्न स्तर की सरकारें एक ही नागरिक समूह पर शासन करती हैं, परंतु कानून बनाने, कर वसूलने एवं प्रशासनिक कार्यों पर दोनों का अपना-अपना अधिकार क्षेत्र होता है।
- संविधान, सरकार के प्रत्येक स्तर के अस्तित्व और प्राधिकार की गारंटी और सुरक्षा देता है।
- संविधान में संशोधन पर मौलिक प्रावधानों को केवल संघ परिवर्तित नहीं कर सकता, ऐसे परिवर्तन करने के लिए संघ एवं राज्य दोनों स्तर की सरकारों की सहमति की आवश्यकता होती है।

- ➲ अदालतों को संविधान और विभिन्न स्तर की सरकारों के अधिकारों की व्याख्या करने का अधिकार होता है। सर्वोच्च न्यायालय विवादों को सुलझाने के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- ➲ वित्तीय स्वायत्तता निश्चित करने के लिए विभिन्न स्तर की सरकारों के लिए राजस्व के अलग-अलग स्रोत निर्धारित हैं।
- ➲ संघीय शासन व्यवस्था के प्रमुख उद्देश्य देश की एकता की सुरक्षा करना और उसे बढ़ावा देना है।
- ➲ क्षेत्रीय विविधता का सम्मान करना चाहिए। आदर्श संघीय व्यवस्था में भरोसा और साथ रहने पर सहमति होनी चाहिए।

2. स्थानीय सरकारों के लिए सत्ता के विकेंद्रीकरण के समर्थन में दो तर्क दीजिए। वर्ष 1992 के संशोधन के अधीन दो प्रावधान लिखिए, जो भारत में स्थानीय सरकारों का सशक्तीकरण करते हैं।

उत्तर स्थानीय स्तर की सरकार के अंतर्गत गाँव में ग्राम पंचायतों और शहरों में नगरपालिकाओं की स्थापना की गई थी, परंतु इन्हें राज्य सरकारों के सीधे नियंत्रण में रखा गया था। स्थानीय सरकारों के लिए नियमित रूप से चुनाव भी नहीं कराए जाते थे। इस स्तर की सरकारों के पास अपना कोई अधिकार नहीं था। वर्ष 1992 में संविधान संशोधन कर स्थानीय शासन व्यवस्था को अधिक शक्तिशाली और प्रभावी बनाया गया तथा इसे इसी वर्ष संवैधानिक दर्जा भी दिया गया था।

वर्ष 1992 में स्थानीय शासन व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा देने के बाद निम्नलिखित प्रावधान किए गए थे—

- ➲ स्थानीय स्वशासी निकायों के चुनाव नियमित रूप से कराना संवैधानिक बाध्यता हो गई।
- ➲ स्वशासन निकायों के निर्वाचित सदस्य तथा पदाधिकारियों के पदों में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और पिछड़ी जातियों के लिए सीटें आरक्षित की गईं।
- ➲ महिलाओं के लिए भी एक-तिहाई पद आरक्षित किए गए हैं।
- ➲ प्रत्येक राज्य में स्थानीय पंचायत और नगरपालिका चुनाव कराने के लिए राज्य चुनाव आयोग जैसी स्वतंत्र संस्था का गठन किया गया है।

3. संघवाद क्या है? भारत के संघीय ढाँचे की चार विशेषताएँ बताइए।

उत्तर **संघवाद की अवधारणा**—संघवाद एक ऐसी शासन व्यवस्था है, जिसमें शासन की सभी शक्तियों का केंद्रीय सरकार तथा प्रांतीय (राज्य) सरकारों के बीच बँटवारा कर दिया जाता है। संघीय शासन व्यवस्था में दो स्तरों की सरकारें होती हैं—

(i) प्रथम स्तर की सरकार पूरे देश के लिए होती है, जिसके अधीन राष्ट्रीय महत्त्व के विषय होते हैं, उसे **संघीय सरकार** (Union Government) कहते हैं।

(ii) दूसरे स्तर की सरकारें को **राज्य या प्रांतों की सरकार** (State Government) कहते हैं, जो शासन के दैनिक कार्य को देखती है।

भारत एक संघीय देश है जिसकी निम्न पाँच विशेषताएँ इस प्रकार हैं

(i) सत्ता का बँटवारा—संविधान स्पष्ट रूप से शक्तियों को तीन स्तर पर बाँटती है— केंद्र या संघ सूची, राज्य सूची तथा समवर्ती सूची।

(ii) शासन का तीन स्तरीय व्यवस्था—संघीय व्यवस्था के अंतर्गत अलग-अलग स्तर की सरकारें एक ही स्तर के नागरिकों पर शासन करती हैं। इस प्रकार शासन के तीन स्वरूप होते हैं-केंद्र सरकार, राज्य सरकार तथा स्थानीय सरकार।

(iii) असमान अधिकारों का वितरण—सभी प्रशासनिक इकाइयों को समान अधिकार प्राप्त नहीं होता है। संघीय व्यवस्था में सबको साथ लेकर चलना होता है, परंतु सभी साथी इकाइयों को बराबर का अधिकार नहीं होता।

(iv) सरकार की दोनों स्तरों की सहमति—संघीय शासन व्यवस्था में संविधान के मौलिक प्रावधानों को कोई एक स्तर की सरकार अकेले नहीं बदल सकती। यह व्यवस्था भारत में भी है। यहाँ भी संसद अकेले व्यवस्था में बदलाव नहीं कर सकती।

(v) क्षेत्र अधिकार—संघीय व्यवस्था में संवैधानिक प्रावधानों और कानूनों के क्रियान्वयन की देख-रेख में न्यायपालिका महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। केंद्र और राज्य के बीच शक्तियों के बँटवारे के संबंध में कोई विवाद होने पर फैसला उच्च न्यायालय तथा सर्वोच्च न्यायालय में ही होता है।

4. सरकार पंचायती राज संस्थाओं पर कैसे नियंत्रण रखती है?

उत्तर सरकार पंचायती राज संस्थाओं पर नियंत्रण रखती है और उन्हें आदेश भी देती है। राज्य सरकार निम्नलिखित ढंग से पंचायती राज की संस्थाओं पर नियंत्रण रखती है—

- ➲ पंचायती राज की संस्थाओं की स्थापना राज्य सरकार द्वारा की जाती है और इस संस्थाओं के संगठन, कार्य तथा क्षेत्र का निर्धारण सरकार द्वारा ही किया जाता है।
- ➲ पंचायती राज संस्थाएँ नीति-निर्माण में स्वतंत्र नहीं हैं। इन संस्थाओं द्वारा पास किए गए प्रस्तावों और नीतियों पर सरकार की स्वीकृति लेनी पड़ती है।
- ➲ पंचायती राज संस्थाओं के सभी प्रथम अधिकारियों की नियुक्ति सरकार द्वारा की जाती है।
- ➲ सरकार या उसका अधिकार पंचायती राज संस्थाओं को अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए आदेश दे सकता है।
- ➲ पंचायती राज संस्था वित्त के मामले में आत्मनिर्भर नहीं है। इन संस्थाओं को सरकार से अनुदान प्राप्त होता है।
- ➲ सरकार डिप्टी कमिश्नर के माध्यम से पंचायत और पंचायत समिति के बजट पर नियंत्रण करवाती है।
- ➲ विशेष परिस्थितियों में पंचायती राज संस्थाओं को सरकार निलंबित या भंग कर सकती है।

❑❑❑

3

जाति, धर्म और लैंगिक मसले

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लिंग विभाजन किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर लिंग विभाजन सामाजिक विभाजन का एक रूप है, जिसके अंतर्गत समाज पुरुषों और महिलाओं के लिए असमान भूमिकाएँ निर्धारित करता है। श्रम का लैंगिक विभाजन अधिकांश परिवारों में दिखाई देता है।

उदाहरण स्वरूप; घर के अंदर के सभी कार्य परिवार की महिलाएँ करती हैं; जैसे-खाना बनाना, सफाई करना, कपड़े धोना और बच्चों की देख-रेख करना आदि, जबकि पुरुष घर के बाहर के कार्य करते हैं। ऐसा नहीं है कि पुरुष घर के कार्य नहीं कर सकते, बल्कि वे सोचते हैं कि घर के कार्य करना महिलाओं की जिम्मेदारी है।

जब इन कार्यों के लिए पुरुषों को भुगतान किया जाता है, तब पुरुष इन्हें व्यवसाय के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। अधिकांश दर्जी या होटल के रसोइए पुरुष होते हैं। दूसरी ओर, ऐसा नहीं है कि महिलाएँ बाहर का कार्य नहीं करती हैं। महिलाएँ खेतों में, कार्यालयों में प्रत्येक स्थान पर कार्य करती हैं। वे घरेलू श्रम के रूप में भी कार्य करती हैं, जो मान्यता प्राप्त नहीं है।

2. निजी और सार्वजनिक विभाजन के परिणामों को संक्षेप रूप से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर निजी और सार्वजनिक विभाजन के परिणाम निम्नलिखित हैं—

- श्रम विभाजन का परिणाम यह है कि अधिकांश समाजों में सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भूमिका नगण्य है। पहले केवल पुरुषों को ही राजनीति में भागीदारी करने की अनुमति थी, इसलिए, धीरे-धीरे राजनीति में लैंगिक मुद्दे उठाए गए। विश्व के विभिन्न भागों में महिलाओं ने संगठन बनाए और समान अधिकार प्राप्त करने के लिए आंदोलन किए।
- कट्टरपंथी महिलाओं ने व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में समानता के उद्देश्य से आंदोलन किया, जिसे नारीवादी आंदोलन कहा गया।
- ये आंदोलन महिलाओं के लिए समान मताधिकारों के साथ-साथ शैक्षिक और कैरियर के उचित अवसरों के लिए किए गए थे। नव-विकसित राजनीति ने समाज में महिलाओं की भूमिका को उचित बनाने में मदद की।

3. भारत में महिलाएँ किस तरीके से भेदभाव का सामना कर रही है? इस संदर्भ में कोई दो बिंदु स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत में महिलाएँ विभिन्न तरीकों से भेदभाव का सामना कर रही हैं

- **साक्षरता दर**—पुरुषों की तुलना में महिलाओं की साक्षरता दर कम है। जनगणना 2011 के अनुसार, कुल साक्षरता दर 74.04% है, जिसमें पुरुषों की साक्षरता दर 82.14% और महिलाओं की साक्षरता दर 65.46% है। स्कूलों और कॉलेजों में लड़कियों का ड्रॉपआउट रेट (बीच में पढ़ाई छोड़ने का प्रतिशत) अधिक है, क्योंकि माता-पिता लड़कों की पढ़ाई में व्यय करने को प्राथमिकता देते हैं।
- **अनपेड कार्य**—भारत में औसतन एक महिला एक पुरुष की तुलना में प्रतिदिन एक घंटा अधिक कार्य करती है, लेकिन उन्हें घर पर कार्य करने के लिए भुगतान नहीं किया जाता है।

4. सांप्रदायिकता किसे कहते हैं, यह समस्या कब महत्त्वपूर्ण होती है?

उत्तर सांप्रदायिकता ऐसी स्थिति है, जब एक विशेष समुदाय अन्य समुदायों की लागत पर अपने हितों को बढ़ावा देने की कोशिश करता है। यह समस्या तब अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है, जब—

- राजनीति में धर्म को अनन्य और पक्षपातपूर्ण शब्दों में व्यक्त किया गया है।
- एक धर्म और उसके अनुयायी दूसरों के विरुद्ध हो।
- एक धर्म के विचारों को दूसरों से श्रेष्ठ माना जाने लगता है। एक धार्मिक समूह की माँग दूसरे समूहों के विरोध में है। राज्य सत्ता का सदुपयोग शेष हिस्सों पर एक धार्मिक समूह के वर्चस्व को स्थापित करने के लिए किया जाता है।

5. राजनीति में सांप्रदायिकता के रूपों को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर सांप्रदायिकता, राजनीति में अनेक रूप धारण करती है; जैसे—

- सांप्रदायिकता की सबसे सामान्य अभिव्यक्ति हमारे दैनिक जीवन में दिखाई देती है। इसमें धार्मिक पूर्वाग्रह, धार्मिक समुदायों के विषय में बनी हुई धारणाएँ और एक धर्म को दूसरे धर्म से श्रेष्ठ मानने की मान्यताएँ शामिल हैं।
- सांप्रदायिक सोच हमेशा अपने धार्मिक समुदाय का राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने की कोशिश में रहती है। इस प्रकार समाज के जो लोग बहुसंख्यक समुदाय के होते हैं, उनकी यह कोशिश बहुसंख्यकवाद का रूप ले लेती है और जो अल्पसंख्यक समुदाय के होते हैं, उनमें यह विश्वास अलग राजनीतिक संगठन बनाने की इच्छा का रूप ले लेता है।
- धर्म के आधार पर राजनैतिक गठबंधन भी सांप्रदायिकता का एक रूप है। एक धर्म के अनुयायियों को एक साथ राजनैतिक दायरे में लाने के लिए पवित्र चिह्नों,
  धार्मिक गुरुओं, भावनात्मक अपील आदि का प्रयोग किया जाता है।

6. जाति पर आधारित 'निर्वाचन' होने से क्या हानियाँ हैं? किन्हीं दो हानियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर राजनीति में जाति के नकारात्मक पहलू निम्नलिखित हैं—

- उम्मीदवारों का चयन करते समय पार्टियाँ मतदाताओं की जाति को ध्यान में रखती हैं।
- जब सरकारें बनती हैं, तो राजनीतिक दलों को सामान्यत: यह ध्यान रखना पड़ता है कि विभिन्न जातियों और जनजातियों के प्रतिनिधियों को उचित जगह दी जाए है।
- दलों के लिए प्रचार करते समय राजनीतिक नेता अपने समुदाय से समर्थन प्राप्त करने के लिए जातिगत भावनाओं को विशेष स्थान देते हैं।
- कुछ राजनीतिक दलों को कुछ जातियों के मददगार और उनके प्रतिनिधियों के रूप में देखा जाता है।

7. राजनीति में जाति के सकारात्मक पहलू को महत्त्वपूर्ण बिंदुओं द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर राजनीति में जाति के सकारात्मक पहलू निम्नलिखित हैं—

- सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार और एक व्यक्ति के एक मत की व्यवस्था ने राजनीतिक दलों को विवश किया कि वे राजनीतिक समर्थन पाने के लिए सक्रिय हो।
- देश के किसी भी संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में एक ही जाति का स्पष्ट बहुमत नहीं है। प्रत्येक पार्टी को चुनाव जीतने के लिए एक से अधिक जाति और एक से अधिक समुदाय के लोगों का विश्वास जीतने की जरूरत है।
- कोई भी पार्टी किसी एक जाति या समुदाय के सभी लोगों का वोट प्राप्त नहीं कर सकती। कई राजनीतिक पार्टियाँ एक ही जाति के उम्मीदवारों को प्रस्तुत कर सकती हैं।

8. भारतीय विधायिकी संस्थाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की क्या दशा है?

उत्तर भारतीय विधायिकी संस्थाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की निम्नलिखित दशा है; जैसे—

- भारत की विधायिका में महिला प्रतिनिधियों का अनुपात बहुत कम है। लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या पहली बार वर्ष 2009 में 10% के ऊपर गई थी।
- वर्ष 2009 में राज्यों की विधानसभाओं में महिला प्रतिनिधियों की संख्या 5% से भी कम थी।
- इस संबंध में, भारत में महिला प्रतिनिधियों की संख्या अफ्रीका और लातिन अमेरिका के कई विकासशील देशों से भी पीछे है। यहाँ तक कि जब महिला मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री बन जाती है, तब तक कैबिनेट में बड़े पैमाने पर पुरुषों का वर्चस्व रहता है। इस समस्या को सुलझाने के लिए भारत ने स्थानीय सरकारी निकायों; जैसे-पंचायत और नगरपालिकाओं में महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटें आरक्षित की हैं। इसके परिणामस्वरूप अब ग्रामीण और शहरी स्थानीय निकायों में 10 लाख से अधिक निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या है।

9. ''सांप्रदायिकता से मुकाबला करने की तुरंत जरूरत है।'' व्याख्या कीजिए।

उत्तर सांप्रदायिक राजनीति इस सोच पर आधारित होती है कि धर्म ही सामाजिक समुदाय का निर्माण करता है; जैसे—

- सांप्रदायिक सोच अक्सर अपने धार्मिक समुदाय का राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने की तलाश में रहती है, जो लोग बहुसंख्यक समुदाय के होते हैं, उनकी यह कोशिश बहुसंख्यक का रूप ले लेती है, जो अल्पसंख्यक समुदाय के होते हैं, उनमें यह विश्वास अलग राजनीतिक इकाई बनाने की इच्छा का रूप ले लेता है।
- एक विशेष धर्म में आस्था रखने वाले लोग एक ही समुदाय के हों। उनके मौलिक हित एक जैसे होते हैं तथा समुदाय के लोगों के आपसी मतभेद सामुदायिक जीवन में यह बात भी शामिल है कि किसी अलग धर्म को मानने वाले लोग दूसरे सामाजिक समुदाय का हिस्सा नहीं हो सकते।
- सांप्रदायिकता भारत में सिर्फ कुछ लोगों के लिए ही एक खतरा नहीं है। यह भारत की बुनियादी अवधारणा के लिए चुनौती है, एक खतरा है। इसलिए सांप्रदायिकता से मुकाबला करना जरूरी है।
- कई बार सांप्रदायिकता सबसे गंदा रूप लेकर संप्रदाय के आधार पर हिंसा, दंगे और नरसंहार करती है; जैसे—उत्तर प्रदेश, बिहार, गुजरात आदि राज्यों में सांप्रदायिक दंगे।

10. गाँधीजी के द्वारा दलितों को उनके अधिकारों को दिलाने के लिए किए गए तीन प्रयासों का वर्णन कीजिए।

उत्तर गाँधीजी के द्वारा दलितों को उनके अधिकारों को दिलाने के लिए निम्नलिखित तीन प्रयास किए गए थे; जैसे—

(i) गाँधीजी ने दलितों (हरिजनों) को ईश्वर की संतान बताया था।

(ii) दलितों को सार्वजनिक स्थानों, मंदिरों, तालाबों, कुओं तथा सड़कों पर समान अधिकार दिलाने के लिए सत्याग्रह किया।

(iii) अस्पृश्यता का अंत करने के लिए उन्होंने उच्च जातियों के लोगों से आग्रह किया।

11. राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में सुधार लाने के लिए किन्हीं तीन कदमों का सुझाव दीजिए।

उत्तर राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में सुधार लाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं; जैसे—

- निर्वाचित संस्थाओं में महिलाओं के लिए कानूनी रूप से एक उचित हिस्सा तय कर देना चाहिए।
- महिलाओं के लिए महिला आरक्षण के अंतर्गत लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में कुछ सीटें आरक्षित कर देनी चाहिए।
- राजनीति में भी राजनीतिक पार्टियाँ महिलाओं के लिए प्रतिनिधित्व का उचित हिस्सा दें।
- महिलाओं में साक्षरता दर को भी बढ़ाया जाना चाहिए।

12. भारत में अभी भी महिलाओं को विभिन्न तरीकों से भेदभाव और अपराधों का सामना किस प्रकार करना पड़ता है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर जनगणना 2011 के अनुसार महिलाओं में साक्षरता दर मात्र 65.46% है, जबकि पुरुषों में यह अनुपात 82.14% है। इसी प्रकार लड़कियों की एक सीमित संख्या ही उच्च शिक्षा की ओर कदम बढ़ा पाती है, क्योंकि माँ-बाप अपने संसाधनों को लड़के-लड़की दोनों पर बराबर खर्च करने की अपेक्षा लड़कों पर अधिक खर्च करते हैं। भारतीय

समाज में माँ-बाप को केवल लड़कों की चाह होती है। इसी प्रकार लड़कियों को जन्म देने से पहले ही खत्म करने की मानसिकता रहती है, जिसके कारण भारत में प्रति हजार लड़कों पर लड़कियों की संख्या मात्र 940 रह गई है।

भारतीय समाज में महिलाओं के साथ उत्पीड़न, शोषण और उन पर होने वाली हिंसा की खबरें हमें रोज देखने एवं सुनने को मिलती हैं। महिलाएँ आज घरों में भी सुरक्षित नहीं हैं, क्योंकि वहाँ भी उन्हें मारपीट तथा अनेक तरह की घरेलू हिंसा देखनी पड़ती है। ऊँचे वेतन तथा ऊँचे पदों पर पहुँचने वाली महिलाओं का औसत बहुत कम है। भारत में स्त्रियाँ पुरुषों से औसतन प्रतिदिन एक घंटा अधिक काम करती हैं, परंतु उन्हें पुरुषों के मुकाबले कम वेतन दिया जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारतीय समाज सिर्फ जाति पर आधारित है? वर्णन कीजिए।

उत्तर भारत में जातिवाद की प्रबलता की पाँच विशेषताएँ निम्नलिखित हैं; जैसे—

(i) शादी-विवाह, काम-काज तथा खान-पान के उद्देश्यों के लिए सामाजिक समूहों में लोगों का संगठन जातिवाद कहलाता है।

(ii) भारत का सामाजिक ढाँचा जातिवाद पर आधारित है। सभी समाजों कीं कुछ सामाजिक असमानताएँ और किसी-न-किसी तरह का श्रम विभाजन मौजूद होता है। अधिकतर समाजों में पेशा परिवार की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाता है, लेकिन जाति व्यवस्था उसका एक अतिवादी और स्थायी रूप है।

(iii) एक जाति समूह के लोग एक या मिलते-जुलते पेशों के तो होते ही हैं, साथ ही उन्हें एक अलग सामाजिक समुदाय के रूप में भी देखा जाता है। अन्य जाति समूहों में उनके बच्चों की न तो शादी हो सकती है, न महत्त्वपूर्ण पारिवारिक और सामुदायिक आयोजनों में उनकी पंक्ति में बैठकर दूसरी जाति के लोग भोजन कर सकते हैं।

(iv) अन्य समाजों में मौजूद असमानताओं से यह एक खास अर्थ में भिन्न है। इसमें पेशों के वंशानुगत विभाजन को रीति- रिवाजों की मान्यता प्राप्त है।

(v) भारतीय जाति प्रथा और आर्थिक सामर्थ्य में भी बहुत निकट संबंध है।

2. भारत में जातिवाद की प्रबलता की पाँच विशेषताएँ बताइए।

उत्तर दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 1 का उत्तर देखें।

3. उन कारणों का वर्णन कीजिए, जो समाज में लैंगिक असमानता को बढ़ावा देता है?

उत्तर हमारे समाज में लैंगिक असमानता को बढ़ावा देने वाले निम्नलिखित कारण हैं

- भारत में श्रम का लैंगिक विभाजन कर दिया गया है। लैंगिक विभाजन द्वारा तय किया गया कि महिलाएँ केवल घर का काम-काज करेंगी और पुरुष घर के बाहर सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करेंगे। ऐसे में महिलाओं के श्रम का कोई मूल्य नहीं होता।
- सरकार ने बाल विवाह के विरुद्ध कानून पास कर रखे हैं, किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में बाल विवाह की घटनाएँ अभी भी सुनने को मिलती हैं।
- आज भी समाज में बालिकाओं की अनेक प्रकार से अवहेलना की जाती है। लड़के के जन्म पर खुशियाँ मनाई जाती हैं, वहीं लड़की का जन्म लेना परिवार के लिए दु:ख का कारण बन जाता है। आज भी भारत के बहुत से भागों में यदि कोई महिला विधवा होती, तो उसे पुनर्विवाह करने की आज्ञा नहीं दी जाती है।
- भारत की विधायिकाओं में महिला प्रतिनिधियों का अनुपात बहुत कम है। भारत इस मामले में अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के कई विकासशील देशों से पीछे है। इस प्रकार सार्वजनिक जीवन खासकर राजनीति में उनकी भूमिका नगण्य है।

4. भारतीय संविधान के किन्हीं चार प्रावधानों का उल्लेख कीजिए जिनके कारण भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य बना है,

उत्तर भारतीय संविधान के चार प्रावधान निम्नलिखित हैं, जिनके कारण भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य बना है; जैसे—

- **राज्य का कोई धर्म नहीं**—भारतीय राज्य ने किसी भी धर्म को राजकीय धर्म के रूप में स्वीकार नहीं किया है, जबकि श्रीलंका में बौद्ध धर्म, पाकिस्तान में इस्लाम धर्म तथा इंग्लैंड में ईसाई धर्म को राजकीय धर्म के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- **नागरिकों को मौलिक अधिकार**—भारतीय संविधान देश के सभी नागरिकों को किसी भी धर्म का पालन करने और प्रचार करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।
- **नागरिक समानता**—भारतीय संविधान नागरिकों को धार्मिक समानता सुनिश्चित करने के लिए शासन को धार्मिक मामलों में दखल देने का अधिकार देता है। जैसे-समाज में छुआछूत की अनुमति नहीं देता।
- **धर्म में राज्य का दखल**—भारतीय संविधान धार्मिक समुदायों में समानता सुनिश्चित करने के लिए शासन को धार्मिक मामलों में दखल देने का अधिकार देता है।

❑❑❑

4

राजनीतिक दल

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. राजनीतिक दल के किन्हीं चार कार्यों को बताइए।

उत्तर राजनीतिक दल राजनीतिक पदों को भरते हैं और राजनीतिक सत्ता का प्रयोग या कार्य निम्नलिखित रूप से करते हैं; जैस—

- राजनीतिक दल का मुख्य कार्य चुनाव लड़ना है। अधिकांश लोकतांत्रिक देशों में चुनाव राजनीतिक दलों द्वारा खड़े किए गए उम्मीदवारों के मध्य संपन्न होते हैं। ये उम्मीदवार पार्टी के सबसे वरिष्ठ नेता या पार्टी के सदस्यों द्वारा चुने जाते हैं। अमेरिका जैसे कुछ लोकतांत्रिक देशों में उम्मीदवार का चुनाव दल के सदस्य और समर्थक करते हैं।
- राजनीतिक दल नीतियों और कार्यक्रमों को मतदाताओं के सामने रखते हैं और मतदाता अपनी पसंद की नीतियाँ और कार्यक्रम चुनते हैं।
- राजनीतिक दल देश के लिए कानून बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कोई भी कानून तब तक बिल नहीं बन सकता जब तक बहुमत पार्टी इसे समर्थन नहीं देती।
- राजनीतिक दल सरकार बनाते और चलाते हैं, साथ-ही-साथ नीतियों और बड़े फैसलों के मामले में निर्णय नेता ही लेते हैं और ये नेता विभिन्न दलों के होते हैं।

2. जनमत बनाने में राजनीतिक दल किस प्रकार मदद करते हैं?

उत्तर जनमत बनाने में राजनीतिक दल निम्नलिखित रूप से मदद करते हैं—

- राजनीतिक दल जनसंचार के द्वारा जनता के विभिन्न मसलों को उठाते हैं और महत्ता प्रदान करते हैं।
- देशभर में राजनीतिक दलों के लाखों सदस्य तथा कार्यकर्ता होते हैं।
- समाज के विभिन्न भागों में कई दबाव समूह राजनीतिक पार्टियों की शाखा के रूप में कार्य करते हैं।

3. राजनीतिक दलों की आवश्यकता क्यों होती है? कोई तीन महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

- राजनीतिक दलों की आवश्यकता इसलिए होती है, क्योंकि ये अनके कार्य करते हैं। राजनीतिक दलों के बिना आधुनिक लोकतंत्र मौजूद नहीं हो सकता। दलों के अस्तित्व के बिना निम्न स्थितियाँ हो सकती हैं
- चुनाव में प्रत्येक उम्मीदवार स्वतंत्र होगा और किसी भी बड़े नीति परिवर्तन के बारे में लोगों को कोई भी वादा करने में सक्षम नहीं होगा।
- सरकार का गठन तो हो सकता है, लेकिन इसकी उपयोगिता हमेशा अनिश्चित रहेगी। किसी क्षेत्र में क्या कार्य करना है, इसके लिए निर्वाचित प्रतिनिधि अपने निर्वाचन क्षेत्र के लिए उत्तरदायी हो सकते हैं, लेकिन देश कैसे चलाया जाएगा, इसके लिए कोई भी उत्तरदायी नहीं होगा।

4. राजनीतिक पार्टी प्रणाली को कितनी श्रेणियों में विभाजित किया जाता है? किन्हीं दो श्रेणियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर विश्व के विभिन्न देशों की पार्टी व्यवस्था अलग-अलग है। राजनीतिक पार्टी प्रणाली को निम्नलिखित दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—

(i) एकदलीय शासन व्यवस्था (One-Party System)—इस व्यवस्था में केवल एक पार्टी को सरकार नियंत्रित करने की अनुमति है।

चीन में इसी प्रकार की पार्टी व्यवस्था है। यहाँ केवल कम्युनिस्ट पार्टी को शासन करने की अनुमति है। लोकतंत्र के लिए यह प्रणाली एक अच्छा विकल्प नहीं है, क्योंकि यह प्रतिस्पर्द्धी पार्टियों को सत्ता हासिल करने का एक उचित अवसर प्रदान नहीं करती है।

(ii) दो दलीय शासन व्यवस्था (Two-Party System)—इस व्यवस्था में दो पार्टियों को बहुमत हासिल करने और सरकार बनाने का अवसर मिलता है। सामान्यत: दो मुख्य पार्टियों के मध्य शक्ति विभाजन होता है संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम में इसी प्रकार की शासन व्यवस्थाएँ हैं।

5. राजनीतिक दलों में लोकप्रिय भागीदारी के किन्हीं चार महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर राजनीतिक दल नागरिकों के बीच अलोकप्रियता और उदासीनता के संकट का सामना कर रहे हैं। कई दशकों में किए गए सर्वेक्षणों के आधार पर साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि—

- दक्षिणी एशिया की जनता राजनीतिक दलों पर भरोसा नहीं करती।
- राजनीतिक दलों के कामकाज में लोगों की भागीदारी का स्तर काफी ऊँचा है।
- कनाडा, जापान, स्पेन और दक्षिणी कोरिया जैसे कई उन्नत देशों की तुलना में कुछ राजनीतिक दल के सदस्यों का अनुपात भारत में उच्च है।
- पिछले तीन दशकों में भारत में राजनीतिक दलों और उनके सदस्यों के अनुपात में लगातार तेजी से वृद्धि हुई है।

6. भारत के किन्हीं दो महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय राजनीतिक दलों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत में वर्तमान में 7 राष्ट्रीय दल हैं, जिनमें से दो प्रमुख दल इस प्रकार हैं—

(i) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस—इसे कांग्रेस पार्टी के रूप में जाना जाता है, जो 1885 ई. में स्थापित विश्व के सबसे पुराने दलों में से

एक है। यह पार्टी कमजोर और अल्पसंख्यकों वर्गों की धर्मनिरपेक्षता तथा कल्याण को समर्थन करती है।

(ii) **भारतीय जनता पार्टी**—इस पार्टी की स्थापना वर्ष 1980 में *भारतीय जनसंघ* को पुनर्जीवित करके की गई थी। इस पार्टी का उद्देश्य भारत की प्राचीन संस्कृति और मूल्यों से प्रेरणा लेकर एक मजबूत और आधुनिक भारत का निर्माण करना है। यह वर्ष 1998 में कई राज्य और क्षेत्रीय दलों सहित राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के नेता के रूप में सत्ता में आई थी।

7. भारतीय जनता पार्टी का गठन कब हुआ? इसके प्रमुख सिद्धांत क्या हैं?

उत्तर भारतीय जनसंघ पार्टी को पुनर्जीवित करके वर्ष 1980 में भारतीय जनता पार्टी बनाई गई थी।

- इस पार्टी का मुख्य लक्ष्य भारत की प्राचीन संस्कृति और मूल्यों से प्रेरणा लेकर मजबूत और आधुनिक भारत बनाना चाहती है।
- भारतीय राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद या हिंदुत्वाद एक प्रमुख तत्त्व है।
- यह पार्टी जम्मू और कश्मीर के क्षेत्रीय और राजनीतिक स्तर पर विशेष दर्जा देने के खिलाफ है।
- यह देश में रहने वाले सभी धर्म के लोगों के लिए समान नागरिक संहिता बनाने और धर्मांतरण पर रोक लगाने के पक्ष में है।

8. राष्ट्रीय दल एवं राज्य दल पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

- **राष्ट्रीय दल**—एक पार्टी जो चार राज्यों में लोकसभा चुनाव या विधानसभा चुनावों में कुल वोटों का कम-से-कम 6% हासिल करती है और लोकसभा में कम-से-कम 4 सीटें जीतती है, उसे राष्ट्रीय दल के रूप में मान्यता दी जाती है। आयोग सभी पार्टियों को समान रूप से मानता है, लेकिन यह बड़ी और स्थापित पार्टियों के लिए कुछ विशेष सुविधाएँ प्रदान करता है। इन दलों को एक अनूठा प्रतीक दिया जाता है, केवल उस पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार ही चुनाव प्रतीक का उपयोग कर सकते हैं। इस उद्देश्य के लिए चुनाव आयोग द्वारा इस विशेषाधिकार और कुछ अन्य विशेष सुविधाएँ प्राप्त करने वाली पार्टियाँ मान्यता प्राप्त हैं। यही कारण है कि इन पार्टियों को मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल कहा जाता है।
- **राज्य दल**—एक पार्टी जो एक राज्य की विधानसभा के चुनाव में कुल वोट का कम-से-कम 6% प्राप्त करती है और कम-से-कम 2 सीटें जीतती है, उसे राज्य दल के रूप में मान्यता दी जाती है। इन्हें आमतौर पर क्षेत्रीय पार्टियों के रूप में जाना जाता है, फिर भी ऐसी पार्टियों को उनकी विचारधारा या दृष्टिकोण में क्षेत्रीय नहीं होना चाहिए।

9. ''लगभग प्रत्येक प्रांतीय दल एक या दूसरे राष्ट्रीय स्तर की गठबंधन सरकार का हिस्सा बनने का अवसर चाहती हैं।'' तर्क देकर कथन का समर्थन करें।

उत्तर पिछले तीन दशकों में भारत में प्रांतीय दलों की संख्या और ताकत दोनों में वृद्धि हुई है, जिसके कारण भारतीय संसद विविधताओं से और भी अधिक संपन्न हुई है। किसी एक राष्ट्रीय दल का लोकसभा में बहुमत नहीं है, जिसके कारण राष्ट्रीय दल प्रांतीय दलों के साथ गठबंधन करने को मजबूर हुए हैं। हमारे देश में वर्ष 1996 के बाद से लगभग प्रत्येक प्रांतीय दल को एक या दूसरी राष्ट्रीय स्तर की गठबंधन सरकार का हिस्सा बनने का अवसर मिला है, जिसके कारण भारत में संघवाद और अधिक मजबूत हुआ है।

10. क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय दलों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय दलों में निम्नलिखित अंतर हैं

क्षेत्रीय दल	राष्ट्रीय दल
जब कोई पार्टी राज्य विधान सभा के चुनाव में पड़े कुल मतों का 6% या उससे अधिक हासिल करती है, तो उसे राज्य स्तर के दल या क्षेत्रीय दल की मान्यता प्राप्त होती है।	यदि कोई दल लोकसभा में पड़े कुल वोट का अथवा चार राज्यों के विधान सभा चुनाव में पड़े कुल वोटों का 6% वोट हासिल करता है और लोकसभा के चुनाव में कम-से-कम चार सीटों पर जीत हासिल करता है, तो उसे राष्ट्रीय दल की मान्यता दी जाती है।
क्षेत्रीय पार्टियाँ क्षेत्रीय स्तर पर काम करती हैं तथा इनका अस्तित्व भी क्षेत्रीय स्तर तक ही होता है।	राष्ट्रीय पार्टियाँ पूरे देश में कार्य करती हैं तथा उसका अस्तित्व भी पूरे राष्ट्र में फैला होता है।
क्षेत्रीय पार्टियाँ क्षेत्रीय स्तर के मुद्दे उठाती हैं।	राष्ट्रीय पार्टियाँ राष्ट्रीय स्तर के मुद्दे उठाती हैं।
क्षेत्रीय स्तर की प्रमुख पार्टियाँ राष्ट्रीय जनता दल, झारखंड मुक्ति मोर्चा, ए.डी.एम.के.,डी. एम. के. आदि।	राष्ट्रीय स्तर की प्रमुख पार्टियाँ इंडिया नेशनल कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी आदि।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. राजनीतिक दलों का क्या तात्पर्य है? लोकतन्त्र में राजनीतिक दलों की विभिन्न भूमिकाओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर राजनीतिक दल का अर्थ—राजनीतिक दल लोगों का ऐसा संगठित समूह है, जो चुनाव लड़ने और सरकार में राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के उद्देश्य से कार्य करता है। समाज के सामूहिक हित को ध्यान में रखकर यह समूह कुछ नीतियाँ और कार्यक्रम निर्धारित करता है। राजनीतिक दल, लोगों को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि उनकी नीतियाँ दूसरों की तुलना में उचित हैं। ये चुनावों के माध्यम से समर्थन पाकर अपनी नीतियाँ लागू करना चाहते हैं। राजनीतिक दल किसी समाज में मौलिक राजनीतिक विभाजन को दर्शाते है। सभी दलों ने समाज के कुछ हिस्सों का समर्थन किया है। किसी भी राजनीतिक दल में तीन मुख्य तत्त्व होते हैं; नेता, सक्रिय सदस्य एवं अनुयायी या समर्थक।

राजनीतिक दल राजनीतिक पदों को भरते हैं और राजनीतिक सत्ता का प्रयोग या कार्य निम्नलिखित रूप से करते हैं; जैसे—

- राजनीतिक दल का मुख्य कार्य चुनाव लड़ना है। अधिकांश लोकतांत्रिक देशों में चुनाव राजनीतिक दलों द्वारा खड़े किए गए उम्मीदवारों के मध्य संपन्न होते हैं। ये उम्मीदवार पार्टी के सबसे वरिष्ठ नेता या पार्टी के सदस्यों द्वारा चुने जाते हैं। अमेरिका जैसे कुछ लोकतांत्रिक देशों में उम्मीदवार का चुनाव दल के सदस्य और समर्थक करते हैं।
- राजनीतिक दल नीतियों और कार्यक्रमों को मतदाताओं के सामने रखते हैं और मतदाता अपनी पसंद की नीतियाँ और कार्यक्रम चुनते हैं।
- राजनीतिक दल देश के लिए कानून बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कोई भी कानून तब तक बिल नहीं बन सकता जब तक बहुमत पार्टी इसे समर्थन नहीं देती।
- राजनीतिक दल सरकार बनाते और चलाते हैं, साथ-ही-साथ नीतियों और बड़े फैसलों के मामले में निर्णय नेता ही लेते हैं और ये नेता विभिन्न दलों के होते हैं।
- चुनाव में हारने वाले राजनीतिक दल शासक दल के विरोधी पक्ष (opposition) की भूमिका निभाते हैं।
- जनमत-निर्माण में राजनीतिक दल महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये मुद्दों को उठाकर उन्हें लोगों के सामने स्पष्ट करते हैं। राजनीतिक दल कई बार लोगों की समस्याओं को लेकर आंदोलन भी करते हैं।

2. राजनीतिक दलों की आवश्यकता क्या है?

उत्तर राजनीतिक दलों की आवश्यकता इसलिए होती है, क्योंकि ये अनके कार्य करते हैं। राजनीतिक दलों के बिना आधुनिक लोकतंत्र मौजूद नहीं हो सकता। दलों के अस्तित्व के बिना निम्न स्थितियाँ हो सकती हैं—

- चुनाव में प्रत्येक उम्मीदवार स्वतंत्र होगा और किसी भी बड़े नीति परिवर्तन के बारे में लोगों को कोई भी वादा करने में सक्षम नहीं होगा।
- सरकार का गठन तो हो सकता है, लेकिन इसकी उपयोगिता हमेशा अनिश्चित रहेगी। किसी क्षेत्र में क्या कार्य करना है, इसके लिए निर्वाचित प्रतिनिधि अपने निर्वाचन क्षेत्र के लिए उत्तरदायी हो सकते हैं, लेकिन देश कैसे चलाया जाएगा, इसके लिए कोई भी उत्तरदायी नहीं होगा।
- पंचायती चुनाव भारत के कई राज्यों में पंचायत के लिए गैर-पक्ष आधारित चुनाव हैं। हालाँकि पार्टियाँ औपचारिक रूप से चुनाव नहीं करती हैं।
- सामान्यत: यह देखा जाता है कि गाँव एक से अधिक समूहों में विभाजित हो जाता है और प्रत्येक समूह सभी पदों के लिए अपने उम्मीदवारों का पैनल उतारता है।
- यह राजनीतिक दल की उपस्थिति को आवश्यक बनाता है। समाज को एक ऐसे तंत्र की आवश्यकता है, जो सरकार का समर्थन करे, उस पर अंकुश रखे, नीतियाँ बनाए और उनका समर्थन करे। राजनीतिक दल इन्हीं सभी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ''राजनीतिक दल लोकतंत्र की एक अनिवार्य शर्त है।''

3. आधुनिक युग में राजनीतिक दलों को किन प्रमुख चुनौतियों का सामना पड़ता है? मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर आधुनिक युग में राजनीतिक दलों को निम्नलिखित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है—

- **पार्टी के अंदर लोकतंत्र की कमी**—वर्तमान समय में विश्व के सारे देशों में यह प्रवृत्ति बन गई है कि सारी ताकत एक या कुछ नेताओं के हाथों में सिमट गई है, जिसके कारण पार्टियों के पास न सदस्यों की खुली सूची होती है और न ही नियमित रूप से सांगठनिक बैठकें होती हैं। इनके आंतरिक चुनाव भी नहीं होते और कार्यकर्ताओं से वे सूचनाओं को साझा भी नहीं करते हैं।
- **वंशवाद की चुनौती**—भारत की अधिकतर राजनीतिक पार्टियों के सामने यह दूसरी महत्त्वपूर्ण चुनौती है, जो लोग नेता होते हैं, वे अनुचित लाभ लेते हुए अपने नजदीकी लोगों और यहाँ तक कि अपने ही परिवार के लोगों को आगे बढ़ाते हैं। अनेक दलों में शीर्ष पद पर हमेशा एक ही परिवार के लोग आते हैं।
- **पार्टियों के बीच विकल्प की कमी**—आधुनिक समय में पार्टियों के पास मतदाताओं को देने के लिए सार्थक विकल्प की कमी है। सार्थक विकल्प देने के लिए पार्टियों की नीतियों में अंतर होना चाहिए। हाल के वर्षों में विश्व के अधिकांश भागों में दलों के बीच वैचारिक अंतर कम हो गया है।

4. भारत में वंशवाद राजनीतिक दलों के लिए किस प्रकार चुनौती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत में वंशवाद राजनीतिक दलों के लिए निम्नलिखित रूप से चुनौती है—

- वंशवाद के कारण निचले स्तर के कार्यकर्ता शीर्ष पद पर नहीं पहुँच पाते हैं। यदि संसद में सभी संसद सदस्यों के आधारभूत आँकड़ों को देखा जाए, तो पता चलता है कि 50% से भी कम संसद सदस्य निचले स्तर से राजनीति में आए हैं, जबकि अधिकतर संसद महिलाएँ अपने पारिवारिक संबंधों के कारण ही राजनीति में आती हैं।
- राजनीति में वंशवाद के कारण अनेक पार्टियाँ शीर्ष नेता के लिए नियमित चुनाव कराने में भी असमर्थ रहती हैं।
- अधिकांश राजनीतिक दल अपना कामकाज पारदर्शी तरीके से नहीं करते, इसलिए सामान्य कार्यकर्ता के नेता बनने और ऊपर आने की गुजांइश काफी कम होती है।
- राजनीतिक दल में आंतरिक लोकतंत्र की कमी के लिए उत्तरदायी प्रमुख कारण वंशवाद है। आंतरिक लोकतंत्र की कमी के कारण कुछ नेता पार्टी के नाम पर निर्णय लेने का अधिकार हाथिया लेते हैं।
- जो लोग नेता होते हैं वे अनुचित लाभ लेते हुए अपने नजदीकी लोगों और यहाँ तक कि अपने ही परिवार के लोगों को आगे बढ़ाते हैं। अनेक दलों में शीर्ष पद पर हमेशा एक ही परिवार के लोग आते हैं।

5. भारत की चुनाव व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए कुछ उपायों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर भारत में राजनीतिक दलों में सुधार निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है—

- चुनाव का खर्च सरकार द्वारा उठाए जाने का प्रावधान होना चाहिए। देश में बहुत सारे लोगों का विचार है कि धन सत्ता के दुरुपयोग को रोकने के उद्देश्य से चुनावों का खर्च सरकार को वहन करना चाहिए।
- राजनीतिक दलों के आंतरिक कामकाज को व्यवस्थित करने के लिए कानून बनाया जाना चाहिए। सभी राजनीतिक दल अपने सदस्यों की सूची रखें, अपने संविधान का पालन करें, पार्टी में विवाद की स्थिति में एक स्वतंत्र अधिकारी को पंच बनाएँ। सबसे बड़े पदों के लिए खुला चुनाव कराएँ।
- यह देखा जाता है कि देश में बड़ी संख्या में प्रत्याशी चुनाव लड़ते हैं तथा कभी-कभी इसकी संख्या अधिक हो जाती है, जोकि चुनाव अधिकारी के लिए एक समस्या बन जाती है इसलिए गैर-संजीदा प्रत्याशियों को चुनाव लड़ने से रोकने के लिए हतोत्साहित करता है।
- राजनीतिक दलों में सुधार के लिए आम नागरिक दबाव समूह आंदोलन और मीडिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि अगर दलों को लगे कि सुधार न करने से उनका जनाधार गिरने लगेगा या उनकी छवि खराब हो जाएगी, तो इसे लेकर राजनीतिक पार्टियाँ गंभीर होने लगती हैं। इस प्रकार लोकतंत्र की गुणवत्ता लोगों की भागीदारी से तय होती है। यदि आम नागरिक स्वयं राजनीति में हिस्सा न लें और बाहर से ही बातें करते रहें तो सुधार संभव नहीं है।

6. ''प्रत्येक देश और प्रत्येक स्थिति कोई एक ही आदर्श प्रणाली चले, यह संभव नहीं है।''

चार तर्कों के साथ कथन की पुष्टि करें।

उत्तर ''प्रत्येक देश और प्रत्येक स्थिति कोई एक ही आदर्श प्रणाली चले, यह संभव नहीं है।'' इसके चार तथ्य निम्नलिखित हैं—

(i) विश्व के प्रत्येक देश अपनी विशेष परिस्थितियों के अनुरूप दलीय व्यवस्था विकसित करती हैं। जैसे-भारत में बहुदलीय व्यवस्था है, तो उसका प्रमुख कारण यह है कि दो-तीन पार्टियाँ इतने बड़े देश की सारी सामाजिक और भौगोलिक विविधताओं को समेट नहीं सकती हैं।

(ii) दलीय व्यवस्था का चुनाव करना किसी मनुष्य के हाथ में नहीं है। यह एक लंबे दौर के कामकाज के बाद स्वयं विकसित होती है और इसमें समाज की प्रकृति, इसके राजनीतिक विभाजन, राजनीति का इतिहास और इसकी चुनाव प्रणाली सभी चीजें अपनी भूमिका निभाती हैं। इसे बहुत जल्दी बदला नहीं जा सकता।

(iii) विश्व के कुछ देश में केवल एक पार्टी को सरकार नियंत्रित करने और चलाने की अनुमति है, जबकि वहाँ छोटी पार्टियों का गठन हो सकता है, परंतु कानूनी रूप से उन्हें प्रभुता संपन्न पार्टी के नेतृत्व को स्वीकार करना पड़ता है। इसे एकदलीय शासन व्यवस्था कहा जाता है; जैसे—कम्युनिस्ट देश चीन में एकदलीय व्यवस्था है।

(iv) विश्व के कुछ ऐसे भी देश हैं, जहाँ दो दलीय व्यवस्था है; जैसे—अमेरिका एवं ब्रिटेन।

❑❑❑

5

लोकतन्त्र के परिणाम

↘ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लोकतंत्र के आर्थिक परिणाम कौन-कौन से हैं? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर आर्थिक विकास, विकास, गरीबी और असमानता में कमी लोकतंत्र के प्रमुख आर्थिक परिणाम हैं।

- **आर्थिक वृद्धि और विकास**—सरकार से यह उम्मीद लगाई जाती है कि वह आर्थिक वृद्धि और विकास करें, परन्तु दुनिया के अनेक लोकतांत्रिक देश जनसंख्या आकार, वैश्विक स्थिति, आर्थिक प्राथमिकताओं आदि के कारण इस उम्मीद को पूरा करने में असमर्थ रहते हैं। तानाशाही और लोकतांत्रिक शासन के मध्य आर्थिक विकास की दर में अंतर पाया जाता है।
- **असमानता और गरीबी में कमी**—लोकतंत्र राजनीतिक समानता पर आधारित है और सभी व्यक्तियों को उनके प्रतिनिधि का चयन करने का समान अधिकार है, लेकिन राजनीतिक समानता के साथ हम व्यक्तियों के बीच बढ़ती आर्थिक असमानता भी देख सकते हैं।

2. अपने लक्ष्य को पूरा करने के लोकतंत्र को किन शर्तों को पूरा करना पड़ता है?

उत्तर अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए एक लोकतंत्र को निम्न शर्तों को पूरा करना होगा—

- यह समझना आवश्यक है कि बहुसंख्यक राय द्वारा लोकतंत्र में शासन नहीं किया जा सकता है। बहुसंख्यकों को हमेशा अल्पसंख्यक के हितों की रक्षा करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार सरकार का कार्य सामान्य हित के प्रतिनिधित्व के रूप में माना जाता है।
- यह समझना भी आवश्यक है कि बहुमत के शासन का अर्थ धर्म, जाति अथवा भाषायी आधार के बहुसंख्यक का शासन नहीं होता। बहुमत के शासन से तात्पर्य यह है कि प्रत्येक चुनाव या फैसले में अलग-अलग लोग और समूह बहुमत का निर्माण कर सकते हैं या बहुमत में भाग ले सकते हैं।

3. पूरी दुनिया में लोकतंत्र के विचार के प्रति जबरदस्त समर्थन के कारण बताएँ।

उत्तर लोकतंत्र के विचार के प्रति जबरदस्त समर्थन के भाव की पुष्टि निम्नलिखित प्रकार से की जा सकती है—

- **लोकतंत्र जनमत पर आधारित**—लोकतंत्र शासन की एक व्यवस्था यह है कि यह जनमत पर आधारित होता है तथा जिसमें शासन को जनता की इच्छा के अनुसार चलाया जाता है।
- **लोकतंत्र समानता के सिद्धांत पर आधारित होता है**—लोकतंत्र में सभी व्यक्तियों को समान समझा जाता है। किसी को भी जन्म, जाति, धर्म, लिंग, संपदा के आधार पर कोई विशषाधिकार प्राप्त नहीं होता है।
- **यह उत्तरदायी सरकार होता है**—लोकतंत्र में सरकार जनता तथा संसद के प्रति जबावदेह होती है। सरकार को जनमत के अनुसार कार्य करना पड़ता है।

4. भारतीय लोकतन्त्र की सफलता के लिए किन्हीं चार आवश्यक दशाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत बनाने के निम्नलिखित तीन तथ्य निम्नलिखित हैं—

(i) लोकतांत्रिक सरकार अधिकांश नीतियाँ जनता के हित में ही बनाती है, परंतु इन नीतियों को लागू करने वाली संस्थाएँ इन्हें लागू करने में सुस्त दिखाई पड़ती हैं। परिणामस्वरूप नीतियों का संपूर्ण लाभ जनसाधारण को नहीं मिल पाता। इसलिए सरकार को अपने तंत्र को सुधार कर इन्हें सख्ती से लागू करवाना चाहिए।

(ii) लोकतंत्र तभी सफल होता है, जब वह जनता की समस्याओं का कारगर उपाय ढूँढता है। यही कारण है कि सरकार को लोकतंत्र की मजबूती के कारगर शासन व्यवस्था लागू करनी चाहिए।

(iii) देश की जागरूक जनता ने सदैव ही शासन को बदला है। जनता तभी तक लोकतंत्र को मानती है जब तक वह उनके हित में कार्य करता है।

(iv) जनता जागरूक होने से लोकतांत्रिक सरकारों को समय-समय पर उनके गुण-दोष पता चलते रहते हैं, जो लोकतंत्र को एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

5. असमानता और गरीबी को समाप्त करने में लोकतंत्र की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर असमानता और गरीबी को समाप्त करने में लोकतंत्र की निम्नलिखित भूमिका रही है; जैसे—

- लोकतांत्रिक व्यवस्था राजनीतिक समानता पर आधारित होती है जैसे सभी नागरिकों को लिंग, जाति, रंग आदि के भेद-भाव के बिना मत का अधिकार देता है।
- लोकतंत्र कल्याणकारी राज्य है अर्थात् लोकतंत्र आर्थिक समानता बनाए रखते हैं।
- लोकतांत्रिक सरकार अनेक रोजगार योजनाएँ आरंभ करती है, जैसे ग्रामीण विकास योजना आदि।

6. महिलाओं की प्रतिष्ठा और स्वतंत्रता एवं वंचित समूहों की प्रतिष्ठा और स्वतंत्रता पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर - **महिलाओं की प्रतिष्ठा और स्वतंत्रता**—यदि हम महिलाओं के सम्मान की बात करते हैं, तो हम देख सकते हैं कि महिलाओं द्वारा लंबे संघर्षों ने आज कुछ संवेदना उत्पन्न की है, जिससे

महिलाओं का सम्मान और समान व्यवहार लोकतांत्रिक समाज के लिए आवश्यक बन गया हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि वास्तव में महिलाओं के साथ हमेशा सम्मान का ही व्यवहार किया जाता है, लेकिन इनके पक्ष में किसी कानून को मान्यता मिल जाने के बाद महिलाओं के अपने अधिकार विरुद्ध संघर्ष करना आसान हो जाता है कि अब कानूनी और नैतिक रूप से हमारे अधिकार स्वीकार्य हैं। गैर-लोकतांत्रिक व्यवस्था में इस अस्वीकार्यता का कानूनी आधार नहीं होगा, क्योंकि व्यक्तिगत स्वतंत्रता और गरिमा का सिद्धांत कानूनी बल नहीं है।

- **वंचित समूहों की प्रतिष्ठा और स्वतंत्रता**—भारत में लोकतंत्र ने समान स्थिति और समान अवसर के लिए वंचित और भेदभाव वाली जातियों के दावों को मजबूत किया है, फिर भी जाति आधारित असमानताओं और अत्याचारों के उदाहरण देखने को मिलते हैं लेकिन यह नैतिक और कानूनी नींव की कमी है। यह मान्यता है कि सामान्य नागरिक अपने लोकतांत्रिक अधिकारों को मानते हैं।

7. लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में विभिन्न सामाजिक अंतरों को कैसे सँभाला जा सकता है?

उत्तर लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में विभिन्न सामाजिक अंतरों, सामाजिक विभाजनों और सामाजिक टकरावों को निम्नलिखित दो शर्तों को पूरा करके सँभाला जा सकता है—

(i) लोकतंत्र का सीधे-सीधे अर्थ बहुमत की राय में शासन करना नहीं है। बहुमत को सदा ही अल्पमत का ध्यान रखना होता है। उसके साथ-साथ काम करने की जरूरत होती है तभी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था जन-सामान्य की इच्छा का प्रतिनिधित्व कर पाती है। बहुमत और अल्पमत की राय कोई स्थायी चीज नहीं होती है।

(ii) बहुमत के शासन का अर्थ धर्म, नस्ल अथवा भाषायी आधार के बहुसंख्यक समूह का शासन नहीं होता। बहुमत के शासन का मतलब होता है कि प्रत्येक फैसाले या चुनाव में अलग-अलग लोग और समूह बहुमत का निर्णय करें जो बहुमत में हो लोकतंत्र तभी तक लोकतंत्र रह सकता है जब तक प्रत्येक नागरिकों को किसी-न-किसी अवसर पर बहुमत का हिस्सा बनने का मौका मिलता है।

यदि किसी को जन्म के आधार पर बहुसंख्यक समुदाय का हिस्सा बनने से रोका जाता है तब लोकतांत्रिक शासन उस व्यक्ति या समूह के लिए समावेशी नहीं रह जाता है।

8. निर्णय लेने की प्रक्रिया में लोकतांत्रिक तथा गैर-लोकतांत्रिक सरकारों में क्या अंतर है।

उत्तर निर्णय लेने की प्रक्रिया में लोकतांत्रिक तथा गैर-लोकतांत्रिक सरकारों में निम्नलिखित अंतर हैं—

	लोकतांत्रिक सरकारें	गैर-लोकतांत्रिक सरकारें
(i)	लोकतंत्र विचार-विमर्श तथा समझौते के विचार पर आधारित होता है।	इसमें कोई विचार-विमर्श या समझौते नहीं होते।
(ii)	किसी भी निर्णय पर पहुँचने से पहले लोकतांत्रिक सरकारें जनता के विचारों पर जरूर विचार करती हैं।	गैर-लोकतांत्रिक सरकार जनता के विचारों पर ध्यान नहीं देते।
(iii)	विचार-विमर्श तथा समझौते के कारण निर्णय लेने में कुछ देरी हो सकती है, परंतु ये निर्णय प्रभावी होते हैं।	यह शीघ्र निर्णय ले सकते हैं, परंतु ये कभी-कभी कम प्रभावी होते हैं और लोगों पर जबरदस्ती थोपे जाते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. किन्हीं पाँच परिणामों का उल्लेख कीजिए, जहाँ लोकतंत्र असफल रहा।

उत्तर लोकतंत्र असफल होने के चार परिणाम निम्न हैं—

(i) भ्रष्टाचार—भ्रष्टाचार के आम किस्से इस बात की गवाही देते हैं कि लोकतांत्रिक व्यवस्था भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं है। भारत जोकि विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, यह भी भ्रष्टाचार रोकने में असफल रहा है।

(ii) लोगों की आवश्यकताओं की ओर कम ध्यान देना—लोकतांत्रिक व्यवस्था में लोगों की आवश्यकताओं और माँगों की ओर ध्यान देना चाहिए, लेकिन इस मामले में लोकतंत्र का रिकॉर्ड अच्छा नहीं रहा है। लोकतांत्रिक व्यवस्था अक्सर लोगों को उनकी जरूरतों के लिए तरसाती है और आबादी के एक बड़े हिस्से की माँगों की उपेक्षा करती है।

(iii) आर्थिक विकास—लोकतांत्रिक सरकार में आर्थिक विकास की अपेक्षा की जाती है, लेकिन दुर्भाग्यवश लोकतंत्र इस मामले में भी असफल रहा है। यदि आर्थिक विकास के दृष्टि से लोकतंत्र और तानाशाही सरकार के कामकाजों की तुलना करते हैं, तो पाते हैं कि तानाशाही सरकार का रिकॉर्ड लोकतंत्र से बेहतर रहा है।

(iv) गरीबी में कमी—विश्व के अधिकांश लोकतांत्रिक व्यवस्था में मुट्ठी भर धनकुबेर आय और संपत्ति में अपने अनुपात से बहुत अधिक हिस्सा पाते हैं। देश की कुल आय में उनका हिस्सा भी बढ़ता गया है। इस प्रकार समाज के सबसे निचले हिस्से के लोगों को जीवन बसर करने के लिए बहुत कम साधन मिलते हैं।

(v) सामाजिक असमानता में कमी—विश्व के अधिकांश देशों में असमानता तथा गरीबी सबसे महत्त्वपूर्ण आर्थिक समस्या है। लोकतंत्र लोगों की सरकार होती है, इसलिए इससे आर्थिक असमानता को कम करने की अपेक्षा की जाती है।

2. किन्हीं तीन शर्तों का उल्लेख करें जिन्हें विविधताओं तथा विभाजनों में सामंजस्य लाने के लिए लोकतंत्र को पूरा करना होता है।

उत्तर लोकतंत्र आमतौर पर विभिन्न सामाजिक विभागों को समायोजित करने के लिए एक प्रक्रिया विकसित करता है। इससे सामाजिक तनाव विस्फोटक या हिंसक होने की संभावना कम हो जाती है। कोई भी समाज अलग-अलग समूहों के बीच संघर्ष को पूरी तरह से और

स्थायी रूप से हल नहीं कर सकता है, लेकिन सामाजिक मतभेद, विभाजन और संघर्षों को नियंत्रित करने के लिए लोकतंत्र सबसे अच्छा है। अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए एक लोकतंत्र को निम्न शर्तों को पूरा करना होगा—

- यह समझना आवश्यक है कि बहुसंख्यकों की सहमति द्वारा लोकतंत्र में शासन नहीं किया जा सकता है। बहुसंख्यकों को हमेशा अल्पसंख्यक के हितों की रक्षा करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार सरकार का कार्य सामान्य हित के प्रतिनिधित्व के रूप में माना जाता है।
- यह समझना भी आवश्यक है कि बहुमत के शासन का अर्थ धर्म, जाति अथवा भाषायी आधार के बहुसंख्यक का शासन नहीं होता। बहुमत के शासन से तात्पर्य यह है कि प्रत्येक चुनाव या फैसले में अलग-अलग लोग और समूह बहुमत का निर्माण कर सकते हैं या बहुमत में भाग ले सकते हैं।
- इस प्रकार लोकतंत्र में ही प्रत्येक नागरिक को बहुमत प्राप्त करने का अवसर मिलता है। यदि किसी को जन्म के आधार पर बहुमत से वंचित किया जाता है, तो लोकतांत्रिक शासन उस व्यक्ति या समूह के लिए अनुकूल होना बंद नहीं करता है। गैर-लोकतांत्रिक शासन अक्सर आंतरिक सामाजिक मतभेदों को नजरअंदाज या उनका दमन करता है।

3. लोकतंत्र किस प्रकार एक उत्तरदायी, जिम्मेदार तथा वैध सरकार बनाता है?

उत्तर **उत्तरदायी सरकार**—उत्तरदायी सरकार एक ऐसी सरकार होती है, जो जिम्मेदार हो तथा जो अपने कार्यों अथवा निर्णयों को सिद्ध कर सके। लोकतांत्रिक सरकार लोगों अथवा संसद के प्रति उत्तरदायी होती है। लोकतंत्र में लोग अपने प्रतिनिधि चुनते हैं, जो सरकार का गठन करते हैं तथा यदि वे लोगों की इच्छाओं के अनुसार कार्य न करें, तो लोगों को उसे बदलने का अधिकार होता है।

जिम्मेदार सरकार—जिम्मेदार सरकार एक ऐसी सरकार होती है, जो लोगों की आवश्यकताओं तथा उम्मीदों की तरफ सकारात्मक रूप से ध्यान देता है। सरकार ऐसे निर्णय लेती है तथा नीतियाँ बनाती है वो लोगों को मंजूर हों। इसके अंतर्गत, जब भी आवश्यकता पड़े लोग निर्णय लेने में भाग ले सकते हैं।

वैध सरकार—वैध सरकार निश्चित नियमों के अनुसार कार्य करती है अर्थात् प्रतिमानों तथा सही कार्यप्रणाली को अपनाकर ही निर्णय लेती है। कहने का तात्पर्य यह कि प्रतिमानों तथा सही कार्यप्रणाली को अपनाकर ही निर्णय लेती है। नागरिकों को यह जानने की स्वतंत्रता होती है कि क्या निर्णय सही कार्यप्रणाली के द्वारा लिए गए हैं, इसे पारदर्शित करते हैं।

❑❑❑

1 आर्थिक विकास की समझ (अर्थशास्त्र)

विकास

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विकास से आप क्या समझते हैं? विभिन्न व्यक्ति एवं विभिन्न लक्ष्य कितने पहलुओं को दर्शाता है?

उत्तर विकास का अर्थ विकास किसी देश के सर्वांगीण विकास पर निर्भर करता है। स्वतंत्रता, सुरक्षा, दूसरों से सम्मान मिलने की इच्छा, आर्थिक समानता और जीवन जीने का उच्च स्तर आदि सभी विकास के महत्त्वपूर्ण भाग हैं।

विकास का क्षेत्र अत्यंत व्यापक और विस्तारित है। यह निम्नलिखित दो पहलुओं को दर्शाता है—

(i) लोगों के विकास के लक्ष्य भिन्न हो सकते हैं।

(ii) एक व्यक्ति के लिए जो विकास है, वह आवश्यक नहीं किसी और के लिए भी हो। वह दूसरे व्यक्ति के लिए विकास न होकर विनाशकारी हो सकता है।

2. राष्ट्रीय विकास की प्रमुख विशेषताओं को बताइए।

उत्तर राष्ट्रीय विकास की विशेषताएँ—

- राष्ट्रीय विकास के अंतर्गत वह कार्यक्रम तथा नीतियाँ ही कार्यान्वित होंगी, जो लोगों की अधिक संख्या के लिए उत्तरदायी होंगी। यह विवादों और इनके उपायों के बारे में सोचने के लिए महत्त्वपूर्ण है।
- हमें यह भी सोचना होगा कि क्या कार्य करने का कोई बेहतर तरीका है। सरकार निर्णय करती है कि सभी के लिए न्यायपूर्ण और सही मार्ग क्या है।

3. प्रतिव्यक्ति आय पर विश्व बैंक की रिपोर्ट का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर प्रतिव्यक्ति आय पर विश्व बैंक की रिपोर्ट प्रतिव्यक्ति आय के आधार पर विश्व बैंक की तुलना करने के लिए विश्व बैंक प्रत्येक वर्ष विश्व विकास रिपोर्ट प्रकाशित करता है।

बैंक ने निम्नानुसार देशों को वर्गीकृत किया है—

- वर्ष 2013 में 12,736 अमेरिकी $ प्रतिवर्ष या इससे अधिक PCI (Per Capita Income) वाले देशों को समृद्ध देश कहा जाता है।
- ऐसे देश जिनकी PCI प्रतिवर्ष $1,034 या उससे कम अमेरिकी डॉलर है, को कम आय वाला देश कहा जाता है।
- वर्ष 2013 में भारत की प्रतिव्यक्ति आय 1,570 अमेरिकी डॉलर $ प्रतिवर्ष थी और इसे मध्य आय वाले देशों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

4. शरीर द्रव्यमान सूचकांक किसे कहा जाता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर शरीर द्रव्यमान सूचकांक—पोषण (Nutrition) भी विकास का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कोई वयस्क व्यक्ति कुपोषित है या नहीं यह निर्धारित करने के लिए शरीर द्रव्यमान सूचकांक (Body Mass Index, BMI) का प्रयोग किया जाता है।

यदि हम एक व्यक्ति के वजन को उसकी ऊँचाई के वर्ग के द्वारा विभाजित करते हैं, तो हमें एक अनुपात मिलता है, जिसे शरीर द्रव्यमान सूचकांक कहा जाता है।

शरीर द्रव्यमान सूचकांक ज्ञात करने के लिए व्यक्ति के भार को लंबाई के वर्ग से भाग देने पर प्राप्त किया जाता है।

अर्थात्, $\text{BMI} = \frac{\text{व्यक्ति का भार (किग्रा)}}{\text{लंबाई}^2\text{ (मी)}}$

यदि किसी व्यक्ति के शरीर का द्रव्यमान सूचकांक 18.5 से नीचे है, तो उस व्यक्ति को अल्पपोषित (Undernourished) कहा जाएगा और यदि वह 25 से अधिक है, तो उस व्यक्ति को अतिभारित (Overweight) कहा जाएगा; जैसे—यदि 1.65 मी लंबे वयस्क का वजन 50.5 किग्रा से कम है, तो व्यक्ति को अल्पपोषित माना जाएगा और यदि उसी व्यक्ति का वजन 68 किग्रा से अधिक है, तो उसे अतिभारित माना जाएगा। यह मानक बढ़ते बच्चों के लिए लागू नहीं है।

5. मानव विकास हेतु कौन-कौन से मापदंडों का प्रयोग किया जाता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर मानव विकास हेतु उपयुक्त तीन मापदंड, जिसे संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने महत्त्वपूर्ण माना है, निम्नलिखित हैं—

(i) जीवन प्रत्याशा—देश के अंदर लोगों की जीवन प्रत्याशा जितनी अधिक होगी, मानव विकास हेतु वह देश उतना ही विकसित माना जाएगा।

(ii) साक्षरता दर—साक्षरता किसी भी देश की रीढ़ है और जिस देश में शिक्षा का स्तर जितना ऊँचा होगा, वहाँ मानव विकास का क्रम तीव्र होगा और देश विकसित होगा।

(iii) प्रतिव्यक्ति आय—प्रतिव्यक्ति आय विभिन्न देश के लोगों के जीवन स्तर के मापन व उन्नत जीवन हेतु उपयुक्त मापदंड है। ऐसा जिसमें होगा वहाँ मानव विकास बेहतर होगा, देश विकसित होगा।

6. सार्वजनिक वितरण प्रणाली के किन्हीं तीन महत्त्वों को बताइए।

उत्तर सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तीन महत्त्व निम्नलिखित हैं—

(i) गरीब परिवारों को उचित मूल्य पर खाद्य एवं उपभोग की वस्तुएँ उपलब्ध कराना।

(ii) साधारण परिवार के लोगों को महँगाई से बचाना।

(iii) देश के अंदर समाजवादी व लोकतांत्रिक प्रणाली को स्थापित करना।

7. सतत विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर सतत विकास—विकसित और विकासशील देशों में आर्थिक विकास प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण के आधार पर किया गया है। उदाहरण के लिए; लोहा, सोना, चाँदी या कोयले के अत्यधिक खनन और कच्चे तेल की निकासी से इन संसाधनों के भंडारों में कमी आ जाती है।

कारखानों से निकलने वाला धुआँ और अन्य जहरीली गैसें पर्यावरण प्रदूषण का कारण हैं। पानी और वायु प्रदूषण की समस्या लोगों को प्रभावित कर रही है तथा इससे भविष्य की पीढ़ियों का जीवन भी प्रभावित होगा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मानव विकास सूचकांक को परिभाषित करते हुए आधारभूत इकाइयो मापदंडों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर मानव विकास रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित की जाती है। यह मानव विकास के मापन की सर्वोत्तम विधि है।

मानव विकास सूचकांक एक विधि है, जिसका उपयोग देशों को 'मानव विकास' के आधार पर आँकने के लिए किया जाता है। इस सूचकांक से इस बात का पता चलता है कि कोई देश विकसित है, विकासशील है या अविकसित है। मानव विकास सूचकांक जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और प्रतिव्यक्ति आय संकेतकों का एक समग्र आँकड़ा है, जो मानव विकास के चार स्तरों पर देशों को श्रेणीगत करने में उपयोग किया जाता है।

मानव विकास सूचकांक की अवधारणा का प्रतिपादन वर्ष 1990 में महबूब-उल-हक तथा अन्य सहयोगी ए. के. सेन तथा सिंगर हंस ने किया था। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा मानव विकास पर रिपोर्ट हेतु निम्न तीन अवयवों की आवश्यकताओं को आधार बनाया जाता है मानव विकास सूचकांक की आधारभूत इकाइयों (मापदंडों) के लिए लघु उत्तरीय प्रश्न 6 का अध्ययन कीजिए।

2. भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की छः कमियाँ लिखिए।

उत्तर सार्वजनिक वितरण प्रणाली की कमियाँ—भारत की सार्वजनिक वितरण प्रणाली में निम्नलिखित कमियाँ हैं—

1. **भ्रष्टाचार**—सार्वजनिक वितरण प्रणाली का सबसे बड़ा दोष इस प्रणाली में निरंकुश होता भ्रष्टाचार है।

   इस प्रणाली के अंतर्गत गरीबों के लिए आवंटित राशन की कालाबाजारी की जाती है। गरीबों से खाद्यान्न के बदले सामान्य से अधिक मूल्य वसूला जाता है।
2. **लालफीताशाही**—सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत सरकारी नौकरशाही अत्यधिक प्रभावी है, जो इस प्रणाली को जर्जर बना रही है। लालफीताशाही के कारण अनाज गोदामों में सड़ तो जाता है, किंतु वितरित नहीं हो पाता।
3. **अकुशल प्रबंधन**—सार्वजनिक प्रणाली प्रबंध की अकुशलता से जूझ रही है। इसी अकुशल प्रबंधन के कारण खाद्यान्न की खरीद से लेकर वितरण तक सरकार को भारी राजस्व की हानि होती है।
4. **राजकोषीय घाटे की पोषक**—सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत बेचा जाने वाला कैरोसिन तेल सब्सिडी वाला होता है, जो सरकार के राजकोषीय घाटे में वृद्धि करता है।
5. **उचित नियन्त्रण का अभाव**—सार्वजनिक वितरण प्रणाली अभी भी पुराने काम-काज के तरीकों को ढो रही है, जिस कारण इन पर उचित नियंत्रण स्थापित नहीं हो पाता।
6. **संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग का अभाव**—वर्तमान संचार प्रौद्योगिकी के युग में भी सार्वजनिक वितरण प्रणाली इससे वंचित है जिस कारण समय, धन व संसाधनों की बर्बादी होती है।

3. विकास को मापने का सर्वोत्तम तरीका कौन-सा है? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (United Nation Development Programme, UNDP)—द्वारा प्रकाशित मानव विकास रिपोर्ट विकास को मापने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है। यह रिपोर्ट तीन मानदंडों के आधार पर देशों की तुलना करती है—

(i) जीवित मानक (प्रतिव्यक्ति आय)

(ii) स्वास्थ्य की स्थिति (जीवन प्रत्याशा)

(iii) लोगों का शैक्षिक स्तर (साक्षरता दर और नामांकन अनुपात)

मानव विकास रिपोर्ट, 2014 में भारत 135वें स्थान पर है, जबकि वर्ष 2004 की रिपोर्ट में यह 126वें स्थान पर था। दक्षिणी एशियाई देशों में श्रीलंका रैंकिंग में भारत से आगे है। मानव विकास सूचकांक (Human Development Index, HDI) मानव विकास को मापने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा, गरीबी स्तर, असमानता और पर्यावरण पहलुओं को समझने का एक प्रयास है।

4. पर्यावरणीय गिरावट किसके परिणामस्वरूप आएगी? इसे किन रूपों में देखा जा सकता है?

उत्तर पर्यावरण गिरावट और सतत विकास—प्राकृतिक संसाधनों के कुप्रबंधन के परिणामस्वरूप पर्यावरणीय गिरावट आएगी, जो केवल राष्ट्रीय या राज्य सीमा तक ही सीमित नहीं है। अब सभी का ध्यान सतत विकास (Sustainable Development) की ओर है, जो हमें संसाधनों का सावधानीपूर्वक उपयोग करने की अनुमति देता है।

सतत विकास एक नया शब्द है, जो प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग के साथ न्यूनतम स्तर पर संसाधनों का उपयोग करने पर बल देता है, जिससे भविष्य की पीढ़ियाँ इसका उपयोग कर सकें। पर्यावरणीय गिरावट को निम्न के द्वारा देख सकते हैं—

(i) भारत में भू-जल (Groundwater in India)—भूमिगत जल का अति उपयोग विशेष रूप से पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कृषि की दृष्टि से समृद्ध क्षेत्रों, मध्य और दक्षिणी भारत के चट्टानी पठारी क्षेत्रों, कुछ तटवर्ती क्षेत्रों तथा तेजी से विकसित होती शहरी बस्तियों में किया जाता है।

(ii) प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास (Exhaustion of Natural Resource)—वर्तमान स्थितियों के अनुसार यदि कच्चे तेल का इस्तेमाल वर्तमान दर पर चालू रहा, तो इसके भंडार अगले 53 वर्षों में समाप्त हो जाएँगे।

❑❑❑

2

भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आर्थिक गतिविधियाँ किसे कहा जाता है? आर्थिक गतिविधि को कितने तरीकों से विभाजित किया जाता है?

उत्तर धन कमाने के उद्देश्य से की जाने वाली गतिविधियों को आर्थिक गतिविधियाँ कहा जाता है। इनमें से कुछ गतिविधियाँ आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन करती हैं और दूसरों को सेवाएँ प्रदान करती हैं। गतिविधियों को उनके सामान्य गुणों के अनुसार विभिन्न समूहों में वर्गीकृत किया जाता है, जिन्हें क्षेत्रों के रूप में जाना जाता है। आर्थिक गतिविधियों को तीन अलग-अलग तरीकों से वर्गीकृत किया जा सकता है—

(i) प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र

(ii) संगठित और असंगठित क्षेत्र

(iii) सार्वजनिक और निजी क्षेत्र

2. प्राथमिक क्षेत्र को परिभाषित कीजिए।

उत्तर अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों को प्राथमिक उत्पादों में परिवर्तित करना शामिल है। इस प्रकार यह क्षेत्र सीधे प्रकृति के साथ जुड़ा हुआ है। इसकी प्रमुख गतिविधियाँ निम्नवत् हैं—

- इसमें कृषि, वन, मछली पकड़ना, खनन और तेल एवं गैस की निकासी शामिल है।
- अधिकांश प्राकृतिक उत्पाद कृषि, डेयरी, मछली पकड़ने, वानिकी आदि से प्राप्त होते हैं, इसलिए इसे कृषि एवं सहायक क्षेत्रक भी कहा जाता है।

3. द्वितीयक क्षेत्रक किसे कहते हैं? इसकी प्रमुख विशेषताओं को बताइए।

उत्तर जब प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण प्रणाली के द्वारा अन्य रूपों में बदला जाता है, तो वे द्वितीयक क्षेत्रक कहलाते हैं; जैसे—कपास से रेशा, गन्ने से चीनी आदि।

इसमें निम्न गतिविधियों को शामिल किया गया है—

- इसमें विनिर्माण और निर्माण शामिल हैं।
- यह प्रक्रिया विनिर्माण, कारखाने, कार्यशाला या घर में पूर्ण की जा सकती है। उदाहरण के लिए; गन्ने से चीनी या गुड़ और कपास से रेशा या कपड़ा आदि बनाते हैं।
- द्वितीयक क्षेत्र में विकास विभिन्न प्रकार के उद्योगों से जुड़ा हुआ है, जिन्हें **औद्योगिक क्षेत्र** कहा जाता है।

4. तृतीयक क्षेत्रक की प्रमुख गतिविधियों को बताइए।

उत्तर प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों के विकास में मदद करने वाली गतिविधियों को तृतीयक क्षेत्र में शामिल किया गया है।

ये गतिविधियाँ स्वत: वस्तुओं का उत्पादन नहीं करती हैं, बल्कि उत्पादन प्रक्रिया में सहयोग प्रदान करती हैं; जैसे—परिवहन, भंडारण, संचार, बैंकिंग तृतीयक गतिविधियों के कुछ उदाहरण हैं। चूँकि ये गतिविधियाँ वस्तुओं के अतिरिक्त सेवाओं का सृजन करती हैं, इसलिए तृतीयक क्षेत्रक को सेवा क्षेत्रक कहा जाता है।

तृतीयक क्षेत्र में कुछ आवश्यक सेवाएँ भी शामिल हैं, जो प्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं के उत्पादन में सहायता नहीं करती हैं; जैसे—डॉक्टर, वकील, शिक्षक और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे सॉफ्टवेयर उद्योग, इंटरनेट कैफे, ए टी एम बूथ, बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग ज्ञान प्रक्रिया आउटसोर्सिंग और कॉल सेंटर आदि।

5. भारतीय अर्थव्यवस्था में द्वितीयक क्षेत्रक के महत्त्व के किन्हीं चार सूत्रों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर भारतीय अर्थव्यवस्था में द्वितीयक क्षेत्रक का महत्त्व निम्न बातों से पता चलता है—

(i) भारत के सकल घरेलू उत्पाद में द्वितीयक क्षेत्रक 20% से अधिक का योगदान देता है।

(ii) यह लोगों को रोजगार प्रदान करने में भी सहायक है।

(iii) यह लोगों तक विनिर्माण की प्रक्रिया द्वारा विभिन्न मूलभूत वस्तुओं की पहुँच का एक माध्यम बनता है; जैसे—कपास से कपड़ा, गन्ना से चीनी व गुड़, दूध से विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ आदि।

(iv) द्वितीयक क्षेत्रक, प्राथमिक व तृतीयक क्षेत्रक के बीच विकास का एक माध्यम है, जो इनके महत्त्व को दर्शाता है।

6. तृतीयक क्षेत्र के बढ़ते हुए महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर तृतीयक क्षेत्र के बढ़ते हुए महत्त्व का वर्णन इस प्रकार है—

- अस्पतालों, शैक्षणिक संस्थानों, डाक सेवाओं, पुलिस स्टेशन, बैंकों, बीमा कंपनियों के प्रशासनिक कार्यालयों, रक्षा आदि जैसी बुनियादी सेवाओं की माँग बढ़ गई है। प्राथमिक और माध्यमिक क्षेत्र में अच्छे विकास ने परिवहन, व्यापार, भंडारण आदि जैसे सेवा क्षेत्र के विकास की माँग को प्रेरित किया है।
- आय में वृद्धि, जीवन की बेहतर गुणवत्ता, पर्यटन, खरीदारी, निजी अस्पताल, प्रोफेशनल ट्रेनिंग आदि जैसी बेहतर जीवन-शैली के साथ। वैश्वीकरण के कारण कुछ नई सेवाओं ने सूचना प्रौद्योगिकी और संचार प्रौद्योगिकी जैसे भारतीय बाजारों में प्रवेश किया है, जो सभी के लिए महत्त्वपूर्ण और आवश्यक बन गए हैं।
- कम उत्पादकता के कारण बहुत-से छोटे सेवा क्षेत्र अच्छी तरह से विकास नहीं कर रहे हैं। इस प्रकार सेवा क्षेत्र का केवल एक छोटा खंड उच्च कुशल और शिक्षित श्रमिकों को रोजगार देता है।

7. भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में लोगों के रोजगारों की विशेषताओं को बताइए।

उत्तर भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में लोगों के रोजगार निम्नलिखित हैं—

- हालाँकि देश के सकल घरेलू उत्पाद में प्राथमिक क्षेत्र का हिस्सा सिर्फ 20% है, लेकिन आजादी के 65 वर्षों के बाद यह अब भी 50% से अधिक लोगों को रोजगार देता है।
- माध्यमिक और तृतीयक क्षेत्रों ने पर्याप्त रोजगार उत्पन्न नहीं किए हैं, ताकि पर्याप्त संख्या में लोगों को कृषि से इन क्षेत्रों में स्थानांतरित कर सकें।
- औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार 3 गुना तथा सेवाओं में 5 गुना बढ़ा है। प्राथमिक क्षेत्र में कई मजदूर बेरोजगार या प्रच्छन्न बेरोजगार हैं।
- प्रच्छन्न बेरोजगारी शहरी क्षेत्रों में भी होती है। ऐसे हजारों श्रमिक हैं; जैसे—प्लंबर, पेंटर्स, रिपेयर श्रमिक आदि, जो कस्बों और शहरों में रोजगार की तलाश करते हैं।

8. रोजगार के संगठित क्षेत्र को परिभाषित कीजिए।

उत्तर वे उद्यम या कार्य स्थान, जहाँ रोजगार की अवधि नियमित व सुनिश्चित होती है, संगठित क्षेत्र कहलाते हैं। इस क्षेत्र में कुछ औपचारिक प्रक्रियाएँ होती हैं। इस क्षेत्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- इन उद्यमों को सरकार द्वारा पंजीकृत किया जाता है और इन्हें कारखाना अधिनियम, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, ग्रेच्युटी अधिनियम के भुगतान आदि जैसे विभिन्न कानूनों के तहत बनाए गए नियमों का पालन करना पड़ता है।
- संगठित क्षेत्र के श्रमिकों को रोजगार की सुरक्षा के लाभ मिलते हैं, यदि उनसे निश्चित समय से अधिक कार्य कराया जाता है, तो घंटे की संख्या के आधार पर अतिरिक्त ओवरटाइम मिलता है।
- उन्हें चिकित्सा लाभ मिलता है और प्रबंधन को स्वच्छ पेयजल एवं एक सुरक्षित कामकाजी वातावरण जैसी सुविधाएँ सुनिश्चित करनी पड़ती हैं।

9. असंगठित क्षेत्र किसे कहा जाता है? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर असंगठित क्षेत्र के उद्यम सरकार के साथ पंजीकृत नहीं हैं। छोटी-छोटी और बिखरी इकाइयाँ, जो सरकारी नियंत्रण से बाहर होती हैं, असंगठित क्षेत्रक कहलाती हैं। इस क्षेत्र में श्रमिकों को कम मजदूरी मिलती है और ओवरटाइम भुगतान, सवेतन छुट्टियाँ या बीमारी के कारण भुगतान की छूट आदि के लिए कोई प्रावधान नहीं है।

मरम्मत कार्यकर्ता, घरेलू नौकर और इसी तरह के अन्य कार्यकर्ता बड़ी संख्या में असंगठित क्षेत्र में कार्य करने के लिए शहरी क्षेत्रों में आते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में असंगठित क्षेत्र के अंतर्गत भूमि रहित कृषि मजदूर, छोटे एवं सीमांत किसान और कारीगर (बुनकर, लोहार, बढ़ई और सुनार आदि) शामिल हैं। इस क्षेत्र में किसी भी कारण के बिना कामगार को किसी भी समय नौकरी छोड़ने के लिए कहा जा सकता है। इस प्रकार असंगठित क्षेत्र में रोजगार असुरक्षित है। ग्रामीण क्षेत्रों में अनौपचारिक श्रमिक और भूमिहीन मजदूर भी इस श्रेणी में आते हैं।

10. संसाधनों के स्वामित्व के आधार पर आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्रकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर संसाधनों के स्वामित्व के आधार पर आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्रकों को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है—

(i) सार्वजनिक क्षेत्रक—सार्वजनिक क्षेत्रक के अंतर्गत उस क्षेत्रक को शामिल किया जाता है। जिस पर सरकार को स्वामित्व, नियंत्रण एवं प्रबंधन की जिम्मेदारी होती है। उदाहरण के लिए; भारतीय रेलवे, भारतीय डाक।

(ii) निजी क्षेत्रक—निजी क्षेत्रक की परिसंपत्तियों पर स्वामित्व और सेवाओं की वितरण की जिम्मेदारी सरकार पर न होकर एकल व्यक्ति या कंपनी के हाथों में होती है। निजी क्षेत्रक की कंपनियों का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। इन कंपनियों की सेवाओं का लाभ उठाने के लिए हमें निजी स्वामित्व का भुगतान करना पड़ता है। उदाहरण-टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी लिमिटेड और रिलायंस इंडस्ट्रीज आदि।

11. यह कहाँ तक सत्य है कि प्रच्छन्न बेरोजगारी को अल्प रोजगारी भी कहा जा सकता है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर यह एक परिस्थिति है, जिसमें एक प्रक्रिया में आवश्यकता से अधिक श्रमिक काम कर रहे होते हैं, परंतु किसी को पूर्ण रोजगार प्राप्त नहीं है। ऐसी अवस्था में यदि कुछ श्रमिकों को हटा भी दिया जाए, तो उत्पादन प्रभावित नहीं होगा। यह बेरोजगारी मुख्यत: कृषि में पाई जाती है।

इस प्रकार की बेरोजगारी को अल्प-रोजगार भी कहा जा सकता है, क्योंकि श्रमिक अपनी उत्पादकता से नीचे रहकर कार्य करते हैं।

उदाहरणस्वरूप एक भूमि के खंड पर 20 मजदूर काम कर रहे हैं, लेकिन जरूरत सिर्फ 15 मजदूर की है, तो ऐसी अवस्था में 5 मजदूर छिपे हुए बेरोजगार हैं, क्योंकि अगर उनको काम से हटा भी दिया जाए तो उत्पाद पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

12. संगठित क्षेत्रक तथा असंगठित क्षेत्रक में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर संगठित क्षेत्रक तथा असंगठित क्षेत्रक में निम्नलिखित अंतर हैं—

संगठित क्षेत्रक	असंगठित क्षेत्रक
ये क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं।	ये क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं होते हैं।
रोजगार की अवधि नियमित होती है।	रोजगार की अवधि नियमित नहीं होती है।
लोगों के पास सुनिश्चित काम होता है।	लोगों के पास सुनिश्चित काम जैसी कोई चीज नहीं होती।
इस क्षेत्रक में नियम का पालन आवश्यक होता है।	यहाँ अधिकांश नियमों का उल्लंघन होता है।
सरकार के द्वारा इस क्षेत्रक के कर्मचारियों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जाती है।	इस क्षेत्रक के कर्मचारियों को सुरक्षा की गारंटी बिलकुल नहीं मिलती।
इस क्षेत्रक में बैंक, अस्पताल, स्कूल आदि उपक्रम शामिल हैं।	इस क्षेत्रक में वे लोग बड़ी संख्या में शामिल हैं, जो छोटे काम करते हुए स्व-रोजगार में लगे हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कुछ तरीके सुझाएँ जो ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार बढ़ाने में सहायक हों।

उत्तर ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा समय-समय पर विभिन्न योजनाओं का विकास किया जाता है, साथ ही मूलभूत सुविधाओं में भी सुधार होते हैं; जैसे—सड़क, कृषि, बिजली आदि।

इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार को बढ़ाने हेतु निम्नलिखित कारकों पर विचार किया जा सकता है—

(i) **कृषि का आधुनिकीकरण**—भारत की लगभग आधे से अधिक आबादी कृषि में लगी हुई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों का मुख्य व्यवसाय ही कृषि है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में हो रही कृषि उन्नत किस्म की न होकर पुराने ढाँचे पर ही आधारित है।
अत: सरकार को कुछ नई योजना का सृजन कर उन्नत बीज, खाद आदि का विस्तार ग्रामीणों के बीच करना चाहिए। इसके अतिरिक्त कृषि में विविधता भी लानी चाहिए। सरकार को कृषि के साथ-साथ मत्स्य, बागवानी, पशु-पालन आदि अपनाने के लिए ग्रामीणों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

(ii) **सस्ते ऋण**—अधिकांश ग्रामीण किसान ऋण हेतु साहूकार, व्यापारी, बिचौलियों आदि पर आश्रित होते हैं, जो इनका मनचाहे तरीके से शोषण करते हैं। अत: सरकार को आसान किस्तों पर ऋण की व्यवस्था करनी चाहिए।

(iii) **स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहन एवं मूलभूत सुविधाओं का विकास**—सरकार को ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत उद्योगों पर समुचित ध्यान देना चाहिए। उनके लिए सस्ते ऋण, बाजार की उपलब्धता और अच्छी मूल्य दर की भी व्यवस्था करनी चाहिए। साथ ही, अन्य उद्योगपतियों को ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योग की स्थापना हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे ग्रामीणों के रोजगार में वृद्धि हो। इसके लिए सड़क, बिजली, स्वच्छ पानी आदि मूलभूत सुविधाओं का समुचित प्रबंध सरकार की जिम्मेदारी है।

2. भारतीय अर्थव्यवस्था में तीनों क्षेत्रों की तुलना को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर **आर्थिक अन्योन्याश्रित**—ये तीनों क्षेत्र एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए; कपास के पौधे (प्राथमिक क्षेत्र) से कपास उद्योगों (माध्यमिक क्षेत्र) में इसे वस्त्रों में परिवर्तित कर दिया जाता है और परिवहन के साधन (तृतीयक क्षेत्र) के माध्यम से बाजार तक पहुँचा दिया जाता है।

- **अंतिम सामान और सेवाएँ**—ये वस्तुएँ उपभोक्ताओं द्वारा सीधे प्रयोग में लाई जाती हैं। ये अंतिम वस्तुएँ होती हैं और इस स्थिति में आने के पश्चात् इनमें किसी भी प्रकार की कोई उत्पादन संबंधित गतिविधि नहीं होती। उदाहरण के लिए; बिस्कुट के मूल्य की गणना करके, हम उस आटे का मूल्य भी प्राप्त करेंगे, जिससे बिस्कुट बनाया जाता है और गेहूँ का मूल्य, जिससे आटा बनाया जाता है। बिस्कुट उपभोग की अंतिम वस्तु है, इसलिए मूल्य केवल उस पर ही निर्धारित किया जाएगा। अंतिम वस्तुओं के मूल्य में मध्यवर्ती वस्तुओं (गेहूँ, आटा) का मूल्य पहले से ही शामिल होता है और इसका मान केवल उत्पादन स्तर खोजने के लिए गिना जाएगा।
- **सकल घरेलू उत्पाद**—किसी विशेष वर्ष में इन तीनों क्षेत्रों में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य की राशि को देश का सकल घरेलू उत्पाद कहा जाता है। यह एक देश में कुल उत्पादन को दर्शाता है। भारत में सकल घरेलू उत्पाद का आकलन करने का कार्य भारत सरकार के अंतर्गत कार्य कर रहे केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा किया जाता है।

3. भारतीय अर्थव्यवस्था में अधिक रोजगार विकसित करने के माध्यमों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर अधिक रोजगार विकसित करने के विभिन्न माध्यम इस प्रकार हैं—

- **तकनीकी और संस्थागत उपाय**—तकनीकी सुविधाएँ; जैसे—सिंचाई, संकर बीज की उपलब्धता, कृषि की आधुनिक तकनीक के बारे में जागरूकता, कृषि योग्य भूमि की उत्पादकता में वृद्धि और कृषि में मानव बल की आवश्यकता को बढ़ाती हैं।
- बाजार, परिवहन, भंडारण की सुविधा और अन्य प्रसंस्करण इकाइयों जैसे संस्थागत समर्थन से उप-शहरी क्षेत्र अन्य क्षेत्रों में किसानों के रोजगार में वृद्धि करेगा।
- **संबद्ध-कृषि का संवर्द्धन**—कृषि क्षेत्र में विविधता लाने की आवश्यकता है, क्योंकि इसमें 60% से अधिक लोग कार्यरत हैं। किसानों को फसलों की कृषि के साथ-साथ संबद्ध कृषि गतिविधियों; जैसे—मत्स्यपालन, बागवानी सिल्क के लिए पशुपालन, शहद के लिए मधुमक्खी पालन आदि करने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है।
- **लघु उद्योगों और बैंक ऋण की ओर ध्यान केंद्रित करना**—अधिकांश किसान रिश्तेदारों और मित्रों, व्यापारियों, साहूकारों जैसे ऋण के अनौपचारिक स्रोतों पर निर्भर करते हैं, जो बहुत अधिक ब्याज दर लेते हैं, इसलिए वाणिज्यिक बैंकों को सस्ती दरों पर किसानों को ऋण प्रदान करने के लिए उन्हें स्थापित करने में मदद मिलेगी। ग्रामीण और अर्द्ध-ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर और छोटे उद्योगों को बढ़ावा देने से बड़ी संख्या में लोगों के लिए रोजगार पैदा हो सकता है। उदाहरण के लिए; चावल और दाल मिलों की स्थापना, जिससे कुछ किसान उन मिलों में काम कर सकें। कृषि उत्पादों; जैसे—आलू, टमाटर, चावल, गेहूँ और अन्य के लिए शीत भंडार गृह और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की स्थापना की जा सकती है।

4. महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम 2005 (मनरेगा) के उद्देश्य लिखिए।

उत्तर वर्ष 2005 में राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम तैयार किया गया, जिसे प्रधानमंत्री द्वारा 2 फरवरी, 2006 को शुरू किया गया था। बाद में इसका नाम महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम में बदल गया। इस योजना की मुख्य विशेषताएँ निम्न हैं—

- यह योजना अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी से पीड़ित महिलाओं को लक्षित करती है।
- यह योजना देश के 625 जिलों में प्रत्येक ग्रामीण परिवार को एक वर्ष में मजदूरी रोजगार के 100 दिन (हाल ही में सूखा प्रभावित क्षेत्रों में 150 दिनों के लिए संशोधित) की गारंटी देती है।
- इस योजना के अंतर्गत ग्राम पंचायत उचित सत्यापन के बाद परिवारों का पंजीकरण कराएगी और उन्हें रोजगार कार्ड जारी करेगी।
- इस अधिनियम को अधिकार का काम भी कहा जाता है, क्योंकि यदि सरकार रोजगार प्रदान करने के अपने कर्त्तव्य में विफल हो जाती है, तो वह लोगों को बेरोजगारी भत्ता देगी।

❑❑❑

3

मुद्रा और साख

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वस्तु विनिमय प्रणाली क्या है? इसकी कुछ सीमाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर वस्तुओं के बदले वस्तुओं के आदान-प्रदान की प्रणाली को वस्तु-विनिमय प्रणाली कहते हैं। वस्तु विनिमय प्रणाली में लेन-देन का माध्यम मुद्रा पर केंद्रित न होकर वस्तुओं पर केंद्रित होता है। विनिमय प्रणाली की कुछ सीमाएँ निम्नलिखित हैं—

(i) दोनों पक्ष एक-दूसरे से चीजें खरीदने और बेचने पर सहमति रखते हैं।

(ii) वस्तुओं का मूल्य निर्धारण करना अति कठिन है।

(iii) इसमें बहुत अधिक समय लगता है।

(iv) बहुत सारी वस्तुओं को विभाजित नहीं किया जा सकता।

2. मुद्रा के आधुनिक रूप को स्पष्ट कीजिए। मुद्रा की प्रमुख विशेषताओं को बताइए।

उत्तर मुद्रा ऐसी वस्तु है, जो विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य कर सकती है। मुद्रा के आधुनिक स्वरूप में कागजी मुद्रा और सिक्के शामिल हैं। सिक्कों की शुरुआत से पहले अनाज और पशुओं जैसी विभिन्न वस्तुओं को धन के रूप में प्रयोग किया जाता था। उसके बाद सोने, चाँदी, ताँबे आदि के धातु के सिक्कों का प्रयोग शुरू हुआ।

मुद्रा की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं—

- यह आमतौर पर धन के रूप में स्वीकार की जाती है, जिसमें सिक्के और कागज के नोट शामिल हैं।
- इसे सरकार द्वारा जारी किया जाता है और एक अर्थव्यवस्था के अंदर परिचालित किया जाता है।
- आधुनिक मुद्रा का विनिमय के अतिरिक्त कोई और अन्य उपयोग नहीं है। भारत में भारतीय रिज़र्व बैंक भारत सरकार की ओर से मुद्रा नोट जारी करता है।
- विनिमय के माध्यम के रूप में रुपये को व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है।

3. बैंकों में निक्षेप (जमा) की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर बैंकों में निक्षेप (जमा) की विशेषताएँ निम्न हैं—

- मुद्रा को एकत्रित या जमा करने का यह अन्य रूप है।
- लोग अपने नाम पर एक बैंक खाता खोलकर बैंकों में अपना अतिरिक्त पैसा जमा करते हैं।
- बैंक जमा राशि स्वीकार करते हैं और इस पर ब्याज भी देते हैं।
- बैंक में जमा किए गए धन को जमाकर्ता अपनी आवश्यकतानुसार निकाल सकते हैं।
- बैंकों के साथ जमा राशि को माँग जमा कहते हैं।

4. साख से क्या तात्पर्य है। साख की शर्तों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर **साख** या ऋण से तात्पर्य एक सहमति से है, जहाँ ऋणदाता कर्जदार को धन, आवश्यक वस्तुएँ एवं सेवाएँ उपलब्ध कराता है और बदले में भविष्य में कर्जदार से भुगतान करने का वादा लेता है। हमारी प्रतिदिन की गतिविधियों में ऐसे बहुत-से लेन-देन होते हैं, जहाँ किसी-न-किसी रूप में ऋण का प्रयोग होता है।

साख की शर्तें—साख की शर्तें उन परिस्थितियों या दशाओं का एक समूह है, जिनके अंतर्गत ऋण दिया जाता है। इसमें ऋण भुगतान के तरीके, ब्याज की दर, ऋण की अवधि और अन्य संबंधित दशाएँ शामिल हो सकती हैं। साख की शर्तों में समर्थक ऋणाधार अर्थात् गिरवी रखने के लिए कोई वस्तु एवं आवश्यक दस्तावेज शामिल हैं। साख की शर्तें ऋणदाता और उधारकर्ता की प्रकृति के अनुसार अलग-अलग हो सकती हैं।

5. साख की प्रथम स्थिति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **पहली स्थिति**—इसमें उत्पादन खर्च को पूरा करने के लिए ऋण का उपयोग किया जाता है, जब उत्पादन पूरा हो जाता है, तो यह आय को बढ़ाता है।

इस स्थिति में ऋण एक महत्त्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए; सलीम (एक निर्माता) अपने व्यवसाय के लिए ऋण लेता है। त्योहार के मौसम के समय वह व्यापारियों से बड़े ऑर्डर प्राप्त करता है। समय पर उत्पादन पूरा करने के लिए वह कच्चे माल के आपूर्तिकर्ता से ऋण पर सामग्री की आपूर्ति करने के लिए कहता है।

वह व्यवसाय में उपयोग आने वाले अन्य सामानों के लिए अग्रिम भुगतान के रूप में व्यापारी से नकद ऋण भी प्राप्त करता है।

विनिर्माण चक्र के अंत में, सलीम ऑर्डर देने में सफल होता है। वह अच्छा लाभ कमाता है और उस धन का भुगतान करता है, जो उसने ऋण के रूप में लिया था। यह आय में वृद्धि करने में सहायता करता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ऋण एक महत्त्वपूर्ण एवं सकारात्मक भूमिका निभाता है।

6. साख व्यवस्था की विविधता के कोई तीन कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर साख व्यवस्था की विविधता के तीन कारण निम्न हैं—

(i) साहूकारों से ऋण—छोटे किसान गाँव के साहूकारों से ब्याज की उच्च दर पर पैसे उधार लेते हैं। उच्च ब्याज दर के कारण वे कर्ज-जाल में फँस जाते हैं।

(ii) व्यापारियों से ऋण—किसानों को कम ब्याज दर पर कृषि व्यापारियों से ऋण मिलता है। व्यापारियों को भी किसानों से उनकी फसल को बेचने का वादा मिलता है। इस तरीके से व्यापारी

सुनिश्चित करता है कि धन लाभ कमाने के अतिरिक्त अदा भी किया जाता है। वह कम कीमत पर किसानों से फसल खरीदता है और जब कीमतें उच्च होती हैं, तो उसे बेचता है।

(iii) बैंकों से ऋण—मध्यम और बड़े किसान बहुत कम ब्याज दर पर खेती के लिए बैंक से ऋण लेते हैं। बैंक ऐसे उधारकर्ताओं को अन्य सुविधाएँ भी प्रदान करते हैं।

7. औपचारिक क्षेत्र में भारतीय रिज़र्व बैंक की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर औपचारिक क्षेत्र में ऋण प्रदान करने में भारतीय रिज़र्व बैंक की प्रमुख भूमिका है। इसकी भूमिका निम्न बिंदुओं में वर्णित है—

- भारतीय रिज़र्व बैंक यह सुनिश्चित करता है कि बैंक न केवल लाभकारी व्यवसायों और व्यापारियों के लिए ऋण प्रदान करते हैं, बल्कि छोटे किसानों, लघु उद्योगों, छोटे उधारकर्ताओं आदि के लिए भी ऋण देते हैं।
- समय-समय पर बैंकों को भारतीय रिज़र्व बैंक को यह रिपोर्ट देनी होगी कि वे कितना ऋण और किस ब्याज दर पर उधारकर्ताओं को उधार दे रहे हैं।
- बैंक, उन जमाओं में से, जिन्हें वह प्राप्त करता है, न्यूनतम नकद शेष को बनाए रखता है। भारतीय रिज़र्व बैंक वास्तव में नकद शेष बनाए रखने में बैंकों की निगरानी करता है।

8. स्वयं सहायता समूह की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर स्वयं सहायता समूह की विशेषताएँ निम्न हैं—

- स्वयं सहायता समूह ने गरीबों और महिलाओं में संगठन शक्ति और बचत पूँजी को बढ़ावा दिया है।
- महिलाओं का आर्थिक रूप से स्वावलंबी होना तथा सामाजिक विषयों (स्वास्थ्य, पोषण, घरेलू हिंसा) पर चर्चा करना।
- गरीबों और वंचित वर्ग में आत्मनिर्भरता का विकास करना।
- स्वयं सहायता समूह के द्वारा कम ब्याज पर ऋण की उपलब्धता, जिसके कारण छोटे-छोटे कार्यों का संपादन संभव हो सका।

9. स्वयं सहायता समूह पर एक संक्षिप्त टिप्पणी प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर अनौपचारिक स्रोतों की अपेक्षा बैंक से ऋण प्राप्त करना बहुत मुश्किल है। समर्थक ऋणाधार सुरक्षा और आवश्यक दस्तावेजों का न होना गरीबों को बैंक से ऋण प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न करता है। स्वयं सहायता समूह आमतौर पर ऐसे लोगों का समूह होता है, जो समान सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि वाले होते हैं। वे एकत्रित होकर अपनी क्षमता के अनुसार नियमित रूप से पैसे बचाते हैं। समूह के सदस्य अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समूह से छोटे ऋण ले सकते हैं। समूह इन ऋणों पर सावधि जमाकर्ताओं से कम ब्याज का भुगतान करता है। एक या दो वर्षों के बाद, यदि समूह नियमित रूप से बचत में है, तो वह बैंक से ऋण प्राप्त करने के योग्य हो जाता है। समूह के नाम पर ऋण स्वीकृत किया गया है और इसका उद्देश्य स्व-रोजगार अवसर पैदा करना है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वस्तु विनिमय प्रणाली के चार गुणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर वस्तु विनिमय प्रणाली के निम्नलिखित गुण इस प्रकार हैं—

(i) विकेन्द्रीकरण प्रणाली—वस्तु विनिमय प्रणाली का स्तर न्यूनतम तथा क्षेत्र सीमित होता है। वस्तुओं के नष्ट होने का भय बना रहता है। अत: वस्तुओं का अधिक मात्रा में संग्रहण नहीं हो पाता है। यह पूँजीवाद के दोषों से मुक्त है।

(ii) पारस्परिक सहयोग—वस्तुओं के प्रत्यक्ष आदान-प्रदान के कारण लोगों में सहयोग की भावना जागृत होती है।

(iii) मौद्रिक पत्रति के दोषों से मुक्ति—मौद्रिक पद्धति में अनेक प्रकार की स्थितियाँ उत्पन्न होती रहती हैं, जैसे—मुद्रा संकुचन आदि, परन्तु वस्तु विनिम में इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न नहीं होती है।

(iv) सरल प्रणाली—अनिश्चित व्यक्ति मुद्रा का ठीक से हिसाब नहीं लगा पाते हैं, परन्तु वह वस्तुओं का आदान-प्रदान करके अपनी आवश्यकताएँ पूरी कर सकते हैं। अत: वस्तु विनिमय एक सरल प्रणाली है।

2. वस्तु-विनिमय प्रणाली को परिभाषित कीजिए तथा उसकी चार कठिनाइयों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर जब व्यक्ति वस्तु या सेवाओं का आदान-प्रदान बिना किसी माध्यम के प्रत्यक्ष रूप से करता है, तो उसे वस्तु-विनिमय प्रणाली कहते हैं। वस्तु विनिमय प्रणाली की कुछ निम्नलिखित कठिनाइयाँ हैं—

(i) वस्तु के विभाजन की कठिनाई—विनिमय प्रणाली में वस्तुओं की अविभाज्यता भी बड़ा कारण बनती है तथा इन वस्तुओं के बदले में उनके स्वामी को उचित मूल्य प्राप्त नहीं होता है।

(ii) हस्तांतरण की असुविधा—विनिमय प्रणाली के द्वारा बहुत-सी वस्तुओं को हस्तांतरित करने में समस्या उत्पन्न होती है।

(iii) स्थगित भुगतानों में कठिनाई—वस्तु-विनिमय प्रणाली के अंतर्गत वस्तु के मूल्य स्थिर नहीं होते, जिसके कारण उधार लेन-देन में असुविधा होती है।

(iv) मूल्य संचय की असुविधा—वस्तुओं को अधिक समय तक संचित करके रखना वस्तु-विनिमय प्रणाली के अंतर्गत संभव नहीं है।

3. मुद्रा के आधुनिक रूप कौन-से होते हैं। उन सभी रूपों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर मुद्रा के आधुनिक रूप निम्नलिखित हैं—

(i) करेंसी—मुद्रा के आधुनिक रूपों में करेंसी-कागज के नोट और सिक्के शामिल हैं। धीरे-धीरे कागज के नोटों ने प्राचीन सिक्कों की जगह ले ली। ये और बात है कि कम मूल्य वाले सिक्के अभी भी प्रयोग किए जा रहे हैं। सिक्कों और नोटों, को सरकार द्वारा अधिकृत एजेंसी जारी करती है। भारत में इन नोटों को 'रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया' के द्वारा जारी किया जाता है। भारत के करेंसी नोट पर आपको एक वाक्य लिखा हुआ मिलेगा, जो उस करेंसी नोट के धारक को उस नोट पर लिखी राशि देने का वायदा करता है।

(ii) **बैंकों में निक्षेप या जमा**—अपनी रोज-रोज की जरूरतों के लिए अधिकांश लोगों को बहुत ही कम करेंसी की आवश्यकता होती है। शेष बची राशि को लोग सामान्यतया बैंकों में निक्षेप या जमा के रूप में रखते हैं। बैंक में रखा हुआ रुपया सुरक्षित रहता है और उस पर ब्याज भी मिलता है। आप अपनी आवश्यकता के अनुसार अपने खाते से रुपये निकाल सकते हैं, चूँकि बैंक खातों में जमा धन को माँग के रूप में निकाला जा सकता है, इसलिए इस जमा को 'माँग जमा' कहा जाता है।

(iii) **चेक द्वारा भुगतान**—बकाया राशि के भुगतान हेतु चेक का प्रयोग किया जाता है। चेक पर भुगतान पाने वाले व्यक्ति या संस्था का नाम और भुगतान की जाने वाली राशि लिखी होती है। चेक जारी करने वाले व्यक्ति को चेक के नीचे हस्ताक्षर करने होते हैं। इसके अतिरिक्त भुगतान हेतु डिमांड ड्राफ्ट भी प्रयोग में लाया जाता है। दिखने में यह चेक की तरह ही होता है, लेकिन इस पर बैंक के अधिकारी के हस्ताक्षर होते हैं।

4. साख की शर्तें, समर्थक ऋणाधार एवं साख व्यवस्था की विविधता पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **साख की शर्तें**—साख की शर्तें उन परिस्थितियों या दशाओं का एक समूह है, जिनके अंतर्गत ऋण दिया जाता है। इसमें ऋण भुगतान के तरीके, ब्याज की दर, ऋण की अवधि और अन्य संबंधित दशाएँ शामिल हो सकती हैं। साख की शर्तों में समर्थक ऋणाधार अर्थात् गिरवी रखने के लिए कोई वस्तु एवं आवश्यक दस्तावेज शामिल हैं। साख की शर्तें ऋणदाता और उधारकर्ता की प्रकृति के अनुसार अलग-अलग हो सकती हैं।

समर्थक ऋणाधार—ब्याज के अतिरिक्त ऋणदाता समर्थक ऋणाधार की भी माँग कर सकते हैं। समर्थक ऋणाधार ऐसी संपत्ति है, जिसका मालिक ऋण लेने वाला होता है; जैसे—भूमि, गाड़ी, इमारत, पशु, बैंकों में पूँजी आदि। इस संपत्ति का ऋणदाता इस स्थिति में प्रयोग कर सकता है जब ऋण लेने वाला व्यक्ति ऋण चुकाने में असमर्थ हो। ऋणदाता समर्थक ऋणाधार को बेचकर अपना भुगतान प्राप्त कर सकता है।

साख व्यवस्था की विविधता—ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण की मुख्य माँग फसल उत्पादन के लिए होती है, जिसमें बीज, उर्वरक, कीटनाशक, पानी, बिजली, उपकरणों की मरम्मत आदि पर काफी खर्च होता है। एक गाँव में विभिन्न श्रेणियों के उधारकर्ताओं के लिए अलग-अलग साख या ऋण व्यवस्था हो सकती है।

5. साख व्यवस्था की विविधता को स्पष्ट करते हुए इसके पाँच कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण की मुख्य माँग फसल उत्पादन के लिए होती है, जिसमें बीज, उर्वरक, कीटनाशक, पानी, बिजली, उपकरणों की मरम्मत आदि पर काफी खर्च होता है। एक गाँव में विभिन्न श्रेणियों के उधारकर्ताओं के लिए अलग-अलग साख या ऋण व्यवस्था हो सकती है; जैसे—

- **साहूकारों से ऋण**—छोटे किसान गाँव के साहूकारों से ब्याज की उच्च दर पर पैसे उधार लेते हैं। उच्च ब्याज दर के कारण वे कर्ज-जाल में फँस जाते हैं।
- **व्यापारियों से ऋण**—किसानों को कम ब्याज दर पर कृषि व्यापारियों से ऋण मिलता है। व्यापारियों को भी किसानों से उनकी फसल को बेचने का वादा मिलता है। इस तरीके से व्यापारी सुनिश्चित करता है कि धन लाभ कमाने के अतिरिक्त अदा भी किया जाता है। वह कम कीमत पर किसानों से फसल खरीदता है और जब कीमतें उच्च होती हैं, तो उसे बेचता है।
- **बैंकों से ऋण**—मध्यम और बड़े किसान बहुत कम ब्याज दर पर खेती के लिए बैंक से ऋण लेते हैं। बैंक ऐसे उधारकर्ताओं को अन्य सुविधाएँ भी प्रदान करते हैं।
- **नियोक्ता से ऋण**–भूमिहीन कृषि मजदूर और अन्य मजदूर ऋण के लिए अपने नियोक्ताओं पर निर्भर करते हैं। जमींदार प्रत्येक महीने 5% की ब्याज दर पर मजदूरों को ऋण देते हैं और ऋण के बदले वे जमीन मालिकों के लिए काम करते हैं।
- **सहकारी समितियों से ऋण**—सहकारी समितियों के सदस्यों को कृषि उपकरण, खेती और कृषि व्यापार, मत्स्यपालन, घरों के निर्माण और अन्य खर्चों की खरीद के लिए ऋण प्रदान किया जाता है।

❑❑❑

4

वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बहुराष्ट्रीय कंपनियों की किन्हीं चार विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर बहुराष्ट्रीय कंपनियों की चार विशेषताएँ निम्न हैं—

(i) बहुराष्ट्रीय कंपनी एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण व स्वामित्व रखती है।

(ii) यह उन प्रदेशों में कार्यालय एवं उत्पादन के लिए कारखाने स्थापित करती है, जहाँ से सस्ते श्रमिक एवं अन्य संसाधन प्राप्त होते हैं।

(iii) उत्पादन लागत में कमी करने तथा अधिक लाभ कमाने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इस तरह का प्रयास करती हैं।

(iv) वे अपने अंतिम उत्पादों को वैश्विक रूप से बेचते हैं और वैश्विक रूप से ही माल और सेवाओं का उत्पादन भी करते हैं। उत्पादन की प्रक्रिया छोटे भागों में बाँटी जाती है तथा विश्वभर में फैला दी जाती है।

2. भारत सरकार ने स्वतंत्रता के बाद विदेश व्यापार और विदेशी निवेश पर प्रतिबंध क्यों लगा दिए थे?

उत्तर भारत सरकार द्वारा स्वतंत्रता के बाद विदेश व्यापार और विदेशी निवेश पर प्रतिबंध लगाने के निम्न कारण थे—

- देश के उत्पादकों को विदेशी प्रतिस्पर्द्धा से संरक्षण प्रदान करने के लिए।
- 1950 और 1960 के दशकों में भारत में उद्योगों का उदय हो रहा था और इस अवस्था में आयात से प्रतिस्पर्द्धा इन उद्योगों के विकास में बाधक बनती। सभी विकसित देशों ने विकास के प्रारंभिक चरणों में घरेलू उत्पादकों को विभिन्न तरीकों से संरक्षण प्रदान किया है।

  इसलिए भारत सरकार ने भी इस ठोस कदम को उद्योगों के संरक्षण हेतु उठाया।

3. विदेश व्यापार बाजारों के एकीकरण में किस प्रकार से मदद करता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर विदेश व्यापार दुनिया के विभिन्न देशों के मध्य संचालित व्यापार है। इसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, बाह्य व्यापार या अंतर्क्षेत्रीय व्यापार भी कहा जाता है। इसमें आयात, निर्यात और पुनर्निर्यात सम्मिलित हैं। विदेश व्यापार बाजारों के एकीकरण में निम्न प्रकार से मदद करता है

- देशों के मध्य माल और सेवाओं के आवागमन की सुविधा।
- विदेशी व्यापार घरेलू बाजारों अर्थात् अपने देश के बाजारों से बाहर के बाजारों में पहुँचने के लिए उत्पादकों को एक अवसर प्रदान करता है। बाजार में ग्राहकों के लिए वस्तुओं के विकल्प बढ़ जाते हैं।
- बाजार नई प्रौद्योगिकी और विचारों को बढ़ावा मिलता है।
- उत्पादकों में बढ़ती हुई प्रतिस्पर्द्धा से ग्राहकों को वस्तुओं और सेवाओं की बेहतर गुणवत्ता प्राप्त होती है। वस्तुओं की कीमतों में भी कमी आती है।

4. वैश्वीकरण से क्या तात्पर्य है? वैश्वीकरण और प्रवास को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर **वैश्वीकरण से तात्पर्य** वैश्वीकरण विभिन्न देशों के बीच विदेशी व्यापार एवं निवेश में तीव्र वृद्धि की प्रक्रिया है। इन दो कारकों के कारण ही बाजार और उत्पादन केंद्रों का एकीकरण हुआ है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वैश्वीकरण की प्रक्रिया में प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। विभिन्न देशों के बीच अधिक-से-अधिक वस्तुओं एवं सेवाओं, निवेश और प्रौद्योगिकी का आदान-प्रदान हो रहा है।

वैश्वीकरण और प्रवास वस्तुओं, सेवाओं, निवेशों और प्रौद्योगिकी के अतिरिक्त विभिन्न देशों को आपस में जोड़ने का एक माध्यम प्रवास भी है। लोग प्राय: बेहतर आय, बेहतर रोजगार एवं शिक्षा की तलाश में एक देश से दूसरे देश में आवागमन करते हैं। विगत कुछ दशकों में अनेक प्रतिबंधों के कारण विभिन्न देशों के बीच लोगों के आवागमन में अधिक वृद्धि नहीं हुई है।

5. वैश्वीकरण में आई. टी. की भूमिका के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर वैश्वीकरण में आई. टी. की भूमिका निम्नलिखित है—

- सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने विश्व में सेवाओं के उत्पादन का विस्तार किया है। दूरसंचार सुविधा (टेलीग्राफ, टेलीफोन, मोबाइल फोन, फैक्स) और उपग्रह संचार का उपयोग विश्व में एक-दूसरे से संपर्क स्थापित करने, सूचनाओं को तत्काल प्राप्त करने और दूरवर्ती क्षेत्रों से संवाद करने में प्रयोग किया जाता है।
- इसका एक उदाहरण लंदन में पाठकों के लिए प्रकाशित एक समाचार-पत्र है, जिसे दिल्ली में डिजाइन और मुद्रित किया गया है। पत्रिका का पाठ लंदन से इंटरनेट द्वारा दिल्ली के कार्यालय तक भेजा जाता है। दिल्ली कार्यालय में डिजाइनर दूरसंचार सुविधाओं का उपयोग करके लंदन कार्यालय से पत्रिका के डिजाइन के विषय में निर्देश प्राप्त करते हैं, फिर छपाई के बाद पत्रिकाओं को लंदन भेजा जाता है।

6. विदेशी व्यापार की पूर्व स्थिति और नई आर्थिक नीति पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **वर्ष 1991 से पहले विदेश व्यापार**—स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने विदेश व्यापार और विदेशी निवेश पर प्रतिबंध लगा रखा था। देश के उत्पादकों को विदेशी प्रतिस्पर्द्धा से संरक्षण प्रदान करने के लिए यह अनिवार्य माना गया। 1950 और 1960 के दशकों में उद्योगों

का उदय हो रहा था और इस अवस्था में आयात से प्रतिस्पर्द्धा इन उद्योगों को बढ़ने नहीं देती, इसलिए भारत ने केवल अनिवार्य वस्तुओं; जैसे—मशीनरी, उर्वरक और पेट्रोलियम के आयात की ही अनुमति दी।

नई आर्थिक नीति, 1991

- वर्ष 1991 के आस-पास यह महसूस किया गया था कि भारतीय उत्पादकों को विश्व के निर्माताओं के साथ प्रतिस्पर्द्धा करनी चाहिए, जिससे वे अपने प्रदर्शन और वस्तुओं एवं सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार कर सकें।
- यही कारण है कि वर्ष 1991 में भारत सरकार ने अपनी व्यापार नीति में कुछ बड़े बदलाव किए थे। यह निर्णय विश्व व्यापार संगठन जैसे शक्तिशाली अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा समर्थित था।

7. भारत में वैश्वीकरण के प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भारत में वैश्वीकरण के प्रभाव निम्नलिखित हैं—

- वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप उत्पादकों (स्थानीय और विदेशी दोनों) के बीच अधिक प्रतिस्पर्द्धा से, उपभोक्ताओं विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में समृद्ध वर्ग को लाभ पहुँचाता है। यह बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पादों और कम कीमतों के साथ बेहतर विकल्प देता है।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में अपने निवेश में वृद्धि की है; जैसे—सेल फोन, मोटरगाड़ियाँ, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद, ठंडे पेय पदार्थ, जंक खाद्य पदार्थों एवं बैंकिंग जैसी सेवाओं में निवेश इत्यादि।
- उद्योगों और सेवाओं में नए रोजगार उत्पन्न हुए हैं, साथ ही इन उद्योगों को कच्चे माल इत्यादि की आपूर्ति करने वाली स्थानीय कंपनियाँ समृद्ध हुईं।
- वैश्वीकरण नई और उन्नत तकनीक को लाता है, जिसके द्वारा स्थानीय कंपनियों को भी लाभ मिलता है।

8. ''भारतीय बाजार में चीनी खिलौने सहित इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ भी बहुत अधिक आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं।'' भारतीय बाजार पर इसके क्या प्रभाव दिखते हैं?

उत्तर भारतीय बाजार पर इसके निम्न प्रभाव पड़ते हैं—

(i) भारतीय खरीददारों के पास चीनी खिलौने और इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं के रूप में एक अन्य विकल्प भी बाजार में सस्ते मूल्य पर मौजूद है।

(ii) भारतीय इलेक्ट्रॉनिक खिलौने आदि को बाजार में चीनी निर्माताओं से कड़ी प्रतिस्पर्द्धा करनी पड़ती है और उन्हें हानि भी उठानी पड़ रही है।

9. ''वैश्वीकरण ने सेवा प्रदाता कंपनियों विशेषकर सूचना और प्रौद्योगिकी वाली कंपनियों के लिए नए अवसरों का सृजन किया है।'' पुष्टि कीजिए।

उत्तर निम्न बिंदु दिए गए कथन की पुष्टि करते हैं, जो निम्न हैं—

(i) भारत आँकड़ा प्रविष्टि (डाटा एंट्री), प्रशासनिक कार्यों आदि के लिए एक केंद्रीय स्थान बन गया है।

(ii) अनेक भारतीय कंपनियाँ बहुराष्ट्रीय कंपनियों को कॉल सेंटर की सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं।

(iii) भारतीय कुशल श्रमिक अपने सॉफ्टवेयर विकास कौशल के लिए विश्वभर में जाने जाते हैं।

10. न्यायसंगत वैश्वीकरण के महत्त्वपूर्ण मापदंडों को बताइए।

उत्तर वैश्वीकरण से मिले नए अवसरों का लाभ शिक्षित, कुशल और संपन्न लोगों तक ही सीमित रहा, लेकिन अन्य लोगों को यह अपने प्रभाव क्षेत्र में नहीं ले पाया। इसके महत्त्वपूर्ण मापदंडों में शामिल हैं—

- सभी के लिए समान अवसर
- वैश्वीकरण के लाभों में सबकी हिस्सेदारी
- सरकार व इसकी नीतियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका जिसमें

(i) धनी और प्रभावशाली लोगों को ही नहीं, बल्कि देश के सभी लोगों के हितों का संरक्षण शामिल हो।

(ii) श्रमिक कानूनों का उचित कार्यान्वयन हो और श्रमिकों के अधिकारों की बात शामिल हो।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. ''बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विभिन्न देशों की उत्पादन प्रक्रिया को एक-दूसरे से जोड़ती हैं।'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विभिन्न देशों की उत्पादन प्रक्रिया को एक-दूसरे से जोड़ती हैं। देशों को उत्पादन द्वारा जोड़ने के कुछ महत्त्वपूर्ण माध्यम नीचे दिए हैं—

(i) विदेशी प्रत्यक्ष निवेश—इसका अर्थ है कि एक देश में आधारित कंपनी (सामान्यत: एक बहुराष्ट्रीय कंपनी) किसी दूसरे देश में स्थित कंपनी में निवेश करती है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने विदेशी इकाइयों में कारखानों या कार्यालयों की स्थापना करके उत्पादन इकाइयाँ स्थापित की हैं।

(ii) साझेदारी/संयुक्त उद्यम—कभी-कभी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय कंपनियों के साथ हाथ मिलाती हैं और संयुक्त रूप से उत्पादन करती हैं। इस तरह बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अतिरिक्त निवेश के लिए धन प्रदान करती है, जैसे कि अधिक उत्पादन के लिए नई मशीनें खरीदना और उत्पादन के लिए नवीनतम तकनीक लाना।

(iii) स्थानीय कंपनियाँ—बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ स्थानीय उत्पादन इकाइयाँ क्रय करती हैं या स्थानीय कंपनियों के साथ मिलकर उत्पादन बढ़ाती हैं। उदाहरण के लिए; अमेरिका के कारगिल फूड्स ने भारत में परख फूड्स का अधिग्रहण किया है।

(iv) निवेश—संपत्तियों को खरीदने के लिए धन खर्च किया जाता है जैसे; जमीन, भवन, मशीन और अन्य उपकरण।

(v) स्थानीय कंपनियों के अनुबंध—बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ संपूर्ण विश्व में एक बड़ी संख्या में छोटे उत्पादकों के साथ निवेश करती है, क्योंकि ये उत्पाद अपने ब्रांड नाम के अन्तर्गत इनके उत्पादकों को बेचते हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इन दूर के उत्पादकों के लिए मूल्य, गुणवत्ता, वितरण और श्रम की स्थिति निर्धारित करती हैं। जैसे फुटवियर्स, (जूते और चप्पल) खेल के सामान, वस्त्र आदि।

2. विदेशी व्यापार के महत्त्व को समझाइए।

उत्तर विदेशी व्यापार दुनिया के विभिन्न देशों के मध्य एक व्यापार है। इसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार (International Trade), बाह्य व्यापार (External Trade) या अंतर्क्षेत्रीय व्यापार (Inter-regional Trade) भी कहा जाता है।

विदेशी व्यापार के महत्त्व को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं—

(i) **विकासशील देशों हेतु अत्यधिक महत्त्वपूर्ण**—विदेशी व्यापार में होने वाली वृद्धि आर्थिक प्रगति को प्रकट करती है। आर्थिक रूप से पिछड़े तथा विकासशील देशों के लिए विदेशी व्यापार का और भी अधिक महत्त्व है।

(ii) **प्राकृतिक संसाधनों का उचित दोहन**—विदेशी व्यापार की जरूरतों के अनुसार वस्तुओं का निर्यात करने के लिए उद्यमी उद्योगों की स्थापना करते हैं, जिससे रोजगार के अवसरों का सृजन होता है।

(iii) **औद्योगीकरण को प्रोत्साहन**—विदेशी व्यापार के माध्यम से देश में औद्योगीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए पूँजी, उपकरण एवं तकनीके सुनिश्चित होती हैं जिससे औद्योगीकरण की गति तीव्र होती है।

(iv) **सस्ती वस्तुओं की प्राप्ति**—विदेशी व्यापार के कारण विदेशों में निर्मित गुणवत्ता युक्त एवं सस्ती वस्तुएँ देश के अंदर प्राप्त हो जाती है।

3. वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर वैश्वीकरण को संभव बनाने वाले निम्न कारक हैं—

(i) **प्रौद्योगिकी में तीव्र उन्नति**—विगत 50 वर्षों में परिवहन प्रौद्योगिकी में अत्यधिक उन्नति हुई है। इससे लंबी दूरियों तक वस्तुओं की तीव्र आपूर्ति को कम लागत पर संभव किया है।

(ii) **सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी**—सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ने विश्व में सेवाओं के उत्पादन का विस्तार किया है। दूरसंचार सुविधा (टेलीग्राफ, टेलीफोन, मोबाइल फोन, फैक्स) और उपग्रह संचार का उपयोग विश्व में एक-दूसरे से संपर्क स्थापित करने, सूचनाओं को तत्काल प्राप्त करने और दूरवर्ती क्षेत्रों से संवाद करने में प्रयोग किया जाता है।

इसका एक उदाहरण लंदन में पाठकों के लिए प्रकाशित एक समाचार-पत्र है, जिसे दिल्ली में डिजाइन और मुद्रित किया गया है।

पत्रिका का पाठ लंदन से इंटरनेट द्वारा दिल्ली के कार्यालय तक भेजा जाता है। दिल्ली कार्यालय में डिजाइनर दूरसंचार सुविधाओं का उपयोग करके लंदन कार्यालय से पत्रिका के डिजाइन के विषय में निर्देश प्राप्त करते हैं, फिर छपाई के बाद पत्रिकाओं को लंदन भेजा जाता है।

(iii) **बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ**—वैश्वीकरण में बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। व्यापार के क्षेत्र में अन्य देशों से एक-दूसरे का संबंध वैश्वीकरण का परिचायक है।

4. विश्व व्यापार संगठन पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर विश्व व्यापार संगठन एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जो देशों के बीच व्यापार के वैश्विक नियमों का पालन करता है। इसका मुख्य कार्य यह सुनिश्चित करना है कि व्यापार आसानी से, अनुमानित रूप से और जितना संभव हो उतना स्वतंत्र रूप से हो। इसने भारत के विदेशी व्यापार और निवेश के उदारीकरण का समर्थन किया है।

विकसित देशों की पहल पर विश्व व्यापार संगठन शुरू हुआ था। इसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का उदारीकरण करना है और यह सुनिश्चित करना है कि उसके सदस्य अपने नियमों का पालन करते हैं। विश्व के 164 देश जून, 2018 तक विश्व व्यापार संगठन के सदस्य (29 जुलाई, 2016 को 164 देश) थे। हालाँकि विश्व व्यापार संगठन द्वारा सभी के लिए स्वतंत्र व्यापार की अनुमति दी जाती है।

वास्तव में, यह पाया जाता है कि विकसित देशों ने कुछ व्यापार अवरोधकों को अनुचित ढंग से लागू किया है और विकासशील देशों के बाधाओं को दूर करने के लिए मजबूर किया गया है। इसका एक उदाहरण कृषि उत्पादों में व्यापार है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में कृषिविदों को उनकी सरकार द्वारा अत्यधिक सब्सिडी दी जाती है, जिससे वे विकासशील देशों के लिए कम कीमतों पर गेहूँ और कपास जैसे उत्पादों का निर्यात कर सकें।

5. वैश्वीकरण के परिणामों की व्याख्या प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर वैश्वीकरण के परिणाम निम्नलिखित हैं—

(i) **रोजगार के बेहतर अवसर**—आज भारत बी.पी.ओ सेक्टर में एक अग्रणी देश है। बी.पी.ओ से कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों को सपोर्ट मिलता है।

उदाहरणस्वरूप अमेरिका में बैठा कोई ग्राहक जब अपनी समस्या के समाधान के लिए फोन कॉल करता है, तो शायद वह गुड़गाँव में बैठे किसी व्यक्ति से बात करता है। आर्थिक क्रियाओं के बढ़ने के कारण भारत में कई नए आर्थिक केंद्रों का विकास हुआ है; जैसे—गुड़गाँव, चंडीगढ़, बंगलुरू, हैदराबाद और मेरठ।

(ii) **जीवनशैली में बदलाव**—वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप लोगों के रहन-सहन, बोल-चाल के तरीकों में बदलाव को सहजता से देखा जा सकता है। खासकर शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में यह परिवर्तन देखा जा सकता है।

(iii) **विकास के असमान लाभ**—वैश्वीकरण ने अधिकतर शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को लाभ पहुँचाया है। इनके समक्ष अब पहले से अधिक विकल्प हैं और वे अब अनेक उत्पादों की उत्कृष्ट गुणवत्ता और कम कीमत से लाभान्वित हो रहे हैं। परिणामत: ये लोग पहले की तुलना में आज अपेक्षाकृत उच्चतर जीवन स्तर का आनंद ले रहे हैं।

वहीं उत्पादकों और श्रमिकों पर वैश्वीकरण का एकसमान प्रभाव नहीं पड़ा है। छोटे उत्पादक या तो बड़ी कंपनियों से प्रतिस्पर्द्धा करते या नष्ट होते जा रहे हैं, वहीं वैश्वीकरण और प्रतिस्पर्द्धा के दवाब ने श्रमिकों के जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

(iv) **विकसित देशों द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग**—विकसित देश आज भी अपने किसानों को भारी अनुदान देते हैं और ट्रेड बैरियर

लगाते हैं। बदले में विकासशील देशों को विश्व व्यापार संगठन से बहुत कुछ सुविधाएँ नहीं मिल पाती हैं।

6. उदारीकरण क्या है? भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के लिए सरकार ने कौन-कौन से कदम उठाएँ?

उत्तर ''सरकार द्वारा अवरोधों अथवा प्रतिबंधों को हटाने की प्रक्रिया उदारीकरण के नाम से जानी जाती है।'' वर्ष 1991 से पूर्व भारत सरकार ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर औद्योगिक लाइसेंस प्रणाली, मूल्य नियंत्रण, आयात लाइसेंस आदि अनेक प्रतिबंध लगा रखे थे। ये सभी प्रतिबंध भारतीय उद्योगों के विकास में बाधा डाल रहे थे, इसलिए वर्ष 1991 में इनमें से अवांछित नियंत्रणों को हटाने का निश्चय किया गया।

इसके लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए—

(i) उदारीकरण नीति के अंतर्गत उद्योगों को बाजार की आवश्यकताओं के अनुसार उत्पादन करने तथा विस्तार करने की छूट दी गई।

(ii) तीन उद्योगों के अतिरिक्त सभी उद्योगों को सभी प्रकार के औद्योगिक लाइसेंस से मुक्त कर दिया गया ।

(iii) अब उत्पादक विदेशों से कच्चा माल तथा मशीनरी का आयात करने के लिए स्वतंत्र हो गए।

(iv) अब भारतीय उद्योगों में विदेशी आधुनिक तकनीकों का प्रयोग होने लगा।

❑❑❑

5

उपभोक्ता अधिकार

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. उपभोक्ताओं की सुरक्षा की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए तथा उपभोक्ताओं का शोषण करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर उपभोक्ताओं के लिए सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नियमों और विनियमों की आवश्यकता होती है, क्योंकि बाजार में शोषण विभिन्न तरीकों से होता है। उपभोक्ताओं का शोषण करने वाले कारक इस प्रकार हैं —

- गलत या अधूरी जानकारी देने वाली कंपनियाँ
- मिलावटी और अशुद्ध खाद्य पदार्थों की बिक्री
- इलेक्ट्रॉनिक सामान में उचित सुरक्षा मानदंडों की कमी
- सूचीबद्ध से अधिक मूल्य प्राप्त करना
- घटिया उत्पादों को बेचना
- अनुचित व्यापारिक प्रथाओं में लिप्त; जैसे—दुकानदार उचित वजन से कम वजन तौलते हैं।
- असंतोषजनक बिक्री सेवाएँ और अशिष्ट व्यवहार
- उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए समय-समय पर मीडिया और अन्य स्रोतों; जैसे—हॉर्डिंग आदि द्वारा गलत और कृत्रिम सूचना देना।

2. उपभोक्ता आंदोलन एवं उपभोक्ता शिकायत केंद्र पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **उपभोक्ता आंदोलन**—भारत में सामाजिक बल के रूप में उपभोक्ता आंदोलन का उदय अनैतिक और अनुचित व्यवसाय कार्यों से उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता के साथ हुआ। अत्यधिक खाद्य कमी, जमाखोरी, कालाबाजारी, खाद्य पदार्थों एवं खाद्य तेल में मिलावट की वजह से 1960 के दशक में व्यवस्थित रूप में उपभोक्ता आंदोलन का उदय हुआ। 1970 के दशक तक उपभोक्ता संस्थाएँ वृहत स्तर पर उपभोक्ता अधिकार से संबंधित आलेखों के लेखन और प्रदर्शनी का आयोजन का कार्य करने लगी थीं।

उपभोक्ता शिकायत केंद्र

- भारत में उपभोक्ता आंदोलन ने विभिन्न संगठनों के निर्माण में पहल की है, जिन्हें सामान्यतया उपभोक्ता अदालत या उपभोक्ता संरक्षण परिषद् के नाम से जाना जाता है।
- यह उपभोक्ताओं का मार्गदर्शन करता है कि कैसे उपभोक्ता अदालत में मुकदमा दर्ज कराएँ। बहुत-से अवसरों पर ये उपभोक्ता अदालत में व्यक्ति विशेष (उपभोक्ता) का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। ये स्वयंसेवी संगठन जनता में जागरूकता पैदा करने के लिए सरकार से वित्तीय सहयोग भी प्राप्त करते हैं।

3. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर 1960 के दशक के पश्चात् से सभी प्रयासों के परिणामस्वरूप, यह आंदोलन वृहत स्तर पर उपभोक्ताओं के हितों के विरुद्ध और अनुचित व्यवसाय शैली को सुधारने के लिए व्यावसायिक कंपनियों और सरकार दोनों पर दबाव डालने में सफल हुआ।

इस संबंध में वर्ष 1986 में भारत सरकार द्वारा एक बड़ा कदम उठाया गया जो उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 कानून का बनना था।

यह अधिनियम उपभोक्ता अंतर्राष्ट्रीय के गठन के बाद लागू किया गया था। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 संसद का एक अधिनियम है, जो भारत में उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए अधिनियमित है। यह उपभोक्ताओं के विवादों और उनसे जुड़े मामलों के निपटान के लिए उपभोक्ता परिषदों और अन्य प्राधिकारियों की स्थापना के लिए प्रावधान करता है।

4. उपभोक्ता के कुल कितने अधिकार होते हैं? सभी अधिकारों के नामों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर उपभोक्ता के छ: अधिकार होते हैं, जो निम्नलिखित हैं—

(i) सुरक्षा का अधिकार
(ii) सूचित होने का अधिकार
(iii) सूचना का अधिकार
(iv) चुनने का अधिकार
(v) निवारण का अधिकार
(vi) प्रतिनिधि का अधिकार

5. उपभोक्ता अधिकार के रूप में 'सुरक्षा के अधिकार' का उल्लेख कीजिए।

उत्तर जब हम उपभोक्ता के रूप में बहुत-सी वस्तुओं और सेवाओं का उपयोग करते हैं, तो हमें वस्तुओं के बाजारीकरण और सेवाओं की प्राप्ति के विरुद्ध रहने का अधिकार होता है, क्योंकि ये जीवन और संपत्ति के लिए खतरनाक होते हैं।

निर्माता और सेवा प्रदाताओं को आवश्यक सुरक्षा नियमों को पालन करने की आवश्यकता है। कई वस्तुओं (जैसे—प्रेशर कुकर की वाल्व, बिजली के उपकरण, गीजर, लोहा आदि) की सुरक्षा के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। यदि इन वस्तुओं में दोष है, तो ये गंभीर दुर्घटना का कारण बन सकती हैं, इसलिए इन वस्तुओं के मामले में निर्माताओं को यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि उत्पाद और सेवाओं की सुरक्षा और गुणवत्ता उचित हो।

6. सूचना के अधिकार को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर अक्टूबर, 2005 में भारत सरकार ने एक कानून बनाया, जिसे सूचना का अधिकार अधिनियम के नाम से जाना जाता है, जो अपने नागरिकों को सरकार के कामकाज के विषय में सभी जानकारी सुनिश्चित करता है। सूचना का अधिकार का उपयोग करने का एक उदाहरण नीचे दिया गया है—

अमृता ने सरकारी नौकरी के लिए साक्षात्कार में भाग लिया और लेकिन उसे चयन के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं हुई। अधिकारियों ने उसके प्रश्नों का उत्तर देने से मना कर दिया। उसने सूचना का अधिकार कानून के अंतर्गत एक आवेदन दर्ज किया, जिसके उत्तर में उसे सूचित करने में देरी के कारणों के विषय में बताया गया था। बाद में उसे नियुक्ति के लिए कॉल पत्र भी मिला।

7. निवारण के अधिकार एवं प्रतिनिधि के अधिकार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर **निवारण का अधिकार**—उपभोक्ताओं को अनुचित व्यापार कर्म और शोषण का निवारण माँगने का अधिकार है। इसका अर्थ है, यदि कोई क्षति, उपभोक्ता के प्रति की जाती है, तो वह क्षति की मात्रा के अनुसार नुकसान की भरपाई प्राप्त करने का अधिकार रखता है। यदि आप किसी कंपनी या संस्था के अनुचित व्यापार कर्म से पीड़ित हैं, तो आप अपनी शिकायत के निवारण के लिए न्यायालय जा सकते हैं।

प्रतिनिधि का अधिकार—उपभोक्ता नुकसान की भरपाई को माँगने तथा निवारण करने का अधिकार प्राप्त करते हैं। किसी निवारण को करते समय उपभोक्ता न्यायालय अर्थात् उपभोक्ता अदालत में प्रतिनिधित्व किए जाने का अधिकार रखते हैं। इस उद्देश्य के लिए त्रि-स्तरीय अर्ध न्यायिक तंत्र की स्थापना की गई है। यदि सहायता की आवश्यकता है, तो इस दशा में उपभोक्ता, उपभोक्ता अदालत या उपभोक्ता संरक्षण परिषद् से सहायता माँग सकता है।

8. उत्पादक और उपभोक्ता के रूप में बाजार में हमारी भागीदारी किस प्रकार होती है? दो उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर **उत्पादक**—अधिकांश बाजार में हमारी भागीदारी वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादक के रूप में होती है। जब हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके किसी वस्तुओं का उत्पादन करते हैं, तो हम उत्पादक की श्रेणी में आ जाते हैं; जैसे—कपास, दूध आदि का उपयोग कर अंतिम वस्तु के रूप में कपड़े और मिठाइयाँ आदि तैयार की जाती हैं। अगर एक व्यक्ति किसी कार्यालय, उद्योग या अन्य क्षेत्रों में काम करता है, तो वह सेवा का उत्पादक है।

उपभोक्ता—उपभोक्ताओं की भागीदारी बाजार में तब होती है, जब वे अपनी आवश्यकतानुसार वस्तुओं या सेवाओं को खरीदते हैं। उपभोक्ता के रूप में लोगों द्वारा उपभोग किए जाने वाली ये अंतिम वस्तुएँ हैं।

9. किन्हीं तीन मूल्यों का उल्लेख कीजिए, जो वास्तव में उपभोक्ता को बाजार में अधिक जागरूक बनाने में प्रभावकारी हों?

उत्तर निम्नलिखित मूल्य उपभोक्ता को सतर्क और जागरूक बनाते हैं—

(i) स्व-जागरूकता—उपभोक्ताओं को अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों की जानकारी होनी चाहिए। इस प्रक्रिया में जागरूकता पहला कदम है।

उन्हें गुणवत्ता चिह्नित उत्पाद ही खरीदने चाहिए, बिल की माँग करनी चाहिए और सही समस्याओं के लिए शिकायत करनी चाहिए।

(ii) उत्तरदायित्व—इसका अर्थ है कि अपने कर्त्तव्यों पर ध्यान देना। लोगों अथवा समूहों का उत्तरदायी या अनुत्तरदायी के रूप में मूल्यांकन करना इस बात पर निर्भर करता है कि वे अपनी जिम्मेदारियों को कितनी गंभीरता से लेते हैं।

(iii) स्वेच्छाप्रेरित भागीदारी—उपभोक्ता आंदोलनों को स्वेच्छाप्रेरित प्रयत्न तथा संघर्ष की आवश्यकता होती है, जिसमें सभी भाग लें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. उपभोक्ता के किन्हीं तीन अधिकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर **चुनने का अधिकार**—कोई भी उपभोक्ता, जो अपनी क्षमता के अनुसार आयु, लिंग और सेवा की प्रकृति की चिंता किए बिना किसी सेवा को प्राप्त करता है, वह चुनने का अधिकार रखता है, चाहे वह सेवा उसे लगातार प्राप्त करनी हो या नहीं

जैसे केबल ऑपरेटर की सेवा या बिना टूथब्रश के टूथपेस्ट खरीदना, चाहे दुकानदार दोनों को खरीदने के लिए बाध्य करें।

निवारण का अधिकार—उपभोक्ताओं को अनुचित व्यापार कर्म और शोषण का निवारण माँगने का अधिकार है। इसका अर्थ है, यदि कोई क्षति, उपभोक्ता के प्रति की जाती है, तो वह क्षति की मात्रा के अनुसार नुकसान की भरपाई प्राप्त करने का अधिकार रखता है।

यदि आप किसी कंपनी या संस्था के अनुचित व्यापार कर्म से पीड़ित हैं, तो आप अपनी शिकायत के निवारण के लिए न्यायालय जा सकते हैं।

प्रतिनिधित्व का अधिकार—उपभोक्ता नुकसान की भरपाई को माँगने तथा निवारण करने का अधिकार प्राप्त करते हैं। किसी निवारण को करते समय उपभोक्ता न्यायालय अर्थात् उपभोक्ता अदालत में प्रतिनिधित्व किए जाने का अधिकार रखते हैं।

इस उद्देश्य के लिए त्रि-स्तरीय अर्ध न्यायिक तंत्र की स्थापना की गई है। यदि सहायता की आवश्यकता है, तो इस दशा में उपभोक्ता, उपभोक्ता अदालत या उपभोक्ता संरक्षण परिषद् से सहायता माँग सकता है।

2. उपभोक्ताओं का शोषण किस प्रकार किया जाता है? उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर **उपभोक्ता शोषण**—यह एक स्थिति है, जिसमें उत्पादक द्वारा उपभोक्ता का शोषण होता है। उपभोक्ता शोषण के निम्नांकित तरीके हैं

- **अधिक मूल्य**—बाजार में कुछ वस्तुएँ अधिकतम खुदरा मूल्य के बिना होती हैं। इस स्थिति में व्यापारी बाजार में प्रचलित मूल्य से अधिक मूल्य लेते हैं। इसका कारण है—उपभोक्ता की अज्ञानता और आवश्यकता।
- **कम तौलना और कम मापना**—बाजार में कुछ व्यापारी चालाकी से कम माप-तौलकर उपभोक्ताओं को धोखा देते हैं।

- ➲ **नकली उत्पाद**—कुछ व्यापारी अथवा विक्रेता उपभोक्ताओं को घटिया व नकली उत्पाद बेचकर अधिक मुनाफा कमाना चाहते हैं। आजकल बाजार नकली उत्पादों से भरा पड़ा है।
- ➲ **मिलावटी और अशुद्ध उत्पाद**—अधिक लाभ कमाने हेतु महँगे खाद्य पदार्थ घी, तेल व मसालों आदि में मिलावट की जाती है। इससे उपभोक्ता को आर्थिक व स्वास्थ्य का नुकसान होता है।

3. वस्तुओं और सेवाओं से संबंधित जानकारियों को प्राप्त करने के तरीकों की उदाहरण सहित व्याख्या करते हुए सरकार की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर किसी वस्तु को खरीदने पर उसके पैकेट पर उस वस्तु से संबंधित अवयवों, मूल्यों, बैच संख्या, निर्माण की तारीख, खराब होने की अंतिम तिथि और वस्तु बनाने वाली कंपनी के पते लिखे होते हैं। इसका मतलब यह होता है कि उपभोक्ता वस्तु में किसी भी प्रकार की खराबी होने पर शिकायत कर सकता है, क्षतिपूर्ति पाने या वस्तु बदलने की माँग कर सकता है।

उदाहरण के लिए, जब हम कोई दवा खरीदते हैं, तो उस दवा के 'उचित प्रयोग के बारे में निर्देश' और उस दवा के अन्य प्रभावों और खतरों से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

इसका अर्थ यह है कि कुछ ऐसे नियम बनाए गए हैं,

जिससे उपरोक्त उदाहरण में दिए गए निर्देश व जानकारियाँ वस्तु बनाने वाले को देनी पड़ती हैं। यह इसलिए कि उपभोक्ता जिन वस्तुओं और सेवाओं को खरीदता है, उसके बारे में उपभोक्ता को सूचना पाने का अधिकार होता है। आज सरकार प्रदत्त विविध सेवाओं को उपयोगी बनाने के लिए सूचना पाने के अधिकार को बढ़ा दिया गया है।

अक्टूबर, 2005 में भारत सरकार ने एक कानून लागू किया, जो 'सूचना पाने के अधिकार' के नाम से जाना जाता है

और जो अपने नागरिकों को सरकारी विभागों के

कार्य-कलापों की सभी सूचनाएँ पाने के अधिकार को सुनिश्चित करता है।

❑❑❑